CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नं. ४८५५

Tel. Chowkhamba Series, Varanasi. Estd. 1892 Phone : 3145

Catalogue No. 83

THE CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

POST BOX 8, VARANASI-1 (U. P.) INDIA

चौखम्बा-साहित्य

श्री मोतीलाल बनारसीदासजी,
नेपाली खपरा, पोष्टबाक्स नं०-
७५, चौकबाराणसी १

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

भारतीय संस्कृति के प्रकाशक-विक्रेता
के ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन
पो० बा० नं० ८, वाराणसी-१

१९७०] [1970

आर्डर देते समय इस सूचीपत्र की संख्या ८३ का उल्लेख अवश्य करें ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

❀ आवश्यक निवेदन ❀

(१) कृपया अपने प्रत्येक पत्र व्यवहार में—**'चौखम्बा-साहित्य'** संख्या ८३, का उल्लेख अवश्य करें।

(२) पुस्तकें भेजते समय प्रकाशकों के परिवर्तित मूल्य के अनुसार मूल्य लिये जाते हैं।

किसी भी अवसर पर काशी में पधारते समय

चौखम्बा विद्याभवन

चित्रा सिनेमा के सामने, चौक, वाराणसी-१

में अवश्य पधारने की कृपा करें।

हमारे विभिन्न सूचीपत्र

(१) **'भारतीय संस्कृति और साहित्य'**

[देश-विदेश में छपी संस्कृत, हिन्दी, अँगरेजी, जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं की लगभग १३५०० पुस्तकों का विवरण]

(२) **'हिन्दी साहित्य और वाङ्मय'**

[राष्ट्रभाषा हिन्दी की स्व-प्रकाशित तथा अन्य प्रकाशित ९००० पुस्तकों का विवरण]

(३) **'चिकित्सा साहित्य'**

[आयुर्वेदिक, यूनानी, एलोपैथिक, होमियोपैथिक आदि लगभग २००० पुस्तकों का विवरण]

मँगवाकर अवलोकन करें।

THE

CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

POST BOX 8, VARANASI-1 (INDIA)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

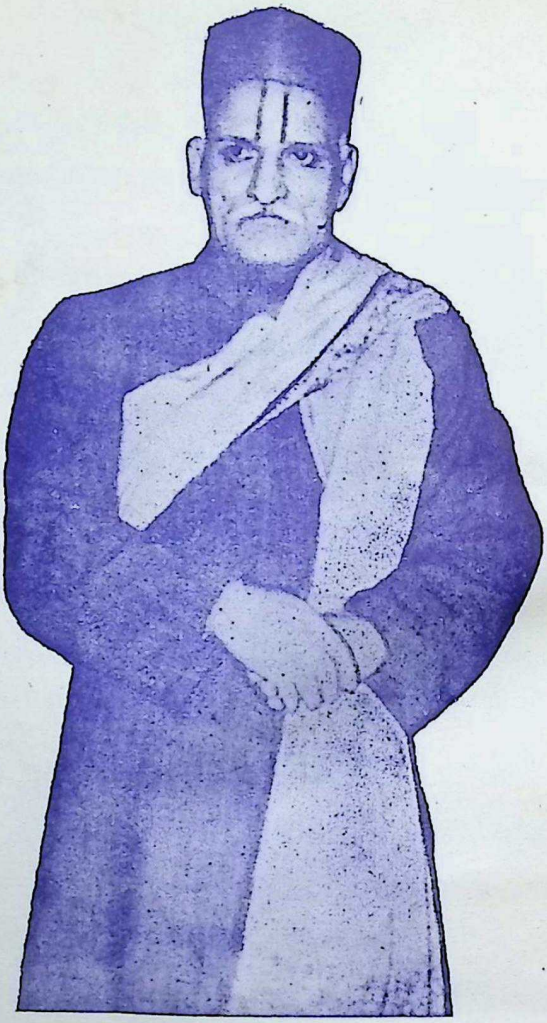

श्री बाबू कृष्णदास जी गुप्त

उपाध्यक्ष

जन्म २६-११-१९०४] [गोलोकवास ८-६-१९६७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

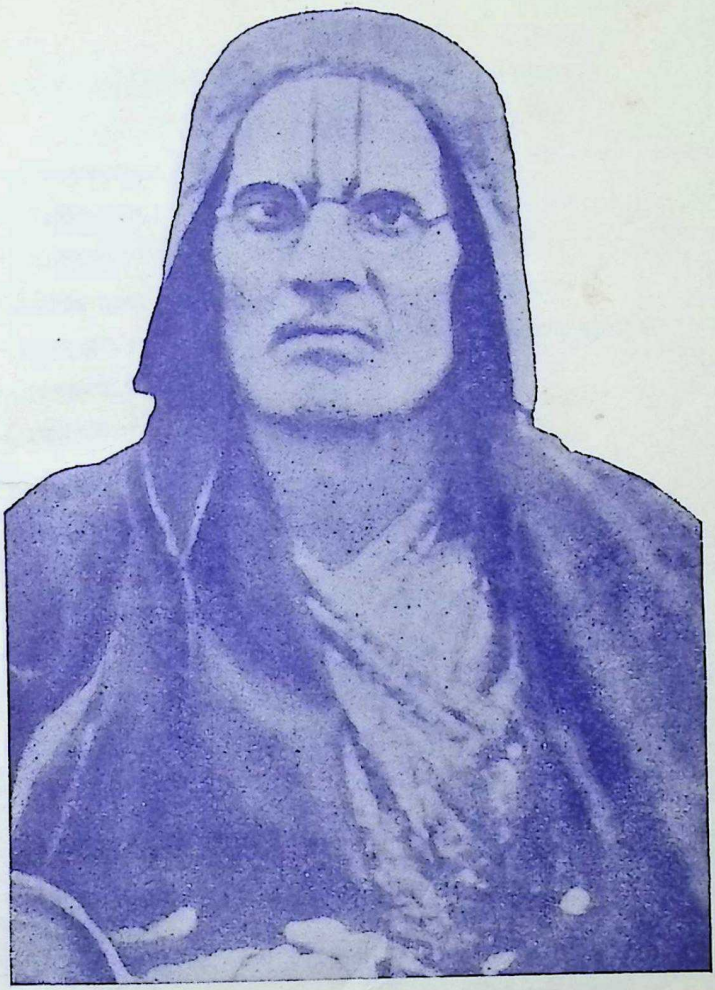

श्री बाबू जयकृष्णदास जी गुप्त

अध्यक्ष

जन्म २२-११-१८९२] [गोलोकवास १३-८-१९६७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौखम्बा साहित्य एवं प्रचारित पुस्तकों की विषयानुक्रमणिका

विषयाः	पृष्ठाः
१ सम्मति एवं विभिन्न विज्ञापन	
२ व्याकरण-ग्रन्थाः	१
३ मीमांसा-ग्रन्थाः	२३
४ न्याय-ग्रन्थाः	२५
५ वैशेषिक-ग्रन्थाः	३२
६ सांख्य-ग्रन्थाः	३३
७ योग-ग्रन्थाः	३५
८ दर्शन-ग्रन्थाः	३६
९ वेदान्त-उपनिषत्-पुराण-इतिहास-ग्रन्थाः	३९
१० वेदान्त-शुद्धाद्वैत-ग्रन्थाः	५२
११ वेदान्त-विशिष्टाद्वैत-ग्रन्थाः	५३
१२ स्वामिभगवदाचार्य-श्रीरामानन्द-संप्रदाय-विशिष्टाद्वैत-ग्रन्थाः	५४
१३ वेदान्त-द्वैताद्वैत-ग्रन्थाः	५५
१४ स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थ	५६
१५ विद्यावाचस्पति श्री पं० मधुसूदन ओझा के ग्रन्थ	५६
१६ ज्यौतिष-ग्रन्थाः	५७
१७ धर्मशास्त्र-कर्मकाण्ड-ग्रन्थाः	६९
१८ छन्दः-काव्य-अलङ्कार-चम्पू-ग्रन्थाः	७९
१९ नाट्य-नाटक-ग्रन्थाः	११९
२० संगीत-ग्रन्थाः	१३३
२१ नीति-अर्थशास्त्र-ग्रन्थाः	१३५
२२ कोश-ग्रन्थाः	१४१

विषयाः	पृष्ठाः
२३ कामशास्त्र-ग्रन्थाः	१४७
२४ तन्त्रशास्त्र-ग्रन्थाः	१४८
25 Works by Sir John Woodroffe (Arthur Avalon)	155
२६ वैदिक-ग्रन्थाः	१५५
२७ पाकशास्त्र-ग्रन्थाः	१६६
२८ समालोचनात्मक-इतिहास-ग्रन्थाः	१६६
२९ बौद्ध-ग्रन्थाः	२०२
३० जैन-ग्रन्थाः	२०६
३१ स्तोत्र-माहात्म्य-व्रत-ग्रन्थाः	२०८
३२ प्रकीर्ण-ग्रन्थाः	२११
३३ पं० बलदेव उपाध्याय साहित्य	२२०
३४ नवनालन्दा महाविहार प्रकाशन	२२०
३५ वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के कतिपय प्रकाशन	२२३
३६ हिन्दी साहित्य कुटीर की पुस्तकें	२२५
३७ डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के प्रमुख ग्रन्थ	२२६
३८ वाराणसेय सं० वि० विद्यालय परीक्षोपयोगी पुस्तकें	२२८
३९ कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय की पाठ्य पुस्तकें	२३१
४० हिन्दी साहित्य सम्मेलन परीक्षा की पाठ्य-पुस्तकें	२३४
४१ मिथिलाग्रन्थमाला-ग्रन्थाः	२३७
४२ चिकित्सा-ग्रन्थाः	२४१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

OUR DIFFERENT BRANCHES OF PUBLICATIONS

1. SANSKRIT PUBLICATION
2. ENGLISH PUBLICATION
3. HINDI PUBLICATION
4. MEDICAL (Indian & Western) PUBLICATION
5. MAITHILI PUBLICATION

FOR DIFFERENT BRANCHES OF OUR PUBLICATION CONSULT DETAILS FROM OUR FOLLOWING DIFFERENT SERIES :

1. CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES.
2. CHOWKHAMBA SANSKRIT STUDIES.
3. CHOWKHAMBA RASHTRABHASHA SERIES.
4. BANARAS SANSKRIT SERIES.
5. KASHI SANSKRIT SERIES.
6. HARIDAS SANSKRIT SERIES.
7. VIDYABHAWAN SANSKRIT GRANTHAMALA.
8. VIDYABHAWAN AYURVEDA GRANTHAMALA.
9. VIDYABHAWAN RASHTRABHASHA GRANTHAMALA.
10. VIDYA VILAS GRANTHAMALA.
11. CHOWKHAMBA STOTRA GRANTHAMALA.
12. SRI KRISHNA GRANTHAMALA.
13. MITHILA GRANTHAMALA.

THE

CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

PUBLISHERS

Post Box 8, Varanasi–1 (India) Phone : 3145

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राचीन ग्रन्थों की रक्षा भारतीय संस्कृति की रक्षा है

आदरणीय संस्कृत साहित्यसेवी विद्वानों की सेवा में—

गंगातट पर इस पुनीत काशीपुरी में विक्रम संवत् १९४८ [ई० सन् १८९२] में गोलोकवासी श्रेष्ठिप्रवर श्री हरिदासजी गुप्त द्वारा स्थापित विश्वविख्यात इस संस्था द्वारा निम्नाङ्कित प्राचीन से प्राचीन एवं अर्वाचीन १३ ग्रन्थमालायें प्रकाशित हो रही हैं। यथा :—

(१) चौखम्बा-संस्कृत-ग्रन्थमाला

(२) CHOWKHAMBA SANSKRIT STUDIES

(३) चौखम्बा-राष्ट्रभाषा-ग्रन्थमाला

(४) बनारस-संस्कृत-ग्रन्थमाला

(५) काशी-संस्कृत-ग्रन्थमाला

(६) हरिदास-संस्कृत-ग्रन्थमाला

(७) विद्याभवन-संस्कृत-ग्रन्थमाला

(८) विद्याभवन-आयुर्वेद-ग्रन्थमाला

(९) विद्याभवन-राष्ट्रभाषा-ग्रन्थमाला

(१०) विद्याविलास-ग्रन्थमाला

(११) चौखम्बा-स्तोत्र-ग्रन्थमाला

(१२) श्रीकृष्ण-ग्रन्थमाला

(१३) मिथिला-ग्रन्थमाला

इन ग्रन्थमालाओं में वेद-व्याकरणादि संस्कृत साहित्य एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा आयुर्वेद प्रभृति सभी शास्त्रों के १००० से भी अधिक उत्तमोत्तम ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है तथा निरन्तर हो भी रहा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस संस्था की ख्याति अपने कार्यों से भारत में ही नहीं अपितु चीन-जापान-इङ्गलैण्ड-रूस-अमेरिका-जर्मनी-प्रभृति संपूर्ण विश्व के देशों में भी है। इस संस्था ने भारतीय संस्कृति की सुरक्षा करते हुए संस्कृत वाङ्मय का जो सेवारूपी प्रकाशन कार्य किया है उससे प्रसन्न होकर देश विदेश के महामान्य—

म. म. श्रीगंगाधरशास्त्रीजी सी. आई. ई.	श्री कन्हैयालाल माणिकलालजी मुंशी
" श्रीबापूदेवशास्त्रीजी सी. आई. ई.	" श्रीप्रकाशजी
" श्रीशिवकुमारशास्त्रीजी	" आदित्यनाथ झा जी
" श्रीलक्ष्मणशास्त्रीजी द्रविड	" संपूर्णानन्दजी
" श्रीनित्यानन्दपन्तजी पर्वतीय	" कमलापतिजी त्रिपाठी
" श्रीवामाचरणजी भट्टाचार्य	" आनन्द शंकरजी ध्रुव
" श्रीसुधाकरजी द्विवेदी	" रायबहादुर के. बी. रंगस्वामी अयंगर
" श्रीहरिहरकृपालुजी द्विवेदी	" बाबा राघवदासजी
" श्रीहरप्रसादजी शास्त्री सी. आई. ई.	" ईश्वरीदत्त दौर्गादत्ती शास्त्रीजी
" श्रीगंगानाथजी झा	" सुरेन्द्रनाथ दासजी गुप्त
" श्रीगोपीनाथजी कविराज	" ब्रजविहारीजी चौबे
" श्रीगिरिधरशर्माजी चतुर्वेदी	" डा० हरमन जेकोबी (जर्मनी)
" श्रीनारायणशास्त्रीजी खिस्ते	" डा० वोल्फगंग वायड् (जर्मनी)
आचार्यप्रवर गोस्वामी दामोदरशास्त्रीजी	" डा० के० एल० जानर्ट (जर्मनी)
पण्डितराज श्रीराजेश्वरशास्त्रीजी द्रविड़	" डा० यफ० के० ली० (चीन)
डॉ० एस. राधाकृष्णन् जी	" डा० टुची (इताली)

प्रभृति अनेक उद्भट विद्वानों ने पूर्ण सहयोग दिया एवं भूरि-भूरि प्रशंसा की है,

अतः हम उन सभी भारतीय एवं विदेशी शिक्षाविशारदों, विश्वविद्यालयों, शिक्षणसंस्थाओं, सार्वजनिक तथा राजकीय पुस्तकालयों, धर्माचार्यों, धनी-मानी गृहस्थों, अध्यापकों एवं छात्रगणों तथा व्यापारी वर्ग के, जिन्होंने इस संस्था द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों को अपनाकर हमें सम्मानित तथा साहित्यसेवा के लिए प्रेरित किया है, चिरऋणी हैं तथा भविष्य में भी ऐसी ही कृपा के लिये आशान्वित हैं।

संस्कृत-साहित्य एवं भारतीय संस्कृति के सेवक
चौखम्बा-परिवार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Reception

TO

DR. LUDWICK STERNBACH

Who says *"It is a pleasure for me to be at the Chowkhamba Sanskrit Series Office which has served the cause of Sanskrit learning by publishing many important works, especially those in the Chowkhamba Sanskrit Series. I started my Sanskrit studies in the eastern part of Polland now in Russia and then in Germany, France and America. I taught Sanskrit in several places and then was attached to a few Universities especially to various seminars. Everywhere I felt that Chowkhamba publications were indispensable to such studies. I found Sanskrit Text publications of Chowkhamba to be accurate, almost without mistakes and not like ones published from other places. I thank the management for their courtesy and hearty welcome address."*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

GOVERNOR

UTTAR PRADESH

GOVERNOR'S CAMP,
UTTAR PRADESH.

Lucknow,

April 12, 1962.

I have great pleasure in testifying to the excellence of the work of publication of Sanskrit Series which the famous *'Chowkhamba'* of Varanasi has been doing during the last seventy years. Many eminent scholars of Sanskrit and Indology in India and abroad have commended this noble endeavour in glowing terms. This selfless venture, motivated by pure love of the heritage of Sanskrit learning in the country, was undertaken by *Shri Haridas Gupta* as long ago as 1892 and is being carried on with devotion and enthusiasm by his son *Shri Jaya Krishna Das Gupta.* The Series has over a thousand publications in Sanskrit, Hindi and English to its credit, and recently it has undertaken the stupendous work of publishing **'Sabda Kalpadruma'** and the **'Vachaspatyam'**, both Sanskrit lexicons, which are invaluable additions to any library or centre of learning and culture.

All this noble work has so far been carried on by the family without any assistance from Government. But under present condition, it is difficult to carry on this work without public patronage and Government assistance. There is absolutely no doubt about the value of these publications for the preservation and promotion of Indian culture and learning. I hope the Publishers of this Series will receive every encouragement at the hands of the public as also of the State and Central Governments. I wish the Series every success.

B Ramakrishna Rao

(B. Ramakrishna Rao)
Governor of Uttar Pradesh.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थानाभाव से अनेक सम्मतियों में से केवल एक सम्मति दिग्दर्शन मात्र के लिये प्रकाशित की जा रही है।

'चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला कार्यालय' के संस्थापक स्वर्गीय **बाबू हरिदासजी गुप्त** तथा वर्तमान संचालक **बा० जयकृष्णदासजी गुप्त** एक साधारण पारिवारिक गृहस्थ होते हुए भी आज पचासों वर्ष से प्राचीन से प्राचीन दुष्प्राप्य संस्कृत ग्रन्थों का उद्धारकार्यरूपी प्रकाशन करते चले आ रहे हैं यह सभी विद्यानुरागी सज्जनों को विदित है और इसके लिये इनकी जितनी भी प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

यों तो स्कूली पुस्तक व्यवसायियों की सभी जगह भरमार है परन्तु प्राचीन से प्राचीन ग्रन्थ जो किसी भी परीक्षा आदि में निर्धारित न हों और न जिनके प्रकाशन से अधिक लाभ की कोई संभावना ही हो उन ग्रन्थों का प्रकाशन कार्य इनके ही द्वारा अथवा भारतवर्ष की इनी-गिनी राजसंस्थाओं तथा गवर्नमेंट द्वारा होता है। मगर इनमें भी **'गुप्त'** महोदय की जैसी सच्ची लगन के साथ अनेक प्रकार की आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हुये प्रकाशन कार्य को निरन्तर चलानेवाला किसी को नहीं पाया। काशी की **'पंडित'** तथा **'विजयनगर'** ग्रन्थमाला इन्हीं कारणों से अल्प समय में स्थगित हो गईं।

गुप्त महोदय के निःस्वार्थ प्रेम तथा अटूट परिश्रम के फलस्वरूप ही हम लोगों को संस्कृत साहित्य, दर्शन आदि विविध विषयों के सैकड़ों ग्रन्थ जो लुप्तप्राय थे, देखने को मिल रहे हैं। इनके कार्य की प्रशंसा के लिये इनके द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ ही पर्याप्त प्रमाण हैं।

मगर इतनी बात तो माननी ही होगी कि इस संस्था को जिस प्रकार की सहानुभूति मिलनी चाहिये, नहीं मिली, यह अत्यन्त खेद का विषय है। अस्तु, संस्कृतानुरागी सभी आचार्यों, साधु-महन्तों, विद्वानों तथा राजा-महाराजा एवं धनीमानी दानी सज्जनों, अध्यापकों तथा सभी गवर्नमेंट व सार्वजनिक संस्थाओं का पूर्ण कर्तव्य है कि वे अब भी इनके द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों को अधिकाधिक मात्रा में खरीद कर तथा अन्य प्रकार से भी इनकी सहायता करें जिससे ये और भी उत्साह तथा प्रेम के साथ अधिक से अधिक ग्रन्थों का प्रकाशन कर सुरभारती की सेवा करते रहें।

म० म० पण्डित गोपीनाथ कविराज,
एम० ए० डी० लिट्०,
सुपरिंटेण्डेण्ट आफ संस्कृत स्टडीज़, उत्तरप्रदेश।

संवत् २०१४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Presentation Ceremony

of

SHABDA-KALPADRUM

The President remarked that the 'Chowkhamba' Publications have made immortal contribution in the field of Sanskrit, and, therefore, their endeavour deserves highest appreciation.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Presentation Ceremony

Of

VACHASPATYAM

Dr. S. Radhakrishnan, *President of India remarked that it is a remarkable achievement of the publishers. It is a monumental and appreciable work and such works were needed for the propagation of Sanskrit. President further appreciated the bold step taken by the publishers and appreciated the work done by the 'Chowkhamba Series' during the past 70 years. He advised 'Chowkhamba' to publish more and more books in Sanskrit to enrich the literature.*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्कः ९३)

राजा राधाकान्तदेव विरचितः

शब्दकल्पद्रुमः

(बृहत् संस्कृताभिधानग्रन्थः)

आकार—डिमाई ४ पेजी, पृष्ठ संख्या ३२१८

संपूर्ण ग्रन्थ १–५ भाग तृतीय संस्करण १५०–००

(चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्कः ९४)

तर्कवाचस्पति श्रीतारानाथ भट्टाचार्येण संकलितं

वाचस्पत्यम्

(बृहत् संस्कृताभिधानग्रन्थः)

आकार-डिमाई ४ पेजी, पृष्ठ संख्या ५५००,
संपूर्ण ग्रन्थ कपड़े की पक्की ६ जिल्दों में

रियायती मूल्य २७५–००

डा० राजेन्द्र प्रसाद जी, प्रथम राष्ट्रपति, भारतीय गणतन्त्र :

'यह जानकर वास्तव में बड़ी प्रसन्नता हुई कि 'शब्दकल्पद्रुम' तथा 'वाचस्पत्यम्' दोनों ग्रन्थ संपूर्ण 'चौखम्बा सीरीज' में प्रकाशित हो गए। इससे निश्चय ही संस्कृत साहित्य समृद्ध हुआ है। ऐसे शुभ कार्य के लिए आपको मेरे हार्दिक धन्यवाद !'

(चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्कः १०१)

शब्दस्तोममहानिधिः

श्रीतर्कवाचस्पति-तारानाथ-भट्टाचार्य-विरचितः

आकार-डिमाई ४ पेजी, पृष्ठ संख्या ५३२

प्रायः एक शताब्दी से दुर्लभ यह ग्रन्थरत्न संस्कृत का उत्तम कोशग्रन्थ है। इसमें संस्कृत के प्रायः सभी शब्दों के पर्यायों के साथ आवश्यक व्युत्पत्ति-विवरण-धातु-प्रत्यय, विग्रहवाक्यादि, प्रयोगस्थल आदि—भी दिए गए हैं। विवरण संक्षिप्त होने से बहुसंख्यक शब्दों का समावेश हो गया है। संस्कृत भाषा के प्रचार एवं प्रसार कार्य में इस कोश का प्रथम स्थान है। **मूल्य ४५–००**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्कः ९९)

ऋग्वेद संहिता

सायणभाष्य सहित

सम्पादक : भट्ट मोक्ष मूलर

आकार—डिमाई ४ पेजी पृष्ठ संख्या ३६०० भाग १–४ मूल्य १४०–००

ऋग्वेद का प्रस्तुत संस्करण अब तक के छपे अन्य संस्करणों की अपेक्षा सर्वाधिक प्रामाणिक माना गया है। इसके प्रख्यात सम्पादक ने अपने जीवन का अधिकांश समय इसे पूर्ण करने में ही व्यतीत किया जिसके कारण यह संस्करण आज भी अद्वितीय माना जाता है। इसके बाद छपे सभी अन्य संस्करण प्रायः पूर्णतया इसी पर आधारित हैं। इधर अनेक वर्षों से यह सर्वथा दुष्प्राप्य था। अतः चार भागों में छपे मूल संस्करण के आधार पर फोटो आफ सेट पद्धति से इसका नवीन संस्करण अत्युत्तम विदेशी (जर्मनी) टिकाऊ कागज पर मुद्रित कराकर इस संस्था द्वारा प्रस्तुत किया गया है जिससे इसकी दुष्प्राप्यता दूर होकर प्रत्येक वैदिक विद्वान् इसे सुलभ मूल्य में प्राप्त कर अपनी आकांक्षा पूर्ण कर सके।

(चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्कः ९६)

श्रीशुक्लयजुर्वेदे

शतपथब्राह्मणम्

श्रीमत्सायणाचार्यहरिस्वामिद्विवेदगङ्गकृत-

भाष्येभ्यः सारमुद्धृत्य

डा० अल्बेर्तेन वेबेरेण शोधितम्

संपूर्ण ग्रन्थ डिमाई ४ पेजी पृष्ठ संख्या १२१०

मूल्य रु० १००–००

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. XIII)

ENGLISH-SANSKRIT DICTIONARY

By

Monier Williams

Sturdy & Cloth-bound Big Size, Double Demy octavo pp. 850.

Price : Library Edition Rs. 75–00. Cheap Edition Rs. 32–00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Our Some Important Publications of 1969

1 Abhijnanasakuntala : A Study. By Sri Kasinatha Dvivedi, M. A. 4-00

2 Bharatiya Darsana Men Cetana Ka Svarupa. (Nature of Consciousness in Indian Philosophy.) By Dr. S. K. Saksena M. A., Ph. D. 10-00

3 Bharatiya Jivanu Vijnana. (The Science of Indian Germstheory.) By Sri Raghuvira Sarana Sarma, Vaidya (D. S. C. A.) 2-50

4 Bhava Prakasa Nighantu. (Indian Materia Medica.) of Sri Bhavamisra. (C. 1500-1600 A. D.). Hindi commentary by K. C. Chunekar, A. M. S. Edited by G. S. Pandey, A. M. S. 12-00

5 Buddhist-Logic. By F. Th. Stcherbatsky. Hindi Translation by Dr. Ramkumar Rai. Vol. I. 30-00

6 Dasa-Rupaka of Dhananjaya. With the Dasarupavaloka Commentary by Dhanika and English Translation. Notes etc. By Jagad-Guru Acharya Sri Charanatirtha Maharaj. Chapter I. Second Edition Thoroughly Revised. 12-00

7 Gouridigambaraprahasanam of Sri Sankara Misra. Edited with the 'Prakasa' Hindi Commentary by Sri Tarinisa Jha. 1-25

8 Karakadarsana. (The Karaka Poriton of the Siddhanta Kaumudi). An Authoritative Study of Sanskrit Syntax by Dr. Kalanatha Jha. 4-00

9 Lalita Madhava-Nataka of Sri Rupa Gosvamin. With the Commentary of Narayana. Edited with Introduction and critical notes by Prof. Babulal Sukla Sastri, M. A., Sahityacharya. With a Foreword by Dr. Rasika Bihari Joshi, M. A., D. Litt. 15-00

10 Pallava Itihasa Aura Usaki Adhara Samagri. (A History of the Pallavas and its Sources.) By Dr. Balarama Srivastava M. A., LL. B., Ph. D. Sahityaratna. 6-00

11 Paninikalina Bharatavarsa. (A Study of the Cultural Material in Panini's Astadhyayi.) By Vasudeva Sarana Agrawala. 20-00

12 Pauranika Akhyana. (A Selection of Mythological Stories.) By Dr. Ganga Sagar Rai, M. A., Ph. D. 2-0

13 Pracandapandava Nataka of Sri Rajasekhara. Edited with the 'Prakasa' Hindi Commentary and Critical Notes by Dr. Sri Haridatta Sastri, M. A., Ph. D. 2-00

14 Puspabanavilas of Mahakavi Kalidasa. With 'Prakasa' Sanskrit-Hindi Commentaries by Sri Pt. Somanath Sastri. Edited by Sri Satkari Mukhopadhyaya. 1-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

15 Raghavanaisadhiyam of Sri Haradattasuri. Edited by the 'Vimarsini' and the 'Prakasa' Hindi Commentaries by Sri Pt. Ramakuber Malaviya M. A., Sahitya Vyakarana Shastracharya. 3-00

16 Samkhya-Sangraha. A Collection of nine works on the Samkhya Philosophy, viz. Samkhyatattva-vivecana of Sri Simananda (Ksemendra), Samkhyatattvayathartthyadipana of Sri Bhavaganesa, Sarvopakarini Commentary on the Sutras of Kapila, Samkhya Sutravivarana, Tattva Samasasutravritti, Samkhyarthatattvapradipika, Samkhyatattvapradipa of Kavirajayati, Tattvamimamsa of Acarya Krisna Misra and Samkhyaparibhasa. Edited by M. M. Vindhyesvari Prasada Dvivedi. With an Introduction by Sri Satkari Sarma Vangiya. 12-00

17 Samskrita Sahitya Men Nitikatha Ka Udgama Evam Vikasa. (Origin and Development of Fables in Sanskrit Literature.) By Dr. Prabhakara Narayana Kavathekara M. A., Ph. D., Sahityacarya. 20-00

18 Tarkasamgraha of Annambhatta. With Nyayabodhini of Govardhana Misra, Vakyavritti of Meru Sastri, Nirukti of Jagannatha Sastri, Pattabhiramatippani of Pattabhirama Sastri and Tarkasamgrahadipika of the Author with Ramarudriya of Ramarudra, Nrisimhaprakasika of Raya Narasimha Sastri, Nilakanthaprakasika of Nilakantha Sastri and Pattabhiramaprakasika of Pattabhirama Sastri. Edited by Sri Satkari Sarma Vangiya. 2-50

19 Vag-Vijnana. (A Comprehensive Study in Linguistics.) By Acharya Pandit Sri Sitaram Chaturvedi. 20-00

20 Vaisesikadarsana of Maharsi Kanada. With the 'Prakasa' Hindi Commentary by Sri Narayana Misra. 3-00

21 Vaiyakaranabhusanasara of Sri Kaundabhatta. Edited with 'Prabha' Commentary by Pt. Sri Balakrisna Pancholi, Vyakaranacharya and with 'Darpana' Commentary by Sri Harivallabha Sastri. 20-00

22 Vaiyakarana - Siddhanta - Kaumudi by Sri Bhattoji Diksita. Edited with 'Ratnaprabha' Hindi Commentary by Pt. Sri Balakrisna Pancholi, Vyakaranacharya. Vol. I. Up to the end of Karakaprakarana. 9-00

23 Vikranta-Kaurava of Kavivara Hastimalla. Edited with 'Prakasa' Hindi Commentary by Sri Pannalal Jain. 6-00

24 Dr. Satkari Mookerji Felicitation Volume. Edited by Dr. S. Bhattacharya etc., 90-00

25 Yuganaddha. The Tantric View of Life. By Herbert V. Guenther, Ph. D. Second edition Revised. 16-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

INSCRIPTIONS OF AŚOKA

By

Naresh Prasad Rastogi

From the time of their discovery the edicts of Aśoka have been a perennial source of inspiration to the scholars of Indology. Good editions of the epigraphs along with their translations in various languages are available in the market but none of them are up-to-date and complete in all respects.

At present there was a great necessity of a fresh study of the Edicts even after the monumental work of Hultzsch. Mr. Rastogi's work contains the text of all the versions of the epigraphs discovered till the recent past based on the first hand study of the original inscriptions with philologically sound Sanskrit rendering (*chāyā*), English and Hindi translations with a separate commentary on the important Aśokan words and their annotation. A very exhaustive introduction with separate chapters on Paleography and Philology enhance the value of the work.

Erragudi, Bowl and Amarpuri (Delhi) inscriptions with their text and translations and Greco-Aramaic versions have been dealt with for the first time in this book.

The approach of the author is thoroughly original though he reverentially judges the views of all the byegone scholars in this field. Approximately 100 plates (in big size) of the Aśokan epigraphs from the best ink estampages have been included.

The above work has been critically appreciated by many distinguished scholars of East and West.

Price Deluxe Edition Rs. 150–00
U. S. $ 25. 00
U. K. £ 10/–

Price Library Edition Rs. 100–00
U. S. $ 16. 00
U. K. £ 7/–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. LXIX)

DR. SATAKARI MOOKERJI FELICITATION VOLUME

Edited by

A Board of Scholars

A Scholarly Felicitation to a Renowned Scholar

Royal 8vo. pp. 780 1969 Rs. 90-00

This Felicitation volume published under the editorship of a Board of eminent scholars comprises more than sixty learned articles both critical and reflective on Buddhism, Jainism, Various branches of Indian Philosophy, History, etc. etc. by renowned scholars like Prof. P. V. Bapat, Mm. Dr. V. V. Mirashi, Dr. K. K. Dutta, Dr. C. S. Upasak, Dr. D. C. Sircar, etc. It covers a wide field of Indological studies; besides, some articles published in this volume illumine quite a few problems of the day.

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. III)

YUGANADDHA

(The Tantric View of Life)

By

Herbert V. Guenther, Ph. D.

Second edition thoroughly revised.

Demy 8vo. iv+218. 1969. Rs. 16-00

YUGANADDHA is the central problem in the Buddhist Tantra. It is essentially a psychological problem, while the philosophical implication is more or less accidental. This book is based exclusively on the original texts and their symbolism is revealed with their ramifications into the world of matter and mind. For the first time, the Buddhist tantras have found a psychological interpretation not merely from a theoretical point of view, but what is more, from their practical aspect also. Fortunately, this interpretation comes from an author, who is, besides being a savant of breath-taking versatility, a master of languages involved in such a study, a psychologist, and over and above, a sādhaka himself initiated into the Buddhist order. The second edition incorporates all the materials available from upto date research in the field.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. LXIII)

THE DHVANI THEORY IN SANSKRIT POETICS

Prof. Mukunda Madhav Sarma

Demy 8vo. xxiv+288. 1968. Rs. 25-00

It can safely be said that the science of poetics reached its culmination in the theory of Dhvani (resonance) first so nicely propounded by the celebrated Indian Rhetorician ANANDA-VARDHANA and then so magnificently explained and elaborated by his successor ABHINAVA GUPTA. The theories forwarded by other Ālaṅkārikas to refute the former are also not less interesting and intelligent. The learned author of the present work, has very ably brought into the compass of one single handy volume written in lucid beautiful English, authenticated with apt quotations from the original sources and their faithful expositions, all the essence of such a vast literature developed in this wide country, by her most intelligent writers, during several centuries.

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. LXV)

A COMPARATIVE STUDY OF THE CONCEPTS OF SPACE AND TIME IN INDIAN THOUGHT

Dr. Kumar Kishore Mandal

Demy 8vo. xxii+223. 1968. Rs. 20-00

Time and Space are two fundamental data of science and philosophy. There is of course, grave difference of opinion among philosophers regarding the reality of these two entities. The arguments and counter-arguments put forward by the exponents of various schools of thought really form a labyrinth from which it is difficult to come out. The learned author has endeavoured to give a survey of their arguments and conclusions and the present work is the outcome of his hard labour of intensive study of original texts carried on for several years. The speciality of his work lies in the fact that it gives a survey of the views and the opinions of different philosophers beginning from the dawn of the first speculation in the Vedic period down to the recentest theories of scientific philosophers.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. LXVIII)

THE PAÑCASIDDHĀNTIKĀ

The Astronomical Work

of

VARĀHA MIHIRA

The Text edited with an original commentary in Sanskrit, an English Translation and an Introduction

By

G. Thibaut, Ph. D.

and

Mm. Sudhakara Dvivedi

Demy 8vo. lxii+110+106. 1968. Rs. 25–00

Varāha Mihira, the celebrated astronomer of India commands an unique place as he was able to offer in the present work Pañcasiddhāntikā an impartial and scientific exposition of all the more important forms of astronomical doctrines which were current in his time.

The above importance of the author and the work in the Study of Indian Astronomy, led Dr. G. Thibaut to publish an edition of the said work. His edition containing a well edited Text, a Sanskrit Commentary by Mm. Sudhakara Dvivedi, English Translation, and exhaustive Introduction embodies the products of both German Industry and the thoroughness of Indian brain in the field of learning.

VARADAMBIKĀ-PARINAYA-CAMPŪ

OF

QUEEN TIRUMALĀMBĀ

Edited with English Translation and Notes

By

Dr. Suryakant Sastri

The above-named Campu is a mediaeval Sanskrit romance based on a semi-historical theme by one south-Indian poetess, unfortunately not much known to northern India. It is a beautiful piece of Campū literature appreciable for its lucid but elegant style. Present edition contains an English Translation for the First time. Accompanying notes will facilitate readers to enjoy the text more closely and to study the text most critically. Rs.20–00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

PURANA PANCALAKSANA

Edited By

W. Kirfel.

Rendered into Devanāgarī Script with an English Translation of the German Introduction

By

Dr. Suryakant

The present work is the result of a long and endearing research work of a renowned German scholar in the vast literature of the Purāṇas. The original edition being printed in Roman characters, and the exhaustive scholarly Introduction being in German language, such an important work could not be much utilised by most of the Indian Scholars. So the present editor has prepared this Devanāgarī edition which will be, it is hoped, of imense help to Indian scholars engaged in research works in the Puranic literature. Shortly

(Kashi Sanskrit Series No. 186)

DAS'ARUPAKA

OF

Dhananjaya

With the Daśarūpāvaloka Commentary of Dhanika
Edited and elucidated in English

By

Srimad Jagadguru Charanatirthaji

CHAPTER I

Demy 8vo. xviii+130. Second revised edition. 1969. Rs. 12-00

The Daśarūpaka of Dhanañjaya commands a very important place in the study of Hindu dramaturgy and poetics. Its popularity is very well proved by its various editions during the last one hundred years. The present edition can claim to be the best of all previous editions as it contains the famous Sanskrit Commentary of Dhanika and exhaustive exposition in lucid English of both the text and the commentary. An exhaustive Introduction in Sanskrit has enhanced the value of the revised edition.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. LXI)

KĀLIDĀSA KOSA

By

Prof. S. C. Banerji

Demy 8vo. xxii+85. 1968. Rs. 15-00

This interesting work is a cyclopaedic Index of all the Zoological, Botanical, Geographical and other terms used by Kālidāsa. The author has spared no pain to select, arrange and explain those terms noting the references to the places of their occurrence in Kālidāsa's works. In every case he gives their technical names (Latin names) as used by modern scientists and quotes modern authorities as well. In this handy volume the interested reader may find how many Sanskrit names of lotus or water lily have been used by Kālidāsa, what is the botanical name of *Kurabaka* or the zoological term for *cakora*, etc. etc. Such an informative and interesting work must be consulted by every student of Sanskrit literature.

KĀLIDĀSA APOCRYPHA

By

Sures Chandra Banerji

Quite a number of works other than the famous plays and poems, are traditionally attributed to the name of Kālidāsa. No systematic and serious attempt has so far been made to study the Kālidāsa Apocrypha and the authorship of those works. The present work is a study of the problem, as exhaustive as the available materials permit. Of the works those are not sure to be from the pen of the master-poet a brief re'sume' of contents has been given stating the reasons against Kālidāsa's authorship. And, of those works whose authorship is doubtful, account of contents have been followed by respective texts with variants and English Translation of such poetical works. This work will, it is hoped, be a valuable and unique contribution to the existing literature on Kālidāsa.

Shortly

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. LXII)

THE AESTHETIC EXPERIENCE ACCORDING TO ABHINAVAGUPTA

By

Raniero Gnoli.

Second Edition Revised, Enlarged and Re-elaborated.
Royal 8vo. lii+126. 1968. Rs. 45-00

Bharata, in his famous aphorism *'vibhāvānubhāva-vyabhicāri-saṃyogād rasaniṣpattiḥ'* explains the way in which the Aesthetic experience originates and the Commentary thereupon by Abhinavagupta constitutes the most important text in the whole of Indian aesthetic thought. This important portion of the Commentary has very ably been edited, translated, commented upon and elucidated by Dr. Raniero Gnoli of Rome. The learned introduction contains all possible informations regarding various Indian and western theories on aesthetic experience and in the copious notes the readers will find authentic materials quoted from numerous allied texts in justification of the interpretation of the difficult passages.

*AN INTERPRETATIVE STUDY OF KĀLIDĀSA

By

Dr. Dimbeswar Sarma, M. A., D. Phil.

Royal 8vo. pp. xviii+384. 1968. Rs. 30-00

The interpretations many European scholars have so far given to our ancient literature have tended to the growth of diverse feelings instead of inspiring us with a national ideal. So it is quite in the fitness of things that modern Indian scholars well-equipped with the western method of critical research work and Indian intensity of learning would come forward to interpret our national literary treasures in the true spirit. All conscientious readers will find a fulfilment of this desideratum in the present work where the learned author has treated all the Kālidāsa's works in a wonderful manner. All students of Indian literature will find it immensely interesting and, at the same time, informative.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. LXVI)

HYMNS OF THE ATHARVAVEDA

(Translated into English with a Popular Commentary)

By

Ralph T. H. Griffith

Demy 8vo. 2 Vols. Complete. xviii+1020. 1968. Rs. 40-00

While the Ṛgveda contains the ancient most religious writings of mankind and reveals various aspects of the life and culture of Aryan people, the Atharvaveda contains interesting and important records regarding the popular beliefs, folk-religion and elements of ancient thinking in medical science.

The present work is an attempt to bring within the easy reach of English knowing readers who are not much accustomed with Vedic Sanskrit, a faithful English translation of the Atharvaveda, mostly based on the commentary of Sayanacharya.

KAUTILYA'S POLITICAL IDEAS AND INSTITUTIONS

(A Study in Ancient Indian Polity)

Prof. Radhakrishna Choudhary

The *Arthashastra* of Kautilya represents a definite stage in the history of Indian political thought. Inspite of so much importance, Arthashastra of Kautilya is a very difficult work, and more so to the average readers. Even good translations prepared by renowned scholars are of little help to understand it. Taking these difficulties into consideration and noticing the ever increasing interest in its study of the educated public, the author has prepared this beautiful treatise which will make the ordinary readers acquainted with the political ideas of the great Indian thinker. R. 25-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

THE POLITICAL AND SOCIO-RELIGIOUS CONDITION OF BIHAR

(185 B. C. to 319 A. D.)

Dr. Hari Kishore Prasad

Our knowledge of the history of the period between the fall of the Mauryan Empire and the rise of the Imperial Guptas, is of a very limited character. Naturally, a detailed and comprehensive history of Bihar for the period did not exist. The learned author of the present work has, therefore, endeavoured to present before the students of history a connected record of that period. His thinking is independent and he has very ably discussed knotty problems as the relation of Pusyamitra Sunga with the Buddhists, whether Pusyamitra was a Sunga, etc., etc. He has reconstructed for the first time the history of the revival and development of Brahmanical religion in the period. Every student of Indian history will be much benefitted from this work.

Shortly

HISTORY OF MUSLIM RULE IN TIRHUT

(1206–1765 A. D.)

Prof. Radhakrishna Choudhary

The broad outlines of the central administration of Muslim rulers of India are now not unknown to us, but we really know very little of the detailed political and social history of the *provinces* during that period and of the interesting tale of changes of power which took place very frequently. It is certainly interesting to note that Mithilā was the only country in North-eastern India having an independent Hindu kingdom, though surrounded on all sides, by muslim powers. Prof. Choudhary has laboured much to record the obscure history of muslim rule in Tirhut. His statements are factual, not conjectural and based on rare but trustworthy materials, his jugdements are unprejudiced and rational, and his diction is lucid and combined with literary flavour.

Rs.20–00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

MITHILA IN THE AGE OF VIDYAPATI

(C. 1330–1525 A. D. : A Study in Cultural History)

Prof. Radhakrishna Choudhary

Prof. Choudhary, the author of the present work can surely claim an unprecedented originality in his skill of reconstructing the cultural history of a nation from its literary records. With this particular angle of vision he has made a thorough study of the poems of Vidyāpati. The readers will find, with interest and admiration, in the present volume a very detailed description of every-day life of the Maithila people of the middle ages; their food habits, dresses, religious beliefs and superstitions, joys and sorrows of the womenfolk, social institutions, customs and manners etc. etc., as depicted by Vidyāpati. This study is as interesting as a novel, being at the same time authentic with references to the original sources. Shortly

THE LICCHAVIS

(OF VAIŚĀLĪ)

By

Dr. Hit Narayan Jha

Although the Licchavis played a dominant role in the political and cultural life of Ancient India and Nepal, they have not been provided with the deserving place in History. Hence, a connected history based on solid grounds prepared from epigraphic and numismatic materials and supported by literary and foreign accounts was a great desideratum. An endeavour has, therefore, been made in the present work to utilise critically all the available materials, especially the epigraphs most of which have been discovered in the Kathmandu valley and to reconstruct the whole history with special attention to social, religious and economic life of the people of Nepal under the Licchavis, position of women, education, religious activities, agriculture, industry, wages, trade, coinage, etc. etc. Shortly

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

THE ARCHAEOLOGY OF KUMAON

(Including Dehradun)

Dr. K. P. Nautiyal

Physically, Kumaon occupies the extreme north-west corner of Northern India. This part of our mother land, though not much known to the rest, is one whole political and cultural entity. Unfortunately, the history of this region, not being properly and laboriously studied by able historians, remains nothing more than a pack of disjointed facts; the actual records are sporadic and the early part of the history is yet a vexed problem. The learned author of this work has, however, spared no pain to examine all available materials and to exploit every possible sources to reconstruct the political and cultural history, as well as to offer a systematic and scientific study of the archaeology of this region. His treatment of the subject is based on first hand knowledge of epigraphic and architectural materials. Shortly

A STUDY OF HINDU ART AND ARCHITECTURE

With Special Reference to Terminology

Lalit Kumar Sukla

Much has been studied and written in both East and West on the monuments of Art and Architecture still existent in India, but very little has been done to study the theoretical principles on which such a great tradition of practical art was based. The present author endeavours here to present a systematic study of such theoretical records, on the basis of his original researches into the most difficult treatises as "Māna Sāra," "Samarāṅgaṇa Sūtradhāra," "Aparājita Pṛcchā," etc. The present work which explains almost every technical term used in those works, can be deemed as an Encyclopaedia of Ancient Indian Art and Architecture. Shortly

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CHARAKA SAMHITA

(Text in Sanskrit with A New English Translation)

By

Dr. Ramkaran Sarma

and

Dr. Bhagavan Das

The Charaka Samhita occupies a very important place in the History of world's medical science. But this work is quite difficult to understand to those who are not well accustomed with the particular style of Sanskrit in which it is written. Hence an authentic translation was a desideratum.

The present Translation is not only the result of painful labour of two renowned scholars, but it comprises valuable extracts from the famous Commentary of Chakrapanidatta, rendered into English. **Sutra Sthana** In the Press

Rest Shortly

CONCEPTS OF AGNI IN AYURVEDA

With

Special reference to Agnibala Parīkṣā

Dr. Bhagavan Das

The concepts of 'Agni' i.e., the latent heat in the human physique occupies a very important place in the medical literature in India. The ancient authors and the compilers of medical treatises of India had never failed to judge 'Agni' with all its importance and bearings on the system of diagonizing the various diseases and their remedy. Their discussions at places go far beyond the limited scope of medical science and become philosophical. The present author, critically examines the concepts in the back ground of Indian philosophies who accept Agni as one of the primary elements of the universe, and in the light of modern scientific researches as well. He explains his subject matter very exhaustively with the help of many diagrams and charts. **Shortly**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

KĀVYA-PRAKĀS'A OF MAMMAṬA-BHAṬṬA

With

The Critically edited Commentary

"RASA–PRAKĀŚA" of Śrī Śrikṛṣṇa Śarman,

An Introduction to Indian Literary criticism of

'The Scholastic School'

and the critical exposition of the Text in English.

Edited by

Dr. S. N. Sastri,

M. A., B. T., Ph. D., Sāhitya-Śāstrī, Kāvya-Vyākaraṇa-Tīrtha ;

Editor, Sanskrit, MSS. Deptt of Sanskrit, Pali & Prakrit,

Visva-Bharati University, Santiniketan, West Bengal.

Vol. I. Chapters I—V.

1 The Rasa-Prakāśa is a very rare commentary on the Kāvya-Prakāśa, 'less-known' ere-while by the Scholars, and edited critically with the help of some rare variants, deposited in the different MSS. Libraries in India & abroad.

2 It is a commentary on the commentaries on the Kāvya-Prakāśa, written during the mediaeval period in Kāśī, Mithilā, Navadvīpa & Kaliṅga.

3 It re-estimates the views of the eminent critics, particularly of Viśvanātha, Śrīdhara, Caṇḍīdāsa, Paramānanda, Govinda Ṭhakkura, Haridāsa, Maheśvara & Jagannātha on the Kāvya-Prakāśa.

4 It claims to have been composed impartially and exclusively on the author's own maxim—"Pratya-bhijñā philosophy of the Kasmira-Saivism",—"इति मामकीनो निष्परिपन्थी रसग्रन्थाशयप्रकाशकः पन्थाः"

5 The Introduction reveals some unknown data—that indicate a new turn to the history of Indian Literary criticism.

6 It attempts to solve some century old problems on the Kāvya-Prakāśa, its popular commentaries & their authors.

7 The critical exposition of the Text in English adds a new strain to the study in Indian Aesthetics and Literary criticism and offers best service to the students of Indology in India and abroad.

In the Press

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

A COMPARATIVE STUDY OF THE VAIDIK HYMNS

By

Dr. Munshi Ram Sharma

The Veda has been acknowledged as the oldest literature of the Aryan Race, nay of the mankind. But it should be borne in mind that the oldest as it is, it is not outdated, because it is the living spirit that still regulates the religious and cultural life of this vast subcontinent. During the last one and a half centuries much has been written on the Vedas by modern scholars of eminence, both Indian and Western but we are afraid that very little of the spirit of that ever-living divine literature has been revealed to the modern mind. The present work is a successful attempt to meet that desideratum in which both devotion and critical outlook have been displayed. The Judgements of the renowned scholar as expressed herein are unbiased and impartial but his out look is thoroughly Indian. In the Press

JIVA GOSVAMI'S RELIGION OF DEVOTION AND LOVE

(Bengal Vaiṣṇavism)

By

Dr. Jadunath Sinha

This book gives a comprehensive and objective account of Jīva Gosvāmī's religion of devotion (*Bhaktisandarbha* and *Prītisandarbha* parts of his ṢAṬASANDARBHA). It deals with the nature, kinds and conditions of devotion and devotional love, their relation to knowledge, works, meditation, virtues, sins and potencies of actions, the nature and kinds of release, the relation of devotional love to release *(mokṣa)* the grace of God, the internal and external experience of God, the realization of the finite self, Brahman, Paramātman and Bhāgavata.

This work will be of great help to all scholars interested in the comparative religion to find a clue to the harmony of all living religions. It will help them make a right appraisal of Hinduism as pure monotheism and monism with a blend of polytheism as a concession to the common people of pictorial imagination, who are incapable of abstract thought. In the Press

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

SVĀMĪ VIVEKĀNANDACARITAMAHĀKĀVYA

By

Prof. T. A. Bhandarkar

Svāmi Vivekānanda the greatest religious leader of the 19th century is one of the makers of modern India. His eventful life and the outlines of his religious and social philosophy have been very ably dealt with in this Sanskrit epic of eighteen cantoes. The grace of the language and the charming diction are simply superb. Nearly 33 different classical metres have been used in the poem. It is a successful work as a poem and as a biography in Sanskrit, of a great man who was a great lover of Sanskrit. Shortly

* RASACANDRIKĀ OF MADHUSŪDANA KAVINDRA

Studies in

DIVINE ÆSTHETICS

By

Dr. S. N. Ghosal Sastri

Royal 8 vo. pp. 18+lxvi+214. Vol. I. Rs. 26-00

The Rasacandrikā of Kavindra Madhusūdana, being a Sanskrit rendering of Rasikapriyā of Kavindra Keśavadāsa has acquired the distinction of classic in the sphere of "Divine Aesthetics." It embodies the idea of Erotics being the supreme rasa (*ādya eva paro rasaḥ*) but significantly enough, that does not imply any repudiation of other rasas. Kavindra Madhusūdana's achievement is distinctive in the sense that as leading exponent of the new thinking he seeks to harmonize it with the old one.

The work is now presented for the first time critically edited with a short commentary in Sanskrit and an exhaustive Introduction in English dealing in full details with the aesthetic philosophy contained and expounded in the original work.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CANDRAGUPTA II VIKRAMĀDITYA

By

Dr. Raj Bali Pandey

In the galaxy of the great rulers of ancient India, Candragupta II Vikramāditya occupied a prominent position. His role in the expansion and completion of the Gupta empire, the establishment of an ideal system of administration of the Gupta age—the golden Age of India was of exceptional merits. He was, however, unfortunate in one respect, i.e., he had no court poet like Bāṇa to write his personal life. Materials to reconstruct his biography is also very meagre. The present work presents a connected biography of that emperor on the basis of all available materials and it comes from a scholar who needs no fresh introduction. Shortly

THE CULT OF BRAHMĀ

By

Dr. Tarapada Bhattacharya

Second edition thoroughly revised

Modern research has brought to light many aspects of ancient Indian History and culture, but the origin and development of ancient Indian religion or religions and the relation among the apparently diverse religions have been very little studied, more so by an Indian scholar. The present work presents a very exhaustive and intensive study of that aspect of ancient Indian life. It reveals the origin, development and decay of the cult of Brahmā, as found in the original sources. This work reconstructs a connected history of Indian religions and very ably removes many wide-spread mis-understandings. The originality of the research is unique and the outlook of the author is thoroughly unbiased and scientific. 25-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

A CRITICAL STUDY OF SANSKRIT PHONETICS

By

Dr. Vidhata Mishra

The aim of this work is to present a phonetic experiment of Sanskrit Language. For the convenience of the study the whole work has been split into three parts. The introduction gives a brief history of phonetics in Sanskrit and its contribution to the study of modern phonetics. Later the description and analysis of Sanskrit sounds and the technical terms of Sanskrit Phonology have been dealt with. Other parts of the work presents a systematic study, ever unattempted of the process of speech production and the classification of sounds, the varnas, the feature of Sandhi or enphonic changes, the syllabic structure, duration and accentuation. In the Press

MEGHADUTAM

OF

KALIDASA

With the Kātyāyanī Sanskrit Commentary and English Translation

By

Acharya Sri Charanatirthaji Maharaj of Bhuvaneswari Pitha.

The Meghadūta of Kālidāsa needs no fresh introduction. It is a *classic* to the true sense of the term, it never looses its apeals to the *Sahṛdayas* as it finds host of Commentators and interpreters in every century, nay in every decade. Here it is again presented along with a very easy and lucid Sanskrit Commentary and a very faithful but elegant English translation by a scholar who is equally at home in Sanskrit and English, in Sāhitya and Cikitsā, in *belles letters* and spiritual philosophy. The Sanskrit commentary will help the reader understand the original word for word and the translation will enable him to grasp the spirit of the poem to its entirety. In the Press

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

LIFE IN MEDIAEVAL ORRISSA

(Cir. A. D. 600–1200)

By

Dr. Ayodhya Prasad Sah

Orissa does not have the fortune of possessing such books as to be utilised for writing the history. So very few scholars have so far attempted to reconstruct a connected history of the people of the mediaeval period. The present work is, therefore a valuable and welcome contribution to the study of Orissan cultural history, based primarily on various inscriptions found in Orissa and secondarily on other sources as literature, etc.

In the Press.

VYĀSASUBHĀSITASAṀGRAHA

Critically edited for the first time

By

Dr. Ludwick Sternbach

The Vyāsasubhāṣita or Vyāsaśataka is a completely unknown Subhāṣita-saṁgraha; it is not mentioned in Aufrecht's *Catalogus Catalogorum*. It was well-known in Ceylon. It is, as most Sanskrit Subhāṣita-saṁgrahas are, an anthology of maxims dealing with different aspects of life and ethics of the Hindus.

This important anthology is now critically edited on the basis of all primary and ancillary sources, by a renowned western scholar and presented to the reading public. 10–00

ŚRĪ BHAGAVATPĀDA ŚAṄKARĀCĀRYA

By

A. Kuppuswami

Śaṅkarācārya, the great exponent of the Vedantic monism is rightly considered to be one of three great philosophers of the world. His works form the most important part of the philosophical and devotional literature of India. But it was unfortunate that authentic biography of this great ācārya was not so far available. The present work is an attempt to reconstruct much a biography on the basis of all the available materials in print and manuscripts diligently scrutinized with an impartial and unbiased out look. Shortly

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नवीन–

अनुवादचन्द्रिका

डॉ० रमाकान्त त्रिपाठी

अब तक के प्रकाशित अनुवादोपयोगी ग्रन्थों में यह संस्करण सर्वोपरि है। इसमें अनुवाद करने के नियम नवीन वैज्ञानिक ढंग से समझाये गये हैं और तदनुरूप अनुवादार्थ अभ्यास भी दिये गये हैं। संपूर्ण ग्रन्थ के १ से १८ सोपानों में अनुवाद-प्रक्रिया को अथ से इति तक समझाया गया है। अपने विषय में यह संस्करण अद्वितीय है। छपते ही सैकड़ों प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक गयीं—यही इसकी विशेषता है ३–००

अभिज्ञानशाकुन्तल : एक अध्ययन

श्री काशीनाथ द्विवेदी

यह पुस्तक महाकवि कालिदास के शाकुन्तल को समझने का एक सफल प्रयास है। शाकुन्तल प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में पाठ्य स्वीकृत है। आधुनिक टीका-टिप्पणियाँ पुस्तक को काफी उपादेय बनाती है किन्तु विशेष रूप से अभिज्ञान को समझने-समझाने के लिए स्वतन्त्र चिन्तन की आवश्यकता है—उसी की पूर्ति इस पुस्तक द्वारा की गयी है। विश्वविद्यालयों के छात्रों को इससे विशेष लाभ होगा ४–००

आपस्तम्ब-धर्मसूत्रम्

('उज्ज्वला' वृत्ति सहित) 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्योपेतम्

डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय विरचित 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या में जहाँ सूत्रार्थ को अधिक स्पष्ट करने की आवश्यकता समझी गयी है वहाँ टिप्पणियाँ भी दी गयी हैं। प्रस्तावना में धर्मसूत्र साहित्य एवं भारतीय धर्म के स्वरूप पर गंभीर विचार किया गया है तथा आपस्तम्बधर्मसूत्र का समालोचनात्मक एवं सामाजिक अध्ययन भी प्रस्तुत किया गया है। अन्त में सूत्रों में आये हुये विषयों एवं नामों की अनुक्रमणिका दी गयी है जिससे अनुसन्धित्सुओं को अधिक सुभीता होगी २०–००

संस्कृतशास्त्रों का इतिहास

आचार्य बलदेव उपाध्याय

इस ग्रन्थ में आयुर्वेद, ज्योतिष, साहित्य कोश, छन्द एवं व्याकरण का साङ्गोपाङ्ग इतिहास तथा इन षट् शास्त्रों के गम्भीर रहस्यों का उद्घाटन भी बड़ी प्रौढता के साथ मूल ग्रन्थों के आधार पर किया गया है। छात्र तथा अध्यापक दोनों प्रकार के जिज्ञासुओं के लिए यह परमोपयोगी ग्रन्थ है १६–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राचीन भारतीय पुराकथाशास्त्र

(मूल संस्कृत उद्धरण, भाग ५)

लेखक, **जे० मूइर** । अनुवादक, **डॉ० रामकुमार राय**

प्रस्तुत ग्रन्थ ही एक मात्र ऐसी कृति है जिसमें प्राचीन भारतीय पुराकथाशास्त्र का अत्यन्त विशद, विस्तृत और सप्रमाण विवेचन है। लेखन ने न केवल वैदिक वाङ्मय से वरन इतिहास पुराण से भी सामग्री का चयन किया है और प्रसङ्गानुसार तत्कालीन प्राचीन पाश्चात्य सभ्यताओं, जैसे यूनानी, रोमन और पर्शियन, से भी समानान्तरताओं या विभेदों का तुलनात्मक विवरण दिया है। लेखक ने प्राचीन भारतीय सृष्टिशास्त्र और धार्मिक विचारों का विवरण करते हुये प्राचीन आर्यों के सामाजिक जीवन, प्रचलन, मूर्तिपूजन, राजवंशों के विवरण, समाज, वेशभूषा, भोज्य-पदार्थों, मनोरञ्जनों, युद्ध और युद्धास्त्रों, पशु, पक्षियों, तथा काव्यात्मक कल्पनाओं का जो एकत्र वर्णन किया है वह अन्यत्र अनुपलब्ध है। अद्वितीय विषयसामग्री के कारण यह ग्रन्थ पठनीय है २५-००

श्रीमन्महाप्रभुविरचित-श्रीमद्भागवतदशमस्कन्धव्याख्या—

श्रीसुबोधिनी : रासपञ्चाध्यायी

हिन्दी व्याख्याकार : **श्री जगन्नाथ (मुनमुन जी) चतुर्वेदी**

श्री मद्भागवत की जितनी व्याख्यायें उपलब्ध हैं उनमें **गो० महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य** विरचित 'श्रीसुबोधिनी' व्याख्या सर्वोपरि है। विश्वभर के सम्मानित विद्वानों ने इसकी प्रशंसा मुक्त कण्ठ से की है। 'रासपञ्चाध्यायी' की सुबोधिनी व्याख्या का भाव अत्यन्त गूढ़ होने से साधारण भक्त जन इसका रसास्वादन नहीं कर पा रहे थे। अतः वल्लभ-सम्प्रदाय के प्रकाण्ड विद्वान् श्री चतुर्वेदीजी ने भक्तजन मनोहारिणी इसकी सरल हिन्दी व्याख्या करके उस कमी को दूर कर दिया है। रासपञ्चाध्यायी का यह हिन्दी रूपान्तर, वैष्णव-समाज के भक्त जनों के लिये ज्ञान-दीपक है। हिन्दी व्याख्या में पहले मूल श्लोक का पद-पदार्थ, देकर भाषार्थ दिया गया है, उसके बाद 'श्रीसुबोधिनी' व्याख्या का अक्षरशः अनुवाद करके सुबोधिनी के भावों को प्रश्नोत्तर के रूप में समझाया गया है जो श्रोत्ता, वक्ता उभय के लिये रोचक तथा ज्ञानवर्धक है। ग्रन्थ के आदि में शताधिक पृष्ठों में इसकी भूमिका लिखी गई है। उसमें श्रीमद्भागवत के प्रत्येक स्कन्ध का अलग-अलग सारांश लिखा गया है। भूमिका में रासपञ्चाध्यायी को धार्मिक पृष्ठभूमि में अध्ययन करते हुए चतुर्वेदीजी ने एक ऐसा नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है जो अब तक के किसी भी पुस्तक में नहीं मिलता। यह संस्करण अपनी मौलिकता तथा अपने विषय के व्यापक विवेचन के कारण विद्वानों तथा सम्प्रदाय के भक्त जनों के लिये अवश्य पठनीय है शीघ्र प्राप्त होगा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की १९७० ई० की परीक्षा में नवीन निर्धारित पाठ्य पुस्तकें--

प्रथमा १-३ खण्ड—

वृहदवकहडाचक्रम् । (चौखम्बाप्रकाशन) हिन्दी व्याख्या सहित १-२५

प्राचीन भारत की गौरव-गाथा । प्रो० उमाशंकर तिवारी ।

इस पुस्तक में—प्रह्लाद, दधीचि, शिवि, वैवस्वत मनु, रन्तिदेव, शुनःशेप, सत्यवादी हरिश्चन्द्र, पराक्रमी भगीरथ, गुरुभक्त एकलव्य, उपमन्यु, दानी कर्ण, अभिमन्यु, कौत्स, उपमन्यु, श्रवणकुमार तथा भीष्म इन १६ चरित नायकों की गौरव-गाथा वर्णित है १-७५

पूर्वमध्यमा प्र० खण्ड—

प्राचीन भारतीय कथाएँ । रामकृष्ण प्रसाद २-००

हिन्दी पद्यामृत । रमाशंकर शास्त्री ३-००

सुदामाचरित । नरोत्तम दास । 'बालबोधिनी' व्याख्या सहित ०-७५

आहुति । हरिकृष्ण प्रेमी १-१६

पू० म० द्वि० खण्ड—

संस्कृत काव्य-कथाएँ । श्री वच्चा पाण्डेय शर्मा

इस पुस्तक से वाल्मीकि, अश्वघोष, कालिदास, भारवि, माघ, रत्नाकर, श्रीहर्ष, विल्हण तथा भट्टि इन प्रमुख महाकवियों तथा इनके महाकाव्यों का समुचित ज्ञान विद्यार्थियों को हो सके और वे इस ज्ञान से लाभ उठावें यही इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य है । २-५०

दायरे तथा अन्य कहानियाँ । द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' ३-५०

उपनिषदों की कहानियाँ । रामप्रताप त्रिपाठी

उत्तर मध्यमा प्र० खण्ड—

संस्कृत की नाट्य-कथाएँ । प्रो० कान्तानाथ पाण्डेय 'राजहंस'

इसमें महाकवि—भास, शूद्रक, कालिदास, श्रीहर्ष, भवभूति, विशाखदत्त, भट्टनारायण, क्षेमीश्वर, कृष्णमिश्र तथा महाकवि जयदेव, इन दस प्रतिनिधि नाटककारों की एक-एक नाट्य कृति की संक्षिप्त समीक्षा के साथ-साथ उसकी कथावस्तु का परिचय भी दिया गया है। ३-००

कवितावली : बालकाण्ड । (चौखम्बा प्रकाशन) 'बालबोधिनी' व्याख्या सहित । इसकी सरल सुबोध व्याख्या छात्रों के लिये अधिक उपयोगी है । ०-४०

उ० म० द्वि० खण्ड—

प्रतिमानाटकम् । ('शाकुन्तल' की जगह) 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, परीक्षोपयोगी नोट्स सहित २-५०

प्राचीन भारतीय वाङ्मय । श्री रामरंग शर्मा २-५०

कुटज । श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी ३-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शास्त्री प्र० खण्ड—

अभिज्ञानशाकुन्तलम्। ('उत्तरराम' की जगह) 'किशोरकेलि' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, प्रस्तावना, परीक्षोपयोगी नोट्स सहित ७-००

निबन्धालोक। श्री वासुदेव सिंह ४-००

हिन्दी काव्य-धारा। भाग दूसरा। डॉ० शम्भुनाथ सिंह।

इस भाग में आधुनिक काल के प्रतिनिधि कवियों की चुनी हुई रचनाएँ संगृहीत हैं। आधुनिक काल हिन्दी साहित्य के इतिहास के पूर्ववर्ती कालों से एक दम भिन्न है। क्योंकि इस काल में भारतीय समाज की जीवन-विधि और चिन्ताधारा में पूर्ववर्ती कालों की तुलना में अधिक परिवर्तन हुआ है। संगृहीत कविताएँ शिक्षाप्रद, रोचक, तथा ओजो-वर्धक हैं ४-००

वाङ्मय विमर्श। विश्वनाथप्रसाद मिश्र ८-००

इक्कीस कहानियाँ। वाचस्पति पाठक ५-००

भूले बिसरे चित्र। भगवती चरण वर्मा ५-००

नए एकांकी। उदयनारायण तिवारी २-००

शास्त्री द्वि० खण्ड—

भोर का आवाहन। श्री विद्यानिवास मिश्र ३-५०

अपने अपने अजनबी। 'अज्ञेय' ३-००

अतीत का अभिनवालोक। मायाप्रसाद त्रिपाठी ३-००

हिन्दी काव्यधारा। भाग पहला। डॉ० शम्भुनाथ सिंह २-००

शिवाभावनी। सं० विश्वनाथप्रसाद १-२५

प्रबन्धरत्नाकरः

(शास्त्री, आचार्य तथा बी०ए०, एम० ए० के छात्रों के लिये शताधिक परीक्षोपयोगी निबन्धों का संग्रह)

डॉ० रमेशचन्द्र शुक्ल

संस्कृत साहित्य—काव्य, नाटक, गद्यकाव्य आदि से सुसमृद्ध होते हुए भी निबन्धों की दृष्टि से अभी अपुष्ट है। विशेषतया, नवीन विषयों के ऊपर लिखे हुए विचारगर्भित निबन्धों का बड़ा ही अभाव था। निबन्ध-रचना के लिए भाषा के ऊपर अधिकार जितना अपेक्षित है उतना ही ऊहापोह के साथ विचार पटुत्व भी। इसलिए आज के पल्लवग्राहि विद्वत्ता के युग में प्रबन्धरचना विद्यार्थियों के लिए बहुत कठिन हो जाती है। विद्यार्थियों की सहायता के लिए आवश्यकतानुसार निबन्ध-ग्रन्थ भी सुलभ नहीं हैं। इस अभाव की पूर्ति के लिए विद्वान् लेखक ने प्रबन्धों का यह संग्रह प्रस्तुत किया है, जिसमें प्राचीन एवं नवीन सुललित भाषा में सभी विषयसम्बन्धी लिखित सौ से ऊपर निबन्ध हैं मूल्य १६-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमारे सन् १९६८-६९ के कतिपय प्रमुख प्रकाशन :—

1 **THE AESTHETIC EXPERIENCE ACCORDING TO ABHINAVAGUPTA.** By Raniero Gnoli. (P. 169) 45—00

2 **SRI AURBOBINDO AND THE THEORIES OF EVOLUTION.** By Dr. Rama Shanker Srivastava. (P. 191) 30—00

3 **A COMPARATIVE STUDY OF THE CONCEPTS OF SPACE AND TIME IN INDIAN THOUGHT.** By Dr. Kumar Kishore Mandal. (P. 170) 20—00

4 **THE DHVANI THEORY IN SANSKRIT POETICS.** By Dr. Mukunda Madhava Sharma. M. A., D. Phil., Kavyatirtha. (P. 175) 25—00

5 **GARUDAPURANAM.** An English Translation. By M. N. Dutt Sastri. (P. 50) 50—00

6 **A HISTORY OF ANCIENT SANSKRIT LITERATURE.** By F. Max Müller. (P. 200) 25—00

7 **HYMNS OF THF ATHARVAVEDA.** Translated into English with a Popular Commentary by R. T. H. Griffith. 2 Vols. (P. 165) 40—00

8 **KĀLIDĀSA-KOS'A.** By Sures Chandra Banerji. (P. 143) 15—00

9 **KAUTILYA'S POLITICAL IDEAS AND INSTITUTIONS :** By Prof. Radha Krishna Choudhary. (P. 136) 20—00

10 **PANCHASIDHANTIKA of Varahamihira.** Ed. by G. Thibaut & Sudhakara Dvivedi. (P. 61) 25—00

11 **Dr. SATAKARI MOOKERJI FELICITATION VOLUME.** Edited By Dr. S. Bhattacharya etc. (P. 196) 90—00

12 **TRADE AND COMMERCE IN ANCIENT INDIA.** By Dr. Balram Srivastava. With a Foreword By Dr. A. L. Basham. With Plates. (P. 175) 30-00

13 **YUGANADDHA.** By Dr. H. V. Guenther. (P. 152) 16-00

१४ अनेकार्थसंग्रहः कोशः । हेमचन्द्र विरचित (पृ० १४२) १०—००

१५ अलङ्कारानुशीलन । श्री राजवंश सहाय 'हीरा' (पृ० १६७) १६—००

१६ आपस्तम्बधर्मसूत्रम् । श्री हरदत्त मिश्र विरचित उज्ज्वलावृत्ति तथा सरल सुबोध हिन्दी टीका सहित (पृ० ६९) २०—००

१७ कठोपनिषद् । शाङ्करभाष्य सहित । डॉ० सुरेन्द्रदेव शास्त्री कृत 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित (पृ० ४८) २—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१८ **कादम्बरीकथासारः** । डॉ० बलराम सदाशिव अग्निहोत्री कृत अंग्रेजी-हिन्दी टीका सहित (पृ० ८४) १०—००

१९ **कारकदर्शनम्** । (सिद्धान्तकौमुदीकारकप्रकरणम्) हिन्दी व्याख्याकार : डॉ० कलानाथ झा (पृ० २) ४—००

२० **कारिकावली-मुक्तावली** । 'मयूख' 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । अनुमान-शब्दखण्ड (पृ० २५) ३—००

२१ **काशिकावृत्तिः** । सटिप्पण 'प्रकाश' हिन्दी टीका, परिशिष्ट विभूषित । सम्पादक श्री नारायण मिश्र (पृ० ३) २०—००

२२ **किरातार्जुनीयम्** । समालोचनात्मक भूमिका, संस्कृत-हिन्दी टीका-भावार्थ हिन्दी अनुवाद सहित । प्रथम सर्ग । व्याख्याकार—श्री समीर शर्मा (पृ० ८८) १—२५

२३ **कौषीतकि-ब्राह्मणोपनिषत्** । शङ्करानन्द कृत दीपिका सहित । ई० बी० कावेल निर्मित आङ्ग्लभाषानुवाद सहित (पृ० ४८) २०—००

२४ **हिन्दी खण्डनखण्डखाद्य** । (शाङ्करी व्याख्या सहित) व्याख्याकार : स्वामी हनुमानदास जी षट्शास्त्री (पृ० ४०) २५—००

२५ **गदनिग्रहः** । वैद्य सोढल विरचित । इन्द्रदेव त्रिपाठी कृत 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका सहित । प्रथम भाग-प्रयोग खण्ड (पृ० २४३) १५—००

द्वितीय भाग-कायचिकित्सा खण्ड २५-००

तृतीय भाग-शालाक्यादि-पञ्चकर्माधिकारान्तो खण्ड यन्त्रस्थ

२६ **हिन्दी गाथासप्तशती** । व्याख्याकार—श्री जगन्नाथ पाठक (पृ० ९१) २०—००

२७ **गादाधरी** । अनुमानचिन्तामणिनातदव्याख्याशिरोमणिकृतदीधित्यासहित (पृ० २६) १००—००

२८ **गायत्रीतन्त्रम्** । हिन्दी व्याख्या, परिशिष्ट सहित (पृ० १४८)

२९ **गौरीजातकम्** । श्री वासुदेव कृत 'विमला' हिन्दी टीका सहित (पृ० ५८) ०—६०

३० **गौरीदिगम्बरप्रहसनम्** । 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित । व्याख्याकार : पं० तारिणीश झा (पृ० १२२) १—२५

३१ **जवाहरलालनेहरूविजयनाटकम्**—(हिन्दी रूपान्तर सहित) । इस नाटक में नेहरू जी के स्वतन्त्रता संग्राम को बड़े ही सरल व रोचक शब्दों में नाटकीय ढंग पर लिखा गया है । रंगमंच पर बड़े ही कौतुक दृष्टि से जनता इसे पसन्द करेगी और प्रत्येक दर्शक देशभक्ति का क्रान्तिकारी व्रती बन बैठेगा (पृ० १२३) ४—००

३२ **तर्कसंग्रहः** । नव टीका सहित । सं० श्री सत्कारिशर्मा बङ्गीय (पृ० २८) २—५०

३३ **त्रिदोषसंग्रह** । वैद्य श्री धर्मदत्त आयुर्वेदाचार्य । 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका सहित (पृ० २४४) ३—५०

३४ **दशरूपकम्** । स्वामी चरणतीर्थ महाराज कृत आंग्लानुवाद सहित । प्रथम प्रकाश (पृ० ९५) १२—००

३५ **दुर्गासप्तशती** (सचित्र, शोधपूर्ण गुटका संस्करण) सम्पादक : श्री हरेकान्त झा । (पृ० १५०) २—५०

३६ **दुर्गासप्तशती** । (सचित्र, विभिन्न पाठान्तरों से समलंकृत शोधपूर्ण संस्करण) । अनुवादक—पं० श्री हरेकान्त मिश्र । 'सरला' हिन्दी व्याख्या सहित (पृ० १५०) ४—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३७ देववाणी प्रवेशिका। (सचित्र) १–४ भाग। श्री अनसूया प्रसाद भट्ट
(पृ० ४) ५—२०

३८ धम्मपदं। मूल पालिपाठ। श्री कन्छेदीलाल गुप्त कृत संस्कृतच्छाया, हिन्दी अनुवाद, पाठान्तर, एवं श्रीसत्कारिशर्मा कृत सविमर्श टिप्पणी सहित (पृ० ९६) ३—००

३९ धर्मसिन्धुः। काशीनाथोपाध्याय विरचितः। 'धर्मदीपिका' हिन्दी टीका 'सुधा' टिप्पणी सहित। व्याख्याकार, श्री वशिष्ठदत्त मिश्र (पृ० ७२) २५—००

४० धातुपाठः। 'धात्वर्थ प्रकाशिका' टिप्पणी सहित (पृ० ५) ०—७५

४१ हिन्दी न्यायदर्शन। वात्स्यायन भाष्य सहित। व्याख्याकार–पण्डितराज ढुंढिराज शास्त्री (पृ० ३०) १२—००

४२ पाराशरस्मृतिः। श्री वासुदेव कृत 'सुबोधिनी' हिन्दी टीका सहित (पृ० ७३) २—००

४३ पुष्पबाणविलासम्। 'प्रकाश' संस्कृत हिन्दी टीका सहित। व्याख्याकार : पं० सोमनाथ शास्त्री (पृ० ९९) १—००

४४ प्रचण्डपाण्डवं नाटकम्। सविमर्श 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। व्याख्याकार : डा० हरिदत्त शास्त्री (पृ० १२६) २—००

४५ प्रभावती परिणयम्। म० म० हरिहर कृत। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। व्याख्याकार : आचार्य रामचन्द्र मिश्र (पृ० १२६) ६—००

४६ भारतीय संगीत का इतिहास। (वैदिक काल से गुप्त काल तक) डॉ० शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे (पृ० १३३) ३०—००

४७ मध्य भारतीय भाषा-चयन। डॉ० वीरमणि प्रसाद उपाध्याय (पृ० १८५) ५—००

४८ मुहूर्तचिन्तामणिः। सान्वय 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका सहित (पृ० ६४) ४—००

४९ मेदिनीकोश (नानार्थशब्दकोशापरपर्यायः)। मेदिनिकर निर्मित। सटिप्पण-शब्दानुक्रमणिकादि समेत (पृ० १४५) ६—००

५० यजुर्वेदीय-रुद्राष्टाध्यायी। श्री सरयूप्रसाद शास्त्री 'द्विजेन्द्र' कृत 'रुद्रप्रिया' हिन्दी टीका सहित (पृ० १६०) २—५०

५१ युधिष्ठिरविजयम्—महाकवि वासुदेवविरचित। 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार : श्री ब्रजेशचन्द्र श्रीवास्तव (पृ० १०३) १२—५०

५२ राघवनैषधीयम्। श्री हरदत्तसूरि विरचित। 'प्रकाश' संस्कृत हिन्दी टीका सहित। व्याख्याकार : पं० रामकुवेर मालवीय (पृ० १०५) ३—००

५३ राजनीतिरत्नाकरः। श्री चण्डेश्वर विरचित। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। व्याख्याकार : श्री वाचस्पति शास्त्री गैरोला (पृ० १३९) ८—००

५४ ललितमाधवं नाटकम्। श्री रूपगोस्वामि प्रभुपाद प्रणीत। हिन्दी टीका सहित। सम्पादक श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री (पृ० १२९) १५—००

५५ हिन्दी वक्रोक्तिजीवित। राजानक कुन्तक विरचित। राधेश्याम मिश्र कृत 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। सटिप्पण (पृ० १०६) १५—००

५६ विक्रमाङ्कदेवचरितम्। 'सुचारु' संस्कृत तथा 'सुरभि' हिन्दी टीका सहित। व्याख्याकार : डॉ० गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर। प्रथम सर्ग (पृ० १०७) २—२५

५७ विक्रान्तकौरवम्। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। व्याख्याकार : श्री पन्नालाल जैन (पृ० १३०) ६—००

५८ वेतालपञ्चविंशतिः। दामोदर झा कृत प्रकाश हिन्दी टीका सहित (पृ० १०९) १०—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५९ **वैद्यकीयसुभाषितसाहित्यम्** अथवा **साहित्यिकसुभाषितवैद्यकम्**। भास्कर गोविन्द घाणेकर कृत हिन्दी टीका सहित (पृ० १०९) २५—००

६० **वैयाकरणभूषणसारः**। विमर्शाख्य 'प्रभा' तथा प्राचीन 'दर्पण' व्याख्या सहित। सं० श्री बालकृष्ण पञ्चोली (पृ० १५) २०—००

६१ **वैशेषिकदर्शनम्**। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। व्याख्याकार : श्रीनारायण मिश्र (पृ० ३२) ३—००

६२ **हिन्दी वैशेषिक दर्शन**। (उपस्कार सहित) व्याख्याकार :—पण्डितराज ढुण्ढिराज शास्त्री (पृ० ३३) २०—००

६३ **व्यावहारिक ज्यौतिषतत्त्वम्** (फलित ज्यौतिष का सर्वांगपूर्ण प्रामाणिक मौलिक ग्रन्थ)। सम्पादक : दैवज्ञ लक्ष्मणलाल झा। सोदाहरण 'तत्त्वप्रभा' हिन्दी टीका सहित (पृ० ६६) १०—००

६४ **शुक्रनीति** (शोधपूर्ण परिष्कृत परिवर्धित संस्करण) सरल सुबोध 'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार—पं० ब्रह्मशंकर मिश्र (पृ० १४०) १२—५०

६५ **वा० श्राद्धपद्धति**। म० म० वाचस्पति मिश्र (पृ० २३९) ३—५०

६६ **संस्कृत प्रथम पाठमाला** : (G. R. Ballantyne कृत Sanskrit First Lessons का सानुवाद संस्करण) हिन्दी अनुवादक—डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय (पृ० १७) ३—००

६७ **सांख्यकारिका**। ईश्वरकृष्णकृता। माठरवृत्ति सहित। सम्पादक : म० म० विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी (पृ० ३१) ५—००

६८ **सांख्यसंग्रहः**। सम्पादक म० म० श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी। प्रस्तावना श्री सत्कारिशर्मा वङ्गीय (पृ० ३४) १२—००

६९ **हिन्दी सहृदयानन्द**। कृष्णानन्द प्रणीत। वाचस्पति द्विवेदी कृत 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित (पृ० ११४) ५—५०

७० **हिन्दी सिद्धान्तकौमुदी**। व्याख्याकार : श्री बालकृष्ण पञ्चोली। कारकान्त प्रथम भाग ९—००

समासादि द्विरुक्तान्त द्वितीय भाग ९—०० (पृ० २२) पूर्वार्ध १८—००

७१ **सुवृत्ततिलकम्**। क्षेमेन्द्र प्रणीत। श्रीव्रजमोहन झा कृत प्रकाश हिन्दी टीका सहित (पृ० ११६) ३—५०

७२ **अभिज्ञानशाकुन्तल : एक अध्ययन**। श्री काशीनाथ द्विवेदी ४—००

७३ **अलङ्कार-मीमांसा**। श्रीराजवंश सहाय 'हीरा' (पृ० १६६) ४—००

७४ **कवियों की लोक-दृष्टि** (संस्कृत-साहित्य के कुछ रस सिद्ध कवियों के चिरन्तन-साहित्य का परिमन्थन) श्री शिवशङ्कर त्रिपाठी (पृ० १७०) १०—००

७५ **काश्मीर शैवदर्शन और कामायनी** (काश्मीर का अद्वैतवादी शैवसिद्धान्त और कामायनी के ऊपर उसका प्रभाव) डॉ० भँवरलाल जोशी (पृ० ३७) २०—००

७६ **जवाहरलालनेहरूविजयनाटक** (हिन्दी) प्राक्कथन लेखक : श्रीमान् शत्रुमर्दन शाही, भूतपूर्व शिक्षामन्त्री : बिहार सरकार के शब्दों में '…… ऐसे महामानव के जीवन के एक अंग को प्रकाशित करने वाला यह नाटक प्रशंसनीय प्रयास है……' (पृ० १७४) १—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७७ दक्षिण भारत का इतिहास (आरम्भ से प्राचीन राजवंशों के पतन तक)।
डॉ० बलराम श्रीवास्तव (पृ० १७५) १०—००

७८ निघण्टु आदर्श । वापालाल ग. वैद्य । पूर्वार्द्ध (पृ० २४५) ३५—००

७९ न्याय-परिचय । म० म० फणिभूषणतर्कवागीश विरचित । अनुवादक डॉ० किशोरनाथ झा (पृ० ३०) १०—००

८० पल्लव इतिहास और उसकी आधार सामग्री । डॉ० बलराम श्रीवास्तव (पृ० १७६) ६—००

८१ पाणिनि कालीन भारतवर्ष (अष्टाध्यायी का सांस्कृतिक अध्ययन)
डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल (पृ० ६) २०—००

८२ पौराणिक आख्यान । डॉ० गंगासागर राय (पृ० ५१) २—००

८३ बौद्धन्याय । एफ. टी. शर्वाट्स्की । अनुवादक डॉ० रामकुमार राय। प्रथम भाग (पृ० १८०) ३०—००

८४ भारतीय जीवाणुविज्ञान । श्री रघुवीर शरण शर्मा (पृ० २४६) २—५०

८५ भारतीयदर्शन में चेतना का स्वरूप । डॉ० श्रीकृष्ण सक्सेना (पृ०३८) १०—००

८६ मधुपर्क (भगवान् कृष्ण का काव्य बद्ध चरित) । श्री देवीरत्न अवस्थी 'करील' (पृ० १८३) १०—००

८७ महर्षि वेदव्यास (एक ऐतिहासिक व सांस्कृतिक पर्यालोचन) श्री उमाशंकर दीक्षित (पृ० १८४) ४—५०

८८ वाग्भट विवेचन (वाग्भट का सर्वांगीण समीक्षात्मक अध्ययन) । श्री प्रियव्रत शर्मा (पृ० २५०) २०—००

८९ वाग्विज्ञान (भाषा शास्त्र) । आचार्य सीताराम चतुर्वेदी (पृ० १८८) २०—००

९० वैशेषिक दर्शन : एक अध्ययन । श्रीनारायण मिश्र (पृ० ३२) १५—००

९१ संस्कृत नाट्य सिद्धान्त । डॉ० रमाकान्त त्रिपाठी (पृ० १९२) १०—००

९२ संस्कृत महाकाव्य की परम्परा । (कालिदास से श्री हर्ष तक) डॉ० केशव राव मुसलगाँवकर (पृ० १९१) २५—००

९३ संस्कृत साहित्य में नीतिकथा का उद्गम एवं विकास ।
डॉ० प्रभाकर नारायण कवठेकर (पृ० १९४) २०—००

९४ साहित्यशास्त्रीय तत्त्वों का आधुनिक समालोचनात्मक अध्ययन ।
श्री मधुसूदन शास्त्री । साहित्य के छात्रों, अध्यापकों तथा अनुसन्धित्सुओं के लिए यह ग्रन्थ अधिक उपयोगी है (पृ० १९७) १०—००

९५ सुलभ ज्योतिष विज्ञान । दैवज्ञ वासुदेव सदाशिव खानखोजे (पृ० ६८) १२—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Works to Be Ready Shortly

1 Bhagavatapada Sankaracharya. By A. Kuppuswami Sastri.

2 Charaka Samhita. Text in Sanskrit with A New English Translation. By Dr. Ramkaran Sarma and Dr. Bhagavan Das.

3 Chronology of India : From the Earliest Times to the beginning of the Sixteenth Century. By C. Mabel Duff.

4 Comic Elements in Sanskrit Drama (Theory and Practice). By Lal Rama Yadupal Singh.

5 Comparative Grammar of the Gaudian Languages. By A. F. Rudolf Hoernle.

6 Comparative Grammar of the Sanskrit, Zend, Greek, Latin, Lithuanian, Gothic, German, and Slavonic Languages. By Prof. Bopp. Translated from the German by Edward B. Eastwick. 3 Vols.

7 A Critical Study of the Bhagavata Purana with Special Reference to Bhakti. By Dr. T. S. Rukmani.

8 Ethnology of Ancient Bharata. By Sri R. C. Jain.

9 Fine Arts and Technical Sciences in Ancient India. With Special Reference to Somesvara's Manasollasa. By Dr. Shiba Shekhar Misra M. A., Ph. D.

10 A History of Vedic Literature. By Sri Sambhu Nath Sharma.

11 Kalidasa Apocrypha. By Sures Chandra Banerji.

12 Kavyaprakasa. With Rasa-Prakasa commentary of Sri Srikrisna Sarman. Edited with an English exposition by Dr. S. N. Sastri. Vol. I Chapters I–V.

13 Manava Kalpa Sutra. With the Commentary of Kumarila Swamin.

14 Manual of Classical Sanskrit Prosody. By Dr. S. N. Shastri. M. A., D. Phil., LL. B.

15 North India : During the Seventeenth Century A. D. By Dr. B. N. Srivastava.

16 Pali Reader. Part I—Selections. By Dharmanand Kosambi.

17 Pali Reader. Part II—Notes and Glossary. By C.V. Rajwade.

18 Political and Socio-Religious Condition of Bihar (185 B. C. to 319 A. D.). By Dr. Hari Kishore Prasad.

19 Purana Pancalaksana. By W. Kirfel.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

20 Puranas or An Account of their Contents and Nature. By H. H. Wilson.

21 The Licchavis (of Vaisali). By Dr. Hit Narayana Jha.

22 The Story of King Udayana as gleaned from Sanskrit, Pali and Prakrit Sources. By Dr. Niti Adaval.

23 The Study of Indian Art. By Mr. K. De B. Cordrington.

24 Theories of Personality Types in Indian Thought. By Dr. Ram Kumar Rai.

२५ अथर्ववेद संहिता । मूलमात्र

२६ अथर्ववेद संहिता । सायणभाष्य सहित

२७ अथर्वेद संहिता । वेदार्थबोधिनी हिन्दी व्याख्या सहित

२८ अनङ्गरङ्ग । श्रीलीलाधर शर्मा कृत हिन्दी टीका सहित

२९ अभिनय-दर्पण । आचार्य नन्दिकेश्वर रचित । 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित

३० अमरकोषः रामाश्रमी । शोधपूर्ण रामाश्रमी (सुधा) व्याख्या के साथ 'प्रकाश' हिन्दीव्याख्या सहित । सम्पादक–श्री हरगोविन्द मिश्र

३१ हिन्दी अलङ्कारसर्वस्व । रुय्यक विरचित । विद्याचक्रवर्तिकृत सञ्जीविनीटीका तथा हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी

३२ अष्टाध्यायी । नवीन वैज्ञानिक 'रत्नप्रभा' संस्कृत–हिन्दी टीका सहित । व्याख्याकार : पं० बालकृष्ण पञ्चोली

३३ आधुनिक आर्य भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण । श्री गोविन्द झा

३४ आपस्तम्बगृह्यसूत्र । अनाकुल-तात्पर्यदर्शन तथा सरल सुबोध हिन्दी टीका सहित

३५ आयुर्वेद का मूल सिद्धान्त । हिन्दी अनुवाद । अनुवादक श्री वागीश्वर शुक्ल

३६ ऋग्वेदसंहिता (प्रथम अध्याय, सूक्त १–१९) सस्वर संहितापाठ, पदपाठ, सायणभाष्य, स्कन्दभाष्य, हिन्दी व्याख्या, हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित

३७ एलोपैथिक चिकित्सा विज्ञान । श्री अवधविहारी अग्निहोत्री । सचित्र । प्रथम खण्ड

३८ एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका (एलोपैथिक निघण्टु) । डॉ० शिवनाथ खन्ना

३९ कायचिकित्सा । कविराज रामरक्ष पाठक । तृतीय भाग

४० कालिदास ग्रन्थावली । आचार्य रामचन्द्र मिश्र

४१ कुन्दमाला । दिङ्नाग विरचित । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित

४२ कौमुदीमहोत्सवनाटकम् । विज्जिका विरचित । हिन्दी टीका सहित

४३ डा० घाणेकर लेख संग्रह ।

४४ चरकसंहिता । चक्रपाणि कृत 'आयुर्वेद दीपिका' संस्कृत टीका तथा विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित

४५ चापीयत्रिकोणमिति । श्री लक्ष्मणलाल झा कृत हिन्दी टीका सहित

४६ तारापारिजातः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४७ तारारहस्यम् । हिन्दी टीका सहित । व्याख्याकार : श्री सरयूप्रसाद शास्त्री 'द्विजेन्द्र'

४८ दत्तिलम् । श्री देवदत्तशास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित

४९ दशगात्रपिण्डदानपद्धति । मैथिली टीका सहित

५० नरपतिजयचर्या । श्री गणेशदत्त पाठक कृत सुबोधिनी संस्कृत हिन्दी टीका सहित

५१ नाटकलक्षणरत्नकोष । सागरनन्दी प्रणीत । श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री कृत सटिप्पण 'प्रभा' हिन्दी टीका सहित

५२ हिन्दी नाट्यशास्त्र । व्याख्याकार–श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री । प्रथम खण्ड

५३ निघण्टु आदर्श । हिन्दी रूपान्तर) रूपान्तरकार–श्री बापालाल ग० वैद्य । द्वितीय भाग

५४ निदानकथा । डॉ० महेश तिवारी कृत हिन्दी अनुवाद सहित

५५ निबन्ध पारिजात । श्री रजनीकान्त लहरी

५६ निर्णयसिन्धुः । हिन्दी टीका सहित

५७ पञ्चसूक्तानि । स्वामी नारायण दास शास्त्री

५८ पातञ्जलयोगदर्शनम् । 'योगभाष्यविवृति' हिन्दी व्याख्याविभूषितव्यासभाष्योपेतम् । हिन्दी व्याख्याकार : स्वामी श्री ब्रह्मलीन मुनि जी

५९ पाराशर धर्मसंहिता (पाराशर स्मृति) सायण-माधव भाष्य सहित

६० पालिजातकरत्नावलि । सम्पादक श्री कन्छेदीलाल गुप्त—श्री सत्कारिशर्मावङ्गीय

६१ पालि-हिन्दी-शब्दार्णव । सम्पादक : श्री सत्कारिशर्मा वङ्गीय

६२ पुराण की लोक भारती । श्री जयशङ्कर त्रिपाठी

६३ प्रतापरुद्रीयम् । विद्यनाथ विरचित । हिन्दी टीका सहित

६४ प्रत्यभिज्ञाहृदयम् । क्षेमराज कृत । श्रीशिवशङ्कर शास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित

६५ प्राचीन भारतीय काव्य का रूप-विकास । डॉ० शम्भुनाथ सिंह

६६ प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान । डॉ० वासुदेव उपाध्याय

६७ प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति । डॉ० राजबली पाण्डेय

६८ प्रियतम्यां परमेश्वरः । टालस्टाय-कथा-सप्तकम् । डॉ० भागीरथप्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री'

६९ बघेलखण्ड के संस्कृत काव्य । डॉ० राजीवलोचन अग्निहोत्री

७० बरदाम्बिकापरिणयचम्पू । डॉ० सूर्यकान्त शास्त्रीकृत अंग्रेजी अनुवाद सहित

७१ ब्रह्मसूत्रप्रमुखभाष्यपञ्चकसमीक्षणम् । (शांकर-रामानुज-निम्बार्क-मध्व-वल्लभ-भाष्याणां तुलनात्मकं समालोचनात्मकं-चाध्ययनम्) श्री रामशरणशास्त्री

७२ भक्तिरसायनम् । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित

७३ भाषा वैज्ञानिक संस्कृत व्याकरण । डॉ० लाल रमायदुपाल सिंह

७४ मनुस्मृतिः । सानुवाद—'मन्वर्थमुक्तावली' व्याख्योपेता

७५ महाभारतम् । श्रीनीलकण्ठ कृत 'भावप्रदीप' व्याख्या सहित

७६ महौषध-निघण्टु । आर्यकुमार दास । हिन्दी टीका सहित

७७ मुहूर्त-पारिजात । श्री सोहनलाल व्यास विरचित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७८ मूल संस्कृत उद्धरण (ओरिजिनल संस्कृत टेक्स्ट) जे० मूइर कृत का हिन्दी अनुवाद । पञ्चम भाग

७९ रसमीमांसाविवेक । गङ्गारामजडि विरचित । संस्कृत मूल, विवेक संस्कृत व्याख्या आंग्ल-हिन्दी भूमिकादि युक्त । व्याख्याकार—डॉ० लाल रमायदुपाल सिंह

८० रसायनतन्त्र । आचार्य प्रियव्रत शर्मा

८१ रामकृष्ण विलोमकाव्य । हिन्दी टीका सहित

८२ रामायणमञ्जरी । क्षेमेन्द्र विरचित । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित

८३ लङ्काभैषज्यमणिमाला । 'कुमार केलि' हिन्दी टीका सहित

८४ लिङ्गपुराणम् । मूलमात्र । सजिल्द

८५ वानस्पतिक अनुसंधान दर्शिका १९६६–६८ । श्री कृष्णचन्द्र चुनेकर

८६ वाराहपुराणम् । मूलमात्र । सजिल्द

८७ विदग्ध माधव । रूपगोस्वामि विरचित । श्री रमाकान्त झा कृत हिन्दी टीका सहित

८८ स्वामी विवेकानन्दचरित महाकाव्य । पं० श्री त्र्यम्बक भण्डारकर विरचित

८९ वीरसिंहावलोकः । राजा वीरसिंह तोमर । अनुवादक डॉ० राधाकृष्ण पाराशर

९० शृङ्गारतिलकम् । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित

९१ संक्षिप्त कौमुदी कथा कल्लोलिनी । श्री रामशरण शास्त्री

९२ संस्कृत साहित्य का इतिहास । आर्थर मैक्डॉनल । हिन्दी । द्वितीय भाग

९३ संस्कृत-साहित्य कोश । प्रा० राजवंश सहाय 'हीरा'

९४ सव्यभिचार चिन्तामणि । पं० शिवदत्त मिश्र

९५ सामवेद संहिता । सायणभाष्य सहित

९६ साहित्यानुशासन । डॉ० सीताराम चतुर्वेदी

९७ सौन्दरानन्द साहित्यिक एवं दार्शनिक गवेषणा । ब्रह्मचारी ब्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन'

९८ स्वतन्त्रकलाशास्त्र । डॉ० कान्तिचन्द्र पाण्डेय । द्वितीय भाग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

THE CHOWKHAMBA SANSKRIT STUDIES

I. **ABHINAVAGUPTA** : By Dr. Kanti Chandra Pandey. 45-00

II. **COMPARATIVE ÆSTHETICS.** Vol. I. **INDIAN ÆSTHETICS** : By Dr. Kanti Chandra Pandey. 30-00

IV. **COMPARATIVE ÆSTHETICS.** Vol II. **WESTERN ÆSTHETICS** : By Dr. Kanti Chandra Pandey. 30-00

III. **YUGANADDHA** : By Dr. H. V. Guenther. 16-00

V. **VEDANTA DESIKA** : By Dr. Satya Vrata Singh. 20-00

VI. **LIGHTS ON VEDANTA** : By Dr. V. P. Upadhyaya. 15-00

VII. **THE FALL OF THE MOGUL EMPIRE** : By Sidney J. Owen. 8-00

VIII. **HISTORY OF INDIAN LITERATURE** : By A. Weber. 25-00

IX. **MEGHADUTA** : By H. H. Wilson. 7-50

X. **SARVA-DARSHANA SAMGRAHA** : Translated by E. B. Cowell and A. E. Gough. 15-00

XI. **GRAMMAR OF THE SANSKRIT LANGUAGE** : By H. H. Wilson. 20-00

XII. **SAKUNTALA** : Text with English translation by Monier Williams. 15-00

XIII. **ENGLISH-SANSKRIT DICTIONARY:** By M. Monier Williams. 32-00

XIV. **LAWS & PRACTICE OF SANSKRIT DRAMA** : By Professor S. N. Sastri, M. A., D. Phil, LL. B. Vol. I. 25-00

XV. **HISTORY OF ANCIENT SANSKRIT LITERATURE** : By F. Max Muller. 25-00

XVI. **THE SIX SYSTEMS OF INDIAN PHILOSOPHY** : By F. Max Muller. 15-00 Library Edition. 20-00

XVII. **EPISTEMOLOGY OF THE BHATTA SCHOOL OF PURVA MIMANSA** : By G. P. Bhatta. 20-00

XVIII. **DRAMAS** : By H. H. Wilson. 4-00

XIX. **THE PURANA TEXT OF THE DYNASTIES OF THE KALI AGE** : By F. E. Pargiter. 20-00

XX. **ATHARVA-VEDA PRATISAKHYA** : By W. D. Whitney. 20-00

XXI. **A PRACTICAL GRAMMAR OF THE SANSKRIT LANGUAGE** : By M. Williams. 20-00

XXII. **VAISESHIKA PHILOSOPHY** : By F. W. Thomas. 16-00

XXIII. **HISTORICAL AND LITERARY INSCRIPTIONS** : By Dr. Rajabali Pandeya. 15-00

XXIV. **VISNUDHVAJA or QUTB MANAR** : By Dr. D. S. Triveda. 5-00

XXV. **RELIGIONS OF INDIA** : By Rev. J. Wood. 15-00

XXVI. **BUDDHIST PHILOSOPHY IN INDIA AND CEYLON** : By A. B. Keith. 15-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

XXVII. **MYTHOLOGY OF THE ARYAN NATIONS** : By George W. Cox. 30-00

XXVIII. **SAMAVEDA** : Translated into English with a popular commentary by Ralph T. H. Griffith. 20-00

XXIX. **VALMIKI RAMAYANA** : English Translation by Griffith. 25-00

XXX. **SUSHRUTA SAMHITA** : English Translation and Notes by Kaviraj Kunja Lal Bhishagratna. 3 Vols. 60-00

XXXI. **UNIVERSAL HISTORY OF MUSIC** : By Raja S. M. Tagore. 20-00

XXXII. **STUDIES IN VEDIC INTERPRETATION** (On The Lines of Sri Aurobindo) : By A. B. Purani. 20-00

XXXIII. **ON THE ORIGIN OF THE INDIAN BRAHMA ALPHABET** : By George Buhler. With three Plates. 10-00

XXXIV. **SANKHYA APHORISMS OF KAPILA** : Eng. Tr. : by J. R. Ballantyne. 20-00

XXXV. **RGVEDA** : Translated into English By R. T. H. Griffith. 2 Vols. 40-00

XXXVI. **INDIAN WISDOM** : By Monier Williams. 30-00

XXXVII. **A FUNCTIONAL ANALYSIS OF INDIAN THOUGHT AND ITS SOCIAL MARGINS** : Swami Agehananda Bharati. 15-00

XXXVIII. **VRATYAS IN ANCIENT INDIA** : By Prof. Radha Krishna Choudhary. 15-00

XXXIX. **SOCIO-RELIGIOUS CONDITION OF NORTH INDIA** : By Dr. Vasudeva Upadhyaya. 25-00

XL. **SURGICAL ETHICS IN AYURVEDA** : By Dr. G. D. Singhal and Pt. Damodar Sharma Gaur. 5-00

XLI. **STUDIES IN DEVELOPMENT OF ORNAMENTS** : By Dr. Rai Govind Chandra. 75-00

XLII. **AGNI-PURANA** : A Study : By S. D. Gyani. 25-00

XLIII. **STUDIES IN JAINISM AND BUDDHISM IN MITHILA** : By Dr. Upendra Thakur. 15-00

XLIV. **WOMEN IN ANCIENT INDIA** : By M. E. R. Martin. 20-00

XLV. **BUDDHISM** : By Monier Williams. 35-00

XLVI. **AN INTRODUCTION TO BUDDHIST ESOTERISM** : By Dr. B. Bhattacharya. 30-00

XLVII. **CONCEPT OF POETIC BLEMISHES IN SANSKRIT POETICS** : By Dr. Bechan Jha. 15-00

XLVIII. **PANINI** : His Place in Sanskrit Literature by Theodore Goldstucker. 16-00

XLIX. **HINDU MUSIC FROM VARIOUS AUTHORS** : By Sourindro Mohun Tagore. 25.00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

L. **TRIPURA RAHASYA** (Jnanakhand) Translated by A.U. Vasavada. 15-00

LI. **INDO-ARYAN LETERATURE AND CULTURE (ORIGINS)** : By Nagendranath Ghose. 20-00

LII. **THE BHAKTI CULT IN ANCIENT INDIA** : By Dr. Bhagabat Kumar Goswami. 25-00

LIII. **NALOPAKHYANAM** : By Monier Williams. 25-00

LIV. **AGNI PURANAM** : English Translation by M. N. Dutt. 2 Vols. 60-00

LV. **CRITICAL STUDY OF THE PHILOSOPHY OF RAMANUJA** : By Dr. Anima Sen Gupta. 20-00

LVI. **A MANUAL OF BUDDHISM** : Translated from Singhalese Mss. by R. Spence Hardy. 30-00

LVII. **THREE LECTURES ON THE VEDANTA PHILOSOPHY** : By F. Max Muller. 7-50

LVIII. **THE HUNAS IN INDIA** : By Dr. Upendra Thakur. 25-00

LIX. **TRADE AND COMMERCE IN ANCIENT INDIA** : By Dr. Balram Srivastava. 25-00

LX. **SRI AUROBINDO AND THE THEORIES OF EVOLUTION** : By Dr. Rama Shanker Srivastava. 30-00

LXI. **KALIDASA-KOSA** : By S. C. Banerji. 15-00

LXII. **THE AESTHETIC EXPERIENCE ACCORDING TO ABHINAVAGUPTA** : By R. Gnoli. 45-00

LXIII. **THE DHVANI THEORY IN SANSKRIT POETICS** : By Dr. Mukunda Madhava Sharma M. A. D. Phil. Kavyatirtha. 25-00

LXIV. **KAUSITAKI BRAHMANA UPANISAD** : With the Dipika Commentary of Sankarananda. Edited With an English Translation by E. B. Cowell, M. A. 20-00

LXV. **A COMPARATIVE STUDY OF THE CONCEPTS OF SPACE AND TIME IN INDIAN THOUGHT.** By Dr. Kumar Kishore Mandal. 20-00

LXVI. **HYMNS OF THE ATHARVAVEDA** : Translated into English by R. T. H. Griffith. 2 Vols. 40-00

LXVII. **GARUDA PURANAM** : English Translation by M. N. Dutt. 50-00

LXVIII. **PANCHASIDDHANTIKA** : The Astronomical Work of Varahamihira. Edited with an Original Sanskrit Commentary and English Translation by G. Thibaut and Mm. Sudhakar Dvivedi. 25-00

LXIX. **DR. SATKARI MOOKERJI FELICITATION VOLUME.** Edited by Dr. S. Bhattacharya etc. 90-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थापित संवत् १९४८] ॥ श्रीः ॥ [स्थापित सन् १८९२

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

द्वारा

प्रकाशित तथा प्रचारित ग्रन्थों का सूचीपत्र

व्याकरण-ग्रन्थाः

१ **अनुवाद-चन्द्रिका** (नवम संस्करण) लोकमणि जोशी ।

यह पुस्तक संस्कृत तथा अंग्रेजी छात्रों को संस्कृत-हिन्दी-अनुवाद सिखलाने के लिए बहुत ही सरल पद्धति से लिखी गई है । [चौ. पु.] १–२५

२ **अनुवादप्रभा** (अष्टम संस्करण) पं० गौरीशंकर शास्त्री ।

आज तक जितनी भी इस विषय की पुस्तकें निकली हैं उन सब में यह उत्तम है । इससे साधारण छात्र भी अल्प समय में ही सरलता से संस्कृत में सुन्दर अनुवाद करना सीख सकते हैं । [चौ. पु.] १–२५

३ **अभिनव निबन्धावली** । श्री श्यामलाकान्त वर्मा वाराणसी की शास्त्री प्रथम-द्वितीय खण्ड में स्वीकृत ।

इसमें लगभग १०० परीक्षोपयोगी हिन्दी निबन्धों का संग्रह किया गया है । छात्रों के लिये इसी प्रकार के वर्गीकरण की आवश्यकता थी। भाषा, शैली, कौशल आदि सभी दृष्टियों से इसकी उत्तमता स्वीकृत की गई है । [वि. रा. ७४] ४–५०

४ **अष्टाध्यायीसूत्रपाठः** । श्रीमत्पाणिनिमुनिविरचितः [ह. ६३] ०–७५

५ **अष्टाध्यायी** । नवीन वैज्ञानिक 'रत्नप्रभा' संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार—पं० बालकृष्ण पञ्चोली ।

पञ्चोलीजी ने अपने चालीस वर्ष के अनुभव से छात्रोपयोगी शैली में यह अभिनव वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की है । संस्कृत व्याख्या की भाषा इतनी प्राञ्जल है कि प्रारम्भिक विद्यार्थी भी इसे समझ जायँगे, हिन्दी व्याख्या में भी उदाहरण प्रत्युदाहरण देकर सूत्राशय बहुत ही स्पष्ट रूप में समझाया गया है । सूत्रों के प्रतिपदों के उदाहरण–जो सिद्धान्तकौमुदी तथा काशिकाओं में भी नहीं मिलते–इस अभिनव संस्करण में उनके भी नवीन सृजन किये गये हैं। यह इस संस्करण की सबसे अधिक विशेषता है ! यह सर्वोच्च संस्करण शीघ्र प्राप्त होगा

*६ **अष्टाध्यायीप्रकाशिका** । देवप्रकाश पातञ्जल शास्त्री ८–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*७ आगरा यूनिवर्सिटी बी० ए० संस्कृत प्रश्नोत्तर। १-२ भाग १०-५०

८ **आचार्य हेमचन्द्र और उनका शब्दानुशासन : एक अध्ययन**। डा० नेमिचन्द्र शास्त्री।

प्रस्तुत ग्रन्थ एक प्रकार से संस्कृत व्याकरण शास्त्र का तुलनात्मक इतिहास है जिसमें शब्दानुशासन सम्बन्धी हैम की विशेषताओं, उपलब्धियों और अभावों पर प्रकाश डाला गया है तथा पाणिनि एवं पाणिनि से भिन्न अन्य अनेक वैयाकरणों के साथ अनेक दृष्टियों से उनकी तुलना करते हुए विशद् आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। हैम के साथ-साथ अन्य शब्दानुशासनों का भी विवेचन यथास्थान होता चला है। [वि. रा. ६२] १५-००

*9 Indo-Aryan and Hindi. Eight Lectures originally delivered in 1940 before the Gujarat Vernacular Society, Ahmedabad. By S. K. Chatterjee. 20-00

*10 Introduction to Comparative Philology. By Dr. P. D. Gune. 12-50

11 INTRODUCTION TO THE GRAMMAR OF THE SANSKRIT LANGUAGE. By H. H. Wilson. [Chow. Sans. Studies Vol. XI] 20-00

१२ **उत्तरपक्षावली**। सपरिष्कृता [ह. १६] ०-२५

१३ **उपसर्गवृत्तिः**। [चौ. पु.] ०-१०

१४ **कारकदर्शनम्**। (सिद्धान्तकौमुदी-कारकप्रकरणम्) हिन्दी व्याख्याकार : डॉ० कलानाथ झा।

सि० कौमुदी का कारक-प्रकरण प्रायः सभी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में स्वीकृत है। अतः कारक-प्रकरण के कई संस्करण छप चुके हैं, परन्तु छात्रोपयोगी न होने के कारण प्रायः सभी अमान्य हैं। प्रस्तुत संस्करण सुयोग्य प्राध्यापक द्वारा संपादन किया गया है। इसकी छात्रोपयोगी हिन्दी व्याख्या काशिका, तत्त्वबोधिनी, बालमनोरमा तथा महाभाष्य आदि सुविख्यात टीकाओं पर आधारित है। ग्रन्थ के प्रतिपाद्य विषय को अधिक स्पष्ट करने के हेतु पादटिप्पणियों का सर्वत्र सन्निवेश किया गया है तथा अन्त में सूत्र, वार्तिक एवं प्रयोगों की अनुक्रमणी आदि देकर छात्रोपयोगी बनाने की अथक चेष्टा की गयी है। छात्रों को सभी मौलिक प्रश्नों के समाधान इसकी भूमिका से ही प्राप्त हो जायंगे। [वि. सं. १५३] ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

15 COMPARATIVE GRAMMAR OF THE GAUDIAN LANGUAGES. By A. F. Rudolf Hoernle. Shortly

16 COMPARATIVE GRAMMAR OF THE SANSKRIT, ZEND, GREEK, LATIN, LITHUANIAN, GOTHIC, GERMAN AND SELVONIC LANGUAGES. By Prof. Bopp. Translated from the German by Edward B. Eastwick. 3 Vols. Shortly

*१७ **काशकृत्स्न-धातुव्याख्यानम्**। (चन्नवीर कवि कृत संस्कृत रूपान्तर) संपादक-युधिष्ठिर मीमांसक ६-२५

१८ **काशिकावृत्तिः**। (सटिप्पण 'प्रकाश' हिन्दी टीका, परिशिष्ट विभूषित शोधपूर्ण चतुर्थ संस्करण) सम्पादक श्री नारायण मिश्र प्रो० काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।

विद्वद्वर वामन-जयादित्य विरचित ख्यातिप्राप्त इस ग्रन्थ के तृतीय संस्करण का संपादक प्रा० व्या० शास्त्र के पारंगत विद्वान् पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के तत्त्वावधान में हुआ था। इसकी प्रस्तावना में जिज्ञासुजी ने मनोरम अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस बार भी दि० जिज्ञासु जी के सुझाव और शोध के आधार पर ही नवीन आकार प्रकार का बड़े साइज में यह शोधपूर्ण चतुर्थ संस्करण प्रकाशित हुआ है। इस संस्करण के व्याकरण शास्त्र विषयक संक्षिप्त ऐतिहासिक हिन्दी भूमिका-परिशिष्ट छात्रों, अध्यापकों तथा अनुसन्धित्सुओं के लिये अत्यन्त उपयोगी है। [का० ३७] १-४ अध्याय प्र० भाग १०-००

५-८ अध्याय द्वि० भाग १०-००

१-८ अध्याय, सम्पूर्ण २०-००

१९ **कौमुदी-कथा-कल्लोलिनी**। प्रो० रामशरण शास्त्री।

इस ग्रंथ में व्याकरण और साहित्य का अपूर्व समन्वय है। सुबोध एवं रोचक गद्य-कथानकों में सिद्धान्त-कौमुदी के 'इको यणचि' सूत्र से लेकर उत्तर कृदन्त के अन्तिम सूत्र तक के प्रायः सभी उदाहरणों को देकर कथासाहित्य की एक नवीन विधि का यह अनूठा प्रयोग है। इसके पढ़ लेने पर संस्कृत साहित्य की विभिन्न कथाशैलियों एवं उनमें अनुप्राणित आर्यावर्त की सांस्कृतिक परम्परा तथा सामन्तयुगीन शक्ति का एक चित्रण उपस्थित हो जाता है। ग्रंथ के अन्त में छपा हुआ संस्कृत-हिंदी कोश इसे और भी उपयोगी बना देता है। [वि. सं. ५४] ८-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*20 Critical Studies in the Phonetic Observations of Indian Grammarians. By Dr. Siddheshwar Varma. 20-00

*२१ **कोविदानन्दः**। आशाधरभट्टकृतः। स्वोपज्ञकादम्बिनी व्याख्या सहित १-५०

*२२ **गैरिकसूत्राणि**। जड्युपनामक गङ्गारामोन्नति वृत्ति-रघुनाथशर्मा कृत विवरण सहित १-००

*२३ **तंत्राधिकारनिर्णयः**। भट्टोजिदीक्षित विरचितः ०-५०

२४ **देववाणी-प्रवेशिका**। (सचित्र) भाग १-४ लेखक : पं० अनसूयाप्रसाद भट्ट।

बालक, बालिकाओं की रुचि और संस्कृत को व्यवहार भाषा के क्षेत्र में लाने के उद्देश्य को ध्यान में रखकर प्रस्तुत पुस्तक कक्षा एक से ही पृथक्-पृथक् तैयार की गयी है। भारत की प्रायः सभी लोकभाषायें संस्कृत से ही निकली हैं। मूल भाषा देववाणी का ज्ञान हो जाने पर किसी भी भारतीय भाषा को पढ़ने में कठिनाई नहीं होगी। यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि क्रमशः इस पुस्तक के भागों को पढ़ने वाले बालक-बालिकायें बचपन से ही संस्कृत भाषा को व्यवहार में ला सकेंगे।

(१) प्रथम भाग : कक्षा एक के बालक-बालिकायें हिन्दी की पहली पुस्तक 'प्रवेशिका' के पश्चात् दूसरी पुस्तक के साथ हँसी-खुशी के साथ इस सचित्र पुस्तक को आसानी से पढ़कर समझ लेते हैं।

(२) द्वितीय भाग : कक्षा दो के बालक-बालिकाओं की समझ में शीघ्र आजाने वाले शब्दों को चुनकर बालव्यवहारोपयोगी सचित्र सरल वाक्य-रचना कर दी गयी है।

(३) तृतीय भाग : कक्षा तीन के बालक-बालिकाओं को पाठ पढ़ाते समय पूरे वाक्य का अर्थ एक साथ सीधे ढंग से पढ़ाने की सरल सचित्र विधि अपनायी गयी है। शब्दार्थ याद करने की सुविधा के लिये परिशिष्ट में प्रायः सभी शब्दों के हिन्दी अर्थ भी दिये गये हैं।

(४) चतुर्थ भाग : इस सचित्र चतुर्थ भाग को विधिवत् पढ़ने-लिखने से कक्षा चार के बालक-बालिकाओं को दैनिक व्यवहारोपयोगी संस्कृत भाषा का ज्ञान होने के साथ-साथ—वचन, पुरुष, विभक्ति, लिंग तथा प्रारम्भिक अनुवाद का भी सामान्य ज्ञान प्राप्त हो जाता है और परिशिष्ट में दिया गया बालकोपयोगी 'सूक्तिसंग्रह' उन्हे सदाचारी बनने की प्रेरणा देता है। [वि. सं. १२३]

मूल्य : प्रथम भाग रु० १-००, द्वि० भाग रु० १-००, तृ० भाग रु० १-२०, च० भाग रु० २-००, १-४ भाग ५-२०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*25 Grammar of the Pure and Mixed East Indian Dialects. By Herasim Lebedeff. Edited with Notes, Biographical Sketch and Bibliography of Writings on Lebedeff by Mahadev Prasad Saha. Foreword by Dr. S.K. Chatterji. 20-00

26 Grammar of the Hindustani or Urdu Language. By John T. Platts. 25-00

*२७ **तिङन्तार्णवतरणिकोशः**। (सिद्धान्तकौमुदी की धातुओं का अकारादिक्रम से ण्यन्तादि सहित धातुरूप संग्रहः) दुष्प्राप्य ५०-००

*28 Three Lectures on the Science of Language and its Place in General Education. By F. Max Muller. 6-00

२९ **धातुपाठः**। 'धात्वर्थप्रकाशिका' टिप्पणी सहितः। [ह. २८१] ०-७५

३० **धातुरूपावली**। पं० गोपालशास्त्री नेने पारिष्कृत [श्रीकृष्ण २] ०-५०

३१ **नन्दिकेश्वरकाशिका**। उपमन्यु कृत टीका सहित। [वि. सं. १३३] संशोधित संस्करण ०-२५

३२ **निबन्धप्रकाशः**। पं० कृष्णकुमार अवस्थी। वाराणसी की पूर्वमध्यमा द्वितीय खण्ड के अनिवार्य प्रथम पत्र में संस्कृत निबन्ध के लिए स्वीकृत [वि. सं. ११७] २-००

३३ **निबन्ध-सौरभ**। (प्रथम परीक्षोपयोगी) श्री बाबूलालमिश्र। इसमें बिहार-वाराणसी उभय प्रथम परीक्षोपयोगी लघुकाय हिन्दी निबन्ध अत्यन्त सरल भाषा और ऋजु शैली में लिखे गए हैं। इनसे निबन्ध के विषय में छात्रों का मार्ग अधिक प्रशस्त होगा। [वि. रा. ७८] १-२५

३४ **निबन्धादर्शः**। म० म० श्री गिरिधरशर्मा चतुर्वेदः। संस्कृत के छात्रों को लेखनकला से सुपरिचित कराने के उद्देश्य से लिखित इन निबन्धों का स्वतंत्र महत्त्व है इनमें वस्तुवर्णनात्मक, वृत्तान्तवर्णनात्मक तथा विचारात्मक निबन्धों के अतिरिक्त पत्रलेखन, ताम्रपत्रादिलेखन, गल्प-जीवनचरितादिलेखन तथा अन्य अनेक विषयों पर भी उपयोगी निबन्ध हैं। संस्कृत-साहित्यविषयक निबन्धों के अन्तर्गत साहित्येतिहासविषयक ज्ञान प्रचुर परिमाण में आबद्ध है। संस्कृत के छात्रों के लिए यह बड़ो उपयोगी निबन्धपुस्तक है। [ह. २७२] २-५०

३५ **न्यासकल्पलता** अर्थात् **पाणिनिसूत्रन्यासशास्त्रार्थः**। श्रीशिवकुमारशास्त्री आदि विद्वानों के न्यास-शास्त्रार्थ भी इसमें हैं। [ह. ७९] १-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*३६ **निबन्धचन्द्रिका** । पं० कृष्णदेव उपाध्याय ३-००

३७ **पदार्थदीपिका** । म० म० कौण्डभट्ट विरचिता [चौ. पु.] ०-५०

३८ **परमलघुमञ्जूषा** । 'अर्थदीपिका' टीका टिप्पणी सहिता
म. म. नित्यानन्दपन्तपर्वतीय संपादित परीक्षोपयोगी संस्करण [ह. ४३] समाप्त

*३९ **परमलघुमञ्जूषा** । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित २-५०

४० **परमलघुकला** (परमलघुमञ्जूषा-प्रश्नोत्तरी) [ह. १७६] १-००

४१ **परिभाषेन्दुशेखरः** । 'बृहच्छास्त्रार्थकला' टीकासहितः ।
परीक्षोपयुक्त 'प्रश्नोत्तरी' समेतः [का. १३७] यन्त्रस्थ

४२ **परिभाषेन्दुशेखरः** । भैरवी-तत्त्वप्रकाशिका टीका
[का. ३१] यन्त्रस्थ

४३ **परिभाषेन्दु-प्रश्नपञ्जिका** (परिभाषेन्दुशेखरप्रश्नोत्तरी) २५ वर्षों से अधिक परीक्षोपयोगी प्रश्नों के उत्तर इसमें लिखे गये हैं [का. १३८] ०-६५

४४ **परिष्कारदर्पणम्** । 'शास्त्रार्थकला' सहितम् ।
परिष्कार बनाने की नवीन शैलियां एवं सैकड़ों पाणिनीय सूत्रों के शाब्दबोध अति सरल रीति से लिखे गये हैं [ह. ३५] २-००

४५ **पाणिनिकालीन भारतवर्ष** । (पाणिनिकृत अष्टाध्यायी का सांस्कृतिक अध्ययन) डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ।
इस ग्रंथ में महर्षि पाणिनि विरचित संस्कृत-व्याकरण के सूत्रों के आधार पर उस कालके भारतीय जीवन और संस्कृति का विस्तृत प्रामाणिक अध्ययन है । अष्टाध्यायी के कितने ही भूले हुए शब्दों को यहाँ नये अर्थों के साथ समझाने का प्रयास किया गया है । ऐसे लगभग ३००० शब्दों की अकारादि-क्रम-सूची ग्रन्थान्त में सन्निविष्ट है । संशोधित नवीन द्वितीय संस्करण [वि. रा. ५०] २०-००

*४६ **पाणिनीय धातुपाठ समीक्षा** । डा० भगीरथ प्रसाद त्रिपाठी (वागीश शास्त्री) १८-५०

४७ **पाणिनीयव्याकरणे वादरत्नम्** । श्रीसूर्यनारायणशुक्लविरचितम् ।
प्रथमभाग में न्यास प्रकरण और द्वितीय भाग में परिष्कार प्रकरण है । न्यास-परिष्कार का इससे उत्तम ग्रन्थ आज तक नहीं छपा [का.सी. ८०]
प्रथम भाग २-५० द्वितीय भाग २-५०, १-२ भाग ५-००

४८ **पाणिनीयशिक्षा** । 'प्रदीप' व्याख्या सहिता ।
पाणिनीय शिक्षा के साथ-साथ स्वरवैदिकप्रक्रिया के फक्किकाविवरण जो किसी संस्करण में नहीं हैं, इसमें आपको प्राप्त होंगे । [ह. सी. ५९] ०-४०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*४९ **पाणिनीय व्याकरण का अनुशीलन**। डॉ० रामशंकर भट्टाचार्य १२-००

५० **पाणिनीयशिक्षा**। पञ्जिकाभाष्य सहिता। [ह. १०] समाप्त

51 PANINI : His Place in Sanskrit Literature. An Investigation, Literary and Chronological Questions which may be settled by A Study of His Works. By Theodor Goldstucker. [Chow. Sans. Studies Vol. XLVIII] 16-00

५२ **प्रबन्ध-पारिजातः** (परिवर्धित संस्करण) प्रो० रामचन्द्र मिश्र। वाराणसी की उत्तरमध्यमा प्रथम खण्ड परीक्षा स्वीकृत।

काशी, विहार, पंजाब आदि की परीक्षाओं में आने योग्य निबन्धों के उत्तर इस तरह सरल और संक्षिप्त रूप में लिखे गये हैं कि अभ्यास कर लेने पर विद्यार्थी परीक्षा में पूरी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इस परिवर्धित संस्करण में (१) 'पत्र-लेखन प्रकार' (चिट्ठी-पत्री, आवेदन-पत्र आदि का उल्लेख), (२) प्रसङ्गोपयुक्त 'सुभाषित गद्यावली', (३) 'सुभाषितपद्यांशावली' और (४) 'लौकिक न्यायमाला' आदि विषयों का भी समावेश किया गया है। [ह. १७५] १-७५

५३ **प्रबन्धरत्नाकरः**। शास्त्री, आचार्य, बी० ए०, एम० ए० आदि परीक्षोपयोगी शताधिक निबन्धों का संग्रह) रचयिता-डॉ० रमेशचन्द्र शुक्ल।

संस्कृत साहित्य—काव्य, नाटक, गद्यकाव्य आदि से सुसमृद्ध होते हुए भी निबन्धों की दृष्टि से अभी अपुष्ट है। विशेषतया, नवीन विषयों के ऊपर लिखे हुए विचारगर्भित निबन्धों का बड़ा ही अभाव था। निबन्ध-रचना के लिए भाषा के ऊपर अधिकार जितना अपेक्षित है उतना ही ऊहापोह के साथ विचार पटुत्व भी। इसलिए आज के पल्लवग्राहि विद्वत्ता के युग में प्रबन्धरचना विद्यार्थियों के लिए बहुत कठिन हो जाती है। विद्यार्थियों की सहायता के लिए आवश्यकतानुसार निबन्ध-ग्रन्थ भी सुलभ नहीं हैं। इस अभाव की पूर्ति के लिए विद्वान् लेखक ने प्रबन्धों का यह संग्रह प्रस्तुत किया है, जिसमें प्राचीन एवं नवीन सुललित भाषा में सभी विषयसम्बन्धी लिखित सौ से ऊपर निबन्ध हैं। आशा ही नहीं दृढ़ विश्वास है कि इस ग्रन्थ से सभी उच्च कक्षाओं के परीक्षार्थी विशेष लाभान्वित होंगे। परीक्षार्थियों के लिये यह अद्वितीय पुस्तक है। [वि. सं. १४०] १६-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५४ **पूर्वपक्षावली** । सपरिष्कृता [ह. ५] ०-२५

*५५ **प्रक्रियाकौमुदी-विमर्शः** । डॉ० आद्याप्रसाद मिश्र विरचित ८-००

५६ **प्रथमा-शब्द-धातुरूपसंग्रहः** । (वाराणसी की प्रथमा परीक्षा-पाठ्य स्वीकृत शब्द-धातुरूपों का संग्रह) सम्पादक, पं० रामचन्द्र झा [वि. सं. ११५] ०-५०

५७ **प्रबन्धामृतम्** । (व्याकरणाचार्योपयोगी निबन्ध ग्रन्थ)

संस्कृत व्याकरण के महत्त्वपूर्ण एवं विवादग्रस्त १२ विषयों पर विचार-पूर्वक लिखे गये ये परमविद्वत्तापूर्ण निबन्ध विषयशैली तथा कौशल आदि सभी रचनात्मक दृष्टिकोणों से उत्कृष्ट है। [ह. १५७] १-५०

५८ **प्रयोगशास्त्रार्थकला** । श्री वेणीमाधव शुक्ल रचित [ह. ७०] ०-२५

५९ **प्रस्तावतरङ्गिणी** । वाराणसी की उत्तरमध्यमा द्वितीय खण्ड परीक्षा स्वीकृत । श्री चारुदेव शास्त्री ।

काशी, बिहार, पंजाब आदि की परीक्षाओं में निर्धारित अपने ढङ्ग का यह सर्वोच्च निबन्ध ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के अध्ययन से प्राचीन आचार-विचार के निरूपण के साथ-साथ आधुनिक विचारधाराओं के सारगर्भित विषयस्वरूप, प्रबन्ध-रचना-चातुरी तथा विचार-वैशारदी सहज ही प्राप्त हो जाती है [ह. २०१] ४-००

६० **प्राकृतप्रकाशः** । भामहकृत 'मनोरमा' तथा म. म. मथुराप्रसाद दीक्षितकृत 'चन्द्रिका' संस्कृत-हिन्दीव्याख्या सहितः ।

भाषा, भाव आदि सभी दृष्टि से हिन्दी का प्रवाह ग्रन्थाशय के पूर्ण अनुकूल है इसकी भूमिका में सम्पूर्ण ग्रन्थ की आलोचना एवं वररुचि का प्रामाणिक इतिवृत्त भी वर्णित है । अन्त में अपभ्रंश-शब्द-विचार-शब्द-कोश आदि से भी ग्रन्थ के दुरूहांशों को आधुनिक ढंग से खुलासा कर दिया गया है । [का. ३८] ५-००

६१ **प्राकृत-प्रबोध** । डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री ।

हिन्दी माध्यम से प्राकृत व्याकरण के ज्ञान के लिए सर्वांगपूर्ण यह संस्करण प्रस्तुत किया गया है । अनुवाद और निबन्ध के लिए यह ग्रन्थ सर्वोत्तम है । [वि. सं. १३०] ८-००

६२ **प्राकृतव्याकरणवृत्तिः** (ससूत्रा) श्री त्रिविक्रमदेवनिर्मिता । भूमिका, सूची आदि से अलंकृत सजिल्द अभिनव संस्करण

[चौ. ८८] ९-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६३ **प्राकृत व्याकरण (हिन्दी)**। श्री मधुसूदनप्रसाद मिश्र।
विद्यार्थियों के हित की दृष्टि से विद्वान् लेखक ने इसमें महाराष्ट्री, मागधी, शौरसेनी, पैशाची, अपभ्रंश आदि प्राकृत के सभी अवान्तर भेदों का अत्यंत सुबोध रूप से प्रतिपादन करके एक बहुत बड़ी कमी को पूर्ण किया है। पाद टिप्पणियाँ तथा तुलनात्मक अध्ययन की सामग्री प्रस्तुत करने एवं ग्रंथान्त में परिशिष्ट के दे देने से इसकी महत्ता और भी बढ़ गयी है। [वि. रा. ३२] ५-००

64 PRACTICAL GRAMMAR OF THE SANSKRIT LANGUAGE. By Monier Williams.
[Chow. Sans. Studies Vol. XXI] 20-00

६५ **प्रौढमनोरमा**—शब्दरत्न—भैरवी—भावप्रकाश—सरलाटीकोपेता।
पं० बालंभट्ट पायगुण्डेकृत भावप्रकाश टीका के साथ काशी के उद्भट विद्वान् व्या० आ० गोपालशास्त्री नेने कृत सरला टीका भी प्रकाशित हो जाने से यह संस्करण विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त ही उपादेय तथा परीक्षोपयोगी सिद्ध हो गया है। [का. १२५] अव्ययीभावान्त १४-००

६६ **प्रौढमनोरमा**—शब्दरत्न-ज्योत्स्ना-कुचमर्दिनी-प्रभा-विभोपेता।
[ह. २३] प्रथम भाग ३-००
अजन्तपुल्लिङ्गादि स्त्रीप्रत्ययान्त द्वितीय भाग ३-००
अव्ययीभावान्त तृतीय भाग ३-००
१-३ भाग एक जिल्द में ८-००

६७ **प्रौढमनोरमा**। शब्दरत्न-भैरवी व्याख्या म. म. पं. श्री माधव शास्त्री भाण्डारी कृत प्रभा-टिप्पणी सहित। अव्ययीभावान्त [का. ५८] समाप्त

६८ **प्रौढमनोरमा**। 'शब्दरत्न' सहित तत्पुरुषादि सन्नन्तप्रक्रियान्त
[का. ५८] १०-००

+६९ **प्रौढमनोरमा**। 'शब्दरत्न' सहिता। उत्तरार्ध। प्राचीन जीर्ण संस्करण २५-००

+७० **प्रौढमनोरमाखण्डनम्**। श्री चक्रपाणिदत्त विरचितम् २-५०

७१ **प्रौढमनोरमाशब्दरत्नप्रश्नोत्तरावली** तथा **व्याकरणशास्त्रिप्रश्नावली**
[ह. ५४] १-३ खण्ड १-५०

७२ **फक्किकाप्रकाशः**। (पङ्क्तिव्याख्यानम्) बृहद् टिप्पणीसहितः [का. ४७] १-५०

७३ **फक्किका-प्रश्नोत्तरी** (परीक्षोपयुक्तपंक्तिव्याख्यानरूपो ग्रन्थः)
[ह. १४०] १-५०

७४ **फक्किकारत्नमञ्जूषा** (") द्वि. भाग समाप्त। प्रथम भाग [चौ. पु.] २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७५ **फक्किकासरलार्थः** (तृतीय संस्करण) ।

व्यर्थ विस्तार और काठिन्य ये दोनों दोष छोड़ कर फक्किकाएँ इस प्रकार लिखी गई हैं जिससे मध्यमा के विद्यार्थियों की सभी कठिनाइयाँ दूर हो गई हैं । [ह. २१] १-००

*७६ **बकार-विवेकः** (ओष्ठ्य-दन्त्योष्ठ्ययोर्ब-वयोर्विवेचनम्) ।

पं० दीनबन्धु झा ०-५०

७७ **बनारस-सोत्तरा-प्रथमाप्रश्नावली ।**

इस संस्करण में नवीन निर्धारित साधारण प्रश्नपत्रों के साथ पिछले ३२ वर्षों के लघुकौमुदी में आये हुए प्रश्नों के उत्तर भी प्रकरण के अनुसार अत्यन्त संक्षेप में लिखे गये हैं । [ह. १७७] २-५०

*७८ **बालसंस्कृतप्रभा** (बालोपयोगी) नेट ०-५०

७९ **बिहार-सोत्तरा-प्रथमाप्रश्नावली ।**

लगभग ३० वर्षों के प्रश्नों के उत्तर लघुकौमुदी के प्रकरणानुसार इस अभिनव संस्करण में आधुनिक ढंग से संक्षिप्त रूप में लिखे गये हैं । [ह. १७७] २-००

*८० **बृहच्छब्देन्दुशेखरः** । डॉ० सीताराम शास्त्री सम्पादित ।

१-३ भाग ४५-००

८१ **बृहत् संस्कृतशिक्षा-वाटिका** । प्रथम भाग यन्त्रस्थ द्वितीय भाग ०-६५ तृतीय भाग ०-६५ चतुर्थ भाग ०-७५ [ह. ४९] २-४ भाग २-००

*८२ **भागवृत्तिः** । भर्तृहरि (विमलमति) विरचित अष्टाध्यायी प्राचीनवृत्ति- युधिष्ठिर मीमांसक संकलित ३-००

८३ **मध्यसिद्धान्तकौमुदी**-'सुधा' 'इन्दुमती' संस्कृत-हिन्दी टीका, नोट्स, प्रश्नोत्तर लेखनप्रकारादि सहित ।

इसकी 'सुधा' संस्कृत टीका में प्रत्येक प्रयोग तथा धातुरूप की परीक्षोपयोगी साधनिका तथा सूत्रार्थों की अति सरल व्याख्या की गई है। इसकी 'इन्दुमती' नामक हिन्दी टीका में टीका के साथ 'नोट्स' देकर संस्कृत व्याकरण का भी सरल रूप से ज्ञान कराया गया है जो आज तक के किसी भी संस्करण में नहीं है । [ह. २१३] ५-००

८४ **मध्यकौमुदीरहस्यम्** (प्रश्नोत्तरी, संशोधित तृ० संस्करण)

इस मध्यकौमुदी-प्रश्नोत्तरी में परीक्षा में आए हुए ३२ वर्षों के प्रश्नों के उत्तर अति सरल, सुबोध तथा फक्किकांश रहित लिखे गए हैं । [ह. २३५] ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८५ **मध्यमा-व्याकरण-सोत्तरा-प्रश्नावली** (परिवर्द्धित संस्करण) संपादक, पं० रामचन्द्र झा व्याकरणाचार्य ।

इस संस्करण में सिद्धान्तकौमुदी के प्रकरणानुसार फक्किकांशवर्जित आधुनिक प्रश्नोत्तर लिखे गये हैं। अब यह प्रश्नोत्तरी सि० कौमुदी की परीक्षोपयोगी संक्षिप्त टीका ही हो गयी है। ३२ वर्षों के प्रश्नों के उत्तर इसमें आपको मिलेंगे। [ह. १३८] प्रथम खण्ड १-७५ द्वि० खण्ड २-०० तृ० खण्ड २-५० चतुर्थ खण्ड २-७५, १-४ खण्ड ९-००

८६ **माधवीयधातुवृत्तिः** । सायणाचार्य विरचिता, सम्पादक-श्री अनन्त शास्त्री फड़के, प्राध्यापक-वाराणसेय संस्कृत विश्व-विद्यालय वाराणसी ।

यह ग्रन्थ पाणिनीय धातुपाठ की सर्वांगपूर्ण व्याख्या है। धातु-कोश या धातुरूपों के अनुसन्धित्सुओं के लिए यह बहुत ही उपयोगी ग्रन्थ है। [का० १०३] १०-००

८७ **मानक हिन्दी व्याकरण** । वाराणसी तथा बिहार की पूर्वमध्यमा-परीक्षा स्वीकृत। आचार्य रामचन्द्र वर्मा

इसमें अनेक शब्दभेदों की बिलकुल नई प्रकार की व्याख्या दी गई है; और विषय-विभाजन भी बहुत कुछ नये ढंग से किया गया है। अध्यापक तथा विद्यार्थी इसे अन्यान्य अनेक व्याकरणों की तुलना में अधिक महत्त्व की दृष्टि से देखेंगे और इससे अधिक लाभ उठावेंगे। [वि. रा. ३९] २-००

*88 Manual of Sanskrit Phonetics. In Comparison with the Indogermanic, Mother-Language, for Students of Germanic and Classical Philology. By Dr. C. C. Uhlenbeck. 12-50

८९ **राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण** । वाराणसी तथा बिहार की प्रथमा परीक्षा स्वीकृत । पं० केदारनाथ शर्मा ।

हिन्दी राष्ट्रभाषा हो जाने से शुद्ध हिन्दी में बोलना और लिखना छात्रों के लिये दुरूह हो गया था क्योंकि प्राचीन हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में ५० प्रतिशत उर्दू शब्दों का ही संमिश्रण है। अतएव यह पुस्तक राष्ट्रभाषा के प्रतीक तथा 'आज' पत्रिका के भू० पू० सम्पादक बाबूराव विष्णुपराड़कर, बाबू सम्पूर्णानन्दजी आदि धुरन्धर हिन्दी वेत्ताओं के मतों से अलंकृत तथा हिन्दी के महारथी पं० रामनारायण मिश्र, विश्वनाथप्रसाद मिश्र आदि विद्वानों की सम्मतियों से सुसज्जित होकर नवीन रूप में प्रकाशित हुई है। [ह. १९३] १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९० **रूपचन्द्रिका** (परिवर्धित संस्करण)पं० रामचन्द्र झा

इस संस्करण की विशेषता—

(लघुकौमुदी में आये हुए तथा उनके समान और भी शब्दों तथा धातुओं के अर्थ सहित रूपावली)। इस संस्करण में दशगणी धातुरूपों को सुपरिष्कृत करके ण्यन्त, सन्नन्त, यङन्त, यङ्लुगन्त, आत्मनेपद, परस्मैपद, भावकर्म, कर्मकर्तृ आदि सभी प्रकरणों के सुविस्तृत सम्पूर्ण धातुरूपसंमिलित कर दिये गये हैं तथा ग्रन्थ के अन्त में अनुवादोपयोगी विविध परिशिष्ट तथा धातु सूची भी दी गई है। [ह. १५६] २-५०

९१ **लघुजूटिका** अर्थात् **अभिनवपरिभाषेन्दुशेखरपरिष्कृतिनिर्मितिः**
(शास्त्रीपरीक्षोपयोगी) [का. १९] ०-५०

९२ **लघुशब्देन्दुकला** (लघुशब्देन्दुशेखर-प्रश्नोत्तरी)।
'प्रबन्धलेख' परिशिष्ट सहिता [ह. १७२] १-२५

९३ **लघुशब्देन्दुशेखरः**। म. म. श्रीनित्यानन्दपन्त पर्वतीयकृत—
'शेखरदीपक'टीका सहितः। अव्ययीभावान्तः [का. २७] १२-००

९४ **लघुशब्देन्दुशेखरः**। भैरवी (चन्द्रकला) टीकासहितः। [का. ५] समाप्त

९५ **लघुशब्देन्दुशेखरः**। नागेशोक्तिप्रकाशटीकासहितः [का. १२८] ३-००

*९६ **लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या सदाशिवभट्टी** समाप्त

९७ **लघुकौमुदी-सोत्तरा प्रश्नावली**। [ह. १७७] २-००

९८ **लघुसिद्धान्तकौमुदी**। 'इन्दुमती' संस्कृत-हिन्दी टीका, नोट्स, प्रथमपरीक्षोपयोगी विविध परिशिष्टादि सहित। सं० रामचन्द्र झा

इस संस्करण की विशेषता—

इस अभिनव संस्करण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस टीका के आधार पर विद्यार्थी को पढ़ाया जाय तो व्यर्थ में उनका अधिक समय नष्ट न होगा। बालकों को परीक्षा के लिये लेख रटाने या लिखाने-पढ़ाने की आवश्यकता न होगी। ग्रन्थ के भावों का दिग्दर्शन मात्र कराने पर ही विद्यार्थी 'इन्दुमती' टीका के आलोक में सभी बातें संक्षेप में समझ जायेंगे। ३२ वर्षों के प्रश्नोत्तर भी इस टीका में यथास्थान दिये गये हैं तथा सर्वत्र हिन्दी नोट्स में सन्धि, कारक, समास, तद्धित, तिङन्त, लकारार्थ, कृदन्त आदि की सरल समीक्षा भी इस तरह की गई है कि विद्यार्थी को तत्क्षण ही उस विषय का पूरा ज्ञान हो जायगा। प्रायः सभी अनुवादोपयोगी विषय वृहत् परिशिष्ट में दिये गये हैं। [ह. २२१] २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९९ **लघुसिद्धान्तकौमुदी।** 'सुधा' टीका, प्रश्नोत्तरलेखन सहित। इसकी सुधा टीका में सूत्रों का सरलार्थ, प्रत्येक शब्द तथा धातुरूप की ससूत्र साधनिका, सरलार्थ, स्थल-स्थल पर शब्दरूपावली, समासचक्र आदि विषय दिये गये हैं। ग्रन्थ के अन्त में उदाहरणों एवं धातुओं के हिन्दी अर्थ तथा प्रयोगलेखनप्रकार आदि बहुत से परीक्षोपयोगी विषय दिये गये हैं। [ह. ११९] अजिल्द ३-०० सजिल्द ३-७५

१०० **लघुसिद्धान्तकौमुदी।** हिन्दी व्याख्याकार : महेशसिंह कुशवाहा

(नवीन शिक्षण-पद्धति पर आधारित वैज्ञानिक, विवेचनात्मक एवं विशद 'माहेश्वरी' नामक हिन्दी-व्याख्या सहित)

पुस्तक की व्याख्या बहुत ही सुबोध और आधुनिक शैली में प्रस्तुत की गई है। कहीं भी पुरानी पण्डिताऊ शैली का प्रयोग नहीं हुआ है। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस व्याख्या में वृत्ति का अर्थ न देकर सूत्र का अर्थ दिया गया है। प्रत्येक सूत्र का विभक्ति-निर्देश कर पहले शब्दार्थ दिया गया है और फिर अनुवृत्ति देकर उसका भावार्थ। अन्त में उपयुक्त उदाहरण देकर उस अर्थ को पुष्ट किया गया है। सूत्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों और प्रत्याहारों को भी स्पष्ट और प्रचलित शब्दों में प्रकट किया गया है। अनेकों आलोचनात्मक और विवेचनात्मक टिप्पणियाँ दी गई हैं जो कि सूक्ष्म से सूक्ष्म विषयों को भी स्पष्ट कर देती हैं। व्याख्या सरल होने के साथ ही प्रामाणिक भी है, क्योंकि उसका आधार वृत्ति न होकर महाभाष्य, काशिका आदि आर्षग्रन्थ हैं।

भूमिका में व्याकरण के इतिहास, अष्टाध्यायी और लघुसिद्धान्तकौमुदी के तुलनात्मक विवेचन तथा व्याख्या और रूप सिद्धि की प्रक्रिया पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट-रूप से प्रत्याहार, पारिभाषिक शब्द, गणपाठ और सूत्रानुक्रमणिका आदि विषय दे दिये गये हैं। इस प्रकार यह संस्करण सर्वांगीण और आज तक प्रकाशित सभी संस्करणों से विलक्षण और श्रेष्ठ है। इसकी सहायता से मन्द से मन्द विद्यार्थी भी बिना अध्यापक के व्याकरण जैसे दुरूह विषय का ज्ञान सुगमता से प्राप्त कर सकता है। अध्यापकों और अन्य संस्कृत प्रेमियों के लिये यह पुस्तक समान रूप से उपयोगी है।

संज्ञाप्रकरणादि विसर्गसन्ध्यन्त (सन्धि प्रकरण) भूमिकादि सहित ३-००

[वि. सं. १३१] संपूर्ण ग्रन्थ १२-५०

१०१ **लघुसिद्धान्तकौमुदी।** 'बालबोधिनी' टीका सहित।

इस टीका में मूल की छोटी छोटी पङ्क्तियों व कठिन सूत्रार्थों को अल्पमति बालकों के लिए सरल शब्दों में लिखा गया है जिससे मूल पाठ करते समय भी उसका अर्थ तुरन्त समझ में आ जाता है। [ह. २] ०-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०२ **लघुकौमुदी-सोत्तरा-प्रयोगसूची।** प्रयोगार्थ सहित-परीक्षोपयोगी 'इन्दुमती' टिप्पणी विभूषिता [ह. ४८] ०-९५

१०३ **लघुकौमुदी-प्रयोगसूची।** अमृता टिप्पणी विभूषिता [चौ. पु.] ०-३५

१०४ **लघुसारस्वतव्याकरणम्।** (दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय 'प्रवेशिका' परीक्षा पाठ्यपुस्तक)

विद्वान् लेखक ने बडे कौशल से इस पुस्तक का सम्पादन किया है। बीच-बीच में उपयोगी ज्ञातव्य सामग्री हिन्दी में भी दी गई है। [वि. सं. ९०] ०-५०

१०५ **लघुसिद्धान्तचन्द्रिका।** (दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय 'प्रवेशिका' परीक्षा पाठ्यपुस्तक)

संस्कृत भाषा के तिङन्त भाग के व्याकरण का ज्ञान अल्पवयस्क बालकों को बहुत थोड़े परिश्रम से ही हो जाय यही प्रस्तुत पुस्तक के संकलन का उद्देश्य है। [वि. सं. ९१] ०-५०

*१०६ **लिङ्गानुशासनम्।** वामन कृत। स्वोपज्ञ वृत्ति सहित २-००

१०७ **लौकिकन्यायशास्त्रार्थकला** तथा **कूटशास्त्रार्थकला** [ह. १००] ०-७५

१०८ **वाक्यपदीयम्।** 'भावप्रदीप' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित।

आचार्य सूर्यनारायण जी शुक्ल विरचित 'भावप्रदीप' नामक संस्कृत व्याख्या सर्वांगपूर्ण है। फिर भी इस द्वितीय संस्करण में संस्कृत व्याख्या का भी सारगर्भित हिन्दी व्याख्या होने से छात्रों तथा अध्यापकों के लिए भी यह ग्रन्थ अत्यन्त सुगम हो गया है। [का० १२४]

ब्रह्मकाण्ड ५-००

१०९ **वाक्यपदीयम्।** द्वितीय काण्ड [ब. ७] समाप्त

+११० **वाक्यपदीयम्।** तृतीयकाण्ड, हेलाराजटीकासहित ४-८ खण्ड। कालसमुद्देशतो वृत्तिसमुद्देशपर्यन्तम् [ब. ७] १०-००

*१११ **वाक्यमुक्तावली।** चारुदेव शास्त्री। हिन्दी टीका सहित ३-००

११२ **विभक्त्यर्थनिर्णयः।** म० म० गिरिधरोपाध्याय विरचितः [चौ. १२] ५०-००

*113 Vedic Grammar. By A. A. Macdonell. Big Edition. 60-00

११४ **हिन्दी वैदिक व्याकरण।** श्री उमेश चन्द्र पाण्डेय।

बी. ए. तथा एम. ए. परीक्षाओं के पाठ्यक्रमानुसार नव निर्मित इस ग्रंथ में वेद का सुबोध व्याकरण, स्वरचिह्न, पद-पाठ आदि के विषय में समाधान तथा क्रिया रूपों का एक लघु कोश भी प्रकाशित किया गया है। [वि. रा. ३७] २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११५ वै० भूषणनिबन्धसंग्रहनाम तिङर्थवादसार तथा भूषणव्याख्या [ह. ९९] ०-२५

११६ **वैयाकरणभूषणसारः।** 'सरला'-'सुबोधिनी' व्याख्याद्वयोपेतः श्री पं० गोपालशास्त्री नेने संपादित तथा परिवर्धित यह सुलभ संस्करण नवीन शिक्षार्थियों के लिए सरल और उपादेय है। [चौ. पु.] २-५०

११७ **वैयाकरणभूषणसारः।** परीक्षोपयोगी दर्पण—भैरवी—(परीक्षा) टीकाद्वय सहितः [का. १३३] समाप्त

११८ **वैयाकरणभूषणसारः।** विमर्शाख्य 'प्रभा' तथा प्राचीन 'दर्पण' व्याख्यासहित। सं० श्री बालकृष्ण पञ्चोली।

विषय की गम्भीरता के कारण यह ग्रन्थ दुरूह माना जाता है। उसी दुरूहता के निराकरण के लिए तथा वैयाकरणभूषणसार के प्रतिपाद्य विषय को सरलता से विद्यार्थियों को समझाने के लिए वैयाकरणमूर्धन्य पं० बालकृष्ण पञ्चोली जी ने प्रभा नामक सुविस्तृत व्याख्या की रचना की है। निःसन्देह इस व्याख्या से छात्रों को गुरुपरम्परागत परिष्कारपद्धति में नैपुण्य प्राप्त होगा। प्राचीन दर्पण व्याख्या भी प्रौढ़ जिज्ञासुओं के उपकारार्थ इस संस्करण में उपन्यस्त है।

शोधपूर्ण परिष्कृत द्वितीय संस्करण [का. १८८] २०-००

११९ **वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा।** 'रत्नप्रभा' व्याख्योपेता। व्याख्याकार—श्री पं० सभापति शर्मोपाध्याय।

इस दुरूहग्रन्थ की रत्नप्रभा व्याख्या में समस्त मतमतान्तरों का जो मर्मस्पर्शी पूर्ण विवेचन और आवश्यक स्थल पर युक्तिप्रमाणों द्वारा निराकरण किया गया है वह अभूतपूर्व है।

[का. १६३] तात्पर्यनिरूपणान्त भाग। शोधपूर्ण संस्करण १२-००

१२० **वै. सि. लघुमञ्जूषा-रहस्यम्** (वै. सि. लघुमञ्जूषा—प्रश्नोत्तरी) इसमें ग्रंथ के दुरूहांशों को ऐसे सरल शब्दों में लिखा गया है कि विद्यार्थियों को ग्रंथ का आशय शीघ्र ही समझ में आ जायगा और वे परीक्षा के प्रश्नोत्तर भी संक्षेप में लिख सकेंगे। [वि. सं. २२] १-००

*१२१ **व्यवहार्यशब्दसरोवर।** प्रथम परीक्षोपयोगी नेट ०-६२

*१२२ **व्याकरणकौतुकम्।** (गुप्तविविधाऽशुद्धिवाक्यशतकम्) पं० दीनबन्धु झा ०-५०

*१२३ **व्याकरण दर्शन पीठिका।** रामाज्ञा पाण्डेय विरचित ४-००

*१२४ **व्याकरण दर्शन भूमिका।** रामाज्ञा पाण्डेय विरचित ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१२५ **व्याकरणदीपिका**। (पाणिनीय सूत्रवृत्ति) औरंभट्ट कृत। ५०-००

१२६ **व्याकरणमहाभाष्यम्**। (नवाह्निकम्) प्रदीप-उद्योत-तत्त्वालोक टीकात्रयोपेतम्। महामहोपाध्याय श्री गिरिधर शर्मा संपादित

भूमिकादि विभूषित प्रदीप-उद्द्योत तथा 'तत्त्वालोक' नाम की टीकात्रय से विभूषित महाभाष्य का यह अभिनव संस्करण प्रथम ही प्रकाशित हुआ है। इस 'तत्त्वालोक' के आलोक में 'छायादि' सभी टीकायें गतार्थ हो गयी हैं। सजिल्द संस्करण। [का. १५३] १५-००

१२७ **व्याकरण-महाभाष्यम्**। सप्रदीप हिन्दीव्याख्योपेतम्

महाभाष्य सरल संस्कृत भाषा का सर्वोच्च निदर्शन होते हुये भी आशय की दृष्टि से गंभीर ग्रन्थ है। प्रस्तुत संस्करण में भाषान्तर करते हुये भी भाष्याशय को सुस्पष्ट करने का सर्वत्र प्रयास किया गया है। पूर्वापर-संगति तथा भाष्यकार के अभिप्राय के स्पष्टीकरण के लिये प्रदीप (कैयट) संस्कृत व्याख्या सहित महाभाष्य की विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या की गई है। क्लिष्ट पदों का सुविस्तृत अर्थनिर्देश तथा विग्रह भी दिया गया है। अतः यह संस्करण विशेष रूप से उपयोगी है। ग्रन्थगत कोई भी अभिप्राय अविदित नहीं रह जाता। संस्कृत व्याकरण के छात्रों तथा अध्यापकों के हित की दृष्टि से महाभाष्य १-९ आह्निक का यह संस्करण सर्वोत्तम है। **प्रथम आह्निक (पस्पशाह्निक) २-००**

१-४ आह्निक ८-००, १-५ आह्निक १०-००

तथा ६-९ आह्निक के पृथक् भाग भी शीघ्र प्राप्त होंगे

प्रथमाध्याय द्वितीयपादादि से अष्टमाध्याय पर्यन्त [वि. सं. १३८] यन्त्रस्थ

*१२८ **व्याकरणमहाभाष्यम्**। प्रदीप-उद्योत टीका द्वयोपेतम्।

प्रथमाध्याय प्रथमपाद नवाह्निकम्			१५-००
प्रथमाध्याय द्वितीयादि चतुर्थपाद			८-००
द्वितीयाध्याय	७-००	षष्ठाध्याय	९-००
तृतीयाध्याय	८-००	सप्तमाध्याय	७-००
चतुर्थाध्याय	७-००	अष्टमाध्याय	७-००
पंचमाध्याय	७-००		

सम्पूर्ण १-८ अध्याय अजिल्द ७५-०० सजिल्द ८०-००

१२९ **व्या० महाभाष्यप्रकाशः**-(महाभाष्य-प्रश्नोत्तरी)

आज तक के परीक्षा में आये हुये सभी प्रश्नपत्र इसमें गतार्थ हो गये हैं। ऐसी सुविस्तृत सरल प्रश्नोत्तरी प्रथम ही प्रकाशित हुई है [ह. १९९] ०-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३० **व्याकरणशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास** । श्रीरमाकान्त मिश्र
वैदिक काल से लेकर व्याकरण शास्त्र का इतिहास क्रमशः पूर्व-पाणिनि-काल, त्रिमुनि-काल, व्याख्या-काल और प्रक्रिया-काल के क्रम से सुव्यवस्थित रूप में वर्णित है। प्रायः सभी सम्प्रदायों का वर्णन इसके अन्तर्गत हो गया है। अत्युपयोगी संस्करण है। [वि. रा. १०६] ४-००

१३१ **व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधिः** । विश्वेश्वरसूरिविरचितः । पाणिनीय-अष्टाध्याय्या भाष्यव्याख्यानरूपः [चौ. ४५] ३७-५०

१३२ **व्युत्पत्तिप्रदर्शनं गूढाशुद्धिप्रदर्शनम्** (तृतीय संस्करण)
पं० महादेव उपाध्याय, अध्यापक, वाराणसेय सं. विश्वविद्यालय
इस संस्करण के परिशिष्ट में गूढाशुद्धिप्रदर्शन भी दिया गया है जो परीक्षार्थियों के लिये महत्त्व का विषय है। अब परीक्षार्थियों को दोनों विषय एक ही साथ मिलने से अशुद्धवाक्यशोधन के लिए परीक्षा में सरलता से सफलता मिलेगी। [ह. १६१] ०-५०

१३३ **शब्दकौस्तुभः** । श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितप्रणीतः । महाभाष्यस्थानामंशानां युक्तिप्रयुक्तिभिः साधनाय प्रणीतोऽतिविस्तृतोऽयं ग्रन्थः । प्रथमाध्यायद्वितीय-पादादि तृतीयाध्यायद्वितीयपादपर्यन्तम् [चौ० २] २०-००

१३४ **शब्दकौस्तुभः** । नवाह्निकमात्रम् [चौ. २] यन्त्रस्थ

१३५ **शब्दरूपावली** । एकाक्षरीकोश सहित [श्रीकृष्ण ३] ०-३५

*१३६ **शिक्षासूत्राणि** । आपिशलि-पाणिनि-चन्द्रगोमि विरचितानि । १-५०

*१३७ **संस्कृत एम. ए. प्रश्नपत्र** । ३-५०

१३८ **संस्कृत प्रकाश** । श्री कुबेरनाथ द्विवेदी ।
प्रस्तुत पुस्तक इलाहाबाद बोर्ड द्वारा हाइस्कूल एवं इंटर परीक्षा में निर्धारित संस्कृत व्याकरण का अत्यन्त सरल, सुबोध एवं परीक्षोपयोगी पाठ्य ग्रंथ है। इसकी समझाने की शैली अत्यन्त सुलझी हुई और आधुनिक पाठ्यप्रणाली के अनुकूल है। [वि. सं० ८५] २-५०

*१३९ **संस्कृत प्रथम पुस्तक** । रामबिहारीलाल २-००

१४० **संस्कृत-प्रथमपाठमाला**—SANSKRIT FIRST LESSONS : By Dr. J. R. Ballantyne, हिन्दी अनुवाद सहित । अनु०-श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय ।
मूल अंग्रेजी के साथ सरल हिन्दी अनुवाद युक्त यह संस्करण संस्कृत में प्रवेश चाहने वालों के लिए अतीव उपयोगी है। संस्कृत व्याकरण और रचना का प्रारम्भिक ज्ञान इसमें सुविचारित वैज्ञानिक विधि से गुम्फित है। [वि. सं. १४९] ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४१ **संस्कृतपाठमाला**। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन।

सुगमतापूर्वक संस्कृत भाषा को अधिकृत करने के लिये विद्वान् लेखक ने बालक-बालिकाओं के मानसिक स्तर का ध्यान रखते हुए पाँच भागों में इस पुस्तक की रचना की है। [वि. सं. २७]

प्रथम भाग ०-६० द्वितीय भाग ०-८५ तृतीय भाग ०-८५
चतुर्थ भाग ०-८५ पंचम भाग १-०० १-५ भाग ४-१५

*१४२ **संस्कृत बालादर्श**। ०-९०

*१४३ **संस्कृत प्रथमादर्शः**। १-१५ **द्वितीयादर्शः** १-२५
तृतीयादर्शः १-५०

१४४ **संस्कृत-रचना**। 'Students' Guide to Sanskrit Composition' श्री आप्टे रचित का हिन्दी रूपान्तर।
अनुवादक—श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय

शुद्ध एवं मुहावरेदार संस्कृत बोलने और लिखने की क्षमता अनायास प्राप्त करने में यह पुस्तक बेजोड़ है। संस्कृत रचना के क्षेत्र में इसके समान अन्य कोई पुस्तक नहीं है। [वि. सं. १२२] ४-००

१४५ **संस्कृतरचनानुवादशिक्षकः**। वाराणसेय तथा दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रथमा परीक्षा स्वीकृत। आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि।

इसमें अनुवाद करने के नियम सरल रूप में समझाए गये हैं और तदनुसार अनुवादार्थ अभ्यास भी दिए गये हैं। अभ्यासार्थ वाक्यों में आए हुए प्रत्येक कठिन शब्द का संस्कृत से हिन्दी तथा हिन्दी से संस्कृत अनुवाद करने के नियम और रूपादि पुस्तक के अन्त में दे दिये गए हैं और संधि आदि का ज्ञान कराने का सुगम पथ भी प्रदर्शित कर दिया गया है। [ह. १३३] २-००

१४६ **संस्कृत-रचना-प्रकाश**। वाराणसी तथा बिहार की मध्यमा परीक्षा निर्धारित संस्कृतानुवाद के लिए पाठ्य ग्रन्थ। श्री रमाकान्त द्विवेदी।

संस्कृत मध्यमा एवं अंग्रेजी हाई स्कूल की परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत यह ग्रन्थ संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद के लिये आधुनिक सरल पद्धति का बहुत ही सुन्दर प्रकाशित हुआ है। इसमें प्रत्येक पाठ के अन्त में जो 'अभ्यास' दिये गये हैं वह इस ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता है। [ह. २३७] १-९५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४७ **संस्कृत-व्याकरणम्** । पं० रामचन्द्र झा ।

(रचनानुवाद खण्ड, निबन्ध खण्ड सहित परिवर्धित संस्करण) दरभंगा सं० विश्वविद्यालय की नवीन प्रथमा, पूर्वमध्यमा तथा प्राचीन मध्यमा एवं दिल्ली विद्यापीठ तथा वाराणसेय सं० विश्वविद्यालय की पूर्वमध्यमा परीक्षा में स्वीकृत अनुवाद, निबन्धोपयोगी ग्रन्थ। प्रा० ले० आचार्य बदरीनाथ शुक्ल तथा आचार्य रामकुवेर मालवीय, प्राध्यापक-संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

व्याकरण, अनुवाद तथा परीक्षोपयोगी सरल संक्षिप्त संस्कृत निबन्ध के लिए यह सर्वोत्तम पुस्तक है। इसमें प्रसंगानुसार, विमर्श, टिप्पणी उदाहरणमाला, अभ्यासार्थ प्रश्न, गुप्ताशुद्धिप्रदर्शन आदि सामग्री द्रष्टव्य है। हरिकारिका के आधार पर प्रकरणानुसार व्याकरण के सर्वांश का सार इस अभिनव संस्करण में इस कौशल से कारिकाबद्ध कर दिया गया है कि केवल इस पुस्तक के ही अभ्यास से संस्कृत व्याकरण के सब अङ्गों का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त हो जायगा। इसके लगभग ४० अचूक निबन्धों का संग्रह भी परीक्षार्थियों के लिए अधिक उपयोगी है।

[वि. सं. ४२] ३-००

१४८ **संस्कृत व्याकरणोदयः** । डॉ० जयमन्त मिश्र ।

बिहार के विश्वविद्यालयों की विभिन्न परीक्षाओं में स्वीकृत। परिष्कृत परिवर्द्धित नवीन संस्करण। [वि. सं. ६८] ४-५०

१४९ **संस्कृत व्याकरण की उपक्रमणिका** । ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

अनुवादक : गोपालचन्द्र शास्त्री। घर बैठे सरल रूप में संस्कृत व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यह पुस्तक अद्वितीय है। [वि. सं. ६३] १-२५

१५० **संस्कृत-स्वयं-शिक्षकप्रभा** (बालकोपयोगी अभिनव ग्रन्थ)

प्रारम्भिक हिन्दी स्कूलों में छोटे-छोटे बच्चों को संस्कृत पढ़ने-पढ़ाने की कठिनाई को दूर करने के लिये यह पुस्तक लिखी गई है। [वि. सं. ९]०-७०

१५१ **संस्कृत-व्याकरणकौमुदी** । वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री प्रथम खण्ड परीक्षा निर्धारित अनुवाद के लिए तथा दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय में स्वीकृत, पाठ्य ग्रन्थ। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर।

अनुवादक : गोपालचन्द्र शास्त्री। सांगोपांग संस्कृत रचनानुवाद के लिये यह ग्रन्थ अद्वितीय है। [वि. सं. ७२] १-४ भाग ८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५२ **संस्कृत-व्याकरण-प्रबोध** (१-२ भाग)

इसमें प्रथमा तथा मध्यमा के छात्रों को सरल रूपेण संस्कृत भाषा का ज्ञान कराया गया है। इस पुस्तक के अध्ययन से विद्यार्थियों को संस्कृत अनुवाद, निबन्ध-रचना, तथा पत्रादि लेखन-कलाओं का पूर्ण ज्ञान हो जायगा। [ह. २३६] प्रथमा परीक्षोपयोगी प्रथम भाग २-००

मध्यमा परीक्षोपयोगी द्वितीय भाग ३-५०

१-२ भाग ५-५०

*१५३ **संस्कृत व्याकरण में गणपाठ की परम्परा और आचार्य पाणिनि।** डॉ० कपिलदेव।

इस निबन्ध-ग्रंथ में विद्वान् लेखक ने पाणिनीय और पाणिनीयेतर समस्त गणपाठों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है जो आज तक संसार की किसी भी भाषा में प्राप्त नहीं है। राष्ट्रभाषा हिन्दी में यह कार्य सर्वथा नवीन है। ८-००

*१५४ **संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास।** युधिष्ठिर मीमांसक

प्रस्तुत ग्रंथ में व्याकरण शास्त्र के व्याख्याता आचार्यों के विस्तार परिचय दिया गया है। प्रथम भाग १५-००, द्वितीय भाग १५-००,

१-२ भाग ३०-००

*155 Sanskrit Syntax. By Dr. Irach J. S. Taraporewala. With a Foreword by Dr. S. M. Katre. 15-00

१५६ **संस्कृतालोकः।** पंडित रामबालक शास्त्री।

बालकों का मानसिक स्तर, उनका पाठ्यक्रम आदि न जाने कितनी बातों का ध्यान रख कर शास्त्री जी बालकों को संस्कृत भाषा का ज्ञान कराने के हेतु संस्कृतालोक की ३ किरणों को मूर्त रूप दिया है। [वि. सं. ३-५] प्रथम किरण ०-६०, द्वितीय किरण ०-६०, तृतीय किरण ०-७५,

१-३ किरण १-९५

१५७ **सज्जनेन्द्रप्रयोगकल्पद्रुमः।** धर्माधिकारी कृष्णपण्डित विरचितः [चौ. ७०] २-५०

१५८ **सन्धि-चन्द्रिका।** सम्पादक, पं. रामचन्द्र झा।

इस पुस्तक में सन्धि, कारक, समास, तिङन्त, कृदन्त, तद्धित आदि को अत्यन्त सुबोध हिन्दी भाषा में समझाया गया है [ह. २२२] १-००

१५९ **समासचक्रम्।** ब्रह्मदत्तशुक्लकृत टिप्पणी सहितम् [श्रीकृष्ण ६] ०-२०

*160 Science of Language. By Max Muller. 20-00

१६१ **सादृश्यशास्त्रार्थकला तथा लः कर्मशास्त्रार्थकला** [ह. ७२] ०-२०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१६२ **सारस्वतव्याकरणम्** । बालबोधिनी-इन्दुमतीसहितम् । परीक्षोपयोगी **'बालबोधिनी'** संस्कृत टीका के साथ **'इन्दुमती'** हिन्दी टीका विभूषित होने से यह संस्करण अधिक उपादेय हो गया है। परीक्षोपयोगी विषय हिन्दी नोट्स में दिये गये हैं जिनका अभ्यास करने से विद्यार्थी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकता है। [ह.४] पूर्वार्द्ध १-००

१६३ **सारस्वतव्याकरणम्**। चन्द्रकीर्त्तिटीका-प्रसादटीका-परीक्षोपयोगी मनोरमा विवृति तथा सटीक लिंगानुशासन प्रकरण सहित [का. १११] पूर्वार्द्ध ८-०० उत्तरार्द्ध ८-००
संपूर्ण १-२ भाग १६-००

१६४ **सिद्धान्तकौमुदी** (मूल, जेबी गुटका तृतीय संस्करण)
पं० गोपालशास्त्रीनेने सम्पादित सूत्राङ्क-धात्वङ्क-सूच्यादिसहित [ह. ११] ३-५०

१६५ **सिद्धान्तकौमुदीपंक्तिपदार्थविवरणरूपा भावबोधिनी** नाम्नी विस्तृतटीका। [चौ. पु.] २-००

*१६६ **सिद्धान्तकौमुदी-परिशिष्टसंग्रहः**। ०-५०

१६७ **सिद्धान्तकौमुदी-बालमनोरमा**। परीक्षोपयोगी रूपलेखन-प्रकार—पङ्क्तिलेखनप्रकार आदि परिशिष्टों से सुसज्जित।
'बालमनोरमा' टीका सहित सिद्धान्तकौमुदी के इस संस्करण में हमारे योग्य सम्पादक व्याकरणाचार्य पं० गोपालशास्त्री नेने ने तत्त्वबोधिन्यादि टीकाओं की समालोचना करके प्राच्य-नव्य मत से विवादग्रस्त परीक्षोपयोगी एवं जटिल अंश को प्रयोगसाधन-पंक्तिलेखनशैली के रूप में लिख दिया है जिससे 'एक पन्थ दो काज' अर्थात् परीक्षा की लेखनशैली को भी विद्यार्थी जान जाँयगे और केवल कण्ठस्थ करके भी परीक्षा-महार्णव को अनायास पार कर लेंगे। कारकान्त प्रथम भाग ३-५० समासादि द्विरुक्तान्त द्वितीय भाग ३-५०, भ्वाद्यादि घुरादयन्त तृ० भाग ३-००, ण्यन्तादि समाप्त्यन्त चतुर्थ भाग ३-५०,
पूर्वार्द्ध ७-००, उत्तरार्द्ध ६-५०, सम्पूर्ण [का. १३६] १३-००

१६८ **सिद्धान्तकौमुदी**। श्रीगोपालशास्त्रीनेनेकृत परीक्षोपयोगी 'सरला'टीका सहित स्त्रीप्रत्ययान्त भाग [का. ११९] समाप्त

१६९ **सिद्धान्तकौमुदी-कारकप्रकरणम्**। हिन्दी व्याख्या सहित।
व्याख्याकार—**श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय**। इसमें काशिका के आधार पर सूत्रों की हिन्दी-व्याख्या, पदकृत्य, व्युत्पत्ति और प्रयोगों की साधनिका भी आधुनिक सरल सुबोध हिन्दी भाषा में दी गई है। [वि. सं. ६०] १-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१७० **हिन्दी सिद्धान्तकौमुदी।** व्याख्याकार : श्री बालकृष्ण पञ्चोली।

नवीन सरल शिक्षा-पद्धति पर आधारित वैज्ञानिक विवेचनात्मक यह सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या बहुत ही सुबोध और आधुनिक शैली में प्रस्तुत की गई है। इसकी सब से बड़ी विशेषता यह है कि इसमें प्रत्येक सूत्र का अर्थ अनुवृत्तिनिर्देशपूर्वक करके उसके प्रत्येक उदाहरण की साधनिका तथा उसका अर्थ भी दिया है। मूल ग्रन्थ के गुत्थियों को विमर्श में ननु, नच करके विशेष रूप से खोला गया है। तत्त्वबोधिनी, बालमनोरमा आदि ख्यातिप्राप्त व्याख्याकारों ने भी जिन गूढ़तम विषयों को नहीं पकड़ पाया, पाठक को वे विषय भी प्रस्तुत हिन्दी व्याख्या में प्राप्त होंगे। 'सिद्धान्तकौमुदीशब्दकोश' के जिज्ञासुओं के लिए तो यह संस्करण अद्वितीय है। प्रत्येक प्रयोगों व धातुओं के अर्थ सहित हिन्दी व्याख्या का यह प्रथम प्रकाशन सामने आया है। वाराणसी के तीनों विश्वविद्यालयों के संस्कृत-हिन्दी उभयकक्ष के महारथी विद्वानों ने इसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है जो पुस्तक में प्राप्त होगी।

कारकान्त प्रथम भाग ९-००,
समासादि द्विरुक्तान्त द्वितीय भाग ९-००, पूर्वार्ध १८-००
३-४भाग : उत्तरार्ध [का. १९१] शीघ्र प्राप्त होगा

१७१ **सिद्धान्तकौमुदी-वैदिकीप्रक्रिया।** हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार-**श्री उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'**। व्याख्या में समास-विग्रह, व्युत्पत्ति, प्रयोगों की साधनिका तथा परीक्षोपयोगी विवरण भी दिये गए हैं। [वि. सं. ८०] ४-००

१७२ **सि० कौमुदीशौषिकादि द्विरुक्तान्त तद्धित प्रयोगसूची** [चौ. पु.] ०-२०

१७३ " **भ्वाद्यादि चुरादिगणान्त प्रयोगसूची** [ह. ८१] ०-६५

१७४ **सिद्धान्तकौमुदी-सोत्तरा प्रयोगसूची।**

पंक्तिलेखनप्रकारात्मक 'इन्दुमती' टिप्पणी सहित (१) कारकान्त [ह. ८६] ०-६५

(२) कारकादि शैषिकान्त [ह. ३६] १-००

(३) विकारार्थकादि चुराद्यन्त [ह. ४४] १-१५

(४) ण्यन्तादि उत्तर कृदन्तान्त [ह. ३७] १-२५, १-४ भाग ४-००

१७५ **सिद्धान्तकौमुदी-सोत्तरा स्वरवैदिक-प्रयोग सूची।**

उणादिकोश सहित लिङ्गानुशासन प्रकरणान्त [ह. ५८] ०-९०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१७६ **सिद्धान्तकौमुदी–स्वरवैदिकप्रक्रिया–प्रश्नोत्तरी ।**
[ह. १३७] १–२५

१७७ **सिद्धान्तचन्द्रिका ।** सुबोधिनी-तत्त्वदीपिका टीका, बृहत् चक्रधरा टिप्पणी, अव्ययार्थमाला, लिंगानुशासन, उणादिकोष सहित
[का. ६१] पूर्वार्द्ध ७–०० उत्तरार्द्ध ७–०० सम्पूर्ण १४–००

१७८ **सिद्धान्तचन्द्रिका ।** 'बालबोधिनी' टीकासहित ।
[ह. १७] पूर्वार्द्ध १–५० उत्तरार्द्ध २–०० सम्पूर्ण ३–५०

१७९ **सोत्तरा–सिद्धान्तकौमुदीरूपलता** (३६७ शब्दों की बृहत्तम शब्दरूपावली) [ह. १५५] १–५०

180 STUDENT'S GUIDE TO SANSKRIT COMPOSITION: A Treatise on Sanskrit Syntax for the use of Schools and Colleges. By V. S. Apte. [C.P.] 4–75

*181 Higher Sanskrit Grammar. By M. R. Kale. 12–50

*182 Hindi Sentence Structure in the Works of Tulsidas. By Dr. Vladimir Miltner. 10–00

*183 Hobson-Jobson. A Glossary of Colloquial Anglo-Indian Words and Phrases, and of Kindered Terms, Etymological, Historical, Geographical and Discursive. By Col. Henry Yule and A. C. Burnell. New Edition edited by William Crooke. 50–00

मीमांसा–ग्रन्थाः

१ **अधिकरणकौमुदी ।** श्रीदेवनाथठक्कुरकृता [का. ५०] २–००

२ **अर्थसंग्रहः ।** 'दीपिका' हिन्दी टीका सहितः ।

इस टीका की प्रमुख विशेषता यह है कि टीकाकार ने छात्रों को सरल शब्दों में अनेक प्रकार से ग्रन्थ को समझाने का भगीरथ प्रयत्न किया है, शास्त्री के परीक्षार्थी इस सरल टीका के आधार पर अब स्वयं भी अर्थसंग्रह का अध्ययन कर परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं ।
[ह. २२८] १–२५

3 EPISTEMOLOGY OF THE BHATTA SCHOOL OF PURVA MIMANSA : By Dr. G. P. Bhatt. [Chow. San. Studies Vol. XVII] 20–00

*४ **कल्पकलिका** (शाबरभाष्यव्याख्या तर्कपादान्त) म० म० हरिहरकृपालु द्विवेदी विरचिता ४–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५ **जैमिनीयन्यायमाला** । श्रीमन्माधवाचार्यविरचिता, तद्विरचितेन विस्तरेण विभूषिता [का. १२६] तृतीयाध्यायान्ता ५-००

*६ **तन्त्ररत्नम्** । पार्थसारथिमिश्र कृत । तृतीय भाग मात्र ५-५०

*७ **तन्त्रसिद्धान्तरत्नावली** । म० म० चिन्नस्वामि शास्त्रिविरचिता ४-००

*८ **तौतातिकमततिलकम्** । भवदेव विरचित । २-३ भाग ४-३७

९ **न्यायरत्नमाला** । श्रीमत्पार्थसारथिमिश्रविनिर्मिता [चौ. ७] समाप्त

*१० **न्यायरत्नाकरः** । जैमिनीयमीमांसासूत्र (अध्याय ११) पर म० म० चन्नःविरचित संस्कृत व्याख्या । सम्पादक-म० म० श्री उमेश मिश्र ७-००

११ **न्यायसुधा** । (तन्त्रवार्तिकव्याख्या) श्रीमद्भट्टसोमेश्वरकृता [चौ. १४] ४०-००

१२ **पूर्वमीमांसाधिकरणकौमुदी**। रामकृष्णभट्टाचार्यविरचिता [चौ. ४७]३-००

*१३ **प्रकरणपञ्चिका** । शालिकनाथ मिश्र कृत । जयपुरी नारायणभट्ट कृत व्याख्या सहित २५-००

१४ **बृहती** । प्रभाकरमिश्रविरचिता (शाबरभाष्यव्याख्या), म० म० मिश्रशालिकनाथकृत 'ऋजुविमला' व्याख्याद्वययुता [चौ. ६९] ६-००

१५ **भाट्टचिन्तामणिः** । म० म० श्रीगागाभट्ट विरचितः । [चौ. ६] ९-००

१६ **भाट्टभाषाप्रकाशः** । श्रीनारायणतीर्थमुनिविरचितः [चौ. पु.] ०-६५

*१७ **मीमांसाऽभ्युदयः** । श्रीशैलताताचार्यशिरोमणि विरचितः। नेट १-२५

१८ **मीमांसाकौस्तुभः** । (मीमांसासूत्रस्य काचन विस्तृता टीका) श्रीखण्डदेवविरचितः [चौ. ५८] ३६-००

*१९ **मीमांसादर्शन** । (मीमांसाशास्त्र का इतिहास) हिन्दी ५-००

*२० **मीमांसादर्शन** । श्रीराम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ५-००

२१ **मीमांसानुक्रमणिका** । श्रीमण्डनमिश्रकृता । महामहोपाध्याय गङ्गानाथ झा रचित 'मीमांसामण्डन' मण्डिता [चौ. ६८] १५-००

२२ **मीमांसान्यायप्रकाशः** । मूलमात्रम् [चौ. पु.] ०-५०

२३ **मीमांसान्यायप्रकाशः** । श्री अनन्तदेवविरचित 'भाट्टालङ्कार' व्याख्यासहितः [चौ. ५३] ७-५०

२४ **मीमांसान्यायप्रकाशः** । म० म० श्रीचिन्नस्वामि शास्त्रिविरचित 'सारविवेचिनी'व्याख्या सहितः । परिवर्द्धित द्वि० संस्करण [का. २५] ६-००

२५ **मीमांसा परिभाषा** । म० म० श्रीनित्यानन्दपन्त कृत टिप्पणी तथा हिन्दी टीका सहित । [ह. १९] यन्त्रस्थ

२६ **मीमांसाबालप्रकाशः** । श्रीभट्टशङ्करविरचितः [चौ. १६] ६-००

२७ **मीमांसाश्लोकवार्त्तिकम्** । 'न्यायरत्नाकर'व्याख्यासहितम् [चौ. ३९] ९-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१८ **यज्ञतत्त्वप्रकाशः** । म० म० श्री चिन्नस्वामिशास्त्रिप्रणीतः । नेट ४-००

*१९ **वाक्यार्थरत्नम्** । अहोबलसूरिविरचित'सुवर्णमुद्रिका'व्याख्यासहितं १-२५

२० **विधिरसायनम्** । श्रीमदप्पय्यदीक्षितविरचितम् [चौ. १३] ६-००

*२१ **विधिरसायनदूषणम्** । श्रीशङ्करभट्टप्रणीतम् । १-५०

२२ **वेदप्रकाशः** । श्रीसत्यज्ञानानन्दतीर्थेन विरचितः [चौ. ७७] ३-००

२३ **शास्त्रदीपिका** । श्रीपार्थसारथिमिश्रप्रणीता । पण्डितप्रवर रामकृष्ण-विरचित 'युक्तिस्नेहप्रपूरणी' व्याख्या सहिता । तर्कपादः [चौ. ४३] समाप्त

न्याय-ग्रन्थाः

१ **आत्मतत्त्वविवेकः**—(बौद्धन्यायखण्डनं) श्रीमदुदयनाचार्यविरचितः । श्रीरामतर्कालङ्कारभट्टाचार्यकृत टिप्पण्या, तार्किकशिरोमणि श्रीरघुनाथकृत दीधितिरिति प्रसिद्धया विवृत्या, श्रीशङ्करमिश्रविरचित आत्मतत्त्वविवेक-कल्पलतया च विभूषितः । १-६ खण्डाः । [चौ. ६३] १८-००

१ **आत्मतत्त्वविवेकः**—उदयनाचार्यविरचितः । श्रीनारायणाचार्यनिर्मित 'आत्मतत्त्व'व्याख्या (नारायणी) सहितः [चौ. ८४] १५-००

*३ **आरम्भवादः** । आचार्य बदरीनाथ शुक्ल ।
सृष्टि के विषय में न्याय-वैशेषिक दर्शन के दृष्टिकोण की व्याख्या करने वाला सर्वाङ्गसम्पन्न अभिनव मौलिक ग्रन्थ । २-००

४ **कारकचक्रम्** । माधवी टीका-प्रदीपटिप्पणीसहितम् [ह. १५४] १-२५

५ **कारिकावली-मुक्तावली-दिनकरी-रामरुद्री सहिता**
इस संस्करण में पण्डितराज राजेश्वरशास्त्री पद्मभूषण के तत्त्वावधान में प्राचीन दुष्प्राप्य रामरुद्री के आधार पर समस्त रामरुद्री पुनः परिष्कृत की गयी है । संपूर्ण रामरुद्री के सहित 'कारिकावली-मुक्तावली-दिनकरी' का यही एक संस्करण प्राप्त होता है [का. ६] १०-००

६ **कारिकावली-मुक्तावली**-'न्यायचन्द्रिका' टीका [का. १६] समाप्त

*७ **कारिकावली-मुक्तावली** । लोकनाथ शास्त्री कृत छाया टीका ३-००

८ **कारिकावली-मुक्तावली** । वाराणसी की उत्तर मध्यमा के अनिवार्य विषय में व्याकरण के छात्रों के लिए पाठ्य स्वीकृत । 'मयूख' 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीव्याख्या महित । व्याख्याकार-श्रीसूर्यनारायण शुक्ल । प्रत्यक्षखण्डान्त १-५०
अनुमान-शब्दखण्ड ३-०० [चौ. पु.] संपूर्ण ४-५०

९ **कारिकावली-मुक्तावली** । 'मयूख' टीका सहित [ह. १५]
शब्दखण्ड समाप्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१० **का० मुक्तावलीतत्त्वालोकः** (मुक्तावली-प्रश्नोत्तरी) । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के न्यायाध्यापक श्री रुद्रधर झा जी ने पं० बच्चा झा जी के अमुद्रित 'तत्त्वालोक' के आधार पर १०० प्रश्नों के उत्तर इसमें लिखे हैं । [ह. २००] १-२५

११ **क्रोडपत्रसंग्रहः** । श्री कालीशङ्करप्रणीतानि अनुमानजागदीशी-अनुमान-गादाधरी-क्रोडपत्राणि । सम्पूर्णोऽयं ग्रन्थः । १-८ खण्डाः [चौ. २५]

जागदीशी-क्रोडपत्र यन्त्रस्थ **गादाधरी-क्रोडपत्र** १२-००

१२ **गादाधरी** । अनुमानचिन्तामणितद्व्याख्याशिरोमणिकृत-दीधितिगर्भिता । ऐतिहासिक विस्तृत भूमिका सहित । सम्पूर्ण [चौ० ४२] १००-००

१३ **गादाधरी** । अनुमानचिन्तामणिनातद्व्याख्याशिरोमणिकृतदीधित्या सहिता ।

ऐतिहासिक भूमिका, उद्धरण, परिशिष्ट आदि से सुसम्पादित शोधपूर्ण द्वितीय संस्करण । विराम-उद्धरणादि के चिह्न, नये अनुच्छेद, 'विवृत्ति-प्रकाश' वृहट्टिप्पणी एवं विषयविभाजन के रूप में परिशिष्ट, तथा पाण्डित्यपूर्ण भूमिका आदि से सम्पादित यह सर्वथा नवीन संस्करण है । आरम्भिक १-२ खण्ड सिंहव्याघ्रप्रकरणान्त [चौ. ४२] १२-५०

१४ **गादाधरी-सामान्यनिरुक्तिः-गूढार्थतत्त्वालोकः** । श्री धर्मदत्त [श्रीबच्चा झा] शर्मविरचितः [का. ११२] ३-००

*१५ **चतुर्दशलक्षणी** । गदाधरकृत । कृष्णभट्ट-रघुनाथ-पट्टाभिरामकृत व्याख्या सहित । प्रथम भाग १०-००

१६ **जागदीशी** । अनुमानचिन्तामणिव्याख्या । शिरोमणिकृतदीधित्या सहितः १-१३ खण्डाः । संपूर्ण ग्रन्थ यन्त्रस्थ । फुटकर खण्ड [चौ. २९] ३-००

१७ **जा० अवच्छेदकत्वनिरुक्तिः** । न्यायाचार्य पं० शिवदत्तमिश्र विरचित परीक्षोपयोगी 'गङ्गा' व्याख्या टिप्पणी सहित [का. ९४] समाप्त

१८ **जा० पक्षता** । न्यायाचार्य पं० शिवदत्तमिश्र विरचित परीक्षोपयोगी 'गङ्गा' व्याख्या टिप्पणी सहित [का. ११३] समाप्त

१९ **जा० पञ्चलक्षणीसिंहव्याघ्रलक्षणयोश्च क्रोडपत्रम्** [चौ. पु.] ०-२०

२० **जा० व्यधिकरणम्** । न्यायाचार्य पं० शिवदत्तमिश्र विरचित परीक्षोप-योगी 'गङ्गा' व्याख्या टिप्पणी सहितम् [का. ८९] यन्त्रस्थ

*२१ **जा० व्यधिकरणम्** । स्वामि रामप्रपन्नाचार्य कृत दीपिका टीकोपेतम् ४-५०

२२ **जा० व्यधिकरणधर्मावच्छिन्नाभावस्य कालीशङ्करी** । [चौ. पु.] ०-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२३ **जा० सामान्यलक्षणाप्रकरणम्**। काशिकानन्दीव्याख्यासहितम् ४-५०

१२४ **जा० सिद्धान्तलक्षणस्य क्रोडपत्रम्** [चौ. पु.] ०-६५

१२५ **तर्कभाषा**। केशवमिश्र प्रणीता। मूलमात्रम् [ह. २२५] ०-६५

१२६ **तर्कभाषा**। (वाराणसी की शास्त्री द्वितीय खण्ड के अनिवार्य प्रथम पत्र के लिए पाठ्य ग्रंथ) 'तत्त्वालोक' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित।

'तत्त्वालोक' के सुप्रसिद्ध निर्माता पं० श्री बच्चा झा जी के शिष्योपशिष्य, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के न्यायाध्यापक पं० श्री रुद्रधर झा विरचित इसकी संस्कृत-हिन्दी टीका में मूल ग्रन्थ के प्रतिपद की व्याख्या करके ग्रन्थ के दुरूहांशों का प्रश्नोत्तर के रूप में विशद विवेचन किया गया है [ह. २२९] १-५०

१२७ **हिन्दी तर्कभाषा**-(वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री द्वितीय खण्ड के अनिवार्य प्रथम पत्र के लिए पाठ्य स्वीकृत) आचार्य विश्वेश्वर।

पं० केशवमिश्र प्रणीत यह ग्रन्थ छोटा होने पर भी बड़ा सारगर्भित और दुरूह है। इसलिए इसके रहस्य को हृदयंगम कराने के लिए आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि ने २६४ पृष्ठों में इसकी व्याख्या पूरी की है। इसके साथ ही ४६ पृष्ठ की विस्तृत भूमिका है जिसमें न्यायशास्त्र, प्राचीन न्याय, मध्य न्याय, बौद्ध न्याय, जैन न्याय और नव्यन्याय आदि सभी शाखाओं का सुन्दर ऐतिहासिक विवेचन किया गया है। सरकार द्वारा पुरस्कृत होकर यह संस्करण अधिक लोकप्रिय हो चुका है। [का. १५५] ७-००

१२८ **तर्कभाषारहस्यम्**-(परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी)।

परीक्षा में आने वाले सभी प्रश्नों के उत्तर बहुत ही विस्तार से इसमें लिखे गए हैं। ऐसा कोई भी स्थल नहीं छूटा है जिसकी व्याख्या और प्रश्नोत्तर इसमें न हो। [ह. २३४] ०-४०

१२९ **तर्कसंग्रहः**। वाराणसी की प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत। लक्षण-टिप्पणी सहित। [ह. ४७] ०-२५

१३० **तर्कसंग्रहः**। 'दीपिका' तथा लक्षण-टिप्पणी सहित इन्दुमती हिन्दी टीका विभूषित। सर्वोत्तम संस्करण

[ह. १६०] ०-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३१ **तर्कसंग्रहः । पदकृत्य सहितः** (वाराणसी की पूर्व-मध्यमा अनिवार्य विषय में व्याकरण के छात्रों के लिए तथा उत्तरमध्यमा ऐच्छिक 'क' वर्ग—साहित्य प्रथम खण्ड के लिए स्वीकृत पाठ्य ग्रन्थ)

'पदकृत्य' टीका के साथ 'इन्दुमती' नामक हिन्दी व्याख्या तथा लक्षण-टिप्पणी हो जाने से यह संस्करण परीक्षार्थी छात्रों के लिये अधिक उपादेय है। पुस्तक के अन्त में अनेक वर्षों के प्रश्नपत्र भी दे दिये गये हैं। [ह. २०९] ०-५०

३१ **तर्कसंग्रहः ।** न्यायबोधिनी-पदकृत्य-विरला-इन्दुमती सहित न्यायबोधिनी के बिना जैसे मूल तर्कसंग्रह का परिपक्व ज्ञान नहीं हो सकता उसी प्रकार 'विरला' टीका के बिना न्यायबोधिनी का ज्ञान भी विद्यार्थी को नहीं हो सकता। इसीलिए 'न्यायबोधिनी' के साथ 'विरला' तथा 'इन्दुमती' नाम की आधुनिक सुविस्तृत प्रांजल हिन्दी टीका होने से परीक्षार्थी छात्रों के लिये यह संस्करण सबसे अधिक उपादेय हो गया है। [चौ. पु.] १-२५

३३ **तर्कसंग्रहः ।** श्रीमदन्नम्भट्ट विरचित। प्राचीनतम नौ टीकाओं के साथ प्रकाशित। सम्पादक—श्रीसत्कारि शर्मा वङ्गीय।

इस संस्करण में मूल ग्रन्थ के ऊपर १. गोवर्धनमिश्र कृत न्यायबोधिनी, २. मेरुशास्त्रीकृत वाक्वृत्ति, ३. जगन्नाथ शास्त्री कृत निरुक्ति, ४. पट्टाभिरामशास्त्री कृत टिप्पणी, ५. स्वयं ग्रन्थकार कृत तर्कसंग्रह दीपिका ये पाँच टीकाएँ और तर्कसंग्रह दीपिका के ऊपर १. रामरुद्रकृत रामरुद्री, २. रायवरसिंहशास्त्री कृत नृसिंहप्रकाशिका, ३. नीलकृतशास्त्री कृत नीलकण्ठप्रकाशिका, ४. पट्टाभिरामशास्त्री कृत पट्टाभिरामप्रकाशिका ये चार टीकाएँ भी प्रकाशित की गई हैं। इस प्रकार ९ टीकाओं से युक्त इस ग्रन्थ से विद्यार्थी और विद्वान् दोनों समान रूप से लाभान्वित होंगे। राजकीय सहायता प्राप्त यह दुर्लभ संस्करण अत्यल्प मूल्य में बिक रहा है। शीघ्रता करें अन्यथा द्वि० संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी। डिमाई साइज के ४४८ पृष्ठों के स्थूल काय पुस्तक के लागत मात्र मूल्य [का. १८७] २-५०

३४ **तर्कसंग्रह-रहस्यम् ।** (तर्कसंग्रह-प्रश्नोत्तरी)

इस पुस्तिका में 'न्यायबोधिनी' 'पदकृत्य' तथा 'दीपिका' आदि के प्रश्नोत्तर लिखे गए हैं। परीक्षा की दृष्टि से आनेवाले प्रश्नोत्तरों पर विशेष ध्यान दिया गया है। [वि. सं. ९५] ०-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५ **तर्कमकरन्दः**–(दीपिका–प्रश्नोत्तरी) परीक्षोपयोगी संस्करण[ह. ६२]यन्त्रस्थ

१६ **तर्कामृतम्** (वाराणसी की उत्तर मध्यमा साहित्य प्रथम खण्ड परीक्षा स्वीकृत पाठ्य ग्रंथ) 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार–आचार्य रामचन्द्र मिश्र

इस पुस्तक की ऐसी सरल संस्कृत–हिन्दी व्याख्या की गई है कि छात्र स्वयं इसका अध्ययन कर परीक्षा में सफलता प्राप्त कर लेंगे। हिन्दी में नोट्स और 'परीक्षासेतु' नामक परिशिष्ट हो जाने से तो इसकी उपादेयता और भी बढ गयी है। [वि. सं. ६] ०–७५

*३७ **'न च' रत्नमालिका**। शास्त्री शर्मा विरचित। स्वोपज्ञ नूतनालोक व्याख्या सहित। सटिप्पण ६–५०

१८ **न्यायकुसुमाञ्जलिः**। श्रीमद् उदयनाचार्यप्रणीतः। मेघ-ठक्कुर विरचित 'प्रकाशिका (जलद्)' रुचिदत्तोपाध्यायकृत 'मकरन्द' वर्द्धमानोपाध्यायकृत 'प्रकाश' वरदराजकृत 'बोधिनी' व्याख्या चतुष्टयोपेतः। सर्वतन्त्र स्वतन्त्र पं० बच्चा झा निर्मित टिप्पणी विभूषितश्च। [का. ३०] २०–००

१९ **हिन्दी न्यायकुसुमाञ्जलि**। (हरिदासी टीका सहित). व्याख्याकारः–आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि।

विद्वान् व्याख्याकार ने शास्त्रार्थ के दुरूह स्थलों पर विमर्श में इतना सुविस्तृत और गंभीर विवेचन किया है कि यह व्याख्या हिन्दी में न्यायकुसुमांजलि की एक स्वतन्त्र मौलिक रचना बन गई है।

[वि. सं. ७४] ९–००

*४० **न्यायकौस्तुभः**। महादेव पुणतामकर विरचित। द्वितीय भाग १०–००

४१ **न्याय (सूत्रपाठः) दर्शनम्**। श्री गौतममहामुनिप्रणीत [चौ. पु.] ०–२०

४२ **न्यायदर्शनम्**। वात्स्यायनभाष्य सहितम् [का. ४३] यन्त्रस्थ

४३ **न्यायदर्शनम्**–वात्स्यायनभाष्यसहितम्। म० म० गङ्गानाथ झा प्रणीतेन खद्योतेन, नैयायिकचूडामणिरघूत्तमविरचितेन भाष्यचन्द्रेण च समन्वितम्। म० म० श्रीमदम्बादासशास्त्रि कृतया भाष्यचन्द्रानुगामिन्या टिप्पण्या च समेतम्। [चौ. ५५] २०–००

*४४ **न्यायदर्शन**। श्रीराम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ४–००

*४५ **न्यायदर्शनबिन्दुः**। म० म० कालीपद तर्काचार्य २–००

४६ **न्यायबिन्दुः**। बौद्धाचार्यश्रीधर्मकीर्तिप्रणीतः। संस्कृत टीका, हिन्दी अनुवाद विस्तृत भूमिकादि सहित [का. २२] ५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४७ **हिन्दी न्यायदर्शन** । (वात्स्यायनभाष्य सहित)
व्याख्याकार—पण्डितराज दुण्ढिराज शास्त्री

न्यायदर्शन तर्कशास्त्र का सर्वोपरि सारगर्भित दुरूह ग्रन्थ है। वात्स्यायन भाष्य के साथ इस ग्रन्थ के गूढ रहस्य को हृदयंगम कराने के लिये हमारे योग्य संपादक ने अपने ४० वर्षों के अध्यापनानुभव से मूल ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद के साथ वात्स्यायन भाष्य की विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की है। हिन्दी व्याख्या में न्याय-दर्शन पर प्राप्त सभी टीकाओं की समालोचना होने से राष्ट्रभाषा में न्यायदर्शन की एक स्वतंत्र मौलिक रचना बन गयी है। छात्रों, अध्यापकों तथा अनुसन्धित्सु तार्किक प्रेमियों के लिये यह संस्करण पठनीय, मननीय और संग्रहणीय है १२-००

४८ **न्याय-परिचय** । मूललेखक—म० म० फणिभूषण तर्कवागीश । हिन्दी रूपान्तरकार डॉ० किशोरनाथ झा ।

प्रत्यक्ष तथा आगम के अविरोधी अनुमान के द्वारा तत्त्वश्रवण के बाद अनुमान प्रमाणरूप मुक्ति से मनन करना ही अन्वीक्षा है (तथा प्रवर्तते 'आन्वीक्षिकी') वेदमूलक इसी आन्वीक्षिकी विद्या का प्रसिद्ध नाम न्याय है। परार्थ अनुमान को तथा उसी को उद्देश्य करके प्रयुक्त प्रतिज्ञा आदि पञ्चावयवरूप वाक्य को महर्षि वात्स्यायन न्याय शब्द से कहते हैं। यह न्यायशास्त्र प्रत्येक शास्त्रों की आत्मा है। इसका उद्भव सर्वज्ञ परमेश्वर से है। तर्क शास्त्र होने से इसे न्यायतर्क भी कहते हैं। महर्षि पंतजलि ने अपने महाभाष्य के प्रथम आह्निक में वाकोवाक्य नाम से भी इस न्यायशास्त्र का उल्लेख किया है। बहुत व्यक्ति इस न्याय शास्त्र का अध्ययन करते हैं किन्तु इसके अनिर्वचनीय रहस्य को कम ही विद्वान् समझ पाते हैं। विद्वान् लेखक ने गहन अध्ययन के पश्चात् ऐतिहासिक, दार्शनिक तथा मनोवैज्ञानिक अध्ययन की विभिन्न विचार धाराओं पर भी यथेष्ट विचार करके यह ग्रन्थ प्रस्तुत किया है। न्यायशास्त्र के प्रमाणिक सजीव और क्रमबद्ध इतिहास के परिचय के लिये यह ग्रन्थ अद्वितीय है। [वि. रा. ११८] १०-००

४९ **न्यायमञ्जरी** । जयन्तभट्टकृत टिप्पण्या समेता [का. १०६] २५-००

*५० **न्यायरत्नम्** । मणिकण्ठमिश्रकृतम्। नृसिंहयज्वकृतावृतिमालिकाटीका १०-००

५१ **न्यायलीलावती** । श्रीभगीरथठक्कुरकृत 'विवृति' सनाथेन श्रीवर्धमानोपाध्यायकृत 'प्रकाशेन' समुद्भासिता, श्रीशङ्करमिश्ररचित 'कण्ठाभरणेन' च समन्विता । [चौ. ६४] २७-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

+५२ **न्यायलीलावती**। मूलमात्रम् [व. ३८] १-००

*53 Nyayasara of Acarya Bhasarvajna with the Nyayasarapadapanchika of Vasudeva of Kashmir. Critically Edited with Notes including Translation by Pt. Vasudeva Shastri Abhyankar and C. R. Devadhar. 4-00

*५४ **न्यायसिद्धान्त मुक्तावली कुञ्जिका**। देवदत्त शास्त्रीकृत ०-७५

*५५ **पदवाक्यरत्नाकरः**। गोकुलनाथोपाध्याय विरचितः। यदुनाथ मिश्र रचित गूढार्थदीपिका व्याख्या सहित १५-००

*५६ **प्रमाणविनोदः**। चित्रधरमिश्र विरचित १-५०

५७ **मथुरानाथीयव्याप्तिपञ्चकटीकायाः क्रोडपत्रम्** [चौ.पु.] ०-२०

५८ **माथुरी तर्कप्रकरणम्**। न्यायाचार्य वामाचरण भट्टाचार्यविरचित 'विवृति' सहितम् [का. १४०] १-००

*५९ **माथुरीपञ्चलक्षणी**-सिंहव्याघ्रलक्षण सहिता। मूलमात्रम् ०-२५

६० **माथुरीव्याप्तिपञ्चकरहस्यं, सिंहव्याघ्रलक्षणरहस्यं** श्रीशिवदत्तमिश्र विरचित परीक्षोपयोगी 'गङ्गानिर्झरिणी'व्याख्यासहितम् [का. ६४] २-००

६१ **माथुरीपञ्चलक्षणी**—श्री उमानाथार्ज्यालकृतव्याख्यासहिता तथा **माथुरी सिंहव्याघ्रलक्षणम्** श्रीहरिरामशुक्ल विरचित व्याख्या सहित तथा हरिहर शास्त्री सङ्कलित **माथुरीपञ्चलक्षणीक्रोडपत्राणि** च [का. ७८] ०-५०

६२ **मुक्तिवादः**। चन्द्रिकाख्यविवृत्या समलंकृतः [चौ. पु.] ०-५०

*63 Logic of Truth-Functions. An Introduction to Symbolic Logic. By Ram Prasad Das. 15-00

६४ **वादवारिधिः**। श्रीगदाधरभट्टाचार्यादिविपश्चिद्वरैर्विरचितः प्रत्यक्षानुमानशब्दपरिशिष्टाख्यकल्लोलचतुष्टयात्मकः। १-३ खण्ड [चौ. ७५] ९-००

६५ **विषयतावादः**। श्रीढुण्ढिराजशास्त्रिकृत टिप्पणी सहितः [का. १३४] ०-२५

६६ **व्युत्पत्तिवादः**। पण्डितराज श्रीवेणीमाधवशास्त्रिरचित (शास्त्रार्थोपयोगी परीक्षोपयोगी च) 'शास्त्रार्थकला' टीकासहितः [का. ११५] ५-००

*६७ **व्युत्पत्तिवादतरणिः** (व्युत्पत्तिवाद प्रश्नोत्तरी) श्री उमानन्द झा कृत ०-८७

६८ **शक्तिवादः**। कृष्णभट्टकृतया 'मञ्जूषा'-माधवभट्टाचार्यनिर्मितया विवृत्या गोस्वामि दामोदरशास्त्रिरचितया 'विनोदिन्या' च समेतः [का. ५७] ५-००

६९ **शक्तिवादः**। पण्डितप्रवर श्री हरिनाथतर्कसिद्धान्तभट्टाचार्यविरचित 'विवृति' (हरिनाथीटीका) सहितः। [का. ७७] ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७० **शब्दशक्तिप्रकाशिका** । श्रीजगदीशतर्कालङ्कारविनिर्मिता । श्रीकृष्णकान्तविद्यावागीश कृत 'कृष्णकान्ति'टीकया श्रीमद्रामभद्रसिद्धान्तवागीशविरचितया 'रामभद्री' टीकया च समलङ्कृता । सटिप्पण [का. १०९] यन्त्रस्थ

*71 History of Indian Epistemology. By Dr. Jwala Prasad. 25-00

वैशेषिक-ग्रन्थाः

*१ **न्यायसिद्धान्ततत्त्वामृतम्** । श्रीनिवासकृतम् १-५०

१ **प्रशस्तपादभाष्यटीकासंग्रहः**-'कणादरहस्यं' शङ्करमिश्रकृतं प्रशस्तपादभाष्यसमालोचनं कैलाशचन्द्रशिरोमणिकृता तर्कालङ्कारभाष्यपरीक्षा च [चौ. ४८] ६-००

*३ **प्रशस्तपादभाष्यम्** (**पदार्थधर्म संग्रहरूपम्**) श्रीधरभट्ट प्रणीत व्याख्या समेत । दुर्गाधर झा कृत हिन्दी टीका सहित २५-००

+४ **वैशेषिकदर्शनम्** । 'किरणावली' टीका सहितम् २-५ खण्ड [ब. १०] १२-००

५ **हिन्दीवैशेषिकदर्शन** । व्याख्याकार-श्री नारायण मिश्र ।

यह छात्रोपयोगी लघु संस्करण शंकर मिश्र के उपस्कार के आधार पर प्रस्तुत किया गया है और तदनुकूल इसकी 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या भी की गयी है । यत्र-तत्र परीक्षोपयोगी कठिनतम विषयों को अधिक शब्दों में भी स्फुटित किया गया है । इसकी समालोचनात्मक प्रस्तावना परीक्षार्थियों के लिये अत्यन्त उपादेय है । अध्यापन के समय छात्रों की कठिनायियों को ध्यान में रखकर ही मिश्र महोदय ने नोट्स के रूप में इसकी प्रस्तावना लिखी है । परीक्षार्थियों के लिए समालोचनात्मक प्रस्तावना ही पर्याप्त है [का. १७५] ३-००

६ **वैशेषिक दर्शन : एक अध्ययन** । प्रो० नारायण मिश्र ।

भारतीय दर्शनों में वैशेषिक दर्शन का स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । व्यावहारिक जीवन की स्थिति के आधार पर पारमार्थिक सत्य का प्रतिपादन इस दर्शन की विशेषता है । परन्तु नव्य-न्याय के उद्भव के पश्चात् यह दर्शन उपेक्षित सा रहा है । अतः आज इस दर्शन के तथ्यों का विवरण अत्यावश्यक है । इसी आवश्यकता की पूर्त्ति के लिए "वैशेषिक दर्शन : एक अध्ययन" ग्रन्थ का सम्पादन हुआ है । इस ग्रन्थ में वैशेषिक दर्शन के सभी पदार्थों का, प्राचीन आकर ग्रन्थों के आधार पर, सरल भाषामें स्पष्ट प्रति-पादन किया गया है । न्याय-वैशेषिक दर्शन के मर्म को समझने के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपादेय है । [चौ. रा. ५] १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७ **हिन्दी वैशेषिकदर्शन** । (प्रशस्तपादभाष्य सहित) व्याख्याकार, पण्डितराज दुण्ढिराज शास्त्री

इस संस्करण में मूलग्रन्थ तथा भाष्य के प्रतिपद का विभागशः अति-सरल अनुवाद तथा विशद हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की गई है । हिन्दी जगत् में इस व्याख्या का यह सर्वथा प्रथम अवतार है । छात्रों तथा अध्यापकों को अवश्य ही इससे यथेष्ट लाभ होगा । [का. १७३] १५-००

८ **हिन्दी वैशेषिकदर्शन** । (उपस्कार सहित) व्याख्याकारः पण्डितराज दुण्ढिराजशास्त्री ।

परम प्रामाणिक एवं प्राचीन संस्कृत टीका के साथ वैशेषिक दर्शन के प्रतिपद के सरल सुबोध अनुवाद तथा विमर्शात्मक विशद हिन्दी व्याख्या सहित यह संस्करण हिन्दी जगत में सर्वप्रथम अवतरित हुआ है । इसकी हिन्दी व्याख्या में उपस्कार के प्रतिपद की व्याख्या ननु-नच करके की गयी है । छात्रों, अध्यापकों तथा अनुपन्धित्सुओं के लिये यह संस्करण अद्वितीय है । २०-००

९ **वैशेषिकदर्शन-प्रशस्तपादभाष्यम्** । जगदीशतर्कालङ्कारविरचितया 'सूक्तिटीकया' म० म० पद्मनाभमिश्रकृतया 'सेतुव्याख्यया' विद्वच्चूडामणि-व्योमशिवाचार्यनिर्मितया 'व्योमवत्या' च समन्वितम् [चौ. ६१] समाप्त

10 VAISESHIKA PHILOSOPHY : According to the Dasa-padartha-Sastra : Chinese Text with Introduction, Translation and Notes. By H. UI. Professor in the Sotoshu College Tokyo. Edited by F. W. Thomas. [Chow. Sans. Studies Vol. XXII] 16-00

सांख्य-ग्रन्थाः

१ **सांख्यकारिका** । ईश्वरकृष्णकृता । माठरवृत्तिसहिता । सम्पादकः म० म० विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी ।

उपलब्ध सांख्यग्रन्थों में सब से महत्त्वपूर्ण सांख्यकारिका के ऊपर जितनी टीकाएँ हैं उनमें माठराचार्यकृत माठरवृत्ति ही सर्वप्राचीन तथा सबसे महत्त्वपूर्ण है । दुर्लभ पाण्डुलिपि के आधार पर प्रकाशित इसका प्रथम संस्करण बहुत पहले ही समाप्त हो जाने के कारण सांख्य-तत्त्वान्वेषी विद्वानों में इसके पुनर्मुद्रण के लिए बड़ा आग्रह था । प्रस्तुत द्वितीय संस्कृत संस्करण में भिन्न-भिन्न टीकाओं के अनुसार मूल कारिकाओं के सभी पाठान्तर उपन्यस्त करके विशेष परिश्रम पूर्वक वृत्तिस्थित प्राचीन उद्धरणों का भी आकर निर्देश कर दिया गया है । इसकी सुविस्तृत भूमिका में साख्यसिद्धान्त सम्बन्धी सभी मतमतान्तरों का ऊहापोहपूर्वक विवेचन किया गया है । संस्कर्ता तथा भूमिका लेखक श्री सत्कारि शर्मा वङ्गीय । [चौ० ५६] ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१ **सांख्यकारिका [गौडपादभाष्य]** (वाराणसी की शास्त्री द्वितीय खण्ड परीक्षा स्वीकृत ग्रन्थ)
श्रीगौडपादकृतभाष्य, आचार्य ढुण्डिराजशास्त्रि विरचित टिप्पणी हिन्दी भाषानुवाद सहित [ह. १२०] तृतीय संस्करण १-५०

३ **सांख्यकारिका। [चन्द्रिकाव्याख्या]** (वाराणसी की शास्त्री द्वितीय खण्ड परीक्षा स्वीकृत ग्रन्थ।)
श्रीनारायणतीर्थकृतचन्द्रिकाटीका पं० ढुण्डिराजशास्त्रि-कृतटिप्पणी, 'हिन्दीभाषानुवाद' सहित [ह. १३२] द्वितीय संस्करण १-००

*४ **सांख्यतत्त्वकौमुदी**। 'प्रभा' हिन्दीव्याख्या सहित ७-५०

*५ **सांख्यदर्शन**। श्रीराम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ४-००

*६ **सांख्यदर्शन का इतिहास**। उदयवीर शास्त्री। नेट ३०-००

*७ **सांख्यदर्शन की ऐतिहासिक परम्परा**। डा० आद्या प्रसाद मिश्र १५-००

*८ **सांख्यदर्शनम्**। उदयवीर शास्त्री कृत विद्योदय भाष्य सहित ८-००

*९ **सांख्यदर्शनम्**। दर्शनानन्दकृत हिन्दी व्याख्या सहितम् २-००

१० **सांख्ययोगदर्शन का जीर्णोद्धार**। आचार्य हरिशङ्कर जोशी (सांख्यदर्शन का पाण्डित्यपूर्ण सुविशद विवेचनात्मक अनुशीलन [वि. रा. ८५] १५-००

११ **सांख्यसंग्रहः**। अत्र १ विमानन्द [क्षेमेन्द्र] विरचितं 'सांख्यतत्त्वविवेचनम्'। २ भावागणेशकृतं तत्त्वयाथार्थ्यदीपनम्। ३ संक्षिप्तकपिलसूत्रवृत्तिः सर्वोपकारिणी। ४ सांख्यसूत्रविवरणम्। ५ तत्त्वसमाससूत्रवृत्तिः। ६ भट्टकेशवविरचिता-सांख्यतत्त्वप्रदीपिका। ७ वैकुण्ठयतिशिष्यकविराजयतिविरचितः 'सांख्यतत्त्वप्रदीपः'। ८ कृष्णमित्रमिश्रविरचिता सांख्यमीमांसा। ९ सांख्यपरिभाषा इत्यादयो ग्रन्थाः संगृहीता वर्तन्त इति सर्व एते समाससूत्रानुसारिणा निबन्धाः (परिशोधित द्वितीय संस्करण) सम्पादक-म० म० विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी। भूमिका लेखक श्रीसत्कारिशर्मा वङ्गीय। आज कल सांख्यदर्शन के पठन-पाठन में सांख्यकारिका का ही बहुत प्रचार होने के कारण सांख्य के सूत्र ग्रन्थ तथा उन पर आधारित टीका ग्रन्थों का परिचय विरल सा होगया है। किन्तु प्राचीन तत्त्वसमास सूत्रों का अपना महत्त्व है तथा उन पर विविध प्राचीन टीकाओं तथा संग्रह ग्रन्थों का अवलोकन जिज्ञासुओं के लिए विशेष उपयोगी है। प्रस्तुत ग्रन्थ में नौ दुर्लभ सांख्य ग्रन्थों का संग्रह प्राचीन पाण्डुलिपि के आधार पर किया गया है। [चौ० ५०] १२-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१२ सांख्यसिद्धान्त । उदयवीर शास्त्री १६-००

13 SANKHYA APHORISMS OF KAPILA with Illustrative Extracts from the Commentaries. Translated by James R. Ballantyne, LL. D., [Chow. Sans. Studies Vol. XXXIV] 20-00

योग-ग्रन्थाः

१ **पातञ्जलयोगदर्शनम् ।** 'योगभाष्यविवृति' हिन्दी व्याख्याविभूषितव्यासभाष्योपेतम् । हिन्दी व्याख्याकारः स्वामी श्री ब्रह्मलीन मुनि जी ।

योगदर्शन के सूत्रों तथा भाष्यों में ऐसे-ऐसे सांकेतिक शब्दों का प्रयोग है जो गुरु मुख श्रुत होने पर भी तिरोहित ही रहता है । अतः इस ग्रन्थ के सुविख्यात हिन्दी व्याख्याकार स्वामी जी ने योगदर्शन के उपलब्ध सभी व्याख्याओं का मनन करके इस ग्रन्थ के सूत्र तथा भाष्य के प्रत्येक पदों का सुव्यस्थित व्याख्यान प्रस्तुत किया है, जो छात्रों, विद्वानों तथा अध्यापकों के लिये अधिक उपयोगी है । इस हिन्दी व्याख्या की मूल भित्ति श्री वाचस्पति मिश्र विरचित 'योगतत्त्ववैशारदी' है । अतः यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि योगदर्शन पर हिन्दी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं में जितने अक्षरानुवाद संस्करण निकल चुके हैं वे सब इसके सामने नगण्य हैं । शीघ्र प्राप्त होगा

*२ **पातञ्जलयोगदर्शनम् ।** भोजवृत्ति सहित २-००

*३ **पूर्णताप्रत्यभिज्ञा ।** म० म० श्री गोपीनाथ कविराज द्वारा प्रशंसित । सर्वतन्त्रस्वतन्त्र योगिराज श्री रामेश्वर झा । ५-००

*4 Pranayam. By Svami Kuvalayananda. With 43 Plates. 12-50

*५ **योगदर्शन ।** श्रीरामशर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ४-००

६ **योगसारसंग्रहः ।** श्रीविज्ञानभिक्षुविरचितः । [चौ. पु.] ०-५०

७ **योगसूत्रम् ।** 'योगसूत्रप्रदीपिका' व्याख्या सहितं सटिप्पणं [का. ८५] १-००

८ **योग(सूत्रपाठः)दर्शनम् ।** श्रीपतञ्जलिमुनिविरचितम् [चौ. पु.] ०-१०

९ **सांख्ययोगदर्शन का जीर्णोद्धार ।** आचार्य हरिशङ्कर जोशी (सांख्यदर्शन का पाण्डित्यपूर्ण सुविशद विवेचनात्मक अनुशीलन) [वि. रा. ८५] १५-००

१० **साङ्गयोगदर्शनम् अर्थात् पातञ्जलदर्शनम् ।** व्यासभाष्य-वाचस्पति टीका (तत्त्व वैशारदीय) पातञ्जलरहस्य-योगवार्त्तिक-भास्वतीवृत्ति [का० ११०] ५०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*११ **साधन-रहस्य** । श्री त्रिलोकीनाथ पण्डित ।

आत्मतृप्ति को प्राप्त कर लेने पर सन्त साधक ने इस लघु पुस्तक द्वारा उन नवयुवकों एवं युवतियों के लिये प्रशस्त मार्ग प्रस्तुत करने का प्रयास किया है; जो जीवन में आनन्द की खोज के लिये व्याकुल होकर भटक रहे थे । १-००

दर्शन-ग्रन्थाः

1 ABHINAVAGUPTA. An Historical and Philosophical Study. By Dr. Kanti Chandra Pandeya. [Chow. Sans. Studies. Vol. I] Revised and Enlarged Second Edition. 45—00

*2 Contemporary Indian Philosophy. By Dr. Rama Shanker Srivastava. With a Foreword by Prof. Paul Arthur Schilpp. 20-00

3 INDIAN ÆSTHETICS. By Dr. Kanti Chandra Pandeya M. A., Ph. D., M. O. L. Shastry. [Chow. Sans. Studies. Vol. II] Revised Second Edition. 30-00

4 WESTERN ÆSTHETICS. By Dr. Kanti Chandra Pandeya M. A., Ph. D., M. O. L. Shastry [Chow. Sans. Studies Vol. IV] 30-00

५ **हिन्दी सर्वदर्शनसंग्रह** । श्री उमाशंकर शर्मा ऋषि

इस संस्करण की विशेषताएँ—

१. मूल का अनुसरण करते हुए सरल साहित्यिक हिन्दी भाषा में अनुवाद तथा विस्तृत व्याख्या ।

२. शास्त्रार्थ-स्थलों पर समस्याओं की पृष्ठ-भूमि दिखाकर उनकी सर्वाङ्गपूर्ण विवेचना तथा बीच-बीच में सारांश-कथन ।

३. ऐतिहासिक टिप्पणियाँ ।

४. प्रत्येक दर्शन का विषयानुसार अनुच्छेदों में विभाजन ।

५. हिन्दी भूमिका में लेखक के समयादि पर विचार और सभी दर्शनों का संक्षिप्त पर्यालोचन ।

६. अँग्रेजी भूमिका में दर्शनों के तारतम्य का, ग्रन्थ की शैली का तथा दर्शनों की विषयवस्तु का विवेचन ।

७. परिशिष्टों में दर्शन-सम्बन्धी अत्युपयोगी शोधपूर्ण सामग्री का संकलन

[वि. सं. ११३] सजिल्द सुन्दर संस्करण २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6 SARVA-DARŚANA SAMGRAHA or Review of the Defferent Systems of Hindu Philosophy. By Madhava Ācharya. Translated by E. B. Cowell, M. A., and A. Gough, M. A. [Chow. Sans. Studies Vol. X] 15-00

७ **षड्दर्शनसमुच्चयः** । जैनश्रीहरिभद्रसूरिरचितः । मणिभद्रकृतलघु-वृत्तिसमाख्यव्याख्यासहितः सम्पूर्णः । [चौ. २७] ३-००

*८ **षड्दर्शन रहस्य** (हिन्दी) रङ्गनाथ पाठक ५-००

*9 Essays in Philosophy. Presented to Dr. T. M. P. Mahadevan on his Fiftieth Birthday. Contributed by Fifty-two Scholars, Eastern and Western. 25-00

*10 Origin and Development of Vaisnavism. By Mrs Dr. Suvira Jaiswal. 25-00

११ **काश्मीर शैवदर्शन और कामायनी** । डॉ० भँवरलाल जोशी ।

इस ग्रन्थ में लेखक ने काश्मीर शैवदर्शन के अति गूढ़ सिद्धान्तों का स्वच्छ गंभीर व्याख्यात्मक शैली में विवेचन करने के पश्चात् 'कामायनी' के अन्तर् में व्यापक रूप से अनुस्यूत दार्शनिक विचारधारा का मौलिक दृष्टि से सांगोपांग अन्वेषण प्रस्तुत किया है। कामायनी पर अब तक लिखे गये शोधग्रन्थों में इस कृति द्वारा पहली बार यह उद्घाटित हुआ है कि कामायनी में काश्मीर शैवदर्शन के कतिपय सिद्धान्तों की आनुषंगिक एवं फुटकल अभिव्यक्तियाँ मात्र न होकर उक्त दर्शन पर आधृत एक पूर्ण जीवन-दृष्टि ही उत्तरोत्तर विकास-क्रम में समाहित है। कामायनी में काश्मीर शैवदर्शन के अन्वेषण सम्बन्धी लेखक के निष्कर्ष अत्यन्त गम्भीर और तर्क-सम्मत हैं [चौ० रा० ६] २०-००

१२ **चार्वाकदर्शन की शास्त्रीय समीक्षा** । डॉ. सर्वानन्द पाठक

चार्वाकदर्शन पर यह सर्वप्रथम अनुसंधानात्मक ग्रन्थ है जो प्रत्येक विश्वविद्यालय के एम. ए. परीक्षार्थियों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक है। [वि. रा. ७६] १२-५०

*१३ **दर्शनसंग्रह** (हिन्दी) डा० दीवानचन्द ४-५०

*१४ **दर्शनोदयः** । सकलदर्शनमूलसारसंग्रहरूपः नेट १०-००

*१५ **पश्चिमीदर्शन** (हिन्दी) डा० दीवानचन्द ४-००

16 A FUNCTIONAL ANALYSIS OF INDIAN THOUGHT AND ITS SOCIAL MARGINS. By Swami A. Bharati. [Chow. Sans. Studies Vol. XXXVII] 15-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१७ भारतीयदर्शन (हिन्दी) डा० उमेश मिश्र ८-००
*१८ भारतीयदर्शन (हिन्दी) पं० बलदेव उपाध्याय १६-००
*१९ भारतीयदर्शन। वाचस्पति गैरोला ११-००

२० **भारतीय दर्शन में चेतना का स्वरूप।** डॉ० श्रीकृष्ण सक्सेना।

डॉ० सक्सेना की Nature of Conciousness in Hindu Philosophy नामक अंग्रेजी पुस्तक भारतीय दर्शन शास्त्र के अनुरागियों में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी है; उसी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का हिन्दी रूपान्तर पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः स्थावर जङ्गमात्मक इस विश्व में चेतना का अस्तित्व, उसका स्वरूप तथा भिन्न-भिन्न प्रकाश, दार्शनिक और वैज्ञानिक दोनों के ही सामने बहुत सी समस्याएं रखते हैं और दार्शनिक चिन्तन के प्रारम्भिक युग से इन समस्याओं को हल करने के लिए हमारे सभी दार्शनिकों के सूक्ष्मातिसूक्ष्म विचार उपन्यस्त किये हैं। डॉ० सक्सेना ने अपने इस शोध ग्रन्थ में बड़े ही सुन्दर और व्यवस्थित ढङ्ग की उसी विचार-परम्परा का विवेचन प्रस्तुत किया है। राष्ट्रभाषा प्रेमी भारतीय दर्शन के अनुरागी विद्वान इससे अधिकाधिक लाभान्वित होंगे। [वि. रा. १२३] १०-००

*21 Modern Religious Movements in India. By J. N. Farquhar. With Illustrations. 25-00
*२२ यूरोपीयदर्शन (हिन्दी) पं० रामावतार शर्मा ३-२५
*२३ राजनीति और दर्शन (हिन्दी) विश्वनाथप्रसाद शर्मा १४-००
*24 Religious Consciousness. By G. S. Ghurye. 45-00
*25 Vaisnavism, Saivism and Minor Religious Systems. By Sir R. G. Bhandarkar. 10-00
*२६ शैवदर्शनविन्दुः। डॉ० कान्तिचन्द्र पाण्डेय २-००

२७ **सांख्ययोगदर्शन का जीर्णोद्धार।** आचार्य हरिशङ्कर जोशी (सांख्यदर्शन का पाण्डित्यपूर्ण सुविशद विवेचनात्मक अनुशीलन)

वर्षों के गहन चिन्तन के परिणामभूत इस ग्रन्थ में आदिकाल से लेकर विज्ञानभिक्षु के काल तक सभी आचार्यों तथा उल्लिखित ग्रन्थों का समालोचनपूर्ण इतिहास, दर्शनों के मूलस्रोत का विशद विवेचन, पुराण-स्मृत्यादि साहित्य तथा वर्तमान दर्शनों में सांख्य दर्शन का प्रभाव, सृष्टिप्रवाह की पूर्ण झाँकी तथा ज्ञानोत्पत्ति प्रकार आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर प्रामाणिक, तर्कपूर्ण एवं अश्रुतपूर्व विचार देखने को मिलेंगे। लेखक का दावा ग्रन्थ के नाम से ही स्पष्ट है। [वि. रा. ८५] १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

28 THE SIX SYSTEMS OF INDIAN PHILOSOPHY : By F. Max Muller [Chow. Sans. Studies Vol. XVI] 15-00

29 Study of Vaishnavism in Ancient and Medieval Bengal. Upto the Advent of Caitanya (Based on Archaeological and Literary Data). By Dr. S. C. Mukherji. Foreword by J. N. Banerjea. 20-00

*30 Studies in Philosophy. By A. C. Das. 12-00

31 Hindu Ethics : Principles of Hindu Religio-Social Regeneration. By Babu Govinda Das. 2-00

*32 Hinduism (An Exposition and Vindication). By Shyam Behari Misra and Shukdeo Behari Misra. 10-00

*33 Historical Studies in the Cult of the Goddess Manasa (A Socio-Cultural Study). By Dr. P. K. Maity. With Foreword by A. L. Basham. With Plates. 36-00

वेदान्त-उपनिषत्-पुराणेतिहास-ग्रन्थाः

1 LIGHTS ON VEDANTA. A Comparative Study of the Various Views of Post Sankarites, with Special Emphasis on Sures'vara's Doctrines. By Dr. Veeramani Prasad Upadhyaya. [Chow. Sans. Studies Vol. VI] 15—00

2 ON THE ORIGIN OF THE INDIAN BRAHMA ALPHABET. By G. Buhler. [Chow. Sans. Studies Vol. XXXIII] 10-00

*३ **अद्वैतविद्यातिलकम्**। समरपुङ्गवदीक्षित प्रणीत। धर्मज्यदीक्षित कृत व्याख्या सहित। प्रथम भाग १-२५

*४ **अद्वैतवेदान्तबिन्दुः**। म० म० अनन्तकृष्ण शास्त्री २-००

५ **अद्वैतसिद्धिसिद्धान्तसारः**। श्रीसदानन्दव्यासप्रणीतः। तत्कृत-व्याख्यायुक्तश्च सम्पूर्णः। [चौ. १८] ९-००

६ **अमृत-मन्थन** अथवा **जीवन का दिव्य पक्ष**। डा० मङ्गलदेव शास्त्री, भू. पू. उपकुलपति, सं० वि० वाराणसी हिन्दी अनुवाद के साथ रोचक छंदों में निर्मित। छात्र, अध्यापक, गृहस्थ, साधु, सबके लिये उपयोगी। [वि. सं. २५] ४-५०

*७ **आर्षम् भारतम्** (वैयासिकम् दश-साहस्री संहिता) मूल वचनैः। श्री गोविन्दनाथ गुह प्रोक्तम् (पूर्व-उत्तरभागः) नेट ८-००

*8 Evolution on Morals in the Epics : Mahabharata and Ramayana. By Dhairyabala P. Vora. 18-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९ **काथबोधः**। साजनीकृतटीकोपेतः। दत्तात्रेयसम्प्रदायाऽनुगतः [का. ५२] १-५०

*१० **काशीतिहासः**। स्व० पं० भाऊशास्त्री वझे कृतः। नेट १-५०

*11 Critique on the Vivarana School. Studies in some Fundamental Advaitist Theories. By Dr. B. K. Sen Gupta. 12-00

12 Krishna and the Mahabharata War. By S. L. Katre. 5-00

१३ **खण्डनखण्डखाद्यम्**। चित्सुखाचार्यकृत 'खण्डनभावप्रकाशिका', शङ्करमिश्रकृत 'शाङ्करी,' रघुनाथभट्टाचार्य प्रणीत 'खण्डनभूषामणि,' प्रगल्भमिश्रकृत 'खण्डनदर्पण,' सूर्यनारायण शुक्लप्रणीत 'खण्डनरत्नमालिका' सहित व्याख्यापंचकोपेतम् खण्ड १-२ [चौ. ८२] ६-००

१४ **खण्डनखण्डखाद्यम्**। आनन्दपूर्णरचितया खण्डन-फक्किका विभजनाख्यया विद्यासागरीटीका समेतम्। [चौ. २१] यन्त्रस्थ

१५ **हिन्दी खण्डनखण्डखाद्य**। (शाङ्करी व्याख्यासहित। शोधपूर्ण संस्करण)। व्याख्याकार- स्वामी हनुमानदास जी षट्शास्त्री।

इस ग्रन्थ की उपयोगिता और कठिनता दोनों जगद्विख्यात हैं। विद्वच्चूडामणि आचार्य शंकर मिश्र प्रणीत 'शाङ्करी' व्याख्या पर भी विशिष्ट विद्वान् ही दावा कर सकते हैं, सामान्य नहीं। इसलिये तपःपूत एवं सिद्धविद्य उपर्युक्त विद्वान् द्वारा की हुई हिन्दी व्याख्या के साथ यह संस्करण प्रस्तुत किया गया है। दार्शनिक जटिलता होते हुए भी व्याख्या स्पष्ट एवं सरल है। कोई पद अव्याख्यात नहीं रह पाया। ग्रन्थ लगाने तथा आशय समझने के लिये भी इस व्याख्या का क्रम एवं प्रवाह प्रशंसनीय है। पाण्डित्यपूर्ण विचारों से ओतप्रोत समालोचनात्मक-भूमिकादिसहित सर्वोत्तम संस्करण। २५-००

१६ **खण्डनपरिशिष्टम्**। श्रीताराचरणशर्मकृतं [चौ. पु.] ०-५०

*१७ **गर्गसंहिता**। श्रीविभूतिभूषणभट्टाचार्येण संशोधिता। प्रथमो भागः १०-००

१८ **जीवनदर्शन**। डा० मुंशीराम शर्मा। (परिवर्द्धित संस्करण)

जीवन क्या है? वह कैसे विकसित होता है तथा उन्नत बनता है? जीवन-पथ में कैसे-कैसे मोड़ आते हैं आदि आदि। 'जीवनदर्शन' पढ़कर आप जीवन का वास्तविक मूल्याङ्कन कर सकेंगे। [वि. रा. १६] ३-००

१९ **तत्त्वदीपनम्**। श्री अखण्डानन्दमुनिकृतं (पञ्चपादिकाविवरणस्य व्याख्यानम्) [ब. १७] २४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

+२० **त्रिदण्डिमतविभेदिनी** । श्रीशङ्कराश्रमस्वामिप्रणीता ३-००

२१ **त्रिपुरारहस्य-माहात्म्यखण्डम्**-भूमिकाध्यायानुक्रमणिकाभ्यां च सहितम् । [का. ६२] १२-००

२२ **त्रिपुरारहस्यम्-ज्ञानखण्डम्** । 'ज्ञानप्रभा' हिन्दी व्याख्या सहित । व्या० स्वामी सनातनदेवजी महाराज

महर्षि हारितायनप्रणीत प्रस्तुत ग्रंथ भारतीय आगम-समुद्र का अनोखा रत्न है । अध्यात्मतत्त्व का प्रतिपादन करनेवाले ग्रंथों में इस ग्रंथ का निजी महत्त्व है । जीव-जगत्-शुद्धचिति, ध्यान-धारणासमाधि, अष्टपाश आदि के विवरणपूर्वक जीवन्मुक्ति प्राप्त करने के साधन आदि काव्यापक, प्रामाणिक एवं युक्तियुक्त विवेचन इस ग्रन्थ का विषय है। हिन्दी ज्ञाता भी इसका लाभ उठा सकें एतदर्थ आध्यात्मिक अनुभवों से पूर्ण श्री स्वामी सनातनदेव जी ने इसकी 'ज्ञानप्रभा' नामक सरल हिन्दी व्याख्या की है । मात्र इस व्याख्या से मूल के भावों का अविकल बोध होना इसकी सही विशेषता है । उन्हीं के बहुमूल्य विचारों से युक्त विशद भूमिका भी पर्याप्त महत्व की है । उत्तम शैली और सुबोधता की दृष्टि से यह अवश्य पठनीय ग्रन्थ है । [का. १७६] १३-००

23 TRIPURA-RAHASYA (Jnanakhanda). English Translation and a Comparative Study of the Process of Individuation. By A. U. Vasavada [Chow. Sans. Studies. Vol. L] 15-00

24 THREE LECTURES ON THE VEDANTA PHILOSOPHY. By F. Max Muller. [Chow. Sans. Studies Vol. LVII] 7-50

२५ **दिव्य जीवन दर्शन** । पथिक ।

इस पुस्तिका में कपिल के सांख्य, भगवान श्रीकृष्ण की गीता तथा विविध शास्त्रों के सिद्धान्तों का सारभूत सदुपदेश निहित है । [चौ. पु] ०-५०

+१६ **नैष्कर्म्यसिद्धिः** । श्रीज्ञानोत्तममिश्रकृत 'चन्द्रिका' व्याख्यासहिता । प्रथम खण्ड मात्र [ब. १२] ३-००

२७ **न्यायभास्करखण्डनम्-मध्वचन्द्रिकाखण्डनम्** । म० म० श्रीरामसुब्रह्मण्यशास्त्रिविरचितम् । [चौ. पु.] ३-००

२८ **न्यायमकरन्दः** । आनन्दबोधभट्टारकाचार्यसंगृहीतः । आचार्यचित्सुखमुनिकृतव्याख्योपेतः तथा 'प्रमाणमाला' 'न्यायदीपावली'च [चौ. ११] यन्त्रस्थ

*29 Philosophy of Bhedābheda. By P.N. Srinivasacharya 9-00

*३० **पञ्चपादिका** । व्याख्या द्वयोपेता तथा **पञ्चपादिकाविवरणं** च व्याख्या द्वयोपेतम् २८-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३१ **परमतत्त्वमीमांसा (मतिप्रतिक्षेपशास्त्रम्)**
विद्याभूषण श्रीकृष्ण जोशी ।
पाश्चात्त्य तत्त्वज्ञानियों के मत में परमतत्त्व का स्वरूप क्या है यह बतलाने के लिये विद्वान लेखक ने आरंभक्रम से पाश्चात्त्य दार्शनिकों का इतिहास प्रस्तुत करते हुए उनकी प्रमुख विचार धाराएँ भी उपन्यस्त की हैं। पाश्चात्त्य आध्यात्मिक दर्शन तथा दार्शनिकों का एकत्र क्रमबद्ध वर्णन प्राप्त करने के लिये संस्कृत में लिखा यह अकेला ही सर्वप्रथम तथा सर्वथा नवीन ग्रंथ है। [वि. सं. १३२] ४-५०

३२ **प्रणवकल्पः** । (श्रीस्कन्दपुराणान्तर्गतः) श्रीगङ्गाधरेन्द्रसरस्वतीप्रणीत-प्रणवकल्पप्रकाशाख्यभाष्यसमलंकृतः । [चौ. ७४] ३-००

३३ **प्रज्ञानानन्दप्रकाशः** । 'भावार्थकौमुदी'टीका-भाषानुवाद सहितः [चौ. पु.] ३-००

३४ **बोधसारः** । श्रीनरहरिकृतस्तच्छिष्यपण्डितश्रीदिवाकर कृत टीकया सहितश्च । [ब. २३] ३०-००

*३५ **ब्रह्मविनय** । मधुसूदन ओझा । सं० वासुदेवशरण अग्रवाल ५-००

३६ **हिन्दी ब्रह्मसूत्र** । व्याख्याकार : स्वामी श्री हनुमान दास जी षट्शास्त्री ।
सम्पूर्ण शांकरभाष्य का गूढ़ तत्त्व इस हिन्दी व्याख्यान में प्रतिफलित हो उठा है। संस्कृत की ससन्दर्भ वेदान्त-सूक्तियां पदे-पदे अनुस्यूत हैं। भाषा बड़ी सरल और प्रवाहपूर्ण है। इसे ब्रह्मसूत्र पर अन्य सब भाष्यों का सार समझना चाहिए। [चौ. पु.] ६-००

१७ **ब्रह्मसूत्रदीपिका** । श्रीमच्छङ्करानन्दभगवद्विरचिता तथा-तत्त्वानुसंधानं-श्रीमहादेवानन्दसरस्वतीप्रणीतम् [ब. २४] ६-००

३८ **ब्रह्मसूत्रभास्करभाष्यम्** । श्रीभास्कराचार्य कृतम् [चौ. २०] यन्त्रस्थ

३९ **ब्रह्मसूत्रविज्ञानभिक्षुभाष्यम्** । बादरायण प्रणीत वेदान्तसूत्राणां यतीन्द्र श्रीमद्विज्ञानभिक्षुविरचितं 'विज्ञानामृत व्याख्यानं' संपूर्णम् [चौ. ८] समाप्त

४० **हिन्दी ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य चतुःसूत्र्यन्त** ।
व्याख्याकार—आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि ।
अनेक विश्वविद्यालयों में पाठ्य स्वीकृत इस चतुःसूत्र्यन्त भाग की सर्वबोधगम्य व्याख्या की शिक्षाधिकारी विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। इसकी भूमिका ब्रह्मसूत्र के अनुशीलन में एक नवीन दृष्टिकोण को अग्रसर करती है, जो एकदम नवीन तथा परीक्षोपयोगी है।
[वि. सं. १३७] ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४१ **हिन्दी ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य** । व्याख्याकार—स्वामी हनुमानदास जी षट्शास्त्री ।

प्राचीन विद्वत्ता तथा कठोर तपस्या के साधिकार योग से प्रसूत प्रस्तुत व्याख्या बड़ी सहज तथा सरल है । ऐसा कोई पद नहीं छूटा है जिसकी स्पष्ट व्याख्या न हुई हो । ग्रन्थ लगाने के लिये यह सर्वश्रेष्ठ व्याख्या है । छात्र, अध्यापक, जिज्ञासु, मुमुक्षु सभी वर्ग के व्यक्तियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है । विश्वविद्यालयीय परीक्षार्थियों के लिए डॉ० वीरमणि प्रसाद उपाध्याय विरचित प्राच्य-पाश्चात्य-उभयमत-समन्वयात्मक सुविशद इसकी भूमिका मात्र ही पर्याप्त है ।

प्रथम भाग १-२ अध्याय १५-००
द्वितीय भाग ३-४ अध्याय १५-००
[वि. सं. १२४] संपूर्ण १-२ भाग ३०-००

४२ **ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्** । चतुःसूत्र्यन्त 'पूर्णानन्दीय' व्याख्यासहितया श्रीगोविन्दानन्दप्रणीतया 'रत्नप्रभया' च समन्वितं ।
प्रथमाध्यायादारभ्य द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयपादपर्यन्तम् [का. ७१] ८-००

४३ **ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्** । चतुःसूत्र्यन्त 'पूर्णानन्दीय' व्याख्या, श्री गोविन्दा नन्दप्रणीत 'रत्नप्रभा' व्याख्यया, प्रथमाध्यायादारभ्य द्वितीया ध्यायस्य द्वितीय-पादपर्यन्तं, श्रीमद्वाचस्पतिमिश्र कृत 'भामती' व्याख्यया च सहितं सटिप्पणं प्रथम भाग [का. ७१, ११६] ११-००

*४४ **ब्रह्मसूत्रवृत्ति-मिताक्षरा** । अन्नंभट्टकृता नेट ७-००

*४५ **ब्रह्मसूत्र-वैदिकभाष्यम्** । स्वामी श्री भगवदाचार्य कृतम् ।
१-२ भाग नेट १०-००

४६ **ब्रह्मामृतम्** । श्रीमज्जयकृष्ण ब्रह्मतीर्थ विरचितम् । [ब. १२] १-५०

४७ **बृहदारण्यकवार्तिकसारः** । विद्यारण्यस्वामिविरचितः । महेश्वर-तीर्थकृत 'लघुसंग्रह' व्याख्यासहितः । अयञ्च श्रीमच्छुद्धानन्दमुनिवरशिष्य श्री उत्तमश्लोकयतिविरचित-'वेदान्तसूत्रलघुवार्तिक' श्लोकबद्धः
[चौ. ४६] २०-००

४८ **भक्ति का विकास** । डॉ० मुंशीराम शर्मा ।

परमपुरुषार्थ रूपमें प्राप्य 'भगवत्' और 'भक्ति' तत्त्व के विषय में जितना कुछ जानना आवश्यक है वह सब इस कौशल से इस ग्रन्थ में उपनिबद्ध है कि प्रत्येक वर्ग, वर्ण एवं स्तर के मानव इसे पढ़कर तुष्ट होंगे एवं उन्हें आत्मकल्याण का सर्वसम्मत मार्ग अनायास सुलभ होगा ।
[वि. रा. १५] २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४९ **भक्ति-तरङ्गिणी** । डॉ० मुंशीराम शर्मा ।
भक्ति-भाव से ओत-प्रोत वेद मन्त्रों का सरस हिन्दी गीतों में अनुवाद । भक्ति-तरङ्गिणी अध्यात्म-पथ के यात्रियोंके लिये अनुपम सम्बल सिद्ध होगी
[वि. रा. २१] ३-००

५० **भक्तिरसायनम्** । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ

*५१ **भक्त्यधिकरणमाला** । नारायणतीर्थ विरचित १-२५

*५२ **गीता-नवनीत** । श्रीमद्भगवद्गीता की नवीन व्याख्या, मूल और भाषानुवाद । डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ५-००

*५३ **गीताप्रवचन गीताव्याख्यानमाला** । गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ।
१-३ भाग ३४-५०

*५४ **भगवद्गीता** । भगवदाशयानुसरणाभिधान भाष्य सहित । भास्कराचार्य विरचित । डा० सुभद्रोपाध्याय सम्पादित ५-५०

*५५ **भगवद्गीता का आशय और उद्देश्य** । डॉ० भगवानदास ०-५०

५६ **श्रीमद्भगवद्गीता** । सानुवाद मधुसूदनीव्याख्या सहित ।
अनुवादक—स्वामी श्री सनातनदेव जी महाराज ।
मधुसूदनी संस्कृत व्याख्या के साथ उसकी अक्षरशः हिन्दी व्याख्या भी प्रकाशित की गई है । हिन्दी व्याख्या अत्यन्त सरल, प्रवाहमय तथा मूल का प्रतिपद अनुवर्तन करने वाली है । सर्वत्र ही गूढ़ स्थलों को सुस्पष्ट करने के लिए मत-मतान्तर-निरासपूर्वक विषयवस्तु का यथार्थ बोध कराया गया है । वयोवृद्ध मुमुक्षुजनों के लाभार्थ बड़े टाइप में सुस्पष्ट मुद्रण किया गया है । पुरुषार्थचतुष्टय के साधन पथ का सम्बल यह एक मात्र संस्करण जिज्ञासु व्यक्तिमात्र के लिए परम उपादेय है । [का. १६२] १५-००

*५७ **भगवद्गीतार्थप्रकाशिका** । ब्रह्मयोगीकृत नेट १५-००

५८ **भामती** (ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यव्याख्या) वाचस्पतिमिश्रविरचिता । श्री ढुण्ढिराजशास्त्रिसङ्कलितया विषमस्थलटिप्पण्या समलङ्कृता प्रथम भाग
[का. ११६] ३-००

*५९ **भारतीय तत्त्वचिन्तन** । श्री ब्रजभूषण पाण्डेय ।
अत्यन्त बोधगम्य भाषा एवं शैली में भारतीय मनीषियों के चिन्तनों को पल्लवित किया गया है । दर्शन के गूढ़ सिद्धान्तों की सुन्दर एवं मार्मिक व्याख्या ही इस ग्रंथ की अपनी विशेषता है । ३-५०

*60 Bhaskari. Vol III. An English Translation of the Isvara Pratyabhijnavimarsini in the Light of the Bhaskari. 7-94

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६१ **भेदधिक्कारः**। नृसिंहाश्रममुनिकृतः। श्रीनारायणशर्मकृतव्याख्यासहितः। तथा 'उपक्रमपराक्रम' अप्पयदीक्षितकृतः। [ब. २२] ६-००

*६२ **मध्वतन्त्रमुखमर्दनम्**। व्याख्यासहितम्। श्रीमदप्पयदीक्षितेन्द्रकृतं २-००

+६३ **महाभारततात्पर्यप्रकाशः**। श्री सदानन्द व्यास प्रणीतः १०-००

*६४ **महाभारतम्**। नीलकण्ठीसंस्कृत व्याख्या सहितम्। ...

*६५ **माध्वमुखभङ्गः**। श्रीसूर्यनारायण शुक्ल विरचितः १-००

६६ **मिताक्षरा** (श्रीगौडपादाचार्यकृतमाण्डूक्यकारिकाव्याख्या) श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वयंप्रकाशानन्दसरस्वती स्वामिविरचिता। शङ्करानन्दकृत माण्डूक्योपनिषद्दीपिका च [का. ४८] २-००

*67 Myth and Reality : Studies in the Formation of Indian Culture. By D. D. Kosambi. With Illustrations. 12-50

*६८ **लघुरामायणम्**। वाल्मीकीयम्। श्री गोविन्दनाथ गुह प्रोक्तम्। रेशमी जिल्द राजसंस्करण नेट ६-५० सुलभ संस्करण नेट ३-२५

*६९ **विचारचन्द्रोदय**। पीताम्बर जी कृत ३-००

*७० **विचारप्रदीपिका**। श्री स्वामी शिवगिरि जी।
निवृत्ति की ओर से विमुख तथा प्रवृत्ति की ओर उन्मुख प्राणियों को ग्रन्थगत चार धर्मों के आध्यात्मिक रहस्य, गुरु-शिष्य-संवाद तथा कहानियों के माध्यम से उचित कर्त्तव्य का निर्देश प्राप्त होगा। इसे पढ़ते ही हृदय में शान्ति का अनुभव होता है। २-००

७१ **विचारसागर**। व्याख्याकार हनुमानदास जी षट्शास्त्री।
ब्रह्मनिष्ठ श्री स्वामी निश्चलदास विरचित हिन्दी का यह प्रसिद्ध गूढ़ ग्रन्थ सुविशद हिन्दी भाष्य के साथ प्रकाशित किया गया है। हिन्दी-संस्कृत की विचार-पोषक सूक्तियाँभी व्याख्यान में यत्र-तत्र पिरोई हुई हैं [चौ. पु.] ३-००

७२ **विवरणादिप्रस्थानविमर्शः**। डॉ० वीरमणिप्रसाद उपाध्याय।
इस ग्रन्थ में भगवान् शङ्कराचार्य के अद्वैतवाद के ऊपर अवान्तर मतभेदरूपप्रतिबिम्बवाद, आभासवाद तथा अवच्छेदवाद का एकत्र सुन्दर संकलन किया गया है। [ह. २५९] १-००

*७३ **वेदान्ततत्त्व-विचार**। स्वामी अनन्तानन्द सरस्वती।
स्वामी करपात्रीजी के शब्दों में—"संस्कृत भाषा में इस सम्बन्ध के अनेक ग्रन्थ विद्यमान हैं, परन्तु हिन्दी भाषा में वेदान्त के सांगोपांग विचारपूर्ण बहुत कम ग्रन्थ हैं। ख्याति प्राप्त यशस्वी लेखक ने उपनिषदादि वेदान्त ग्रन्थों एवं विचार-सागर के आधार पर हिन्दी में प्रस्तुत ग्रन्थ का संकलन किया है। यह ग्रन्थ साधकों, विचारकों तथा वेदान्तप्रेमी जनधारण के लिये अत्यन्त उपयोगी है। ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७४ **विवरणोपन्यासः**। श्रीरामानन्दसरस्वती विरचितः विवरणतात्पर्यस्य व्याख्यानम् तथा-**'वाक्यसुधा'** श्रीशङ्कराचार्यविरचिता। श्रीब्रह्मानन्द-भारतीकृतव्याख्यासहितः। [ब. १६] ६·००

७५ **हिन्दी वेदान्त-परिभाषा**। व्याख्याकार-डॉ० गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर।

विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ की अत्यन्त सरल तथा सरस हिन्दी व्याख्या इतनी उत्तम शैली में प्रस्तुत की है कि सम्प्रदाय-पुरस्सर अध्ययन करने का ही लाभ आप प्राप्त कर सकेंगे। व्याख्या में पहले मूल ग्रन्थ को लगाकर बाद में शंका-समाधान के रूप में वेदान्त के मार्मिक सिद्धान्तों, क्लिष्ट अंशों तथा मत-मतान्तरों पर सरल शब्दों में व्यापक प्रकाश डाला गया है। पाण्डित्यपूर्ण विशद् भूमिका भी छात्रों के लिए परम उपादेय है। [वि. सं. १००] १०-००

७६ **वेदान्तपरिभाषा**-सटिप्पण 'अर्थदीपिका' टीका सहित।

महामनीषी श्रीशिवदत्त कृत 'अर्थदीपिका' टीका तथा वेदान्ताचार्य पं० त्र्यम्बकराम शास्त्री विरचित सुविस्तृत टिप्पणी सहित यह शोधपूर्ण तृतीय संस्करण अधिक महत्त्वपूर्ण है। [ह. ६] ३-००

*77 Vedanta Paribhasha. With English translation by S. Suryanarayan Sastri. Nett 12-00

७८ **वेदान्तसारः**। (वाराणसी की शास्त्री द्वितीय खण्ड परीक्षा के अनिवार्य प्रथम पत्र के लिए पाठ्य ग्रंथ) 'भावबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्यासहित। (संशोधित चतुर्थ संस्करण)

प्रो० रामशरण शास्त्री संपादित इस अभिनव संस्करण की व्याख्या में अज्ञान (माया), अध्यारोप, तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि इत्यादि स्थल इतने विस्तार एवं सरलतापूर्वक लिखे गये हैं कि साधारण से साधारण छात्र के लिये भी यह ग्रन्थ अत्यन्त सुबोध हृदयंगम करने योग्य हो गया है। इसकी समालोचनात्मक विस्तृत भूमिका भी अध्ययन करने योग्य है। ग्रन्थ के अन्त में अनेक विश्वविद्यालयों के प्रश्न पत्र भी दिये गये हैं [वि. सं. १] २-५०

*७९ **वेदान्तदर्शन**। श्रीराम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ४-००

८० **वेदान्तदर्शनम्**। श्रीरामानन्दसरस्वतीकृत 'ब्रह्मामृतवर्षिणी'-नामक विस्तृतसूत्रार्थनिर्णायिकाटीकासहितम्। [चौ. ३६] १२-००

८१ **वेदान्त(सूत्रपाठः)दर्शनम्**। भगवद्व्यासमहामुनिकृतम् [चौ. पु.] ०-१०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८२ **वैराग्यशतकम्** । श्रीभर्तृहरिविरचित । सरल, सुबोध हिन्दी व्याख्या तथा हिन्दी पद्यानुवाद सहित ।
[वि. सं. ६१] १-२५

*८३ **शाण्डिल्य भक्तिसूत्रम्** । नारायण तीर्थ विरचित भक्तिचन्द्रिका व्याख्या-स्वप्नेश्वर भाष्य-नारद भक्तिसूत्र-भक्तिमीमांसा सहित १०-००

*८४ **सर्ववेदान्तसारसंग्रहः** । पं० श्यामसुन्दरझारचित अभिनव ग्रन्थः २-००

८५ **सिद्धान्तबिन्दुः** । न्यायरत्नावली-नारायणीटीकोपेतः
[का. ६५] ३०-००

८६ **संक्षेपशारीरकम्** । रामतीर्थस्वामिकृत 'अन्वयार्थप्रकाशिका' टीका सहितम् ।
[का. २] १३-००

८७ **संक्षेपशारीरकम्** । 'मधुसूदनी' टीका सहितम् । [का. १८] समाप्त

*८८ **सूत्रार्थामृतलहरी** । (द्वैत) कृष्णावधूतपण्डितविरचिता नेट ३-२५

*८९ **सौन्दर्यलहरी** । हिन्दी अनुवाद तथा विद्यातत्त्व-कुण्डलिनी-रहस्य सहित । ५-००

*९० **स्वराज्यसिद्धिः** । सुरेश्वराचार्य विरचित । हिन्दी टीका सहित १-५०

९१ **स्वानुभवादर्शः** । माधवाश्रमविरचितः । स्वकृतटीकाविभूषितश्च
[चौ. ४०] ६-००

*९२ **श्रीमद्भागवत हिन्दीपद्यात्मक** । श्रीरघुनन्दनप्रसाद शुक्ल 'अटल' । प्रस्तुत पद्यानुवाद में भावार्थ तथा शब्दार्थ दोनों ही मूल के तत्सम हैं । विद्वानों के लिए पुस्तक संग्रहणीय है । प्रथम तथा दशमाध्याय मात्र १५-००

+९३ **श्रीमद्भागवतम्** । मूल । गुटका ८-००

+९४ **श्रीमद्भागवतम्** । 'सरस्वती' भाषाटीका दृष्टान्त और 'प्रकाश' टिप्पणी से अलंकृत । पत्रात्मक संस्करण ४०-००

+९५ **श्रीमद्भागवतम्** । सामयिकी भाषा टीका पत्रात्मक २४-००

+९६ **श्रीमद्भागवतम्** । (दशमस्कन्ध) भाषा टीका सहित पत्रात्मक ८-००

+९७ **श्रीमद्भागवतम्** । श्रीधरी टीका ग्लेज कागज । काशी २४-००

+९८ **श्रीमद्भागवतम्** । चूर्णिका व्याख्या सहित । पत्रात्मक २४-००

+९९ **श्रीमद्भागवतम्** । अन्वितार्थ प्रकाशिका संस्कृत टीका । पत्रात्मक ४८-००

१०० **श्रीमत्सनत्सुजातीयम्** । श्रीमच्छङ्करभगवत्पादविरचितभाष्येण 'नीलकण्ठी' व्याख्यया च संवलितम् । [का. १३] २-००

+१०१ **श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम्** । भाषाटीका । पत्रात्मक ४०-००

*102 Valmiki Ramayan. Abridged edition by M. A. Srinivasachariar. Nett 3-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०३ **श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम्** (विशुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
(रामायणपूजाक्रम, स्मार्त, वैष्णव तथा माध्व संप्रदायोंके रामायण-पठनोपक्रम, नवाह्नपारायणक्रम, कुशलवगीतक्रम, गायत्रीरामायण, वेदोक्त राममन्त्र, रामतारकषडक्षरमंत्र, श्रीसीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न तथा आञ्जनेय मन्त्र, रामसाक्षात्कारप्रद मन्त्र, राम-हृदय, रामायण-माहात्म्य, रामदर्शनादि विविध परिशिष्टों से विभूषित)। शताधिक वर्ष पूर्व की हस्तलिखित प्रामाणिक प्रति से तथा आजतक के प्रकाशित सभी संस्करणों से पाठ मिलाकर यह अत्यन्त शुद्ध और प्रामाणिक संस्करण प्रकाशित किया गया है। [वि. सं. २८] ९-००

104 VALMIKIYA RAMAYAN : English Translation. By Ralph T. H. Griffith. [Chow. Sans. Studies Vol. XXIX] 25-00

+१०५ **श्रीमद्भगवद्गीता**। सान्वय 'श्रीधरी' व्याख्या सहित ३-००

+१०६ **श्रीमद्देवीभागवतम्**। मूलमात्रम् ८-००

+१०७ **श्रीमद्देवीभागवतम्**। हिन्दीभाषाटीका सहितम्। पत्रात्मक ३२-००, ४०-००

१०८ **हरिलीलामृतम्**। विद्वच्छिरोमणिश्रीवोपदेवप्रणीतम्। श्रीमत्परमहंस-मधुसूदनसरस्वतीप्रणीत टीकासहितम्। तत्प्रणीत परमहंसप्रिया व्याख्या-युतं श्रीमद्भागवतस्याऽऽद्यपद्यं च। [चौ. ७१] यन्त्रस्थ

+१०९ **हरिवंशम्**। हिन्दी टीकासहितं पत्रात्मकं सम्पूर्णम् ३२-००

११० **कठोपनिषद्**। ('शाङ्करभाष्य' सहित) 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या विभूषित। व्याख्याकार—डॉ० सुरेन्द्रदेव शास्त्री
गम्भीर तत्त्व-विवेचन के साथ ही ब्रह्मबालक नचिकेता का प्रसिद्ध मार्मिक उपाख्यान इस ग्रन्थ का विषय है। इसकी हिन्दी व्याख्या अपने वृहद् आकारवश महाभाष्य ही बन गई है। पहले मन्त्र एवं उसका शाङ्कर भाष्य देकर हिन्दी व्याख्या में एक-एक पद पर विशद व्याख्यान किया गया है, तत्पश्चात् भावार्थ अलग से सुस्पष्ट किया गया है। भाषा एवं शैली अत्यन्त सुबोध है। पाण्डित्यपूर्ण सुविस्तृत समालोचनात्मक भूमिका तथा 'नोट्स' आदि परीक्षोपयोगी सभी आवश्यक सामग्री से संवलित बहुत उत्तम संस्करण है। [वि. सं. १४७] २-००

१११ **कौषीतकि-ब्राह्मणोपनिषद्**। शङ्करानन्द कृत दीपिका सहित। ई० बी० कावेल विनिर्मित आङ्गलभाषानुवाद समुपेत [चौ. सं. स्टडीज ६४] २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*११२ **अप्रकाशित सामान्य उपनिषदः**। ब्रह्मयोगिकृत व्याख्या सहित (७१ उपनिषत्) नेट २०-००

*११३ **अष्टोत्तरशतोपनिषद्**। हिन्दी टीका सहित। १-३ भाग २३-२५

*११४ **ईशादिनवोपनिषद्**। ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माडूक्य-ऐतरेय-तैत्तिरीय छान्दोग्य उपनिषद्। शाङ्करभाष्य सहित १०-००

*११५ **उपनिषत्तत्त्व-निर्णय**। स्वामी अनन्तानन्द सरस्वती। इसमें ईश, कठ, केन, आदि दश उपनिषदों के माध्यम से सरल हिन्दी भाषा द्वारा आत्मतत्त्व का बोध कराया गया है। संस्कृत न जानने वाले जिज्ञासुओं को भी इससे लाभ होगा। स्वामी करपात्रीजी महाराज, आदि तपस्वियों के आशीर्वाद इस ग्रन्थ में छपे हैं। १-००

*११६ **उपनिषत् प्रकाशः**। हिन्दी अनुवाद सहित ४-५०

*117 Upanishads and Modern Biology. By K. A. Patwardhan. 4-50

118 KAUSITAKI-BRAHMANA-UPANISAD. With the 'Dipika' Commentary of Sankarananda. Edited with an English Translation. By E. B. Cowell, M. A. [Chow. Sans. Studies Vol. LXIV] 20-00

*११९ **छान्दोग्योपनिषद्**। अन्वय, पदार्थ, हिन्दी भावार्थ सहित ३-००

*१२० **दशोपनिषदः**। ब्रह्मयोगिकृतव्याख्या सहित। १-२ भाग। नेट ३०-००

*१२१ **याज्ञिक्युपनिषद्विवरणम्**। पुरुषोत्तमतीर्थकृत नेट ४-००

*122 Yoga Upanisads. Translated into English by T. R. Srinivasa Aiyangar. Nett. 16-00

*१२३ **वैष्णवोपनिषदः**। ब्रह्मयोगिकृत व्याख्या सहित (१४ उपनिषत्) २०-००

*१२४ **शैवोपनिषदः**। ब्रह्मयोगिकृत व्याख्या सहित(१५ उपनिषत्)नेट १२-००

*125 Saiva Upanisads. Translated into English by T. R. Srinivasa Aiyangar. Nett 9-00

*१२६ **संन्यासोपनिषदः**। ब्रह्मयोगिकृत व्याख्या सहित नेट १६-००

*१२७ **सामान्यवेदान्तोपनिषदः**। ब्रह्मयोगिकृत व्याख्या (२४ उपनिषत्) २०-००

128 AGNI PURANAM. A Prose English Translation. By Manmatha Nath Dutt (Shāstri) M. A., M. R. A. S. 2 Vols. [Chow. Sans. Studies Vol. LIV] 60-00

129 AGNI PURANA : A Study. By Dr. S. D. Gyani. [Chow. Sans. Studies Vol. XLIII] 25-00

*१३० **अष्टादशपुराण व्यवस्था**। काशीनाथ भट्ट विरचित १-००

*१३१ **कूर्मपुराणम्**। मूलमात्र। सजिल्द १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३२ **अग्निपुराणम्** । (शोधपूर्ण संस्करण) सम्पादक : आचार्य बलदेव उपाध्याय । आलोचनात्मक विशद हिन्दी भूमिका सपरिशिष्ट ।

अग्निपुराण अपने विषय-बाहुल्यवश भारतीय संस्कृति का विश्वकोष माना जाता है । पुराणविमर्श, संस्कृतसुकविसमीक्षा आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के रचयिता तथा वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के अनुसन्धान-विभागाध्यक्ष श्री उपाध्यायजी के दीर्घकालीन श्रम के अनन्तर ही यह शोधपूर्ण संस्करण प्रस्तुत किया जा सका है । सम्पूर्ण मूल पाठ संशुद्ध करके पाठान्तर फुटनोट में रखे गए हैं । पाण्डित्यपूर्ण विचारों से युक्त सुविशद भूमिका में पुराण का रचनाकाल, विषयसूची का निर्माण तथा अन्य संस्करणों से तुलना, शास्त्रीय कसौटी पर विस्तृत समीक्षण, विषय-विमर्श आदि महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत की गई है । अग्निदेव के वैदिक चित्र से युक्त आकर्षक आवरण तथा कागज-मुद्रण आदि की सभी उत्तम विशेषताओं से मण्डित यह सर्वोत्तम संस्करण है ।

अत्यल्प, लागतमात्र [का. १७४] २०-००

133 CRITICAL STUDY (A) OF THE BHAGAVATA PURANA : With Special Reference to Bhakti. By Dr. T. S. Rukmani. In the Press

१३४ **गरुडपुराणम्** । सम्पादक—श्री रामशंकर भट्टाचार्य ।

ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विवेचन और समानान्तर स्थलों के निर्देश से युक्त विस्तृत भूमिका, परिशिष्ट और विषयों तथा चरित्रों की अनुक्रमणिका इत्यादि से अलंकृत शोधपूर्ण संस्करण । [का. १६५] १०-००

135 GARUDA PURANAM : A Prose English Translaton. By Manmatha Nath Dutt (Shastri) M. A., M. R. A. S. [Chow. Sans. Studies Vol. LXVII] 50-00

*१३६ **पद्मपुराणम्** । मूलमात्र । १-५ भाग । सजिल्द १००-००

*137 Polity in the Agni Purana. By Dr. B. B. Mishra. 36-00

138 THE PURANA TEXT OF THE DYNASTIES OF THE KALI AGE. With Introduction, Text, Notes and Eloborate Commentary. By F. E Pargiter M. A. [Chow. Sans. Studies Vol. XIX] 20-00

139 PURANA PANCALAKSANA : By W. Kirfel. Text edited in Devanagari. Introduction rendered into English by Dr. Suryakant. Shortly

140 PURANAS OR AN ACCOUNT OF THEIR CONTENTS AND NATURE. By H. H. Wilson. In the Press

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४१ **पुराण-विमर्श** । आचार्य बलदेव उपाध्याय ।
इसमें ऐतिहासिक पद्धति से पुराण की आलोचना विद्यमान है तथा साथ ही साथ परम्परा पद्धति से पुराणविषयक मननीय सामग्री भी संकलित है । पुराण के अनुशीलन में यह एक नवीन दृष्टिकोण को अग्रसर करता है, जो एकदम नवीन तथा पूर्णतया विश्लेषणात्मक है । [वि. रा. ८०] २-००

१४२ **पौराणिक-आख्यान** । डॉ० गंगासागर राय ।
आख्यान या कहानी जनता के मनोरंजन के साधन हैं । पौराणिक कथानक उपदेशप्रद तथा रोचक होने के कारण विद्वज्जन से लेकर पामर जन तक को आकृष्ट करता है । घर-घर में पौराणिक शिक्षाप्रद कथाओं का प्रसार हो इसी उद्देश्य से राष्ट्रभाषा में यह पुस्तक लिखी गयी है । कथावाचक पौराणिक व्यासों के लिये तो यह पुस्तक अद्वितीय है [वि० रा० १२६] २-००

१४३ **पौराणिक कथाएँ** । श्री हृदयराम शर्मा
उदात्त चरित्रों से परिपूर्ण लगभग ७४ पौराणिक कथाओं को लोकरुचि के अनुकुल रूप देकर यह ग्रन्थ सम्पादित किया गया है । आबाल-वृद्ध सभी को इसमें पर्याप्त रुचिपूर्ण कहानी कहने-सुनने की प्रवृत्ति तुष्ट होकर उत्कृष्ट मनोरंजन भी होगा । [वि. रा. ४५] २-५०

*१४४ **मार्कण्डेय पुराण** (संक्षिप्त) । श्रीराम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित । १-२ भाग १४-००

१४५ **मार्कण्डेयपुराण : एक अध्ययन** । आचार्य बदरीनाथ शुक्ल
इस ग्रन्थ में अध्यायक्रम से मार्कण्डेय पुराण का सम्पूर्ण कथा-सूत्र पूर्ण सुरक्षित रखा गया है; कथा की परम्परा में कहीं भी त्रुटि नहीं आने पाई है । कथावाचक और अनुसंधानकर्त्ता दोनों के लिए यह ग्रंथ समान उपयोगी है । [वि. रा. ४३] ४-५०

१४६ **लिंगपुराणम्** । मूलमात्र । सजिल्द यन्त्रस्थ

*१४७ **वायुपुराण** (संक्षिप्त) । श्रीराम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित । १-२ भाग १४-००

१४८ **वाराहपुराणम्** । मूलमात्र । सजिल्द यन्त्रस्थ

*१४९ **विष्णुपुराणम्** । वेदव्यास प्रणीत । श्रीधरस्वामि कृत आत्मप्रकाश संस्कृत टीका । कालीयपदतर्काचार्य कृत पाद टीका-रुद्रदत्त पाठक कृत हिन्दी टीका सहित २०-००

*१५० **विष्णुपुराण** (संक्षिप्त) । श्रीराम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित । १-२ भाग १४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१५१ शिवमहापुराणम्। मूलमात्रम्। सजिल्द १०-००

*१५२ शिवमहापुराणम् (संक्षिप्त)। श्री राम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित। १-२ भाग १४-००

१५३ **श्रीपुराणसंहिता**—श्रीमद्वेदव्यासविरचिता।

(आळमन्दार-बृहत्सदाशिव-सनत्कुमारसंहितात्रय संवलिता)

म. म. श्री गोपीनाथ जी कविराज ऐसे महामनीषी ने भी पुरातत्त्व से ओत-प्रोत तीन हजार श्लोकों के इस ग्रंथ की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इसकी प्रस्तावना में सत्-चित्-आनन्द के रहस्यों का बहुत ही सरल और संक्षेप में सुन्दर प्रतिपादन किया गया है। [चौ. ८९] १२-००

*१५४ स्कन्दमहापुराणम्। मूलमात्र। १-५ भाग ६ जिल्द में संपूर्ण (नागर और प्रभास खंड छोड़कर) १२५-००

वेदान्त-शुद्धाद्वैत (वल्लभसम्प्रदाय) ग्रन्थाः

१ **अष्टाक्षरटीका**। [चौ. पु.] ०-२५

२ **गूढार्थदीपिका**। धनपतिसूरिकृता। श्रीमद्भागवतदशमस्कन्धस्थ-'रासपञ्चाध्यायी' व्याख्या एवं भ्रमरगीतव्याख्या तथा जगन्नाथसुधिवि-निर्मिता 'रसव्याख्या' च [व. २९-३०] १२-००

३ **पुष्टिमार्गीयस्तोत्ररत्नाकरः**। [ह. ८] यन्त्रस्थ

४ **प्रस्थानरत्नाकरः**। गोस्वामिश्रीपुरुषोत्तमजीमहाराजविरचितः [चौ. ३३] ६-००

*5 Philosophy of Vallabhacharya. By Dr. Mrudula I. Marfatia. 25-00

६ **ब्रह्मवादसंग्रहः**। [गोस्वामि श्रीहरिरायजी विरचित 'ब्रह्मवादः'—गोपालकृष्णभट्ट विरचित विवरण सहितः। गोस्वामिश्रीव्रजनाथ विरचित-ब्रह्मवादः। श्री रामकृष्णभट्टविरचित शुद्धाद्वैतपरिष्कारः—श्रीरघुनाथ-शास्त्रि विरचित शुद्धाद्वैतपरिष्कारतात्पर्यव्याख्यानसहितः] हिन्दीभाषा-नुवादसमेतश्च [का. ६२] २-००

७ **ब्रह्मसूत्रवृत्तिः**—(मरीचिका) श्रीव्रजनाथभट्टकृता सम्पूर्णा [चौ. २४] ६-००

८ **शुद्धाद्वैतमार्तण्डः**। गोस्वामिश्रीगिरिधरजीमहाराजविरचितः। श्रीरामकृष्णभट्टविरचित 'प्रकाश' व्याख्यया संवलितः सम्पूर्णः। तथा—**प्रमेयरत्नार्णवः**। श्रीबालकृष्णभट्टविरचितः सम्पूर्णः [चौ. २८] ५-००

९ **श्रीमदणुभाष्यम्**। गोस्वामि श्रीपुरुषोत्तमजी महाराज विरचित 'प्रकाश' व्याख्यासमेतम् [व. २६] यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१० **श्रीमदाचार्यचरितम्**। भाषा [चौ. पु.] ०-१५

११ **श्रीवल्लभाष्टकटीका** तथा **चतुःश्लोकी टीका**। भाषा [चौ. पु.] समाप्त

१२ **श्रीविद्वन्मण्डनम्**। श्रीविट्ठलनाथदीक्षितकृतम्। गोस्वामिश्रीपुरुषोत्तमजी महाराजकृत 'सुवर्णसूत्र' व्याख्यया सहितम् [व. ३५] ७-५०

१३ **श्रीसुबोधिनी**। श्रीवल्लभाचार्यविनिर्मिता। श्रीमद्भागवतस्य दशमस्कन्ध-जन्मप्रकरणे प्रथमाध्यायान्तं व्याख्या। गोस्वामि श्रीविट्ठलनाथदीक्षित-विरचित 'टिप्पणी' सहिता तथा गोस्वामिश्रीपुरुषोत्तमजी महाराज-विरचित-'प्रकाश' व्याख्या समेता [चौ. ३८] ९-००

वेदान्त-विशिष्टाद्वैत-ग्रन्थाः

1 VEDĀNTADEŚIKA. A Study of His Life, Works and Philosophy. By Dr. Satya Vrata Singh. M. A., Ph. D. [Chow. Sans. Studies Vol. V] 20-00

2 A CRITICAL STUDY OF THE PHILOSOPHY OF RAMANUJA. By Anima Sen Gupta [Chow. Sans. Studies Vol. LV] 20-00

३ **तत्त्वत्रयम्**। श्रीमल्लोकाचार्यप्रणीतम्। श्रीमद्वरवरमुनिस्वामिनिबद्ध-भाष्योपबृंहितम्। सम्पूर्णम् [चौ. ४] यन्त्रस्थ

४ **तत्त्वशेखरः**। श्री लोकाचार्य विरचितः तथा **तत्त्वत्रयचुलुकसंग्रहः** श्रीकुमारवेदान्ताचार्य श्रीवरदगुरु विरचितः [ब. २७] यन्त्रस्थ

*५ **तत्त्वसारः**। रत्नसारिणी व्याख्या सहितः नेट ६-००

६ **न्यायपरिशुद्धिः**—सटीक। श्रीवेदान्ताचार्यप्रणीता [चौ. ५१] १५-००

*७ **न्यायसिद्धाञ्जनम्**। वेदान्तदेशिक विरचित। नीलमेघाचार्य कृत हिन्दी टीका सहित २५-००

*8 Philosophy of Visiṣṭadvaita. By P. N. Srinivasa-chari. Nett 25-00

*९ **वेदान्तकारिकावली**। बुची वेङ्कटाचार्य कृत। वी० कृष्णमाचार्य कृत संस्कृतव्याख्या आंग्लानुवाद सहिता नेट ८-००

१० **वेदान्तदीपः**। श्रीभगवद्रामानुजाचार्यविरचितः। ब्रह्मसूत्रव्याख्या [व. १८] ९-००

*11 Vedantasara of Ramanuja with English translation. By M. B. Narasimha Iyengar. Nett 20-00

१२ **रामानुज वेदान्तसारः**—श्रीसुदर्शनाचार्यकृत 'अधिकरण-सारावली' सहितः

रामानुजवेदान्त के प्रकाण्ड विद्वान् आचार्य श्री रामदुलारे शास्त्री कृत पाद-टिप्पणी से परिष्कृत अभिनव विशुद्ध संस्करण [ह. २५१] १-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३ **श्रीभाष्यवार्तिकं यतीन्द्रमतदीपिका च** । श्रीनिवासाचार्यकृता तथा सकलाचार्यमतसंग्रहश्च [ब. २८] ६-००

*१४ **सिद्धित्रयम्** । श्री यामुनाचार्य विरचितं सिद्धाञ्जन व्याख्या सहितम् ३-५०

स्वामिभगवदाचार्य-श्रीरामानन्दसम्प्रदायविशिष्टाद्वैतग्रन्थाः

*१ **ईशादयो दशोपनिषदः** । स्वामी भगवदाचार्य कृत संस्कार भाष्य सहित ८-००

*२ **क्रान्ति के इतिहास की एक झलक** (श्रीरामानन्द सम्प्रदाय में संवत् १९७८ की) प्रथम भाग । स्वामी भगवदाचार्य ०-७५

*३ **तत्त्वार्थ-पञ्चक** । स्वामी भगवदाचार्य ०-५०

*४ **दिव्यस्तोत्रकलापः** । १-५०

५ **ब्रह्मसूत्रीयवेदान्त वृत्तिः** । श्री भगवदामानन्दमुनीन्द्रप्रसादिता श्रीमदानन्दभाष्यानुसारिणी, स्वामीरघुवराचार्यवेदान्तकेसरिणा कृता [ह. १५०] १-२५

*६ **भगवत् स्तोत्ररत्न मञ्जूषा** । १-५०

*७ **भारत परिजातम्** (श्रीमहात्मा गान्धि चरितम्) स्वामी भगवदाचार्य । हिन्दी टीका सहित । १-३ भाग १८-००

*८ **यतिधर्म समुच्चयः** । ०-५०

*९ **यतिन्द्रविंशतिः** । ०-१२

*१० **रामपटल** । भगवदाचार्य कृत रहस्यप्रकाशिका व्याख्या सहित १-५०

*११ **रामानन्द दिग्विजयः** । हिन्दी टीका सहित ४-००

*१२ **विशिष्टाद्वैत दर्शनम्** । २-००

*१३ **वेदान्तदर्शन** । व्यास प्रणीत । १-४ अध्याय । रामानन्द नामक संस्कृत-हिन्दी भाष्य सहित (श्रीरामानन्द सिद्धान्तानुसारी ब्रह्मसूत्र भाष्य) ६-००

*१४ **वेदान्तदर्शना पर पर्याय ब्रह्मदर्शन** । भगवत्पाद वेदव्यास प्रणीत । वैदिकभाष्य सहित । १-२ अध्याय । १-२ भाग १०-००

*१५ **वैष्णवमताब्जभास्करः** । ०-७५

*१६ **शारीरकमीमांसा** । आनन्दभाष्य अर्थात् संग्रह भाष्यम् सहित (ब्रह्मसूत्र पर स्वामी भगवदाचार्य का भाष्य) ४-००

*१७ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता** । स्वामी भगवदाचार्य कृत यजुःसंस्कार भाष्य सहित १५-००

*१८ **श्रीजानकीकृपा भाष्यस्य संक्षिप्तसार** । ब्रह्मसूत्र के १-४ अध्याय पर श्रीरामप्रसादाचार्य कृत भाष्य का सार ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१९ **श्रीभगवद्गीता-तत्त्व-विमर्श**। १-००

*२० **श्रीमद्भगवद्गीता**। भगवद्भाष्य सहित। १-६ अध्याय २-५०

*२१ **सामवेद और यजुर्वेद भाष्य की प्रस्तावना**। ३-००

*२२ **सामवेद संहिता**। सामसंस्कार नामक संस्कृत-हिन्दी भाष्य सहित १-३ भाग १७-००

*२३ **स्वामी भगवदाचार्य**। प्रथम भाग। बालकाण्ड-अयोध्याकाण्ड-गुर्जरकाण्ड ७-००

*२४ **स्वामी भगवदाचार्य**। द्वितीय खण्ड। वेद विषयक प्रश्नोत्तर १-२५

*२५ **स्वामी भगवदाचार्य**। तृतीय भाग। रहस्योद्घाटन-श्रीराममन्त्रराज परम्परातत्त्वोद्बोधनमीमांसा-श्रीपरम्परापरित्राण-प्रस्तुतप्रसङ्गभङ्ग-तत्त्व-प्रकाश-श्रीसम्प्रदाय और अस्पृश्यस्पर्श-त्रिरत्नी-श्रीसम्प्रदायरक्षा-श्री-विभूतिधारण-विचार-आर्यावर्त का गुरुत्व ग्रंथों का संग्रह ७-००

*२६ **स्वामी भगवदाचार्य**। चतुर्थ भाग। भगवद्गीता के २, १२, १३, १५ वां अध्याय-गुजराती टीका सहित ५-२५

*२७ **स्वामी भगवदाचार्य**। पञ्चम भाग (स्वामी भगवदाचार्य के जीवन चरित से सम्बन्धित पूर्व अफ्रिका के प्रवचन) ४-००

*२८ **स्वामी भगवदाचार्य**। षष्ठ भाग (प्रश्नोत्तर रत्नमाला) ५-५०

*२९ **स्वामी भगवदाचार्य**। सप्तम भाग (लेखरत्नमञ्जूषा) १०-००

वेदान्त-द्वैताद्वैत-ग्रन्थाः

१ **क्रमदीपिका**। जगद्विजयिश्रीकेशवभट्टाचार्यप्रणीता। विद्याविनोदश्री-गोविन्दभट्टकृतविवरणोपेता। गुरुभक्तिमन्दाकिनीव्याख्या तथा लघुस्तव-राजस्तोत्र सहिता [चौ. ४९] ९-००

२ **ब्रह्ममीमांसाभाष्यम्। 'वेदान्तपारिजातसौरभ'नामकं** व्याख्यानम् [चौ. ३४] ३-००

३ **ब्रह्मसूत्रम्**। श्रीदेवाचार्यप्रणीत 'सिद्धान्तजाह्नवी' श्रीसुन्दरभट्टविरचित 'सिद्धान्तसेतु' व्याख्यासहितं तथा श्रीगिरिधरप्रपन्नरचित **'लघुमञ्जूषा'** युक्ता 'दशश्लोकी' च [चौ. २६] ९-००

४ **वेदान्तरत्नमञ्जूषा**। श्रीपुरुषोत्तमाचार्यविनिर्मिता सम्पूर्णा। तथा- **'वेदान्ततत्त्वबोधः'**। सम्पूर्णः [चौ. ३२] ६-००

५ **वेदान्तसिद्धान्तसंग्रहः**। श्रुतिसिद्धान्तापरनामकः श्रीवनमालिमिश्र ब्रह्मचारिकृतः स्वकृतस्यैव कारिकारूपमूलग्रन्थस्य व्याख्यात्मकः सम्पूर्णः। तथा **वेदान्तकारिकावली**। पण्डितपुरुषोत्तमप्रसादकृता। मूलकृतैव कृत **'अध्यात्मसुधातरङ्गिणी'** टीका सहिता। सम्पूर्णा [चौ० ३९] ९-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६ श्रुत्यन्तकल्पवल्ली। श्रीमत्पुरुषोत्तमदासविरचिता सम्पूर्णा [चौ. ६५] ६-००

७ श्रुत्यन्तसुरद्रुमः। श्रीमत्पुरुषोत्तमप्रसादविरचितः तथा श्रीव्रजेश्वर-प्रसादकृता 'श्रुतिसिद्धान्तमञ्जरी' च। [व. ३३] ९-००

❀ स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थ ❀

*१ आनन्दवाणी। १-१० भाग ९-००

*२ ईशावास्य-प्रवचन। १-२५

*३ गोपियों के पांच प्रेम गीत। ०-२०

*४ चरित्रनिर्माण आणि ब्रह्मज्ञान। अनुवादक-शरद द्वारकानाथ हजारे (मराठी) १-००

*५ ज्ञान निर्झर (श्री डोंगरे जी महाराज) ०-२५

*६ नारदभक्ति दर्शन। ७-००

*७ ब्रह्मज्ञान और उसकी साधना। ६-५०

*८ भक्तियोग (गीता का बारहवाँ अध्याय) ४-५०

*९ भक्ति रहस्य। १-००

*१० भगवान के पाँच अवतार। २-००

*११ भागवत विचार दोहन। १-००

*१२ महाराजश्री का एक परिचय। ०-५०

*१३ माण्डूक्य कारिका प्रवचन (वैतथ्य प्रकरण) ५-००

*१४ माण्डुक्य प्रवचन। ६-००

*१५ मुण्डक सुधा। २-५०

*१६ मोहन मोहिनी (गुजराती) ०-५०

*१७ श्री उड़िया बाबा जी और मोकलपुर के बाबा। ०-२०

*१८ श्रीपुरुषोत्तम योग। २-५०

*१९ श्रीमद्भागवत महापुराण में गोपीगीत। ३-५०

*२० श्रीमद्भागवत रहस्य। २-५०

*२१ सत्संग, साधन और फल। २-००

*२२ सांख्ययोग। गीता का द्वितीय अध्याय ५-००

*२३ साधना और ब्राह्मनुभूति। ३-५०

*२४ सुगम भक्ति मार्ग। २-००

* विद्यावाचस्पति श्री पं० मधुसूदन ओझा के ग्रन्थ *

*१ अत्रिख्यातिः। २-००

*२ अहोरात्रवादः। १-५०

*३ आशौचपञ्जिका। ३-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*४ इन्द्रविजयः। ६-२५
*५ जगद्गुरु वैभवम्। २-२५
*६ दशवादरहस्यम्। १-२५
*७ देवतानिधित्। २-५०
*८ निरूढपशुबन्धः। १-००
*९ पितृसमीक्षा। १-५०
*१० पुराणोत्पत्तिप्रसङ्गः। १-८७
*११ ब्रह्मचतुष्पदी। ४-००
*१२ ब्रह्मसमन्वयः। ३-००
*१३ भगवद्गीता-विज्ञानभाष्यम्। द्वितीयं मूलकाण्डम् ४-२५
*१४ भगवद्गीता-विज्ञानभाष्यम्। तृतीयं आचार्यकाण्डम् ६-८७
*१५ यज्ञसरस्वती। (सोमकाण्ड-अग्निचयनकाण्ड) ७-५०
*१६ विज्ञानविद्युत्। १-५०
*१७ वैज्ञानिकोपाख्यानम्-वैदिकोपाख्यानम्। १-५६
*१८ शारीरकविज्ञानम्। प्रथम भाग २-५०
*१९ संशयतदुच्छेदवादः। २-७५
*२० सदसद्वादः। १-००
*२१ स्मार्तकुण्डसमीक्षाध्यायः। २-००
*२२ स्वर्गसन्देशः। १-००

ज्यौतिष-ग्रन्थाः

*१ अखण्ड त्रिकालज्ञ ज्यौतिष। सहायक भृगुसंहिता पद्धति अर्थात् ज्यौतिषशास्त्र ४-५०
*२ अखण्डभाग्योदयदर्पणः। (धनप्राप्ति के साधन, त्रिकाल ज्ञान, फलित-ज्ञान, तेजी-मंदी, लाभकारी रङ्ग और मणियाँ) भगवानदास मीतल ३-००
*३ अङ्कविज्जा। पुव्वायरियविरइया (मणुस्सविविहचेट्ठाइणिरिक्खण-दारेण। भविस्साइफल णाणविण्णारूवा) मुनिपुण्यविजय सम्पादित। २१-००
*४ अध्यात्म ज्योतिष विचार। (वेदान्त और योगशास्त्र का ज्योतिष-शास्त्र में समन्वय) ह. ने. काटवे नेट १०-००
*५ अयनांशनिर्णयः। केतकर रचित नेट २-००
६ अहिबलचक्रम्। सान्वय 'शिशुतोषिणी' हिन्दीटीका सहित इस चक्र के द्वारा भूमि में गड़े हुए धन तथा हड्डी आदि दूषित पदार्थों का ज्ञान होता है। सम्पादक-ज्यो० आ० विन्ध्येश्वरी प्रसाद [वि. सं. १९] ०-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*७ **अर्वाचीनज्योतिर्विज्ञानम्** । रमानाथ सहाय विरचित १३-००

*8 Everyday Astrology : Practical Guide to Indian and Western Astrology. By V. A. K. Ayyer. 9-95

९ **करणप्रकाशः** । श्रीब्रह्मदेवविरचितः [चौ. ५] ३-००

१० **खेटकौतुकम्** । 'भावबोधिनी' भाषा टीकासहितम् [ह. १६६] ०-२५

*११ **गणकतरङ्गिणी** । श्रीसुधाकरद्विवेदिकृता २-००

*१२ **गणित का इतिहास** । सुधाकर द्विवेदी कृत ३-००

*१३ **गणित का इतिहास** । डा० ब्रजमोहन ९-५०

१४ **गणितकौमुदी** (बालकोपयोगी प्रथम भाग)

इससे जोड़, बाकी, गुणा, भाग आदि का ज्ञान बिना शिक्षक के ही विद्यार्थी स्वयं प्राप्त कर सकता है । [का. ८१] यन्त्रस्थ

१५ **गणितकौमुदी** (वाराणसी तथा दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रथमापरीक्षा पाठ्य स्वीकृत, द्वितीय भाग)

(परिष्कृत परिवर्तित संस्करण)

पं० श्री गणपतिदेव शास्त्री निर्मित इस पुस्तक से संस्कृत के छात्र गणित विषय को जितना शीघ्र और सरल रूपेण समझ सकेंगे उतना हिन्दी-अंग्रेजी की स्कूली पुस्तकों से कथमपि नहीं समझ पायेंगे यह लेखक का दावा है । [का. ८१] १-५०

*१६ **गणितकौमुदी** । नारायण पण्डित विरचित । १-२ भाग (संस्कृत) ४-१२

१७ **गणितीय कोष** (गणितीय परिभाषा तथा गणितीय शब्दावली)

डा० ब्रजमोहन एम० ए०, एल० एल० बी०, पीएच० डी०, प्राध्यापक, गणित विभाग, हिन्दूविश्वविद्यालय, कार्शी [ह. २५३] ९-००

*१८ **गुरुविचार** । ह० ने० काटवे । अनुवादक-विद्याधर जोहरापुरकर २-५०

१९ **गोलपरिभाषा-शङ्कुज्याक्षेत्रविचारसहिता** । 'तत्त्वप्रकाशिका' विवृति विभूषित । [ह. ११२] ०-५०

२० **गोलीय रेखागणितम्** तथा **गोलबोध**-सटीक [नि.] दुष्प्राप्य

२१ **गौरीजातकम्** । 'विमला' हिन्दी टीका सहित ।

भगवान् शंकर के मुख से सुना हुआ भगवती गौरी (पार्वती) जी ने केवल चन्द्रमा से जातक का जो शुभाशुभ फल कहा है उसी का वर्णन इस पुस्तक में है । दैवज्ञवाचस्पति वासुदेव जी ने संपूर्ण पुस्तक के शुद्ध मूलपाठ को उपलब्ध करके सरल हिन्दी में इसकी व्याख्या की है । फलादेश के लिये यह अधिक उपयोगी है [ह० २७५] ०-६०

*२२ **ग्रहगणित मीमांसा** । मुरारिलाल शर्मा विरचित ५-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२३ **ग्रहगोचरः** । 'शिशुतोषिणी' भाषाटीका सहितः [ह. १०१] ०-२५

*२४ **ग्रहफलदर्पण** । वासुदेवशर्मा कृत हिन्दी टीका सहित २-००

२५ **ग्रहलाघवम्**—'माधुरी' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । विश्वनाथकृत प्राचीन सोदाहरणव्याख्या तथा नूतन उदाहरण-उपपत्ति-सहित 'माधुरी' नामक संस्कृत हिन्दीटीका विभूषित इस संस्करण में विश्वनाथी उदाहरण के अतिरिक्त नवीन उदाहरण तथा उपपत्ति भी यथास्थान दे दी गई है । [का. १४२] यन्त्रस्थ

*२६ **चन्द्रविचार** । ह० ने० काटवे । अनुवादक-जोहरापुरकर २-००

२७ **चमत्कारचिन्तामणिः** । सान्वय-'भावबोधिनी' भाषा टीका सहित [ह. ४५] ०-७५

१८ **चलनकलन-प्रश्नोत्तर-विवरणम्** । ज्यौ० अच्युतानन्द झा । इसमें 'चलनकलन' के चारों अध्यायों के प्रश्नों के उत्तर अति स्फुटता के साथ सरल संस्कृत में लिखे गये हैं [ह. ९४] ०-७५

*२९ **चलराशिकलन** । पं. सुधाकर द्विवेदी विरचित । द्वितीय भाग मात्र १-७५

३० **चापीयत्रिकोणगणितम्**—विविध-वासना-समलंकृतम् । वाराणसी तथा बिहार की शास्त्री परीक्षा में निर्धारित । बीजगणित के यशस्वी टीकाकार ज्यौ० अच्युतानन्द झा जी की टीका से यह ग्रन्थ ऐसा सरल हो गया है कि अल्प परिश्रम करने पर भी प्रश्नों का समाधान विद्यार्थी स्वयं कर सकेंगे । [का. १३९] १-५०

३१ **जन्मपत्रदीपकः**—सोदाहरण सटिप्पण-हिन्दीटीकासहितः श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी ज्योतिषाचार्य रचित इस शोधपूर्ण संस्करण में जन्मपत्र बनाने की विधियां ऐसी सरलतापूर्वक नये ढङ्ग से लिखी गई हैं कि अब साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी इसका आद्योपान्त मनन करके अच्छी जन्म-कुण्डली बना सकता है । अभिनव परिवर्द्धित संस्करण [का. ११७] १-५०

*३२ **जन्माङ्ग-नक्षत्र-दीपिका** । प्र० भाग । श्रीलक्ष्मीनारायणत्रिपाठीकृत १-५०

३३ **जन्माङ्गपत्रावली**—(जन्मकुण्डली फार्म) आधुनिक आकर्षक कलामय रंगीन बार्डर तथा नवग्रहों के सर्वाङ्गपूर्ण वेदोक्त रंगीन चित्रों से सुसज्जित [चौ. पु.] प्रत्येक पत्र ०-०६, सैकड़े ६-२५

*३४ **जातकदीपक**(Astrological Science) प्रथम भाग । बालमुकुन्द त्रिपाठी सङ्कलित १२-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३५ **जातकपारिजातः**—(सचित्र) 'सुधाशालिनी' टीकोपेतः।

सोपपत्तिक-'सुधाशालिनी' 'विमला' संस्कृत-हिन्दीटीका विभूषित इस संस्करण में परीक्षोपयोगी सभी विषयों को स्पष्ट करके अद्भुत कल्पना द्वारा नवीन उपपत्ति, संकेत तथा नाना प्रकार के चक्र एवं चित्र देकर सभी मार्मिक गूढ विषयों को स्पष्ट कर दिया गया है। [का. १०]

अभिनव द्वितीय सुलभ संस्करण १०-०० उत्तम संस्करण १२-००

३६ **जातकाभरणम्**—सपरिशिष्ट 'विमला' हिन्दी टीका सहित।

इसकी 'विमला' टीका में संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, ग्रहयुति, नाभस योग, दृष्टिफल आदि की व्याख्या अत्यन्त सरल शब्दों में की गई है तथा परिशिष्ट में ग्रहों के परस्पर नैसर्गिक, तात्कालिक, संस्कृत अधिमित्रादि, राशियों के स्वामी, होडा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, त्रिंशांश, द्वादशांश, राहु के गृह-मित्र आदि का विचार, दशा-अन्तर्दशा के गणित, स्पष्ट आयु लाने का प्रकार, भावेश फल आदि के ज्ञान-प्रकार स्पष्ट रूप से दिये गये हैं [ह. २१२] ४-००

३७ **जातकालङ्कारः**—दैवज्ञ श्री हरभानुकृत संस्कृतटीका तथा 'भावबोधिनी' हिन्दी टीका सहित।

हिन्दी टीका में जातक (नवजातशिशु) संबन्धी प्रत्येक विषय (प्रश्न) का स्पष्टीकरण सरल और सुबोध शब्दों में किया गया है [का. १४१] १-००

३८ **जैमिनीयसूत्रम्**—'विमला' संस्कृत-हिन्दी टीकासहित।

इसमें अनेक प्रकार से आयुर्दाय विचार वर्णित हैं। अन्य प्रकाशित संस्करणों में जो जो त्रुटियां और अधूरापन था उन सभी विषयों को सुधार कर सोदाहरण संस्कृत-हिन्दी व्याख्या प्रकाशित की गई है।

द्वितीय संस्करण [ह. १५९] २-००

*३९ **ज्योतिर्विज्ञानम्**। धूलिपाल अर्क सोमयाजी विरचित ९-००

+४० **ज्योतिषसिद्धान्तसंग्रहः**। तत्र सोमसिद्धान्तः ब्रह्मसिद्धान्तः पितामह-सिद्धान्तः वृद्धवशिष्ठसिद्धान्तश्च [ब. ३९] ६-००

*४१ **ज्यौतिषचन्द्रिका**। पं० रेवतीरमणझाकृत भाषाटीका सहित २-७५

४२ **ज्यौतिषप्रबोधः**—(यात्राप्रकरणान्त भाग) वाराणसी की प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत। पं० गणेशदत्त पाठक।

ज्यौतिष शास्त्र में प्रवेश करने की प्रारम्भिक योग्यता—पारिभाषिक शब्दों, संज्ञाओं आदि का ज्ञान तथा यात्रामुहूर्त देखने की योग्यता इससे सरलतापूर्वक होती है। हिन्दी अनुवाद अत्यन्त सरल है।

[चौ. पु.] ०-४०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४३ **ज्यौतिष-प्रश्नफल-गणना।** (अत्यन्त प्राचीन आश्चर्य चमत्कारी प्रश्नोत्तर विषयक फलित ग्रंथ) 'विमला' हिन्दी व्याख्या सहित। सं० दैवज्ञ दयाशंकर उपाध्याय। [वि. सं. ९३] १–००

४४ **ताजिकनीलकण्ठी**–पं० गंगाधर मिश्रकृत 'जलदगर्जना' संस्कृतटीकया 'गूढग्रन्थिमोचनी' वासनया 'उदाहरणचन्द्रिका' हिन्दी भाषाटीकया च सहिता। [ह. १४३] यन्त्रस्थ

४५ **तिथिचिन्तामणिः।** श्रीमद्गणेशदैवज्ञप्रणीतः। सोदाहरण 'विजयलक्ष्मी' भाषाटीका सहित [ह. ७६] समाप्त

*४६ **देवकेरलम्।** (चन्द्रकलानाडी) अच्युतप्रणीतम् १–२ भाग। नेट २३–७५

*४७ **दैवज्ञकल्पद्रुमः।** पं० गङ्गारामराजज्योतिषीकृत भाषाटीका सहित ४–००

४८ **दैवज्ञकामधेनुः।** म० म० अनवमर्शीसंघराजवरेण सङ्कलिता [ब. २५] समाप्त

*४९ **दृक्सिद्धपञ्चाङ्गनिर्माणपद्धतिः।** गणपतिदेव विरचित ६–००

५० **धराचक्रः।** 'सुबोधिनी' भाषाटीका सहित [ह. १६२] ०–३५

५१ **नरपतिजयचर्या।** सुबोधिनी संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार, पं० गणेशदत्त पाठक

इस शोधपूर्ण संस्करण की व्याख्या में समस्त मत-मतान्तरों का युक्ति-प्रमाणों द्वारा निराकरण किया गया है। शीघ्र प्राप्त होगा

५२ **नाहिदत्तपञ्चविंशतिका।** [चौ. पु.] ०–०५

53 PANCHA SIDDHANTIKA : The Astronomical Work of Varaha Mihira. Edited with a Sanskrit Commentary, English Translation and exhaustive Introduction. By G. Thibaut and S. Dwivedi.
[Chow. Sans. Studies Vol. LXVIII] 25–00

५४ **पञ्चसिद्धान्तिका।** वाराह-मिहिर-विरचिता। सुधाकरद्विवेदिकृत संस्कृतव्याख्यया तथा जी० थिबोकृत आङ्गलानुवादेन च सहिता। ताथ्यामेव सम्पादिता। [चौ. स्टडीज ६८] २५–००

+५५ **पञ्चस्वराः।** 'सुबोधिनी' संस्कृत टीकासहित १–७५

५६ **पञ्चाङ्गविज्ञानम्**–हिन्दीटीकासहित। विद्यार्थियों तथा जनसाधारण के लिए सरल हिन्दी टीका से सुशोभित पञ्चाङ्ग-ज्ञान-सम्बन्धी मौलिक ग्रन्थ [ह.१०४] ०–७५

५७ **पद्मकोशः**—'भावबोधिनी' सरल भाषा टीका विभूषितः। सूर्यादिनवग्रहों के भावफलों को जानने का सर्वोत्तम ग्रन्थ [ह. २१०] ०–४०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५८ **परवलयक्षेत्रम्** । श्रीमुरलीधरठक्कुरकृत । प्रश्नपत्रसहित [ह. १८] ०-५०

*५९ **पौर्वात्यपाश्चात्त्यसामुद्रिकज्ञान** । लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी ०-६२

६० **प्रश्नभूषणम्**-'विमला' 'सरला' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेतम् ।

इसकी सरल संस्कृत-हिन्दी टीका में उदाहरण, प्रत्युदाहरण, चक्र आदि देकर जटिलप्रश्नोत्तरों को सुगम और सुबोध बना दिया गया है

[ह. १३१] ०-७५

*६१ **प्रश्नमार्ग** । पूर्वार्द्ध नेट ४-५०

६२ **प्रश्नवैष्णवः** । श्रीमन्नारायणदाससिद्धविरचितः [चौ. पु.] ०-५०

६३ **प्रश्नाङ्कचूडामणिः-ध्वजादिप्रश्नगणनाश्च** । [ह. ३२] ०-२५

६४ **प्रस्तारचक्रम्** । श्रीशिवप्रणीतम् । 'कमला' हिन्दीटीकासहित [ह.१०३] ०-१५

६५ **बीजगणितम्**-'सुबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी-टीकोपेतम् ।

इस संस्करण की विशेषता यह है कि जीवनाथी टीका में जो आधुनिकता का अभाव था उन सभी विषयों को इस संस्करण में विशद रूप से परिष्कृत कर सरल कर दिया गया है तथा मूल के साथ-साथ जीवनाथी टीका एवं श्री अच्युतानन्द झा कृत विस्तृत हिन्दी टीका तथा नवीन उदाहरण और नवीन उपपत्ति भी दी गयी है । [का. १४८] ८-००

६६ **बीजवासना (सोपपत्तिक बीजगणित)** । ज्यौतिषाचार्य पण्डित श्रीगङ्गाधरमिश्रेण संगृहीता [ह. १२४] ०-७५

*६७ **बुधविचार** । ह० ने० काटवे । अनुवादक : विद्याधर जोहरापुरकर २-००

*६८ **ब्राह्मस्फुटसिद्धान्तः** । ब्रह्मगुप्ताचार्य विरचित ।

संस्कृत-हिन्दी टीका-वासना-विज्ञान भाष्य सोपपत्ति सहित ।

१-४ भाग २६०-००

६९ **बृहज्जातकम्**-'विमला' हिन्दीटीकोपेतम् ।

अनेक विश्वस्त प्रमाणों के सहित अत्यन्त सरल सुबोध हिन्दीटीका तथा नवीन उपपत्ति और अनेक उदाहरणों से युक्त यह नवीन उपयोगी संस्करण छात्रों के लिए अत्यधिक उपयोगी है । [ह. १७१] ३-५०

७० **बृहज्ज्योतिषसारः** । दैवज्ञवाचस्पति श्री वासुदेव गुप्त ।

यह पुस्तक फलित ज्योतिष के दृष्ट, अदृष्ट दोनों अङ्गों की पूर्ण और सम्यक् विवेचना एवं हिन्दी टीका से संयुक्त होने के कारण अत्यन्त ही उपादेय है । हर प्रकार के विषयों में विविध विवरणों द्वारा उन्हें अत्यन्त विस्तृत ढंग से समझाने एवं विविध प्रकार के चक्रों सारणियों आदि के दे देने से यह पुस्तक ज्योतिष शास्त्र के सामान्य ज्ञान रखने वालों एवं प्रत्येक हिन्दू गृहस्थों के लिए संग्रहणीय है [वि. सं. ४४] ४-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७१ **बृहत्संहिता** । सोदाहरण—'विमला' हिन्दी व्याख्योपेता । अच्युतानन्दझा ज्योतिषाचार्यजी ने इस ग्रन्थ पर सर्वबोध सुगम हिन्दी व्याख्या की रचना की है । इस व्याख्या द्वारा ग्रन्थ की दुरूह ग्रंथियों का वस्तुतः सम्यक् समुन्मोचन बन पड़ा है । हिन्दी व्याख्या के साथ-साथ वराहमिहिराचार्य की उक्ति का ग्रन्थान्तर से समन्वय करने का भी भगीरथप्रयत्न किया गया है, जो इस संस्करण का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण विषय है । [वि. सं. ४१] ९-००

७२ **बृहत्-होडाचक्रविवरणम्**—वाराणसी की प्रथमा परीक्षोपयोगी ग्रन्थ । सम्पादक, पं० मुरलीधर ठक्कुर ।

इसमें लोकोपयुक्त मौहूर्तिक संग्रह को एकत्र करके उन सब श्लोकों की हिन्दी टीका भी कर दी गयी है । शतपदचक्र, नक्षत्रचक्र, राशिचक्र, वरवधू मेलापकचक्र, घातचक्र, लग्न बनाने की विधि आदि १० चक्र भी दिये गये हैं । [ह. ८७] ०-७५

*७३ **भङ्गीविभङ्गीकरणम्** । रङ्गनाथ भट्ट विरचित २-००

*७४ **भाभ्रमबोधः** । ०-५२

*७५ **भार्गवनाडिका** । नेट ६-००

*७६ **भावकुतूहलम्** । सान्वय-भाषाटीकासहित ३-००

७७ **भावप्रकाशः** । जीवनाथझाप्रणीतः । भावबोधनी भाषाटीका प्रश्नपत्रसहित [ह. ४०] १-२५

७८ **भावफलाध्यायः** । (लोमशोक्त-भृगुसंहितोक्त-युग्म-संस्करण) सुबोधिनी-विमला हिन्दी टीका विभूषित [ह. १६३] ०-५०

*७९ **भूमण्डलीयसूर्यग्रहगणितम्** । केतकररचितम् नेट ८-००

*८० **भृगुसंहिता** । कुण्डलीखण्ड-फलितखण्ड-जातकप्रकरण-तात्कालिकभृगुप्रश्न-प्रत्यक्षमूकप्रश्न-नष्टजन्माङ्गदीपिका-सर्वारिष्टनिवारण-खण्ड-राजखण्ड-सन्तानउपायखण्ड-नरपतिजयचर्याखण्ड-स्त्री-फलितखण्ड । १-११ खण्ड नेट ५५-००

*८१ **मङ्गलविचार** । ह० ने० काटवे । अनुवादकः विद्याधरजोहरापुरकर २-५०

*८२ **मनुष्य का हाथ** । (सचित्र) बलदेवप्रसाद शुक्ल ३-५०

+८३ **महासिद्धान्तः** । श्री आर्यभट्टकृतः । श्रीसुधाकरद्विवेदिकृत टीकासहितः । [ब. ३७] समाप्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८४ **मानसागरी**। 'सुबोधिनी' हिन्दी व्याख्या सहित।
काशीनरेश के सभापण्डित, मिथिला के लब्धप्रतिष्ठित दैवज्ञ पं० मधुकान्त झा जी काशी में फलित ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान् माने जाते हैं। अपनी व्याख्या में इन्होंने जातक का फलादेश तथा जन्मपत्र-निर्माण विधिका सांगोपांग सोदाहरण, सोपपत्तिक विवरण दे दिया है जिससे यह संस्करण साधारण विद्वान् के लिए भी सुगम और संग्रहणीय हो गया है
[वि. सं. १०१] ८-००

८५ **मुहूर्तचिन्तामणिः**—सान्वय 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका सहित।
ग्रन्थाभिप्राय को भली-भाँति समझने के लिये श्लोकों के अन्वय के बाद शुद्ध हिन्दी में उनके अर्थ, उपपत्ति, उदाहरण तथा और भी विषयों का उल्लेख किया गया है। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि इस संस्करण में 'पीयूषधारा' और 'प्रमिताक्षरा' के अपेक्षित आवश्यक अंशों का भी विमर्शाख्य अनुवाद सन्निविष्ट कर दिया गया है [ह. १८५] ४-००

८६ **मुहूर्तचिन्तामणिः**। 'पीयूषधारा' व्याख्यासहित।
पं० अनूपमिश्रकृत नवीनगणित विषयोपपत्ति 'युक्तिमञ्जरी' टिप्पणी सहित।
(परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण) [चौ. पु.] ५-००

८७ **मुहूर्तपारिजातः**। सोहनलाल व्यास विरचित यन्त्रस्थ

८८ **मुहूर्तमार्तण्डः**—सान्वय 'मार्तण्डप्रकाशिका' टीकासहित।
जिन विषयों को पढ़ लेने पर भी छात्र यथार्थ ज्ञान से विमुख रहते थे वे सभी स्थल संस्कृत-हिन्दी व्याख्या उदाहरण उपपत्ति आदि से इस संस्करण में स्पष्ट कर दिये गए हैं। [का. १४६] ३-००

८९ **मुहूर्तमार्तण्डः**। मार्तण्डवल्लभ संस्कृत व्याख्या सहितः [चौ. पु.] ०-५०

९० **योगिनीजातकम्**। सोदाहरण 'विमला' भाषाटीका सहितं [ह. १४५] ०-५०

९१ **रत्नगर्भाचक्रम्**। 'हरिप्रिया' भाषाटीकोदाहरणसंवलितम्
[ह. ८४] ०-२०

*९२ **रत्नदीपिका रत्नशास्त्रं च**। चण्डेश्वर-बुधभट्टाभ्यां विनिर्मितम् नेट २-२५

*९३ **रत्नदीपिका** (रत्नों, उपरत्नों का विवेचन)। लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी १-२५

९४ **रत्नविज्ञान** (Gemology)। डॉ० राधाकृष्ण पाराशर। यन्त्रस्थ

९५ **रमलनवरत्नम्**। 'विमला' हिन्दीटीका सहित।
रमल-पाशा का निर्माण, प्रक्षेप, गुप्तरहस्य आदि, जिसे रमल शास्त्री छिपाया करते थे उन सभी का ज्ञान इस टीका में रेखा-चित्र द्वारा कराया गया है। [ह. २४५] २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*९६ **रविविचार**। ह० ने० काटवे। अनुवादक : विद्याधर जोहरापुरकर २-००

*९७ **राशिगोलस्फुटानीतिः**। अच्युतविरचिता २-५०

*९८ **राहु-केतु-ग्रहण विचार**। ह० ने० काटवे। अनु० विद्याधर जोहरापुरकर ३-५०

९९ **रेखागणितम्**। (एकादश-द्वादशाध्यायौ) [नि.] ०-७५

१०० **रेखागणितषष्ठाध्यायः-परिभाषारूप-पञ्चमाध्यायसहितः**। सम्पादक : ज्यौ० आ० पं० श्रीमुरलीधरठक्कुर [ह. १२८] ०-४०

×१०१ **लग्नचन्द्रिका**। हिन्दी टीका सहित २-५०

१०२ **लग्नरत्नाकरः (बृहल्लग्नजातकम्)**। सान्वय-'शिशुबोधिनी' हिन्दी टीका सहित [ह. ५०] ०-४०

१०३ **लग्नवाराही**। वराहमिहिराचार्यकृता। 'तत्त्वप्रकाशिका' भाषाटीका सहित [ह. ६०] ०-२०

*१०४ **लग्नसारणीसमुच्चयः**। चिमनलाल शर्मा ज्योतिषीकृत २-००

१०५ **लघुपाराशरी-मध्यपाराशरी**। 'सुबोधिनी' टीकासहित। सोदाहरण सान्वय, संस्कृत हिन्दी व्याख्या, से यह संस्करण इतना सरल बन गया है कि पाठक स्वयं भी इसका अध्ययन करके पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं। [ह. १३५] १-२५

१०६ **लीलावती**। सोपपत्तिक सोदाहरण-'तत्त्वप्रकाशिका' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेता। परीक्षोपयोगी अभ्यासार्थ प्रश्नपत्रादि सहित। मिथिला के प्रतिष्ठित दैवज्ञ लषण लाल झा विरचित सुविस्तृत संस्कृत हिन्दी व्याख्या, उपपत्ति, उदाहरण आदि यथेष्ट सामग्री दी गई है। प्रकरण के अन्त में परिशिष्ट देकर नवीन गणित का भी तुलनात्मक विवेचन किया गया है तथा परीक्षा में आनेवाले प्रष्टव्य विषयों को तोड़-मरोड़ करके प्रश्नोत्तर के रूप में 'अभ्यासार्थ प्रश्न' के नाम से लिख दिया गया है। छात्रों के आधुनिक अध्ययन तथा अध्यापकों के अध्यापन सौकर्य की दृष्टि से यह अभिनव सर्वोत्तम संस्करण है [वि. सं. ६२] ४-००

*१०७ **लोहगोलखण्डनम्**। रङ्गनाथदैवज्ञ विरचित। **लोहगोल-समर्थनम्**। गदाधरदैवज्ञ विरचित। मीठालाल हिम्मतराम ओझा संपादित २-००

१०८ **वनमाला**। सान्वय-'अमृतधारा' हिन्दी व्याख्योपेता। दैवज्ञ जीवनाथ झा विरचित इस लघु ग्रन्थ में ग्रहों की स्थिति, वायु की स्थिति, प्राकृतिक स्थिति तथा प्रश्न आदि के आधार पर भी वृष्टि का विचार, फसल का परिणाम आदि घोषित करने की युक्तियाँ दीगई हैं [ह. १४७] ०-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१०९ **वटेश्वरसिद्धान्त** । वटेश्वराचार्य विरचित । संस्कृत-हिन्दी विज्ञान-भाष्योत्पत्ति सहित ३०-००, ४०-००

*११० **वरवधूनक्षत्र-मेलापक** । पं० श्रीनिवास शास्त्री ४-००

*१११ **वर्षभास्करम्** । जन्मपत्र-वर्षपत्र बनाने का ग्रंथ । भाषाटीकासहित २-००

+११२ **वसिष्ठसिद्धान्तः** । ब्रह्मपुत्रमहर्षिवसिष्ठविरचितः । ०-१५

×११३ **वास्तवचन्द्रशृङ्गोन्नतिसाधनम्** । संस्कृत टीका सहित १-२५

*११४ **वास्तवविचित्रप्रश्नास्सभङ्गाः** । श्रीसुधाकरद्विवेदी विरचित ०-१५

११५ **वास्तुरत्नाकर**—आचार्य श्रीविन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी ।
इस पुस्तक में भवन-निर्माण-सम्बन्धी प्रत्येक विषय पर पूर्ण विचार, परिशिष्ट प्रकरण में राजा-महाराजा, माण्डलिक, सामन्त इत्यादि के लक्षण तथा उनके मकान का प्रमाण इत्यादि का समस्त विवरण निविष्ट किया गया है। अन्त में प्रत्येक नक्षत्र पर से एक ५६ पेजों की बड़ी गृहसारणी और सारणी पर से पिण्ड निश्चित करने की विधि भी दे दी गई है। साथ में सरल सुबोध हिन्दी टीका, उदाहरण और जगह-जगह पर उपपत्ति एवं आवश्यक टिप्पणियाँ भी कर दी गई हैं। [ह. ४६] ४-००

११६ **वास्तुरत्नावली** । सोदाहरण 'सुबोधिनी' व्याख्यासहित ।
यह संस्करण सर्वसाधारण के लाभ के हेतु सोदाहरण सरल संस्कृत हिन्दी व्याख्या से सुशोभित किया गया है। [ह. १५२] २-५०

*११७ **वित्रिभलग्नभ्रमणम्** । श्रीजगदीशशर्मविरचितम् ०-१५

*११८ **वित्रिभाङ्गायनविवेकः** । श्रीबुद्धिनाथझा विरचितः ०-३५

+११९ **विवाहवृन्दावनम्** । संस्कृत-भाषा टीका सहित २-४८

१२० **वीरसिंहावलोकः** (Astro-Medical Science)
अनुवादक—डॉ० राधाकृष्ण पाराशर ।
राजा वीरसिंह तोमर द्वारा विरचित इस ग्रन्थ में प्रत्येक रोग के निदान एवं चिकित्सा का वर्णन कर्मकाण्ड, कर्मविपाक, ज्योतिष, आयुर्वेदादि अनेक शास्त्रों द्वारा किया गया है। यन्त्रस्थ

*१२१ **वैजयन्तिपंचाङ्गगणितम्** । केतकर रचितम् । नेट ५-००

१२२ **व्यावहारिक ज्योतिषतत्त्व** । पं० लषणलाल झा ।
सरल सुबोध 'तत्त्वप्रभा' हिन्दी व्याख्या, विशेष विवरण, विविध प्रकार के विषय-बोधक चक्र, सारिणी आदि से सुसज्जित फलित ज्योतिष का अभिनव व्यावहारिक मौलिक ग्रन्थ। [ह.२७७] १०-००

*१२३ **शनिविचार**। ह० ने० काटवे । अनुवादक : विद्याधर जोहरापुरकर २-५०

१२४ **शिवजातकः** । अखिलब्रह्माण्डनायक श्रीशिवनिर्मितः । 'शिशुतोषिणी' भाषाटीकासहितः [ह. ६५] ०-२०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१२५ **शरीर सर्वाङ्ग लक्षण** (हस्त रेखा एवं आकृति विज्ञान) इसमें मनुष्य-शरीर के चोटी से एड़ी तक के संपूर्ण अङ्गों के प्रत्यक्ष रूप से सच्चे प्रमाणित होने वाले लक्षण लिखे गए हैं तथा हस्तरेखा-ज्ञान भी कराया गया है १-५०

१२६ **शिशुबोधः । सान्वय**–'विमला' हिन्दी टीका सहित ।
ज्यौतिषशास्त्र के प्रवेशार्थियों के लिये आवश्यक प्रारंभिक जानकारी इस पुस्तक में अति सरल रूप में दी गई है । अन्वय, भाषाटीका, टिप्पणी आदि से विषय और भी सरल हो गया है [ह. ११४] ०-७५

१२७ **शीघ्रबोधः**–'सरला' हिन्दी टीका सहितः ।
पं० श्री अनूपमिश्रजी रचित इस टीका के समान अत्यन्त सरल और सुबोध अन्य कोई भी टीका प्रकाशित नहीं हुई है [ह. ५१] १-००

*१२८ **शुक्रविचार** । ह० ने० काटवे । अनुवादकः विद्याधर जोहरापुरकर २-५०

१२९ **षट्पञ्चाशिका** । श्रीमद्भट्टोत्पलकृत संस्कृतटीकायुत 'विभा' नामक भाषाटीका सहिता [ह. १४९] ०-४५

*१३० **समरसारः** । वासुदेव गुप्त कृत सोदाहरण हिन्दी टीका सहित १-२५

१३१ **सरलत्रिकोणमितिः** । म० म० पण्डित श्रीबापूदेवशास्त्रिसङ्कलित म० म० पण्डित मुरलीधरशर्मकृत टिप्पणी सहित [नि.] समाप्त

१३२ **सरलरेखागणितम्** । ज्योतिषाचार्य पं० श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी विरचित । १-२ अध्याय [ह. ८२] १-००

*१३३ **सामुद्रिक-दीपिका**। (हिन्दी) पौर्वात्य पाश्चात्त्य पद्धतियों का तुलनात्मक विवेचन । लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी। १-३ भाग नेट ११-६२

×१३४ **सारावली** । भा. टी. सहित। कपड़े की जिल्द ९-०० सादी जिल्द ८-००

+१३५ **सिद्धान्ततत्त्वविवेकः** । श्रीकमलाकरभट्टविरचितः । म० म० श्रीसुधाकरद्विवेदिकृत टिप्पणी तथा म० म० श्रीमुरलीधरशर्मकृत टिप्पणीसहित । सम्पूर्ण [ब.\१] १२-५०

१३६ **सिद्धान्तशिरोमणिः** । भास्कराचार्यविरचितः । वासनाभाष्य सहितः म० म० श्रीबापूदेवशास्त्रिकृत टिप्पणी सहितश्च । (शेष भाग यन्त्रस्थ) गोलाध्याय [का. ७२] ४-००

१३७ **सिद्धान्तशिरोमणिः** । सोपपत्तिक 'प्रभा' व्याख्यासहित ।
अनेक ग्रन्थों के सम्पादक पं० श्रीमुरलीधरठक्कुर ज्योतिषाचार्य की साभिमान घोषणा है कि नवीन वैज्ञानिक सर्वांगपूर्ण यह 'प्रभा' व्याख्या आधुनिक विकास युग में गणित सिद्धान्त प्रेमियों को भारतीय पुरातत्त्व के आलोक में लाकर गणित-विज्ञान के शिखर पर पहुँचा देगी । व्याख्या में पाश्चात्त्य मतों का भी प्राच्य सिद्धान्तों के साथ सन्तुलन किया गया है । स्पष्टाधिकारान्त प्रथम भाग [का. १४९] ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१३८ **सिद्धान्तदर्पणम्**। गार्ग्य केरल नीलकण्ठ विरचित २-५०

*१३९ **सिद्धान्तशिरोमणिः**। वासनाभाष्य, श्री केदार दत्त कृत दीपिका-संस्कृत तथा शिखा हिन्दी भाष्य सहित। मध्यमाधिकारान्त ५-००

*१४० **सिद्धान्तशिरोमणिः**। वासना-भाष्य-मरीचि-भाष्य-श्री केदार दत्त कृत दीपिका-संस्कृत तथा शिखा हिन्दी भाष्य सहित। स्पष्टाधिकार-त्रिप्रश्नाधिकारात्मक २०-००

ग्रहगणिताध्याय २०-००

१४१ **सुलभ ज्यौतिष विज्ञान**। दैवज्ञ वासुदेवसदाशिव खानखोजे।

इस ग्रन्थ में भविष्य का श्रीगणेश अक्षरारम्भ के समान करके पञ्चांग लग्न, ग्रहस्पष्ट, ग्रहस्थित, उनका फल, प्रभाव, भाग्योदय का समय आदि का सुविस्तृत विवेचन तथा अनुभूत कुण्डलियाँ देकर धनयोग, दारिद्र्ययोग तथा मातृ-पितृनाशकादि योगों का भली प्रकार दिग्दर्शन कराया गया है। घर बैठे सर्वाङ्गपूर्ण फलित ज्यौतिष का ज्ञान कर उससे लाभ उठाने वाले हिन्दी भाषियों के लिए यह पुस्तक बड़े काम की चीज है। ८५ वर्षों के ख्यातिप्राप्त विद्वान् लेखक ने भारतीय ज्यौतिष-विज्ञान को इस सरलतम रूप से लिखा है कि साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी फलित ज्यौतिष का मर्म समझ कर उसे व्यवहार में ला सकता है। लेखक की शैली अत्यन्त सरल तर्कपूर्ण व्यवस्थित और आडम्बरहीन है। भारत भर के ख्यातिप्राप्त दैवज्ञों ने मुक्तकण्ठ से इसकी प्रशंसा कर अपनी-अपनी सम्मतियाँ प्रदान की हैं; जो पुस्तक में छपी हैं। १२-००

*१४२ **सूर्यग्रहणम्**। डॉ० कृष्णचन्द्र द्विवेदी विरचित १२-००

१४३ **सूर्यसिद्धान्तः**—'तत्त्वामृत' भाष्यसहित।

पूर्वप्रकाशित सभी टीकाओं के गुण-दोषों की समालोचना करके ज्योतिषाचार्य श्री कपिलेश्वर शास्त्रीजी द्वारा तत्त्वामृतभाष्य तथा उपपत्ति-टिप्पणी सहित श्रेष्ठ संस्करण [का. १४४] ४-००

*१४४ **सौरार्यब्राह्मतिथिगणितम्**। केतकररचितम् नेट ४-००

*१४५ **हस्तरेखाविज्ञान** (२४२ चित्रों से युक्त) हरगोविन्द द्विवेदी ४-००

*१४६ **हस्तरेखाविज्ञान**। शरीर-लक्षण-चरणचिह्न तथा तिल-विचार सहित। गोपेशकुमार ओझा। परिवर्द्धित संस्करण १२-००

*१४७ **हस्तसामुद्रिक**। सचित्र भाषा ६-००

*१४८ **होराशास्त्रम्**। वराहमिहिरकृतम्। 'अपूर्वार्थप्रदर्शिका' संस्कृत व्याख्या सहितम्। नेट २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धर्मशास्त्र-कर्मकाण्ड-ग्रन्थाः

१ अग्निष्टोमपद्धतिः। ग्रन्थरत्नेऽस्मिन् 'आध्वर्यवपद्धतिः' कर्कानुसारिणी, 'औद्गात्रपद्धतिः'–लाट्यायनद्राह्यायण सूत्रानुसारिणी, 'हौत्रपद्धतिः'–शाङ्खायनश्रौतसूत्रानुसारिणी च सन्निविष्टास्ति। १–३ खण्ड [चौ. ८१] ९–००

*२ अङ्गिरसस्मृतिः। नेट १२–००

३ अन्त्यकर्मदीपकः–अशौचकालनिर्णयसहितः, प्रेतकर्मब्रह्मीभूत यतिकर्मनिरूपणात्मकः। म. म. नित्यानन्दपन्तपर्वतीयविरचितः [का. ६६] ४–००

*४ अन्त्येष्टिकर्मपद्धतिः। आश्चर्यनाथ पाण्डेय संगृहीत ४–५०

*5 American Missionaries and Hinduism (A Study of their Contacts from 1813–1910). By Dr. Sushil Madhava Pathak. With a Foreword by Dr. Norman D. Palmer. 25–00

६ आपस्तम्बगृह्यसूत्रम्। 'अनाकुला' एवं 'तात्पर्यदर्शन' संस्कृत व्याख्या तथा सरल सुबोध हिन्दी व्याख्यासहित।

श्रीहरदत्तप्रणीत 'अनाकुला' तथा श्रीसुदर्शनाचार्य प्रणीत 'तात्पर्यदर्शन' उभय प्राचीन संस्कृत व्याख्याओं के साथ इसकी हिन्दी व्याख्या अत्यन्त उपयोगी है। इससे संस्कृत व्याख्याद्वय का आशय समझने तथा मूल ग्रन्थ का यथार्थ अर्थ लगाने में समुचित सहायता प्राप्त होती है। इसकी समालोचनात्मक विशद हिन्दी भूमिका में धर्मशास्त्रविषयक उत्तम पाण्डित्यपूर्ण विचारों की प्रामाणिक व्यवस्था देखने को मिलती है।

[का० ५९] यन्त्रस्थ

७ आपस्तम्बधर्मसूत्रम्। श्रीहरदत्तमिश्र विरचित–'उज्ज्वलावृत्ति' तथा सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या सहित [का. ९३] २०–००

*८ आर्यविधानम्। म० म० पण्डित विश्वेश्वरनाथ रेउ विरचितम्। भाषाटीकोपेतम्। १–२ भाग २०–००

९ आशौचनिर्णयः। म. म. वाचस्पति मिश्र, म. म. रुद्रधरोपाध्याय प्रणीत युग्म संस्करण। 'मनोरमा' हिन्दीटीका सहित [वि. १३] ०–५०

*१० आह्निकसूत्रावलिः (शुक्लयजुर्वेदीय) ६–००

*11 Evolution of Law. By N. C. Sen Gupta. 8–00

*12 Evolution of Hindu Marriage: With Special Reference to Rituals (C. 1000 B. C.–A. D. 500). By Nilakshi Sen Gupta. Foreword by A. L. Basham. 16–50

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

13 INDIAN WISDOM. By Monier Williams [Chow. Sans. Studies Vol. XXXVI] 30-00

१४ **उपनयनपद्धतिः** । विस्तृत टिप्पणी-परिशिष्ट सहिता । रचयिता-म० म० विद्याधरजी गौड़ [वि. २] १-५०

*15 Concept of Dharma in Valmiki Ramayana. By Dr. Benjamin Khan. Foreword by N. K. Devaraja. 20-00

*१६ **कर्मकाण्ड-प्रवेशिका** । हिन्दीटीका सहित ०-७५

१७ **का० तर्पणपद्धतिः** । वेदाचार्य पं० अनन्तरामडोगराशास्त्रिकृत हिन्दीटीका सहित [चौ. पु.] ०-१५

१८ **कातियेष्टिदीपकः** । (**दर्शपौर्णमासपद्धतिः**) म० म० पण्डित नित्यानन्दपन्त पर्वतीय विरचित [का. २०] समाप्त

१९ **कात्यायनश्रौतसूत्रम्** । श्री कर्काचार्यविरचित 'कर्कभाष्य' सहित । अध्याय १२ से २६ पर्यन्त द्वितीय भाग मात्र [चौ. १९] १४-००

*20 Caste, Class and Occupation. By G. S. Ghurye. 20-00

२१ **कुलदेवतास्थापनविधिः हनुमद्ध्वजदानविधिश्च** [श्रीकृष्ण ४] ०-०५

२२ **कूपोत्सर्गपद्धतिः** । [चौ. पु.] ०-१५

२३ **कृतितत्त्वसंग्रहः** । रचयिता—दैवज्ञ पं० तूफानी शर्मा

धर्मशास्त्र, ज्यौतिष एवं कर्मकाण्ड, तीनों के सभी उपलब्ध निबन्धों तथा अन्यान्य ग्रन्थों से व्यवहारोपयोगी सार-संकलन ही ग्रन्थ का स्वरूप है। इसके अति प्राचीन दुर्लभ पाण्डुलिपि को काशी के प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा शोधन-सम्पादन कराकर प्रस्तुत संस्करण प्रकाशित किया गया है। इसका विषय निम्नलिखित प्रकरणों में विभक्त है—१. त्याज्य प्रकरण, २. संस्कार प्रकरण, ३. वास्तु प्रकरण, ४. मिश्र प्रकरण, ५. यात्रा प्रकरण, ६. गोचर प्रकरण, ७. संक्रान्ति प्रकरण, तथा ८. महावारुण्यादि योग प्रकरण। इनमें जो भी विषय उठाया गया है उसके संबन्ध में ज्ञातव्य सभी शास्त्रीय या व्यावहारिक बातें एक साथ कही गई हैं। यजमान-पुरोहित, गुरु-शिष्य सबके लिये उपयोगी यह ग्रंथ साथ रहे तो अलग से पञ्चाङ्ग मात्र की आवश्यकता पड़ेगी। [का. १८१] ८-००

२४ **कृत्यसारसमुच्चयः** । म० म० अमृतनाथ झा विरचित । पं० गङ्गाधरमिश्रकृत बृहत् टिप्पणी परिशिष्ट विभूषित [का. १२९] ५-००

*२५ **खादिरगृह्यसूत्रम्** । रुद्रस्कन्दवृत्ति भाषाटीका सहित २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२६ **गायत्रीपूजापद्धतिः** । श्रीविभाकराचार्यसंगृहीत [ह. ३१] ०-२५

२७ **गोदानपद्धतिः** । अभिनव विशुद्ध संस्करण [वि. ५] ०-१५

*२८ **गोभिलगृह्यकर्मप्रकाशिका** । हिन्दी भाषा टीका सहित नेट ३-००

२९ **गोभिलगृह्यसूत्रम्** । म० म० श्रीमुकुन्दशर्म विरचित 'मृदुला' व्याख्या समलङ्कृत [का. ११८] यन्त्रस्थ

*३० **गोभिलगृह्यसूत्रम्** । हिन्दी टीका सहित ३-००

३१ **गौतमधर्मसूत्राणि** । सानुवादमिताक्षरावृत्तिसहितानि अनु०—डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में दी हुई आचार-शिक्षा दर्शनीय है । इसकी संस्कृत व्याख्या ही अबतक उपलब्ध थी । अब यह उत्तम हिन्दी अनुवाद तथा संस्कृत व्याख्या के साथ प्रकाशित किया गया है । मूल में शताधिक स्थलों पर संशोधन भी किया गया है । विचारपूर्ण विस्तृत-भूमिकादि-संवलित अभिनव संस्करण । [का. १७२] १०-००

*32 Glossary of Smriti Literature. By Dr. S. C. Banerjee. 10-00

३३ **चतुर्विंशतिमतसंग्रहः** । श्रीभट्टोजिदीक्षितकृतः [ब. ३४] ६-००

३४ **चूडाकरणपद्धतिः** । म० म० विद्याधरशास्त्रिकृत विस्तृतटिप्पणी परिशिष्ट सहित [वि. ४] ०-२५

३५ **तिथिनिर्णयः** । श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितविरचितः, श्रीमन्नागोजिभट्टविरचितश्च [चौ. ८६] ३-००

*३६ **तीर्थेन्दुशेखरः** । नागेशभट्ट प्रणीत । **त्रिस्थलीसेतुः** । भट्टोजिदीक्षित विरचित । **काशीमोक्षविचारः** । सुरेश्वराचार्य विरचित १-५०

३७ **तुलसीपूजापद्धतिः** । [चौ. स्तो. ११] ०-१५

३८ **दानदीपिका** । भाषा टीका सहित [ह. ५५] ०-५०

३९ **दानमयूखः** । श्रीनीलकंठभट्टविरचित [का. ४४] ३-००

४० **दुर्गापूजा-श्यामापूजापद्धति** ।

वैष्णवानां शारदीयदुर्गापूजा, महाष्टम्यादिनिर्णय सहित शोभपूर्ण परिवर्धित द्वितीय संस्करण [मि. २५] यन्त्रस्थ

*४१ **द्वैतनिर्णयः** । म० म० पं० वाचस्पतिमिश्र प्रणीत १-२५

*४२ **द्वैतनिर्णयसिद्धान्तसंग्रहः** । भानुभट्ट मीमांसक प्रणीत १-००

*४३ **द्राह्यायणगृह्यसूत्रम्** । रुद्रस्कन्दवृत्ति भाषा टीका सहित २-५०

*४४ **धर्मशास्त्रीय व्यवस्था संग्रहः** । डा० सुभद्रशर्मा संपादित १०-००

*४५ **धर्मानुबन्धि-श्लोक-चतुर्दशी** । शेषकृष्ण कृत । रामपण्डित प्रणीत व्याख्या सहित १-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४६ **धर्मसिन्धुः**। काशीनाथोपाध्यायविरचितः। सविमर्श-सटिप्पण 'धर्मदीपिका' हिन्दी व्याख्या विभूषित।

महामहोपाध्याय श्रीसदाशिवशास्त्री मुसलगाँवकर विरचित समीक्षात्मक प्रस्तावना के साथ इस संस्करण के सर्वशुद्ध मूल पाठ बड़े टाइप में सुस्पष्ट मुद्रित किया गया है। काशी के प्रतिष्ठित धर्मशास्त्री विद्वान् श्री वशिष्ठदत्त जी मिश्र द्वारा विरचित सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या तथा आवश्यक स्थलों पर सविमर्श टिप्पणियाँ भी दी गई हैं। इन टिप्पणियों में प्रस्तुत ग्रंथ के मूलाधार स्मृतिग्रन्थों के नाम, अन्यान्य स्मृतिवचनों से प्रस्तुत का समर्थन, कतिपय अनिर्णीत-व्रतादि विषयों का निर्णय, देशभेद से आचारादि-भेद का संकेत, प्रमाण-वचन, पारिभाषिक शब्दों का स्पष्टीकरण, विभिन्न लक्षण, परिभाषाएँ, भावार्थ आदि विस्तृत व्यावहारिक जानकारी दी गई है। अनेक स्थलों पर रेखाचित्रों द्वारा भी विभिन्न चक्रों तथा उपकरण आदि का वैशिष्ट्य एवं वास्तविक स्वरूप बतलाया गया है। भाषा-शैली सरल तथा स्पष्ट है। इतने अधिक उपयोगी विषयों से विभूषित यह सर्वप्रथम संग्रहणीय संस्करण है। [का. १८३] २५-००

*४७ **नवरात्रप्रदीपः**। नन्दपण्डित विरचित २-००

४८ **नारायणबलिप्रयोगः**। 'विष्णुप्रिया' हिन्दीव्याख्यासहित [वि. २५] ०-६०

*४९ **नित्यकर्मविधिः**। बालकृष्ण आचार्य संगृहीत। भाषा टीका १-५०

५० **निर्णयसिन्धुः**। कमलाकरभट्टविरचितः। कृष्णभट्टकृत विस्तृत संस्कृत व्याख्यासहित [चौ. ५२] समाप्त

५१ **निर्णयसिन्धुः**। हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ

*५२ **नृसिंहप्रसादः**। दलपतिराज विरचित। १-४ भाग १०-७५

प्रायश्चित्तसारः। ३-२५, श्राद्धसारः। २-००, व्यवहारसारः। ४-००

तीर्थसारः। १-५०

*५३ **पञ्चपक्षात्मकरुद्रस्वाहाकारसमुच्चयः**। दुर्गाशङ्कर परिशोधितः ०-४०

५४ **पञ्चमङ्गलम्**। १. मण्डपस्थापनम्। २. हरिद्रालेपनं-कलशस्थापनम् ३. मातृकापूजा-सप्तघृतमाता ४. आयुष्यमन्त्रजपः ५. नान्दीमुखश्राद्धम् [ह. १३०] ०-४०

५५ **पञ्चाङ्गपद्धतिः**। वेदाचार्य अनन्तरामडोगरा शास्त्रिकृत टिप्पणी विभूषित। अभिनव विशुद्ध संस्करण [वि० ६] समाप्त

*५६ **परिणयमीमांसा**। श्रीनटेशशास्त्रिणा विरचिता नेट १-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५७ **पाराशरस्मृतिः**। 'सुबोधिनी' हिन्दीव्याख्या सहित।

आधुनिक काल में यही स्मृतिग्रन्थ सर्वमान्य है—'कलौ पाराशरः स्मृतः'। इसीलिये काशी के प्रसिद्ध धर्मशास्त्री विद्वानों द्वारा सुसम्पादन कराकर हिन्दी व्याख्या के साथ यह संस्करण प्रकाशित किया गया है। भाषा एवं शैली बहुत सरल तथा सुबोध है। दूसरी स्मृतियों के वचनों से समन्वय तथा सामान्य-विशेष वचनों का विचार करते हुए कर्तव्यता का स्पष्ट निर्देश इस व्याख्या की विशेषता है। [ह. २७३] २-००

५८ **पितृकर्मनिर्णयः** (संग्रह निबन्ध) श्रीत्रिलोकनाथ मिश्र विरचित [मि. २६] ३-००

५९ **पूजाविधिसहित षडंगरुद्री**। १-५०

६० **पूतनाशान्तिः**। शिशुतोषिणी भाषाटीका सहित [ह. १०२] यन्त्रस्थ

६१ **पौरोहित्यकर्मसारः**। परिवर्द्धित संस्करण। १-२ भाग संपूर्ण [का. २६] १-६५

६२ **प्राचीन भारत में अपराध और दण्ड**।

डॉ० हरिहरनाथ त्रिपाठी

वैदिक काल से लेकर आजतक के एतद्विषयक सम्पूर्ण भारतीय साहित्य के पर्यालोचन के साथ ही विदेशी व्यवस्थाओं और मान्यताओं का भी परिचय इससे प्राप्त होता है। अपराधों की जो सूची प्रस्तुत की गई है वह राजनीति के छात्रों, अध्यापकों, शोध तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं के बड़े ही उपयोग की वस्तु है। [वि. रा. ६८] ६-००

*६३ **प्राचीन भारतीय लोकधर्म**। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ४-००

*64 Preventive Detention in India : A Case Study in Democratic Social Control. By D. H. Bayley. 12-00

65 FUNCTIONAL ANALYSIS OF INDIAN THOUGHT AND ITS SOCIAL MARGINS. By Swami A. Bharati. [Chow. Sans. Studies Vol. XXXVII] 15-00

66 British Relations with the Hill Tribes of Assam, since 1858. By B. C. Chakravarty. 12-00

*६७ **बीस स्मृतियाँ**। श्रीराम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित। १-२ भाग १४-००

६८ **बौधायनधर्मसूत्रम्**। श्रीगोविन्दस्वामिप्रणीतविवरणसमेत [का. १०४] २०-००

*६९ **बृहद्ब्रह्मनित्यकर्मसमुच्चयः**। सग्रहमखषोडशसंस्काराद्यनेक विषय सहितः। शास्त्री दुर्गाशङ्कर कृत टिप्पणी सहित ८-००

*७० **मण्डपकुण्डसिद्धिः**। विट्ठलदीक्षित विरचिता। पदार्थमञ्जूषाभिधया गुर्जरभाषानुवाद सहितया संस्कृत टीकया संवलिता ५-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७१ **मनुस्मृतिः।** 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका, 'विमर्श' सहित। कुल्लूकभट्ट की टीका के अनुरूप यह हिन्दी टीका है तथा दुरूह स्थलों में भावार्थ और भी स्पष्ट करने के उद्देश्य से 'विमर्श' नामक टिप्पणी भी की गई है। परिष्कृत द्वितीय संस्करण-संपूर्ण [ह. २२६] ५-००

७२ **मनुस्मृतिः**—'मणिप्रभा' हिन्दी टीका 'विमर्श' सहित। १-४ अध्याय [ह. २२६] २-५०

७३ **मनुस्मृतिः** (द्वितीयोऽध्यायः) परीक्षोपयोगी सान्वय प्रकाशिका' 'सुबोधिनी' संस्कृत हिन्दी टीका सहित [ह. ७१] ०-७५

७४ **मनुस्मृतिः।** 'मन्वर्थमुक्तावली' संस्कृत तथा विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या विभूषित। सम्पादक : पं० गोपालशास्त्री नेने। कुल्लूकभट्टप्रणीत 'मन्वर्थमुक्तावली' के साथ इसकी सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या अधिक महत्त्व की है। हिन्दी व्याख्या में भी कुल्लूकभट्ट की टीका के समान ही मूल के दुरूह स्थलों पर भावार्थ को और भी स्पष्ट करने के उद्देश्य से गूढार्थ को विशद हिन्दी भाषा में समझाने का भगीरथ प्रयत्न किया गया है।

पं० गोपालशास्त्री नेने सम्पादित टिप्पणी, क्षेपक, विस्तृत परिशिष्ट श्लोकार्धश्लोकानुक्रमणिका, भूमिका, विषयसूची आदि उपयुक्त सामग्री से सुसज्जित लोकप्रिय संस्करण इस वार हिन्दी व्याख्या विभूषित होने से राष्ट्रभाषा प्रेमी के लिये भी उपयोगी हो गया है [का० ११४] यन्त्रस्थ

७५ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः।** विज्ञानेश्वर कृत 'मिताक्षरा' संस्कृत टीका डॉ. उमेशचन्द्र पाण्डेय कृत सविवरण 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित 'मिताक्षरा' के साथ इसकी हिन्दी व्याख्या अत्यन्त उपयोगी है। इससे ग्रन्थ का आशय समझने तथा ग्रन्थ का मूल लगाने में समुचित सहायता प्राप्त होती है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के लब्ध प्रतिष्ठ प्रोफेसर श्री नारायण मिश्र द्वारा लिखित विशद भूमिका में धर्मशास्त्र विषयक उत्तम पाण्डित्यपूर्ण विचारों की प्रामाणिक व्यवस्था देखने को मिलती है। सुविस्तृत विवरण परिशिष्ट तो अतिशय उपयोगी है। इसमें अध्याय क्रम से टिप्पणी दी गई है जिसमें सब प्रकार के पारिभाषिक शब्दों की सरल व्याख्या तथा सन्दिग्ध एवं विवेच्य स्थलों पर उत्तम समाधान तथा विवेचन प्राप्त होता है। ग्रन्थ के अन्त में सुविधा के लिये पद्यार्धानुक्रमणिका भी दी गई है। प्रस्तुत सर्वोत्तम संस्करण अनेक उपयोगिताओं के कारण अवश्य संग्रहणीय है। [का. १७८]

आचाराध्याय मात्र ४-०० सम्पूर्ण २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*७६ **यज्ञतत्त्वप्रकाशः** । म० म० ५० श्री चिन्नस्वामिशास्त्रिप्रणीतः ४-००

७७ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः**। श्रीमन्मित्रमिश्रविरचित 'वीरमित्रोदय' श्रीविज्ञानेश्वरकृत 'मिताक्षरा' टीकाद्वयसहित । संपूर्ण [चौ. ६२] यन्त्रस्थ

७८ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः** । 'बालम्भट्टी' व्याख्यासमलङ्कृत 'मिताक्षरा' टीका सहित । व्यवहाराध्याय सम्पूर्ण [चौ. ४१] ३३-००

*७९ **राज्याभिषेकपद्धतिः**। ३-००

८० **रामनवमीव्रतपूजापद्धतिः**। जानकीनवमीव्रतपूजा सहित [वि. २१] ०-४०

८१ **रामार्चापद्धतिः**। (श्री शिवसंहितोक्त)
सं० गुलाब झा [वि. २४] ०-४०

82 RELIGIONS OF INDIA : A. Barth's Authorised English Translation. By Rev. J. Wood. [Chow. Sans. Studies Vol. XXV] 15-00

+८३ **रुद्रयागप्रयोगः** । वायुनन्दनमिश्र प्रणीत ४-००

८४ **लाट्यायनश्रौतसूत्रम्**। अग्निष्टोमान्तम्। म० म० ५० श्री मुकुन्द झा कृत व्याख्या सहित [का. ९७] ४-००

८५ **वर्षकृत्यदीपकः** । म० म० श्रीनित्यानन्दपन्तपर्वतीय विरचित । संशोधित-नवीन संस्करण [का. ९६] १०-००

८६ **वसन्तोत्सवनिर्णयः**। स्व० पं० सूर्यनारायणशुक्लकृत [ह. १९७] ०-१५

+८७ **वाराहगृह्यसूत्रम्** । भाषाटीका सहित १-५०

८८ **वाशिष्ठीहवनपद्धतिः** । भाषाटीका सहिता ।
वेद-कर्मकाण्ड-धर्मशास्त्राचार्य पण्डित श्रीविश्वनाथशास्त्रि संपादित । इसमें सम्पूर्ण हवनविधि, सप्रमाण ग्रहस्थापनविधि, नान्दीश्राद्ध, सर्वतोभद्र आदि कर्मकाण्ड की अनेक विधियां बहुत ही सरल रूप से दी गई हैं । [वि. ७] ०-९०

८९ **वास्तुपूजापद्धतिः । गृहे गृध्रादिपतनशान्तिपद्धति-गृहप्रवेशपद्धति** सहित [ह. १५३] ०-७५

*९० **विवाहचन्द्रिका** । षोडश संस्कार सहिता २-५०

+९१ **विवाहपद्धतिः** । हिन्दी टीका सहिता १-२५

९२ **विवाह पद्धतिः** । सटिप्पण, हिन्दी अनुवाद सहित ।
सम्पादक—म० म० विद्याधर शास्त्री गौड़ । अनुवादक वेदाचार्य श्री दौलतराम शास्त्री गौड़ [वि. १] शीघ्र प्राप्त होगा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९३ **विष्णुयागप्रयोगः** । श्रीवायुनन्दनमिश्रविरचितः । समाप्त

९४ **विष्णुस्मृतिः** । जे० जॉली सम्पादित ।

इंडिया आफिस लाइब्रेरी में सुरक्षित श्री कोलब्रुक आदि विद्वानों द्वारा अन्विष्ट पाण्डुलिपियों के आधार पर संशुद्ध एवं श्रीनन्द पंडित कृत वैजयन्ती टीका, संपादकीय टिप्पणियों तथा अनेक अनुक्रमणिकाओं के साथ प्रकाशित शोधपूर्ण उत्तम संस्करण । [चौ. ९५] १०-००

९५ **वीरमित्रोदयः** । महामहोपाध्याय श्री मित्रमिश्रविरचितः—

परिभाषाप्रकाशः संस्कारप्रकाशश्च		[चौ. ३०]	समाप्त
आह्निकप्रकाशः	२४-००	**व्यवहारप्रकाशः**	समाप्त
पूजाप्रकाशः	१६-००	**श्राद्धप्रकाशः**	१२-००
लक्षणप्रकाशः	२८-००	**समयप्रकाशः**	९-००
राजनीतिप्रकाशः	१५-००	**भक्तिप्रकाशः**	६-००
तीर्थप्रकाशः	१८-००	**शुद्धिप्रकाशः**	९-००

*९६ **व्यवहारनिर्णयः** । वरदराजकृतः नेट ३०-००

९७ **व्यवहारविज्ञानम्** । वाराणसी की प्रथमा परीक्षापाठ्य स्वीकृत । सान्वय 'सुधा' हिन्दी व्याख्या सहित

जीवन-निर्माण में बालकों को भारतीय संस्कृति से अनुप्राणित किस व्यवहार-विधि का पालन करना चाहिए इसका शास्त्रसम्मत रोचक उपदेश ही इस पुस्तक का विषय है । बड़ी उपयोगी रचना है ।

[ह. २६२] **प्रथमा परीक्षा पाठ्य** स्वीकृत प्रथम भाग ०-६०

द्वितीय भाग ०-७५

९८ **व्रात्यताप्रायश्चित्तनिर्णयः**—(महान् लघुश्च) नागेशभट्टविरचितः ।

अत्र कलौ उपनयनयोग्याः क्षत्रिया नैव सन्तीति विवेचितम् । तथा—

व्रात्यताशुद्धिसंग्रहः [चौ. ६६] ३-००

९९ **शिलान्यासपद्धतिः** । म० म० श्रीविद्याधरजी गौड सम्पादिता विस्तृत टिप्पणी परिशिष्ट सहिता [वि. ३] समाप्त

१०० **शुद्धिप्रदीपः प्रायश्चित्तप्रदीपः कृत्यप्रदीपश्च** ।

आचार्य कृष्णमित्रप्रणीत धर्मशास्त्र के ये तीनों अत्यन्त प्राचीन अनुपलब्ध दुष्प्राप्य ग्रन्थ बहुत ही खोज तथा अर्थव्यय से उपलब्ध हुए हैं । शुद्धि-प्रदीप में जन्म-मरणाशौचों का, प्रायश्चित्तप्रदीप में विविध प्रकार के पातक तथा महापातकादि के प्रायश्चित्तों का और कृत्यप्रदीप में द्विजातियों के षोडश संस्कारों तथा यज्ञादिकों में कर्त्तव्याकर्तव्यों का प्रामाणिक विवेचन है । [चौ. ९१] ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१०१ शुक्लयजुःकाण्वशाखीयजातकर्मादिसमावर्तनान्तसंस्कारप्रयोगः ०-७५

*१०२ शुक्लयजुर्वेदीय-वैदिकवास्तुशान्तिप्रयोगः। दुर्गाशङ्कर शास्त्री १-५०

१०३ शुक्लयजुर्वेदीय-सन्ध्योपासनपद्धतिः। वेदाचार्य पं० अनन्तराम-डोगराशास्त्रिकृत भाषाटीका सहिता [वि. ८] ०-१५

१०४ श्राद्धकल्पलता। श्रीनन्दपण्डितकृता। [चौ. ७३] ९-००

१०५ श्राद्धगणपतिः। यन्त्रस्थ

१०६ श्राद्धचन्द्रिका। भारद्वाज दिवाकरभट्टनिर्मिता [चौ. ७६] ५-००

१०७ श्राद्धपद्धतिः। 'स्त्री-कुमार-शूद्र-कर्तृक-श्राद्धपद्धति' सहित। म० म० वाचस्पति मिश्र तथा म० म० श्रीदत्तोपाध्याय विरचित युग्मसंस्करण। सम्पादक—पं० रामचन्द्र झा।

स्थूलाक्षरों में मुद्रित इस तृ० संस्करण में दुरूह क्रिया भाग के शब्दों को अत्यन्त सुबोध शब्दों में परिवर्तन-परिवर्धन किया गया है; किन्तु मन्त्रों की मूल भित्ति ज्यों की त्यों बनी है—कहीं भी हेर-फेर नहीं किया गया है। पाठकों के सौविध्य को ध्यान में रखकर जहाँ-जहाँ सूत्ररूप में मन्त्रों का निर्देश था, वहाँ सर्वत्र अविकल सम्पूर्ण मन्त्र रख कर पद्धति को सर्वबोध गम्य बनाते हुए स्थल-स्थल पर विमर्शात्मक टिप्पणी में मूलाधार स्मृतिवचनों का उल्लेख करके मूलोक्त वचनों का समर्थन किया गया है। इसके 'श्राद्धसमीक्षा' नामक लेख में श्राद्ध-सम्बन्धी निबन्धों के स्मृतिवचनों को एकत्र सङ्कलन कर दिया गया है। कर्मकाण्डी विद्वानों के लिये यह धर्मशास्त्रीय समीक्षा अधिक उपयोगी है। [मि० ३१] ३-५०

१०८ श्राद्धप्रयोगदीपिका। नेने गोपाल शास्त्री संपादिता।

महामहोपाध्याय श्री पं० नित्यानन्दजी पन्त पर्वतीय रचित संस्कारदीपक १-२ भाग, परिशिष्टदीपक, अन्त्यकर्मदीपक, वर्षकृत्यदीपक आदि ग्रन्थों से सभी विद्वान् पूर्ण परिचित हैं। उन्हीं महामहोपाध्याय जी के प्रधान शिष्य श्री पं० नेने गोपालशास्त्रीजी द्वारा संशोधित एवं परिष्कृत उसी परिपाटी का यह श्राद्धविषयक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है [ह. २४०] १-२५

१०९ श्राद्धविवेकः। म० म० रुद्रधर विरचितः। विषमस्थलटिप्पणी तथा 'पार्वणश्राद्धक्रियाबोधक चित्रपट' सहित [का. १२२] २-५०

*११० श्राद्धविश्राम। सम्पादक-रुद्रप्रसाद अवस्थी २-५०

*१११ श्री आरति कल्पद्रुमः। लघुरुद्रपद्धति सहित १-५०

*११२ श्रीग्रहमखप्रयोगः। ०-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*११३ **श्रीदुर्गा कल्पद्रुमः** । सप्तशती पाठ सहित ३-००

११८ **श्रीमहालक्ष्मीपूजापद्धतिः** । सर्वदेवपूजाविधान-पूजनमीमांसा, सम्पुटित श्रीसूक्त आदि विविध परिशिष्ट युक्त भाषाटीका सहित [ह. १४८] १-२५

*११५ **श्रीशान्तिकल्पद्रुमः** । वास्तुशान्ति सहित १-५०

*११६ **श्रीशारदीयदुर्गापूजापद्धतिः** । पण्डित गौरीनाथ ३-५०

११७ **श्रौतसूत्रम्** । कात्यायनप्रणीतं 'देवयाज्ञिकपद्धति' सहित । १-८ खण्ड [चौ. ७२] २४-००

११८ **षडशीतिः** । आदित्याचार्यप्रणीता । धर्माधिकारि नन्दपण्डित प्रणीत 'शुद्धिचन्द्रिका' व्याख्या समलङ्कृत [चौ. ६७] ६-००

*११९ **षोडशसंस्कारविधि** । (सनातन) हिन्दी टीका सहित ४-००

१२० **संक्षिप्तदीक्षापद्धतिः तुलादानपद्धति** सहित [ह. १७०] ०-२०

*१२१ **संध्याभाष्यम्** । चतुर्वेद-संध्या-तर्पण-ब्रह्मयज्ञ-श्रुतिसूत्र व्याख्या-नोपबृंहित पद्धति समेतम् । म० म० श्यामनारायण चतुर्वेदकृत ४-००

१२२ **संस्कारगणपतिः** । श्रीमद्याज्ञिकप्रवर श्रीमद्रामकृष्णप्रणीतः । पारस्करगृह्यसूत्रस्यातिविस्तृतव्याख्यानस्वरूपः [चौ. ८०] २५-००

१२३ **संस्कारदीपकः** । म० म० श्री नित्यानन्दपन्तपर्वतीय विरचित

प्रथम भाग ४-०० द्वितीय भाग ८-५० तृतीय भाग ५-५०
१-३ भाग संपूर्ण [का. ९५] १८-००

१२४ **संस्काररत्नमाला** । (गोपीनाथभट्टीया) १-२ खण्ड [चौ. १] ३-००

*१२५ **सचित्र सतर्पण-सन्ध्यादर्पण** । हिन्दीभाषानुवादसहित २-००

*१२६ **सनातनधर्मदीपिका** । स्वा० दयानन्द विरचित १-००

*१२७ **सनातनधर्मोद्धार** । उमापति (नकछेदकराम शर्मा) द्विवेदी कृत हिन्दी टीका सहित । १-४ भाग २०-००

१२८ **सब धर्मों की बुनियादी एकता** । डॉ० भगवानदास । इस ग्रन्थ में संसार भर के धार्मिक मज़हबों और उनके श्रेष्ठ धर्मग्रन्थों की बारीक जानकारी देते हुए यह समझाया गया है कि सब धर्मों-मजहबों का उद्देश्य भौतिक और आध्यात्मिक कल्याण पाना ही है [वि. रा. ३६] १२-००

१२९ **सरस्वतीपूजापद्धतिः** । मूर्तिपूजा विधान सहित [वि. २०] समाप्त

*१३० **साङ्गसप्ताहमण्डपपूजाविधिः** । २-००

१३१ **सामवेदीयसुबोधिनीपद्धतिः** । श्रीशुक्लविश्रामात्मज श्रीशिवराम-विरचित [चौ. ८७] ९-००

*132 Secretary of State for India and His Council (1858-1919). By Dr. Shacheeniwas Singh. 12-50

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

133 SOCIO-RELIGIOUS CONDITION OF NORTH INDIA (700–1200 A. D.) Based on Archæological Sources : By Dr. Vasudeva Upadhyaya. [Chow. Sans. Studies Vol. XXXIX] 25-00

*134 Social Life in Northern India (A. D. 600–1000). By Dr. Brij Narain Sharma. With a Foreword by Dr. A. L. Basham. 25-00

*135 Standard of Living in India and Pakistan 1931–32 to 1940–41. By R. C. Desai. 20-00

*१३६ **स्मार्तप्रभु** । प्रथम भाग १–२४ द्वितीय भाग (प्रतिष्ठाप्रभु) ४-००

*१३७ **स्मार्तोल्लासः** । शिवप्रसाद विरचित । २–३ भाग ३-६२

*१३८ **स्मृतिसन्दर्भः** । १–६ भाग ५५-००

१३९ **स्मृतिसारोद्धारः** । विद्वद्वर श्रीविश्वम्भरत्रिपाठिसङ्कलितः [चौ. ३१] १२-००

*१४० **हिन्दू धर्म** । **'सनातनधर्म की प्रारम्भिक पुस्तक' का हिन्दी अनुवाद** । मूल लेखक डा० एनी बेसेंट । अनुवादक—अम्बिकादत्त उपाध्याय ३-००

*141 Hindu Woman's Right to Property (Past & Present). By R. L. Chaudhary. 10-00

*142 Hindu Samskaras. By Rajbali Pandey. 30-00

१४३ **हिन्दू संस्कार** (सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन)

डॉ० राजबली पाण्डेय विरचित । यह ग्रन्थ हिन्दू संस्कृति के अध्ययन की दिशा में महत्त्वपूर्ण देन है । गर्भ में आने के समय से मृत्यु के समय तक और मृत्यूत्तर संस्कारों के माध्यम से उसके परवर्ती लोकोत्तर प्रयाण तक के हिन्दू जीवन को समझने के लिए यह ग्रन्थ कुञ्जी का काम देता है । द्वितीय संशोधित संस्करण [वि. रा. १२] १६-००

+१४४ **हेमाद्रिदानखण्डः** । भाग १–२ १५-००

छन्दः-काव्य-अलङ्कार-चम्पू-ग्रन्थाः

१ **अभिनन्दनग्रन्थः सत्यनारायण शास्त्री** (सचित्र)

न्याय, व्याकरण, वेदान्त, सांख्य, योग, मीमांसा, इतिहास, पुराण, आयुर्वेद आदि प्रत्येक विषय पर महामनीषियों की मर्मस्पर्शी विचार-सामग्री से यह ग्रन्थरत्न भरा हुआ है । [वि. आ. ३०]

मूल्य लागत मात्र १५-००

*२ **अभिनवकाव्यप्रकाशः** । सटिप्पण (१–६ उल्लास) १-५०

*३ **अभिनव सीतारावण संवाद झरी** । बच्चु सुब्बराय कृत । संस्कृत-हिन्दी-आंग्ल टीका सहित ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४ **अभिलेखमाला** । व्याख्याकार—झाबन्धु ।
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत और कल्चर की एम० ए० परीक्षा में निर्धारित
इस पुस्तक में १-रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख, २-समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख, ३-कुमारगुप्त के मन्दसौर शिलालेख, ४-स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ शिलालेख, ५-पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल शिलालेख, ६-महाराजचन्द्र के मिहरौली शिलालेख, ७-महाराज यशोवर्मा के शिलालेख और ८-बीसल देव के देहली-शिवालिक शिलालेख संगृहीत हैं। इन शिलालेखों के सटिप्पण हिन्दी अनुवाद के साथ-साथ इनके ऐतिहासिक महत्त्व साहित्यिक वैशिष्ट्य का विवेचन भी प्रस्तुत किया गया है
[वि. सं. ७९] ४-००

५ **अमरुशातकम्** । अमरुक कवि विरचित । अर्जुन वर्म देवप्रणीत रसिक सञ्जीविनी संस्कृत टीका, श्रीप्रद्युम्न पाण्डेय कृत हिन्दी टीका तथा विस्तृत भूमिकादि युक्त
[ह. २६८] ३-५०

*६ **अर्पण** । डॉ० सर्वानन्द पाठक ।
इस पुस्तक में काव्य सम्बन्धी हास्य, शृङ्गार, करुण आदि, विविध रस-भक्तियोग, ज्ञानयोग, विवेकानन्द, शंकराचार्य, बालयोगिनी, कुण्डलिनी-योग, अन्तर्लोक आदि रोचक विषयों का सम्मिश्रण हुआ है। १-५०

७ **अलङ्कारपीयूष** । डॉ० गङ्गासागर राय
परीक्षा में प्रष्टव्य चुने हुए ५२ अलंकारों की मार्मिक हिन्दी व्याख्या के साथ इस ग्रंथ का संपादन किया गया है। संस्कृत की मध्यमा बी० ए० तथा एम० एम० के परीक्षार्थियों के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है
[वि. सं. ७१] १-५०

८ **अलङ्कारप्रदीपः** । श्रीविश्वेश्वरपाण्डेयनिर्मित [का. ८] १-५०

९ **अलङ्कारमुक्तावली** । श्री विश्वेश्वरपाण्डेयनिर्मित [का. ५४] १-५०

१० **अलङ्कारशेखरः** । केशवमिश्रकृतः । साहित्याचार्य अनन्तरामशास्त्रीकृत भूमिकादि सहितः [का. ५६] १-५०

११ **अलङ्कारसारमञ्जरी**—सर्वविध मध्यमपरीक्षा पाठ्यरूपा ।
इसमें चन्द्रालोक तथा साहित्यदर्पण से संगृहीत अलङ्कारों की मूल-कारिकायें, उनकी स्वतन्त्र सरल विशद वृत्ति, चन्द्रालोकीय उदाहरण, रघुवंशादि अधीतग्रन्थों से उदाहरण तथा उनका समन्वय इत्यादि सभी विषय संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद सहित दिए गए हैं [ह. २७] ०-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१२ अलङ्कारसंग्रहः । अमृतानन्दयोगी कृत नेट १६-००

१३ **हिन्दी अलङ्कारसर्वस्व** । राजानक रुय्यकविरचित । विद्याचक्रवर्तिकृत संजीविनी संस्कृत व्याख्या तथा हिन्दी टीका सहित । व्याख्याकार—आ० रेवाप्रसाद द्विवेदी

इस ग्रन्थ की सुविशद किन्तु सरल और सरस प्रवाहयुक्त प्राञ्जल हिन्दी व्याख्या में लेखक की अलंकार-शास्त्र-विषयक विद्वत्ता प्रति पृष्ठ में भरी हुई है। शास्त्रीय विचारों से युक्त पाण्डित्यपूर्ण भूमिका से ही एतद्विषयक शास्त्रीय ज्ञान का क्रमबद्ध वर्णन प्राप्त हो जाता है। उपयोगी सामग्री से पूर्ण परिशिष्ट लेखक की शैली तथा कौशल-वश ग्रन्थ का अंग ही प्रतीत होता है। इस प्रकार उत्तम हिन्दी व्याख्या युक्त यह परमोत्तम संस्करण है। शीघ्र प्राप्त होगा

१४ **अवदानकल्पलता** । (तृतीयपल्लव) श्री क्षेमेन्द्र विरचित [चौ. पु.] ०-२५

१५ **अवन्तिकुमारियाँ** । श्री देवदत्त शास्त्री ।

इस पुस्तक में तीन अवन्तिकुमारियों (अवन्तिसुंदरी, मालविका, सरस्वती) के जीवन की मर्मस्पर्शी कहानियों के बीच लेखक ने उस युग की सांस्कृतिक, धार्मिक एवं नैतिक स्थितियों का बड़ा ही सुन्दर गवेषणात्मक चित्र प्रस्तुत किया है। [वि. रा. ३८] २-००

*१६ **आचार्य मम्मट और उनका काव्यप्रकाश** (विवेचनात्मक सरल अध्ययन) आचार्य श्रीरामचन्द्र झा ।

इसमें ऐतिहासिक आलोचनात्मक विषयों के विवेचन के साथ काव्यप्रकाश के प्रत्येक उल्लास में आए विवेचनीय गूढ़ विषयों का सरल एवं सुबोध अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। २-००

१७ **आर्यासप्तशती** । पर्वतीयश्रीविश्वेश्वरपण्डितविरचिता । ग्रन्थकर्तृकृत व्याख्यासंवलित [चौ. ६०] ६-००

१८ **हिन्दी आर्यासप्तशती** । गोवर्धनाचार्य विरचित । व्याख्याकार—पं० रमाकान्त त्रिपाठी ।

प्रस्तुत ग्रन्थ संस्कृत में अकारादिक्रम से रचा गया अनेकविधि शृङ्गार तथा नीतिसूक्तियों का भण्डार है जिसे अन्वयमुख सरल संस्कृत-हिन्दी व्याख्याओं और विमर्श के साथ प्रकाशित किया गया है।

[वि. सं. १२७] १०-००

*19 Eugene O' Nell : A Study. By D. V. K. Raghavacharyulu. 20-00

*20 Emerson Reader. Edited by Nissim Ezekiel. 15-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२१ **उत्कीर्णलेखपञ्चकम्** । व्याख्याकार—भावबन्धु ।
दरभंगा सं० विश्वविद्यालय की शास्त्रिपरीक्षा पाठ्यस्वीकृत ।
इस अभिनव संस्करण में १-रुद्रदामन का जूनागढ़-शिलालेख, २-महाराज चन्द्र का मिहरौली-स्तम्भलेख, ३-कुमार गुप्त का मन्द-सौर-शिलालेख, ४-महाराज यशोवर्मा का शिलालेख और ५-बीसल-देव का देहली-शिवालिक स्तम्भलेख, इन संग्रहों का परीक्षा की दृष्टि से सटिप्पण हिन्दी अनुवाद भी किया गया है [वि. सं. ७८] ३-००

२२ **उपाख्यान मञ्जरी** । सम्पादक, पं० बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते
'वेतालपञ्चविंशति' की कतिपय कथाओं का यह छोटा-सा संग्रह सुरभारती का अनुशीलन करने वाले छात्रों को संस्कृत भाषा एवं गद्य रचना से परिचित कराने के लिए प्रस्तुत किया गया है । [चौ. पु.] १-५०

*२३ **उषानिरुद्धम्** । रामपाणिवादकृत नेट ९-००

२४ **औचित्यविचारचर्चा**—महाकवि क्षेमेन्द्रकृता ।
शोधपूर्ण संस्करण 'प्रभा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित ।
भाव तथा विषय के अनुरूप ही व्याख्या की भाषा अत्यन्त सरल है । वृहदाकार भूमिका में 'औचित्य' के स्वरूप आदि पर उदात्त विवेचन के साथ प्रतिष्ठापक आचार्यों का ऐतिहासिक क्रम से परिचय, औचित्य पर पाश्चात्य आलोचकों की दृष्टि तथा क्षेमेन्द्र के जीवन और कृतित्व आदि विषयों पर पाण्डित्यपूर्ण उपयोगी विचार हैं । [वि. सं. ११८] ४-००

२५ **औचित्यविचारचर्चा-कविकण्ठाभरण-सुवृत्ततिलकम्** ।
क्षेमेन्द्रकृत । सटिप्पण [ह. २४-२५-२६] यन्त्रस्थ

२६ **ऋतम्भरा** । सं० डॉ० वीरमणि प्रसाद उपाध्याय ।
विश्व के प्रमुख मनीषियों के उपदेशों का सारभूत संग्रह । (यह पुस्तक गोरखपुर युनिवर्सिटी के अनिवार्य पाठ्यक्रम में है) [चौ. पु.] ०-२५

२७ **ऋतुसंहारम्**—कालिदास विरचितम् । 'प्रभा' टीकोपेतम् ।
इसकी हिन्दी टीका में किन-किन ऋतुओं में किन-किन वस्तुओं का किस प्रकार उपभोग किया जाता है इसका सुस्पष्ट विवेचन किया गया है
[वि सं. १६] ०-४०

*28 Ritusamhara or The Pageant of the Seasons. Translated from the original Sanskrit Lyrics of Kalidasa by R. S. Pandit. Frontispiece by Nanda Lal Bose. 13-50

*29 Katha Sarit Sagara or Ocean of the Streams of Story. Translated from Sanskrit by C. H. Tawney. 2 Vols. 75-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

30 CONCEPT OF POETIC BLEMISHES IN SANSKRIT POETICS. By Dr. Bechan Jha. [Chow. Sans. Studies Vol. XLVII]
15-00

३१ **कलाविलासिनी वासवदत्ता।** श्री देवदत्त शास्त्री। महाराज उदयन और महारानी वासवदत्ता की कलाविलासिताओं में भोग और योग का पूर्ण समन्वय है। इसी पौराणिक विषय का राष्ट्रभाषा हिन्दी में विशद विवेचन इस पुस्तक में किया गया है [वि. रा. ३०] २-५०

३२ **कादम्बरी**—'चन्द्रकला' विद्योतिनी संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सम्पूर्ण। व्याख्याकार, आचार्य कृष्णमोहन ठक्कुर तथा आचार्य रामचन्द्र मिश्र।

इस संस्करण की सरल सुबोध संस्कृत टीका में प्रत्येक शब्द के पर्याय, समास, विग्रह, कोश, अलंकार आदि से मूल के पद-पद की ग्रन्थियाँ खोल दी गई हैं। इसकी हिन्दी व्याख्या मूल के अनुरूप ही पदविच्छेद-पूर्वक सरल शब्दों में संशोधित करके की गयी है जिससे हिन्दी-अंगरेजी के छात्र भी कादम्बरी का अध्ययन अल्पायासेन ही कर सकेंगे। इस संस्करण की विशेषता पर वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, हिन्दू विश्वविद्यालय तथा बिहार-संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रमुख विद्वानों ने जो उद्गार प्रकट किए हैं, वे पुस्तक में प्रकाशित कर दिए गए हैं। कादम्बरी-समीक्षा, कथासार आदि से सुसज्जित।

[का. १५१] १-२ भाग **सम्पूर्ण** २४-००

कथामुखपर्यन्त ३-७५, **पूर्वार्द्ध** १३-५०

उपर्युक्त सभी विषयों से सुसज्जित **उत्तरार्ध** १०-५०

३३ **कादम्बरी (कथामुखपर्यन्ता)** 'चन्द्रकला' 'विद्योतिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार : प्रो. कृष्णमोहन शास्त्री

बी० ए० तथा शास्त्री कक्षा के छात्रों के लिए ही यह संस्करण प्रस्तुत किया गया है। इसकी सरल सुबोध संस्कृत व्याख्या में समस्त वाक्य के प्रत्येक पद को पृथक्-पृथक् करके उसके पर्याय, कोश, अलङ्कार आदि देकर मूल के पद-पद की ग्रन्थियाँ खोल दी गई हैं। हिन्दी व्याख्या में यह ध्यान रखा गया है कि संस्कृतेतर हिन्दी, अंग्रेजी के छात्र भी कादम्बरी का अध्ययन अनायासेन कर सकें। कादम्बरी-समीक्षा, कथासार आदि परीक्षार्थियों के लिए अधिक उपयोगी है। शास्त्री जी ने दस वर्षों के अपने अध्यापनानुभव से ही छात्रोपयोगी सरल सुबोध व्याख्या, समीक्षा (नोट्स) आदि से सुसज्जित इस कथामुख भाग को प्रस्तुत किया है। [का० १५१] ३-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३४ **कादम्बरी : एक सांस्कृतिक अध्ययन**—डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ।

यह ग्रंथ सम्पूर्ण कादम्बरी का व्यवस्थित आलोचनात्मक हिन्दी रूपान्तर है। कादम्बरी के विषय में इस एक ग्रंथ को लेकर आप अन्य किसी ग्रंथ की अपेक्षा नहीं रखेंगे। साहित्यप्रेमियों को इस ग्रंथ का अवश्य संग्रह करना चाहिए [वि. रा. १४] १५-००

३५ **कादम्बरीकथासारः** । हिन्दी-अङ्गरेजी व्याख्या सहित । सम्पादक—श्री बलराम सदाशिव अग्निहोत्री ।

विभिन्न विश्वविद्यालयों में पाठ्य स्वीकृत इस संकलन में कादम्बरी का सम्पूर्ण कथा-सूत्र पूर्ण सुरक्षित रखा गया है। व्याख्यान करने में यह ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थी उससे मूल के भावों तक पहुँच सकें साथ ही कथा की धारा भी टूटने न पाए। अँग्रेजी के छात्रों के लिए इसकी अँग्रेजी व्याख्या ही पर्याप्त है । [वि. सं. १४५] १०-००

३६ **हिन्दी कादम्बरी : महाश्वेतावृत्तान्त** । प्रद्युम्न पाण्डेय

विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० ए० परीक्षा में निर्धारित इस पुस्तक में कादम्बरी के महाश्वेतावृत्तान्त भाग की अत्यन्त स्पष्ट, सरस एवं सुबोध हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की गई है। पुस्तक के आदि में महाकवि बाण और महाश्वेता की विशेषताओं पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है अन्त में क्लिष्ट शब्दों और वाक्यों की संस्कृत एवं हिन्दी व्याख्या तथा दो परिशिष्टों में बाण-की अन्य विशेषताओं का उल्लेख कर दिया गया है। अनुसन्धित्सुओं के लिये भी संग्राह्य है [वि. सं. ६५] ४-००

३७ **हिन्दी कादम्बरी : शुकनासोपदेश** । व्या०—झाबन्धु

इसमें समस्त शब्दों का विग्रह, अत्यन्त सरल संस्कृत में उसकी व्याख्या तथा प्राञ्जल तथा मुहावरेदार हिन्दी में अनुवाद दिया गया है इन सब के अतिरिक्त इसकी टिप्पणी में ग्रन्थ में आये पारिभाषिक शब्दों की प्रामाणिक व्याख्या और उसका इतिहास भी लिखा गया है अलङ्कारों का भी यथास्थान निर्देश कर दिया गया है। इसकी विस्तृत भूमिका में बाण सम्बन्धी समस्त आलोचनात्मक प्रश्नों के उत्तर बहुत ही प्रामाणिक रूप से दिये गये हैं। [वि. सं. ६४] ३-००

*३८ **कामायनी** । (संस्कृत) । महाकवि जयशंकर प्रसाद । अनुवादक पं० भगवानदत्त शास्त्री । सर्ग १-३ नेट १-५०, संपूर्ण ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३९ **कालिदास-ग्रन्थावली ।**

आचार्य रामचन्द्र मिश्र, आचार्य शेषराज शास्त्री आदि काव्यसाहित्य मर्मज्ञ विद्वानों के सम्पादकत्व में महाकवि कालिदास के सम्पूर्ण काव्य तथा नाटकों का एक साथ मूल और विषयानुसार ललित भाषानुवाद एवं पाण्डित्यपूर्ण विशद भूमिका, समीक्षा, शोधलेख आदि बहुमूल्य साहित्यिक सामग्री से संपूरित सर्वोत्तम संस्करण । शीघ्र प्राप्त होगा

४० **काव्य-कदम्ब ।** सम्पादक, श्रीभुवनेश्वर प्रसाद पाण्डेय

इस पुस्तक में वीरकाव्य, निर्गुणकाव्य, रामकाव्य, कृष्णकाव्य, रीति-काव्य, नीतिकाव्य, छायावाद और नवचेतना के अग्रदूत : इन आठ स्तम्भों में रोचक हिन्दी कविताओं का संकलन किया गया है । हिन्दी काव्य प्रेमियों के लिए यह संग्रह सर्वथा स्पृहणीय हैं । [चौ. पु.] २-५०

*४१ **काव्य-कलिका ।** सम्पादक–प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

१ 'निरंजना' हिन्दी खण्ड काव्य, २ किरातार्जुनीयम् प्रथम सर्ग हिन्दी-पद्यानुवाद तथा ३ नेहरू की रूस-यात्रा पर लिखे गये संस्कृत काव्य 'शान्तिविजयम्' का प्रथम सर्ग १-००

४२ **काव्यकल्पलतावृत्तिः ।** अमरचन्द्रयतिनिर्मिता । अरिसिंहकृतसूत्र सहित [का. ९०] यन्त्रस्थ

४३ **काव्यदीपिका**–'मयूख' संस्कृत हिन्दी व्याख्योपेता ।

इस ग्रन्थ में काव्यप्रयोजन, लक्षण, अभिधा-लक्षण, व्यंजनानिरूपण, काव्य-भेद-रस-ध्वनिभेद-निरूपण, नाटकोपयोगि निरूपण, दोष, गुण, रीति, अलंकार और अर्थालंकार निरूपण आदि का सरल तथा सुबोध शब्दों में विवेचन किया गया है सम्पूर्ण [ह. २११] २-५०

४४ **काव्यदीपिका–अष्टमशिखा**–डा० भोला शंकर व्यास

आगरा यूनिवर्सिटी की बी. ए. कक्षा में निर्धारित इस अष्टम शिखा की डा० व्यासलिखित समालोचना के साथ सरल संस्कृत-हिन्दी व्याख्या अधिक उपादेय है [ह. २११] १-२५

४५ **काव्यप्रकाशः**–'नागेश्वरी' संस्कृतव्याख्या सहित

प्रदीप, उद्योत, संकेत, सुधासागरी, वामनी, आदि अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन टीकाओं की सारभूत यह सरल अभिनव 'नागेश्वरी' व्याख्या प्रकाशित की गयी है । इसमें ग्रन्थ के सभी दुरूहांशों को ननु-नच करके सरल तथा स्पष्ट कर दिया गया है तृतीय संस्करण [का. ४९] ८-००

४६ **काव्यप्रकाशः ।** म० म० श्रीगोकुलनाथोपाध्यायकृत व्याख्या सहित । प्रथम उल्लास [चौ. पु.] १-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४७ **काव्यप्रकाशः।** मम्मटभट्टविरचितः। श्री श्रीकृष्णशर्म-विरचित 'रसप्रकाश'टीकासहितः। आंग्लानुवादभूमिकादि सहित शोधपूर्ण संस्करण। सम्पादक : डॉ० शिवनारायण घोषाल।

काव्यप्रकाश की प्राचीन टीकाओं में श्री श्रीकृष्णशर्मा विरचित रस-प्रकाश अपना महत्त्व रखता है क्योंकि इस टीका में आदर्श आदि प्राचीन टीकाओं का विशेष विवेचन उपस्थापित किया गया है तथा 'ध्वनि' और 'रस' विषयक विभिन्न मतमतान्तरों का आमूलचूल विचार किया गया है। इसी एक टीका से ही विश्वनाथ, श्रीधर, चण्डीदास, परमानन्द आदि काव्यप्रकाश के प्रसिद्ध टीकाकारों के सिद्धान्तों का परिचय उपलब्ध हो जाता है। विद्वान सम्पादक ने विशेष परिश्रम पूर्वक देश-विदेश के पुस्तकालयों में मिली हुई भातृकाओं के आधार पर इस अप्रकाशित टीका का यह शोधपूर्ण संस्करण प्रस्तुत किया है। विद्वत्तापूर्ण अंग्रेजी भूमिका तथा अंग्रेजी व्याख्या में भारतीय साहित्यशास्त्र परम्परा के ऊपर अभूतपूर्व प्रकाश डाला गया है। यन्त्रस्थ

४८ **हिन्दी काव्यप्रकाश।** व्याख्याकार—डॉ० सत्यव्रत सिंह संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी में समानरूप से इस ग्रन्थ की व्यापकता को देखकर तदनुकूल ही इसकी व्याख्या की गयी है। व्याख्या के साथ-साथ टिप्पणी (नोट्स) में वे सभी विषय दिये गये हैं जो वामनी, काव्यादर्श, ध्वन्यालोक-लोचन आदि में बिखरे पड़े हैं। परिष्कृत तृतीय शोधपूर्ण संस्करण। संपूर्ण [वि. सं. १५] १०-००

४९ **हिन्दी काव्यप्रकाश : १-३ उल्लास।** डॉ० सत्यव्रत सिंह छात्रों को विवेच्य विषय सुलभ कराने के लिये मूल के साथ विषयानुरूप बोधगम्य भाषा में व्यवस्थित अनुवाद एवं विशद टिप्पणी (नोट्स) द्वारा विषय की गम्भीरता तथा व्यापकता को स्पष्ट करने का प्रयास एकमात्र इसी संस्करण की विशेषता है [वि. सं. १५] ३-००

५० **हिन्दी काव्यप्रकाश : दशम उल्लास।** डॉ० सत्यव्रत सिंह विश्वविद्यालयों की एम० ए० परीक्षा में पाठ्य-ग्रन्थ रूप में स्वीकृत 'काव्यप्रकाश का दशम उल्लास' अति क्लिष्ट माना जाता है। अतः टीकाकार ने व्यवस्थित भाषा में मूल के नीचे भाषानुवाद अङ्कित करके अपनी टिप्पणी (विमर्श) द्वारा ग्रन्थ की रहस्यपूर्ण ग्रन्थियों का सम्यक् समुन्मोचन कर दिया है। आलोचनात्मक विषयों का ज्ञान सुविस्तृत भूमिका द्वारा ही हो जाता है [वि. सं. १५] ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५१ **काव्यप्रकाशरहस्यम्** (परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी)
भारतवर्ष के सभी संस्कृत एवं अँग्रेजी-हिन्दी कालेजों में काव्यप्रकाश का पठन-पाठन देख कर रची गई इस पुस्तक में किसी भी प्रान्त की परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के सही व सरल उत्तर प्राप्त हो जायँगे
[ह. २३८] २-००

५२ **काव्य-प्रबन्धः**—अनेक शिक्षासंस्थाओं द्वारा स्वीकृत प्रबन्धग्रंथ ।
इस पुस्तक में काव्य, वाक्य, शब्दार्थ, तात्पर्यार्थ, शक्ति, संकेतग्रह, जातिवाद, लक्षणा, व्यंजना, ध्वनि, रस, स्थायिभावभेद, गुणालंकार भेद तथा श्लेषालंकारभेदों का निरूपण करके कवित्व का लक्षण तथा महाकवि कालिदास, भवभूति, भारवि, शूद्रक, माघ, दण्डी, बाण आदि कवियों की संक्षिप्त जीवनियों तथा उनकी कृतियों पर प्रकाश डाला गया है
[वि. सं २३] १-५०

५३ **काव्यमञ्जूषा नाम रत्नावलीगद्यकाव्य-कामकन्दलनाटक-श्रीकालिकामन्दाक्रान्ताशतक-धर्माधिकारिवंशवर्णन-श्रीरेणुकास्तोत्रनाम्नां** ग्रन्थरत्नानां संग्रहः [चौ. ७८] ३-००

५४ **काव्यमीमांसा** । राजशेखर विरचित । श्रीमधुसूदनमिश्रकृत मधुसूदनी संस्कृत व्याख्या सहित । [ह. १४] संपूर्ण ४-००

५५ **काव्यमीमांसा** । श्रीमधुसूदनमिश्रकृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । [१-५ अध्याय] [ह. १४] १-५०

५६ **काव्यमीमांसा** । म. म. श्री नारायण शास्त्री खिस्तेकृत 'काव्यमीमांसा चन्द्रिका' व्याख्या सहित । १-५ अध्याय
[का. ८६] १-५०

५७ **हिन्दी काव्य-मीमांसा** । व्या०, डॉ० गंगासागर राय
इस संस्करण में सटिप्पण मार्मिक हिन्दी व्याख्या की गई है। व्याख्या को अन्य सिद्धान्तों के परिवेश में उपस्थित कर तुलनात्मक तथा आलोचनात्मक रूप दिया गया है। प्रारम्भ की विस्तृत भूमिका में राजशेखर का समय पूर्ववर्ती आचार्यों की परम्परा तथा उसमें राजशेखर का स्थान, देश-काल, विषय-वस्तु आदि का मार्मिक परिचय दिया गया है। अन्त में कई परिशिष्ट भी हैं। [वि. सं. १२१] ८-५०

५८ **काव्याङ्गनिर्णय**—प्रोफेसर जंगबहादुर मिश्र ।
[वि. रा. १३] यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५९ **हिन्दी काव्यादर्श**। व्याख्याकार, आचार्य रामचन्द्र मिश्र। सरल संस्कृत-हिन्दी भाष्य करके इसे सुबोध बनाया गया है। इस संस्करण की प्रस्तावना में लगभग ७० अलंकारशास्त्रियों का समय, रचनाएँ तथा उनकी विशेषताओं का वर्णन है। साथ ही अलंकारशास्त्र, अलंकारशब्दार्थ एवं अलंकारशास्त्र का क्रमविकास नामक प्रसंग भी प्रस्तावना में अपना विशिष्टस्थान रखते हैं। [वि. सं. ३७] ६-५०

६० **हिन्दी काव्यालंकार**। महाकवि रुद्रट विरचित। व्याख्याकार-श्रीरामदेव शुक्ल।

सविमर्श हिन्दी व्याख्या, पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थालोचन, अलंकार-समीक्षण तथा शास्त्रीय विचारों से परिपूर्ण प्रस्तावना-वक्तव्य-परिशिष्ट आदि से सुसज्जित। [वि. सं. १३६] १०-००

६१ **काव्यालङ्कारः**। श्रीभामहाचार्येण विनिर्मितः [का. ६१] यन्त्रस्थ

६२ **काव्यालङ्कारसूत्राणि**। आचार्यवामनविरचितवृत्तिसमेत। श्री गोपेन्द्र त्रिपुरहरभूपाल-विरचित काव्यालङ्कारकामधेनुव्याख्यासहित। [व. ३२] यन्त्रस्थ

६३ **काव्येन्दुप्रकाशः**। कामराज दीक्षित प्रणीत। सम्पादक श्री बाबूलाल शुक्ल, शास्त्री।

संस्कृत साहित्य का यह लक्षण ग्रंथ बहुत सरल तथा 'गागर में सागर' है। अपने विषय-विवेचन के वैशिष्ट्य में इसका उल्लेखनीय स्थान है अतः पाठकों की सुविधा के लिये अँगरेजी संस्कृत भूमिकादि के साथ सम्पादित किया गया है। अभिनव संस्करण [चौ. १००] ३-००

६४ **किरातार्जुनीयम् (प्रथमः सर्गः)** प्रो० समीर शर्मा सम्पादित संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित।

गोरखपुर विश्वविद्यालय की बी० ए० परीक्षा में निर्धारित इस प्रथम सर्ग की अत्यन्त स्पष्ट, सरल एवं सुबोध व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। व्याख्याकार ने अपने अध्यापनानुभव से परीक्षोपयोगी समस्त विषयों का यथास्थान खुलासा प्रतिपादन किया है। परीक्षार्थियों को अब पृथक् से नोट्स लिखने की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आरम्भ की भूमिका में महाकवि भारवि का समय, पूर्ववर्ती आचार्यों की परम्परा उसमें भारवि का स्थान, देश-काल, विषय-वस्तु आदि का मार्मिक परिचय दिया गया है। परीक्षार्थियों के लिये यह संस्करण सब से उत्तम है [वि० सं० १४६] १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६५ **किरातार्जुनीयम्**—मल्लिनाथी सुधा व्याख्या सहित ।
इसमें सर्वप्रथम पात्रपरिचय; संक्षिप्त कथा तथा क्रमशः मल्लिनाथकृत घण्टापथ व्याख्या, सुधा व्याख्या, कोश, समासादि, व्याकरण, वाच्यपरिवर्तन, सरलार्थ, हिन्दीभाषार्थ, उपयुक्त टिप्पणियाँ, शिक्षासंग्रह, आदि परीक्षोपयोगी बहुत से विषय दिये गये हैं। १-२ सर्ग १-२५, १-३ सर्ग [का. ७४] २-००

६६ **किरातार्जुनीयम्** (तृतीय सर्ग) 'घण्टापथ' सुधा व्याख्या आगरा विश्वविद्यालय में पाठ्य स्वीकृत इस तृतीय सर्ग की संस्कृत व्याख्या में अन्वय समास-विग्रह, व्याकरण, वाच्यपरिवर्तन, भावार्थ आदि परीक्षोपयोगी विषय देकर हिन्दी व्याख्या तथा भूमिका में ग्रन्थ और ग्रन्थकार का तुलनात्मक विवेचन किया गया है [का. ७४] १-००

६७ **किरातार्जुनीयम्** । विश्वविद्यालय पाठ्यस्वीकृत १३वाँ सर्ग । सान्वय संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, समास, व्याकरण, कोश, हिन्दीपद्य, भावार्थ आदि सहित । व्याख्याकार—डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय [वि. सं. ८६] १-२५

६८ **किरातार्जुनीयम्**—घण्टापथ-प्रकाश संस्कृत-हिन्दीव्याख्या । मल्लिनाथ कृत घण्टापथ टीका के साथ साथ 'प्रकाश' नामक सरल हिन्दी व्याख्या होने से इस संस्करण की उपयोगिता बढ़ गयी है। हिन्दी व्याख्या में प्रायः सर्वत्र ही महाकवि भारवि की गूढ़ ग्रन्थियों को नतु-नच करके खोल दिया गया है तथा ग्रन्थ के आरम्भ में महाकवि की जीवनी एवं प्रत्येक सर्ग का संक्षिप्त कथासार भी दे दिया गया है
संपूर्ण [ह. १०५] ४-००

६९ **किरातार्जुनीयम्** । उपर्युक्त व्याख्या सहित केवल १-५ सर्ग [ह. १०५] १-५०

७० **कृष्णस्य शान्तिप्रयासः** । (महाभारत उद्योगपर्व अध्याय ८१-९३) 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । वाराणसी की शास्त्री परीक्षा द्वितीय खण्ड अनिवार्य द्वितीयपत्र निर्धारित ।
श्री बालकेशवप्रसाद मिश्र विरचित इसकी संस्कृत हिन्दी व्याख्या ससन्दर्भ प्रस्तुत की गई है। शास्त्री के विद्यार्थी अल्पायासेन स्वयं इसका अध्ययन कर सकते हैं। इसकी समालोचनात्मक भूमिका-कथासार भी छात्रों के लिए अधिक उपयोगी है। [वि. सं. १२०] १-५०

*७१ **कुट्टनीमतम्** । (शम्भलीमतकाव्यं) दामोदर गुप्त विरचित । हिन्दी टीका सहित ६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७२ **कुमारसम्भवः**। सान्वय 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। इस संस्करण को पढ़कर संस्कृत का विशिष्ट ज्ञान न रखने वाले व्यक्ति भी अनुवाद की मधुरता से मूल काव्य का रसास्वादन करने में समर्थ हो सकेंगे। ग्रन्थ के आदि में महाकवि की काव्य कलात्मक विस्तृत समीक्षा भी प्रस्तुत कर दी गई है। संपूर्ण [वि. सं. १०५] ३-००

७३ **कुमारसम्भवः**—'पुंसवनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतः। इस टीका की विशेषताएँ—प्रत्येक श्लोक का १ अवतरण सहित दण्डान्वय, २ परीक्षोपयोगी व्याख्या, ३ विग्रह, व्याकरण, कोश, अलङ्कार, छन्द, प्रमाणप्रदर्शन, मल्लिनाथादि प्रदर्शित दोषोद्धार, व्युत्पत्ति, ४ संस्कृत में भावार्थ, ५ भाषा के संक्षिप्त पदों के द्वारा श्लोकाभिप्राय, ६ हिन्दी में सरल भावार्थ, ७ प्रत्येक सर्ग की कथा का संक्षेप में संग्रह, ८ विशिष्ट भूमिका इत्यादि प्रथम सर्ग १-००, १-४ सर्ग २-५०, १-५ सर्ग ३-५०, षष्ठ सर्ग १-०० एवं सप्तम सर्ग १-००, १-७ सर्ग [ह. ९०] ५-००

७४ **कुमारसंभवः** (प्रथम और पंचम सर्ग)

प्रोफेसर कान्तानाथ शास्त्री तैलंग विरचित नोट्स तथा विस्तृत प्रस्तावनादि विभूषित 'पुंसवनी' नामक संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। बिहार की मध्यमा परीक्षा तथा अंग्रेजी की आई० ए० और बी० ए० परीक्षा में निर्धारित इस संस्करण के 'नोट्स' मात्र के अध्ययन से भी विद्यार्थी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं [ह. ९०] २-००

७५ **कुमारसंभवः**—(पंचम सर्ग) उपर्युक्त सभी विषयों से युक्त [ह. ९०] १-००

७६ **हिन्दी कुवलयानन्द**। व्याख्याकार, डॉ० भोलाशंकर व्यास। इसकी व्याख्या में शास्त्रार्थस्थलों को सुबोध बनाने की अथक चेष्टा की गई है। कुवलयानन्दकार की परिभाषाओं, भेदों तथा उदाहरणों की जहाँ जहाँ पण्डितराज ने रसगंगाधर में आलोचना की है, उन-उन स्थलों पर पण्डितराज के आक्षेपों को उपन्यस्त कर ग्रन्थ को अधिक उपयोगी बनाया गया है। आरम्भ में एक विस्तृत भूमिका है जिसमें प्रायः सभी प्राचीन अलंकारशास्त्रियों के मतों का समन्वय एवं समीक्षा आदि है। [वि. सं. २४] ९-००

*77 Kshemendra Studies together with an English Translation of his Kavikanthabharana, Auchityavicaracarca & Suvrittatilaka. By Dr. Suryakanta. 14-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७८ **कौमुदी कथाकल्लोलिनी** । प्रो० रामशरण शास्त्री ।
इस ग्रंथ में रोचक गद्य-कथानकों में कौमुदी के अच्संधि से उत्तरकृदन्त तक के प्रायः सभी उदाहरणों को देकर कथासाहित्य की नवीन विधि का अनूठा प्रयोग प्रस्तुत किया गया है। कथा का आधार कथा-सरित्सागर है। अन्त में छपे 'संस्कृत-हिन्दी-अभिधान' से ग्रन्थ अधिक उपयोगी हो गया है। [वि. सं. ५४] ८-७५

७९ **हिन्दी गाथासप्तशती**। व्याख्याकार—श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी
नायक-नायिकादि की चेष्टाओं एवं मनोभावों की जानकारी इस पुस्तक द्वारा बहुत कुछ सुलभ हो जाता है। इसमें अनुवाद के साथ-साथ विस्तृत भूमिका एवं उपयोगी परिशिष्ट भी सुलभ है
[वि. सं. ५५] ५-००

८० **हिन्दी गाथासप्तशती** । (शताधिक गाथाओं से परिवर्धित शोधपूर्ण संस्करण) व्याख्याकार—श्री जगन्नाथ पाठक ।
प्राकृत भाषा की इस श्रेष्ठतम काव्यकृति में प्राचीन भारतीय संस्कृति तथा ग्राम्यजीवन की अनूठी झाँकियाँ है। अलंकार-शास्त्र का तो यह बीज ही है। जर्मनी से प्रकाशित शोधपूर्ण दुर्लभ संस्करण के आधार पर मूलानुवाद तदनु विमर्शात्मक सुविशद हिन्दी व्याख्या, समालोचनात्मक सुविस्तृत भूमिका, सानुवादशताधि दुर्लभ गाथाओं से विभूषित परिशिष्ट आदि प्रमुख विशेषताओं के कारण अपने विषय का राष्ट्रभाषा में यह संस्करण सर्वश्रेष्ठ प्रकाशित हुआ है। २०-००

८१ **गीतगोविन्दकाव्यम्** । महाकवि-जयदेव विरचितम्। 'इन्दु' नामक हिन्दी भाषाटीका विस्तृत भूमिका सहित [ह. १२९] १-२५

82 Gita-Govinda of Sri Jayadev: The Loves of Krishna and Radha. Rendered from Sanskrit into English and Illustrated by George Keyt. 15-00

*८३ **चउप्पन्नमहापुरिसचरियं**। सिरि-सीलंकायरियविरइयं। अमृतलाल मोहनलाल भोजक संपादित २१-००

८४ **चन्द्रप्रभचरितम्** । 'सुधा' हिन्दी व्याख्या सहित।
पं० अमृतलाल जी जैन ने इसकी सरल सुबोध सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या, टिप्पणी तथा परिशिष्ट में पारिभाषिक शब्दकोश आदि से सुसज्जित कर समालोचना में महाकवि वीरनन्दी का इतिवृत्त तथा कथासार भी लिख दिया है। आगरा यूनिवर्सिटी के छात्रों के लिए यह संस्करण अधिक उपयोगी है। [ह. २०७] ०-४५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८५ **चतुर्वेदीय संस्कृत रचनावली** । महामहोपाध्याय विद्यावाचस्पति पं. गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी विरचित प्रकाशित अप्रकाशित यावत्, निबन्धों का संग्रह [का. १६९] २०-००

८६ **चन्द्रप्रभाचरितम्** । म० म० श्री शङ्करलाल विरचितम् 'पौर्णमासी' संस्कृत व्याख्या, परिशिष्ट, नोट्स सहित ।

इसकी शैली दण्डी एवं बाणभट्ट की कोटि की उत्कृष्ट है । अनेक परीक्षाओं में पाठ्य स्वीकृत हो जाने के कारण इसका सर्वबोध्य सुगम छात्रोपयोगी व्याख्या तथा नोट्स भी प्रस्तुत कर दिया गया है

[वि. सं. ८४] ५-००

*८७ **चन्द्रापीडचरितम्** । अनन्ताचार्य विरचितम् । नेट ०-७५

८८ **चन्द्रालोकः** । गागाभट्टकृत 'राकागम' टीका सहित [चौ. ८३] ४-००

८९ **चन्द्रालोकः** । पौर्णमासी-कथाभट्टी संस्कृत-हिन्दी व्याख्या ।

इस संस्करण में बहुत से परीक्षोपयोगी विषयों को सरल शब्दों में परिष्कृत कर दिया गया है । इस संस्करण की एक यह विशेषता है कि मूल ग्रन्थ की हिन्दी टीका के साथ-साथ संस्कृत टीका की भी हिन्दी टीका कर दी गयी है । संपूर्ण [ह. ५७] ३-००

९० **चन्द्रालोक-पञ्चममयूखः** । डॉ० सुरेन्द्रदेव शास्त्री कृत सविमर्श 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित [ह. २६५] १-५०

९१ **चन्द्रालोक-रहस्यम्** । (चन्द्रालोक-प्रश्नोत्तरी)

इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि प्रश्न के उत्तर में अधीत विषय को संक्षिप्त रूप में लिखने की शैली और विषय का ठोस ज्ञान एक साथ ही होता चलता है । [वि. सं. ३०] १-२५

९२ **चम्पूभारतम्** । 'प्रकाश' संस्कृत हिन्दी व्याख्योपेतम् ।

आचार्य रामचन्द्र मिश्रजी ने अपनी टीकाओं द्वारा इसे ऐसा सुबोध बना दिया है कि संस्कृत न जानने वाले भी समान रूप से इसका आनन्द ले सकते हैं । चंपू साहित्य के और भी प्रमुख ज्ञातव्य विषय इस प्रकार उपनिबद्ध कर दिये गये हैं कि चंपू का पूर्वापर देश, काल और उसकी प्रतिष्ठा अनायास ही हृदयंगम हो जाती है [वि. सं. ३१] ८-००

९३ **चम्पूरामायणम्-(बालकाण्डम्)** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् । व्याख्याकार, आचार्य रामचन्द्र मिश्र

[वि. सं. २६] ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९४ **चम्पूरामायणम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् ।
आचार्य रामचन्द्र मिश्र की लौह लेखनी से प्रसूत छात्रोपयोगी आधुनिक विस्तृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या के साथ यह अभिनव संस्करण संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी छात्रों के लिए समान रूप से उपादेय है । इसकी मनोवैज्ञानिक हिन्दी समालोचना तो परीक्षार्थी विद्यार्थियों के लिये सबसे अधिक उपयोगी है [वि. सं. २६] ६-००

९५ **चारुचर्या** । महाकवि श्री क्षेमेन्द्र विरचित मूल श्लोक तथा 'प्रकाश' हिन्दी अनुवाद सहित । [वि. सं. ९२] १-००

९६ **हिन्दी चारुचर्या** । सम्पादक : श्री देवदत्त शास्त्री ।
श्री क्षेमेन्द्र विरचित चारुचर्या का यह हिन्दी रूपान्तर है । यह ग्रन्थ भारतीय सदाचार एवं शिष्टाचार का कोष है । मनुष्य जिन आचरणों और व्यवहारों से सामाजिक अभ्युदय प्राप्त कर जीवन का लक्ष्य प्राप्त करता है—उनका एकत्र समुच्चय इस पुस्तक में है । [वि. रा. ४४] २-००

*९७ **चित्रमीमांसा** । अप्पय दीक्षित कृत । धरानन्द कृत सुधा संस्कृत व्याख्या सहित १६-००

९८ **चिन्तन के नये चरण** । श्री देवदत्त शास्त्री ।
इस पुस्तक के निबन्धों के सभी विषय सामान्य और व्यापक होने के साथ ही साहित्यकारों एवं अनुसन्धायकों के नित्य उपयोग के हैं ।
[वि. रा. ३१] ६-००

९९ **छन्दःकौमुदी** (चौखम्बा प्रकाशन) म. म. नारायणशास्त्री
अल्पवयस्क बालकों को सरल सुबोध भाषा में छन्द का ज्ञान कराने के लिए यह पुस्तक अद्वितीय है । अश्लीलांश वर्जित सोदाहरण छन्दों की सरल हिन्दी व्याख्या तथा छन्दःशास्त्रप्रणेताओं का संप्रदायक्रम, प्रश्नोत्तर और विशिष्ट भूमिका में छन्दःशास्त्र का इतिहास भी लिखा गया है ।
[का. ८२] ०-४०

*१०० **छन्दश्चन्द्रिका** । प्रथमा के विद्यार्थियों के लिए छन्द की उत्तम पुस्तक ०-१२

१०१ **छन्दस्सारः** । भाषा टीका प्रश्नपत्र उदाहरणसहित । [ह. १२] ०-१५

१०२ **छन्दोमञ्जरी** । 'प्रभा' 'रुचिरा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेता ।
यह व्याख्या प्रतिशब्द के पर्याय, कोष, व्याकरण, अलंकार, भावार्थ आदि के साथ ग्रन्थ के अभिप्राय को बड़ी सुगमता से व्यक्त करने में समर्थ हुई है । [ह. ११५] २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०३ **छन्दोविंशतिका**—सोदाहरण 'विमला' टीका सहित। संपादक, पं० रामचन्द्र झा। वाराणसी तथा बिहार की प्रथमा परीक्षा निर्धारित छन्दोविषयक ग्रन्थ।

इस पुस्तिका में बिहार तथा वाराणसी को १–३ खण्ड परीक्षा निर्धारित अश्लीलांश वर्जित केवल २० छन्दों का यथाक्रम से सान्वय सोदाहरण व्याख्या की गई है। अल्प वयस्क बालकों के लिए परीक्षा निर्धारित छन्दों के लिए यह संस्करण सर्वोत्तम है।

मूल्य नाम मात्र [वि. सं. ४८] ०–२५

*१०४ **जानकीहरणम्**। कुमारदास विरचित। हिन्दी टीका सहित। २५–००

*105 Tales from Indian Classics. Retold by Savitri. Illustrated by Pulak Biswas. Foreword by M. Chalapathi Rau. Book–1 3-00

१०६ **हिन्दी दशरूपकम्**। संशोधित, परिवर्तित, सुपरिष्कृत, परिवर्धित नवीन तृतीय संस्करण। व्याख्याकार, डा० भोलाशंकर व्यास।

संस्कृत तथा हिन्दी दोनों व्याख्याएँ अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के अत्यधिक उपयोग की हुई हैं। विद्वान् व्याख्याकार ने शास्त्रार्थ के दुरूह स्थलों पर

इतना सुविस्तृत और गम्भीर विवेचन किया है कि यह हिन्दी व्याख्या दशरूपक की एक स्वतन्त्र मौलिक रचना के रूप में परिणत हो गई है। ग्रन्थ के आरम्भ में अतिविस्तृत भूमिका देकर भारतीय नाटकों की उत्पत्ति, नाट्यशास्त्र का इतिहास तथा नाट्यशास्त्र के सिद्धान्तों को विस्तार से विश्लेषित किया गया है। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि इस रचना से हिन्दी साहित्य की भी अवश्यमेव श्रीवृद्धि हुई है। संस्कृत तथा हिन्दी के अधिकारी विद्वानों और सम्मेलन पत्रिका (प्रयाग), 'आज' (वाराणसी) तथा 'हिन्दीवाङ्मय' पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है

[वि. सं. ७] ७–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०७ **दशरूपकम्** । धनञ्जय कृतम् । धनिककृत 'दशरूपावलोक' टीकोपेतम् । जगद्गुरु श्रीचरणतीर्थमहाराजकृत विस्तृत अंग्रेजी व्याख्या, टिप्पणी, सुविस्तृत संस्कृत भूमिका आदि सहित ।

संस्कृत नाट्य-नाटक साहित्य बहुत ही प्राचीन एवं समृद्ध है । नाटक निर्माणशैली, अभिनयकला, विविध नाट्याङ्ग आदि विषयों के विवेचन के लिए महर्षि भरत ने नाट्यशास्त्र की रचना की थी । किन्तु नाट्यशास्त्र विशाल तथा बहुधा विकीर्ण होने के कारण परवर्ती समय में नाट्य लक्षणों के संक्षेप से वर्णन की आवश्यकता पड़ी । उसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए दशरूपक की रचना हुई है । आज संस्कृत नाटक साहित्य के अध्ययन में धनञ्जयकृत दशरूपक और धनिककृत उसकी टीका अपरिहार्य हैं । प्रस्तुत संस्करण की संस्कृत अंग्रेजी व्याख्या सभी कोटि के विद्यार्थी तथा विद्वानों को लाभदायक होगी । सुविस्तृत संस्कृत भूमिका से इस संस्करण का महत्त्व और बढ़ गया है । (सम्पूर्ण ग्रन्थ शीघ्र प्राप्त होगा) प्रथम प्रकाश [का. १८६] १२-००

१०८ **दशकुमारचरितम्** । बालबोधिनी-संस्कृत-हिन्दी-व्याख्या ।

साहित्यरत्नाकर पं० ताराचरणभट्टाचार्य की लौह लेखनी से रञ्जित बालबोधिनी संस्कृतहिन्दी व्याख्या विभूषित यह संस्करण सब संस्करणों से श्रेष्ठ एवं परीक्षोपयोगी है । [ह. ९२] संपूर्ण ५-५०

पूर्वपीठिका १-२५ पूर्व पीठिका तथा प्रथम और अष्टम उच्छ्वास २-००

अपहारवर्मचरित पर्यन्त अभिनव भूमिका संयोजित संस्करण ३-००

१०९ **दशकुमारचरितसारः** । डा० सत्यव्रत सिंह ।

महाकवि दण्डि-विरचित सम्पूर्ण दशकुमारचरित में वर्णित दसों कुमारों का चरित अत्यन्त सरल रूप में इस प्रकार उपनिबद्ध किया गया है कि तनिक भी असम्बद्धता नहीं प्रतीत होती । पुस्तक अपने में पूर्ण मौलिक प्रतीत होती है । [चौ. पु.] १-००

११० **देववाणी-परिचायिका** । श्री चक्रधर शर्मा ।

इस ग्रन्थ में वाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भगवद्गीता, महाभारत, पञ्चतन्त्र, दूतवाक्य, भोजप्रबन्ध, मनुस्मृति, कुन्दमाला, बुद्धचरित, हितोपदेश, नागानन्द नाटक, चाणक्यनीति, विदुरनीति, भर्तृहरिशतक आदि सुरभारती के सुप्रसिद्ध प्रतिनिधि ग्रन्थों के उद्धरणों का रसमाधुर्य ओत प्रोत है । (यू० पी० हाईस्कूल के लिए पाठ्य स्वीकृत) [चौ. पु.] १-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१११ **धम्मपदं** । (शोधपूर्ण संस्करण) सटिप्पण 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित । व्या०—श्री कनछेदी लाल गुप्त । सं०—श्री सत्कारिशर्मा वङ्गीय ।

सुत्तपिटक के अन्तर्गत खुद्दकनिकाय का एक अंश यह ग्रन्थ महामानव श्रीगौतम बुद्ध के ४२३ बहुमूल्य उपदेशों का उत्तम संग्रह है। इसका प्रस्तुत संस्करण सामान्य छात्र से लेकर विशिष्ट विद्वान् तक सभी स्तर के पाठकों के लिये उपयोगी है। सिंहली, बर्मी आदि पाठों तथा टीकाओं के आधार पर प्रस्तुत विशुद्ध पाठ; भाषाविज्ञानसम्मत संस्कृत छाया; प्राञ्जल हिन्दी व्याख्या; सभी महत्त्वपूर्ण शब्दों पर दार्शनिक, पारिभाषिक, वैयाकरणिक, ऐतिहासिक, भाषावैज्ञानिक और तुलनात्मक टिप्पणियाँ; अँगरेजी, जर्मन, लातिन, हिन्दी, बँगला आदि भाषाओं में प्रस्तुत पूर्व-पूर्व संस्करणों में उपलब्ध सामग्री का पूर्णतया विवेचन; गाथासूची, शब्दकोश आदि अनेकविध शोधपूर्ण नवीनताओं से मण्डित यह संस्करण भारतीय भाषाओं में आजतक के प्रकाशित संस्करणों में सभी दृष्टियों से सर्वोत्तम एवं तत्काल क्रय कर लेने योग्य है। [वि. सं. १५०] ३-००

११२ **धर्माधिकारिवंशवर्णनम्** । श्रीवेणीरामपण्डितधर्माधिकारि विरचित [चौ. पु.] समाप्त

+११३ **धार्मिकवर्णनलक्षणकाव्यम्** । ०-४०

११४ **हिन्दी ध्वन्यालोक-लोचन** । आचार्य जगन्नाथपाठक ।

इस ग्रन्थ में 'ध्वन्यालोक' तथा उसकी टीका 'लोचन' का इतना सुन्दर अनुवाद दिया गया है कि छात्रों को ग्रन्थ लगाने में तनिक भी आयास नहीं होगा। गूढ ग्रन्थि और अस्पष्टता के निवारण के लिये सुविशद टिप्पणी के रूपमें व्याख्यात्मक विवेचन देकर ग्रन्थाशय को सुस्पष्ट कर दिया गया है। सम्बद्ध विषयों के विचार से परिपूर्ण विशद भूमिका भी ग्रन्थ-गौरव के अनुकूल प्रस्तुत की गई है। मूल लोचन में संशोधन भी किया गया है। अपनी कोटि का यह सर्वप्रथम उपयोगी संस्करण है।

प्रथम उद्द्योत ४-००

सम्पूर्ण ग्रन्थ [वि. सं. ९७] १६-००

११५ **ध्वन्यालोकः** । कविशेखर पं० बदरीनाथ शर्मा कृत 'दीधिति' संस्कृत व्याख्या, तथा श्रीशोभित मिश्र कृत हिन्दी व्याख्या, विस्तृत प्रस्तावना सहित । प्रथम-द्वितीय उद्योत [ह. ६६] ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११६ **ध्वन्यालोकः ।** 'दीधिति' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतः ।
कविशेखर श्री पं० बदरीनाथ झा विरचित 'दीधिति' व्याख्या में ग्रन्थ की गूढ़ग्रन्थियों को नवीन शब्दावली में अभिव्यक्त किया गया है । इस संस्करण में 'दीधिति' टीका के अनुरूप सुविस्तृत सुबोध प्राञ्जल राष्ट्रभाषा हिन्दी में भी प्रतिपद की सारगर्भित व्याख्या भी की गई है । समालोचनात्मक प्रस्तावना आदि से सुसज्जित शोधपूर्ण संस्करण [ह. ६६] ९-००

११७ **ध्वन्यालोकः ।** बालप्रियादिव्याञ्जनाभ्यां समुपेतेन श्रीमदभिनवगुप्तपाद विरचितेन लोचनेन सहितः । [का. १३५] समाप्त

११८ **ध्वन्यालोक-रहस्यम् ।** (परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी)
इस पुस्तक में काशी तथा विहार आदि की परीक्षाओं में आये हुये प्रायः सभी प्रश्नों के उत्तर सरल, सुबोध तथा संक्षिप्त रूप से लिखे गये हैं । साथ ही प्रथम उद्द्योत से लेकर संपूर्ण ग्रन्थ की परीक्षा में आने योग्य पंक्तियों की परीक्षोपयोगी व्याख्या भी कर दी गयी है । [ह. २५५] २-००

११९ **ध्वन्यालोकसारः ।** आचार्य श्रीपुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी ।
इस ग्रन्थ के योग्य विद्वान् रचयिता ने संपूर्ण ग्रन्थ के सभी स्थलों का सार इस प्रकार सरल भाषा में संगृहीत कर दिया है कि केवल इसी पुस्तक के अवलोकन मात्र से इस विस्तृत ग्रन्थ या इसकी सहायक अन्य टीकाओं को देखने की आवश्यकता नहीं रह जाती । [ह. २४९] १-२५

१२० **हिन्दी नलचम्पू ।** महाकवि त्रिविक्रम भट्ट विरचिता
(चण्डपालकृत विषमपद 'प्रकाश' संस्कृत व्याख्या सहित)
व्याख्याकार, श्री कैलाशपति त्रिपाठी ।
इसकी विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या में श्लोकों की व्याख्या के साथ चण्डपाल की संस्कृत व्याख्या की भी सविमर्श व्याख्या की गई है । अनेकार्थक श्लोकों की व्याख्या भी विविध रूप से प्रस्तुत है । इसकी समालोचनात्मक लगभग १०० पृष्ठ की बृहत् भूमिका छात्रों के लिए अधिक उपयोगी है । प्रथम उच्छ्वास २-००
१-२ उच्छ्वास ३-०० सम्पूर्ण [का. ९८] ११-००

१२१ **नलोपाख्यानम्** (महाभारत वनपर्व) श्री काशीनाथ द्विवेदी विरचित सान्वय 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या समालोचनात्मक भूमिकादि सहित [ह. २६६] २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

122 NALOPAKHYANAM : Story of Nala. An Episode of the Maha-Bharata. The Sanskrit Text, with a Copious Vocabulary and An Improved Version of Dean Mionan's Translation. By Monier Williams. [Chow. Sans. Studies Vol. LIII] 25-00

१२३ **नवसाहसांकचरित** । आचार्य परिमल पद्मगुप्त कृत । हिन्दी व्याख्या तथा विस्तृत अध्ययन सहित । व्या०— श्री जितेन्द्रचन्द्र भारतीय ।

इसकी सारगर्भित हिन्दी व्याख्या में ग्रंथ के भाव, भाषा, छन्द, शैली, रस, अलंकार आदि का विशद विवेचन किया गया है ।

आगरा विश्वविद्यालय की परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत प्रथम सर्ग ०-७५
विस्तृत भूमिका सहित संपूर्ण [वि. सं. ६६] १०-००

१२४ **नीलकण्ठविजयचम्पूः** । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित

संस्कृत काव्यानन्द हिन्दी जानने वालों को भी प्राप्त हो इस उद्देश्य से आचार्य रामचन्द्र मिश्र ने हिन्दी व्याख्या सहित यह संस्करण प्रस्तुत किया है । व्याख्या की भाषा का गुम्फन इस कौशल के साथ किया गया है कि मूल न पढ़ने पर भी वैरस्य न उत्पन्न हो । [वि. सं. ११२] ४-००

१२५ **नैषधीयचरितम्** । 'जीवातु' 'मणिप्रभा' व्याख्योपेतम् ।

म० म० मल्लिनाथ कृत दुष्प्राप्य अति प्राचीन विशुद्ध 'जीवातु' टीका के साथ-साथ नारायणी टीका की सारभूत इसकी 'मणिप्रभा' नामक विस्तृत हिन्दी टीका ने तो गागर में सागर भर दिया है । हिन्दी टीका में नारायणी टीका के अनुसार अनेकार्थक सभी श्लोकों के प्रत्येक अर्थ को भिन्न-भिन्न रूप से खोल दिया गया है ।

प्रथम सर्ग १-००, १-३ सर्ग १-७५, १-५ सर्ग ३-५०,
१-९ सर्ग ६-०० संपूर्ण ग्रन्थ [ह. २०५] १४-००

१२६ **नृसिंहचम्पूः** । विमर्शाख्य संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । व्याख्याकार, डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री ।

सरल एवं सरस संस्कृत-हिन्दी में पहली बार अनूदित इसकी विस्तृत भूमिका में सम्पूर्ण ग्रन्थ की विशद आलोचना तथा कवि का प्रामाणिक इतिवृत्त वर्णित है । यह ग्रन्थ विद्यार्थियों के लिये अधिक उपादेय है ।

[वि. सं. ४३] २-५०

*१२७ **पउमचरियं** । विमलसूरि विरइयं । हिन्दी अनुवाद सहित ।
प्रथमो भागः १८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२८ **पञ्चामृत** । सम्पादक : प्रो० गौतम हंसवंशी

बी० ए० कक्षा में निर्धारित सूर-तुलसी-केशव-बिहारी-भूषण—के काव्यों के सभी अंश इसमें क्रमशः उपनिबद्ध हैं। कवि का प्रामाणिक जीवन-वृत्त, शब्दार्थ-भावार्थ, टिप्पणी आदि देने से इसकी सुबोधता और भी बढ़ गई है। [चौ. पु.] ३-००

*129 Padya Pushpanjali (A Nosegay of Sanskrit Poems). Text and Eng. Translation by V. Subrahmanya Iyer. Nett 2—00

१३० **पारिजातहरणचम्पूः** । महाकवि शेषश्रीकृष्णविरचिता । सान्वय—'श्रद्धा' हिन्दी व्याख्योपेता ।

'पारिजात-हरण' जैसे रोचक प्रसंग का चम्पू-काव्यबद्ध होना ही बड़ी रसपूर्ण बात है। उस पर कुशल टीकाकार की भावानुकूल संस्कृत-हिन्दी व्याख्याओं से सर्वबोध्य होकर यह ग्रन्थ और भी उपयोगी हो गया है। व्याख्याएँ अति विशद एवं सरस होने से साहित्यानुरागियों के लिये विशेष उपकारक हैं। [वि. सं. ८१] ३-५०

१३१ **पिङ्गलच्छन्दःसूत्रम्** । (वैदिकच्छन्दःप्रकरणान्तम्) हलायुधवृत्तियुत-सटिप्पण-कादम्बिनी हिन्दी भाषा टीका सहित [ह. १८३] १-००

१३२ **पुष्पबाणविलासम्** । महाकवि श्रीकालिदास विरचित । 'प्रकाश' संस्कृत—हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार—पं० सोमनाथ शास्त्री ।

ध्वन्यालोक आदि अलंकार शास्त्रीय ग्रन्थों से पता चलता है कि एक समय काव्य रसिकों में कोश काव्यों का बड़ा ही महत्त्व था। प्रस्तुत पुस्तक भी एक कोश काव्य है; जिसमें २६ शृङ्गाररसात्मक उत्तम श्लोकों का संग्रह है। इसकी व्याख्या सरल संस्कृत टीका में सभी समस्त पदों के विग्रह वाक्य तथा अर्थ इस ढंग से किए गए हैं कि मूल श्लोक का आशय अनायास समझ में आ जाता है। हिन्दी व्याख्या भी मूलानुसारी तथा प्राञ्जल है। [ह. २८०] १-००

१३३ **पौराणिक कथाएँ** । श्री हृदयराम शर्मा ।

उदात्त चरित्रों से परिपूर्ण लगभग ७४ पौराणिक कथाओं को लोकरुचि के अनुकूल रूप देकर यह ग्रन्थ सम्पादित किया गया है। आबाल-वृद्ध सभी को इसमें पर्याप्त रुचिपूर्ण कहानी कहने-सुनने की प्रवृत्ति तुष्ट होकर उत्कृष्ट मनोरंजन भी होगा। [वि. रा. ४५] २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१३४ **प्राकृतपैंगलम्**। संस्कृत व्याख्यात्रयोपेत। हिन्दी टीका सहित। संपादक-डॉ० भोलाशंकर व्यास। १-२ भाग ३१-००

१३५ **प्राकृतपुष्करिणी**। हिन्दी अनुवाद सहित। डॉ. जगदीशचन्द्र

इस ग्रन्थ में ध्वन्यालोक, दशरूपक, सरस्वतीकण्ठाभरण, अलङ्कार-सर्वस्व, काव्यप्रकाश, काव्यानुशासन आदि अलङ्कार ग्रन्थों में उद्धृत प्राकृत की सर्वश्रेष्ठ चुनी हुई ५०० गाथाओं का वर्णानुक्रम से सङ्कलन है [वि. सं. ५९] २-००

१३६ **प्रियतम्यां परमेश्वरः**। टालस्टाय-कथा-सप्तकम्। डॉ० भगीरथ प्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री' यन्त्रस्थ

*137 Priya-Pravas of Harioudha. Translated from Hindi Verses into English Prose. Cantos I-V. 1—75

१३८ **प्रेमरसायनम्**। श्री विश्वनाथपण्डित रचितम्। सटीकम् [का. ६३] १-२५

१३९ **बुद्धचरितम्**। वाराणसी की पूर्वमध्यमा के अनिवार्य प्रथम पत्र में पाठ्य स्वीकृत। सरल हिन्दी अनुवाद सहित।

अनुवादक, महन्त श्री रामचन्द्रदास शास्त्री।

हिन्दी ज्ञाताओं को काव्यानन्द के साथ भगवान् बुद्ध के मार्मिक एवं करुण जीवनचरित द्वारा शान्तरस का आनन्द भी सुलभ कराने की दृष्टि से यह संस्करण प्रस्तुत है। इसमें हिन्दी टीका प्रवाहयुक्त तथा सरल एवं सरस है। सम्पूर्ण ग्रन्थ १-२ भाग [वि. सं. ८२] ५-५०

प्रथम भाग (सर्ग १ से १४ तक)—महाकवि अश्वघोष रचित मूल के साथ हिन्दी टीका २-५०

द्वितीय भाग (सर्ग १५ से २८ तक)—महन्त श्री शास्त्री जी द्वारा स्व-परिश्रम-पूर्वक रचित मूल के साथ हिन्दी टीका ३-००

१४० **भट्टिकाव्यम्**। 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेतम्।

'चन्द्रकला' 'विद्योतिनी' संस्कृत हिन्दी व्याख्याओं से युक्त 'भट्टिकाव्य' का परीक्षोपयोगी सम्पूर्ण विषयोंसे विभूषित दूसरा कोई भी संस्करण नहीं है।

१-६ सर्ग ४-००, ७-११ सर्ग ४-००
पूर्वार्ध १ से ११ सर्ग ८-००
उत्तरार्द्ध १२ से २२ सर्ग ५-५०, सम्पूर्ण [ह. १३६] १३-५०

१४१ **भर्तृहरिशतकत्रयम्**। (नीतिशतक, शृङ्गारशतक, वैराग्यशतक) सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या पद्यानुवाद सहित।

मूल के साथ हिन्दी भावानुवाद, हिन्दी पद्यानुवाद भी प्रकाशित किया गया है। संस्कृत न जानने वाले व्यक्ति भी ग्रन्थों के मूल भावों को हृदयङ्गम कर आनन्द के भागी हो सकते हैं। [चौ. पु.] ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४२ **भामिनी-विलासः**। पण्डितराज जगन्नाथ विरचित। सान्वय 'प्रकाश' हिन्दी-व्याख्योपेतः। व्याख्याकारः श्री राधेश्याम मिश्र।

प्रस्तुत ग्रंथ में कवि की अनूठी प्रतिभा का विलास दर्शनीय है। प्रायः सभी विषयों पर एक-से-एक बढ़कर उपदेशप्रद मार्मिक उक्तियाँ इसमें आद्यन्त हैं। व्याख्या में पहले दण्डान्वय फिर हिन्दी रूपान्तर तथा 'व्याख्या' के अन्तर्गत जितना कुछ उस पद्य के सम्बन्ध में विशेष ज्ञेय है, सब विस्तार से दिया गया है। विस्तृत भूमिका में पुस्तक से संबंधित काल-विशेष की संपूर्ण सांस्कृतिक झाँकी प्राप्त हो जाती है। पद्यानुक्रमणिका भी संलग्न है। **अन्योक्तिविलास मात्र** ४-००

सम्पूर्ण [का. १७१] १०-००

१४३ **भारत-कथा**—महामहोपाध्याय श्री गंगाधरशास्त्री विरचित। सान्वय 'बोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। (वाराणसेय सं० वि० की प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत)

इस ग्रन्थ में सम्पूर्ण महाभारतीय कथा का उपनिबन्धन मौलिक श्लोकों में ही बड़े कौशल से किया गया है। प्रस्तुत संस्करण में छात्रों के लिये इसकी बहुत सरल संस्कृत तथा हिन्दीव्याख्या मूल के साथ प्रकाशित की गई है। [वि. सं. ११४] १-००

१४४ **भारतीय साहित्य की रूपरेखा**। डॉ० भोलाशंकर व्यास।

भारतीय संस्कृति तथा साहित्य की परम्परा लगभग पाँच-छः हजार वर्षों से निरन्तर प्रवहमान रूप में उपलब्ध होती है। इस संस्कृति और साहित्य की अट्टालिका के निर्माण का इतिवृत्त प्रस्तुत करना ही इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है। [वि. रा. ५३] ७-५०

१४५ **भोजप्रबन्धः** (सटिप्पण) श्री बल्लालसेन विरचितः। [ह. ४२] ०-७५

१४६ **भोज-प्रबन्धः**। 'राज्यश्री' हिन्दी व्याख्योपेतः।

डॉ० भोलाशंकर व्यास सम्पादित समालोचनात्मक भूमिका तथा भावगर्भित 'राज्यश्री' नामक हिन्दी टीका से सुसज्जित इस संस्करण ने राष्ट्रभाषा को विशेष गौरव प्रदान किया है। [वि. सं २१] १-५०

१४७ **मन्दाकिनी**। डॉ० देवर्षि सनाढ्य।

वाल्मीकि, कालिदास, भर्तृहरि, भारवि, श्रीहर्ष, मयूर, जयदेव आदि संस्कृत-साहित्य के महान् मनीषियों की रचनाओं का हिन्दी-व्याख्यात्मक परिचय पाठकों को भारतीय साहित्य के प्रति निष्ठा की भावना उत्पन्न करेगा। [वि. रा. २२] १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४८ **महाकवि कालिदास** । (देव पुरस्कार से पुरस्कृत)

डॉ० रमाशंकर तिवारी विरचित इस ग्रंथ में कालिदास एवं उनकी कृतियों पर अत्यन्त प्रामाणिक, अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है। महाकवि की प्रत्येक कृति का इस प्रकार समीक्षण प्रथम बार देखने को मिलेगा। सर्वश्रेष्ठ संस्करण। [वि. रा. ४१] यन्त्रस्थ

१४९ **मूलरामायण-महाभारतीयशीलनिरूपणाध्यायौ** ।

प्रथम परीक्षोपयोगी 'सुधा' संस्कृत हिन्दी टीका, कथासार सहित। बालकों को सरल रूप से श्लोकों का अर्थ समझने के लिए इसमें प्रत्येक श्लोक का अन्वय, व्याख्या, समास और वाच्यपरिवर्तन करके हिन्दी भाषा में विस्तृत रूप से व्याख्या प्रस्तुत की गई है [नि.] ०-७५

१५० **मूलरामायण** । उपर्युक्त सब विषयों से युक्त। [नि.] ०-४०

१५१ **महाभारतीयशीलनिरूपणाध्याय** । उपर्युक्त सब विषयों से युक्त [नि.] ०-४०

१५२ **मेघदूतम्** । सान्वय-'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार—आचार्य शेषराज शर्मा

इस संस्करण में प्रत्येक श्लोक की—अन्वय, सरल संस्कृत व्याख्या, संस्कृत सरलार्थ, हिन्दी अनुवाद तथा टिप्पणी—इस क्रम से विशद व्याख्या दी गई है। टिप्पणी में समास-व्युत्पत्ति-कोष-अलंकार-आदि का यथावश्यक निर्देश अत्युपयोगी है।

उपोद्घात के ४० पृष्ठों में कालिदास के जन्म-काल-जीवन तथा रचनाओं का सुस्पष्ट समीक्षण, तदनन्तर प्रकृत काव्य का शास्त्रीय दृष्टि से निकषण, कालिदास की प्रशस्तियां, मेघदूत के सुभाषित, भौगोलिक शब्दों का संक्षिप्त विवरण, संस्कृत 'उदाहरण' में पौराणिक आधार का उद्धरण, पद्यानुक्रमणी आदि शीर्षकों के अन्तर्गत अतिशय छात्रोपयोगी सामग्री दी गई है। [वि. सं. १११] ४-५०

१५३ **मेघदूतम्** । सञ्जीविनी-चारित्रवर्द्धिनी-भावबोधिनी-सौदामिनी नामक संस्कृत-हिन्दी टीकाचतुष्टयोपेतम्।

उपर्युक्त टीकाओं द्वारा जो विभिन्न प्रकार का भाव-प्रकाशन हुआ है उससे छात्रों, अध्यापकों एवं साहित्यानुरागियों को निश्चय ही समान रूप से ज्ञान-संवर्द्धन होगा। [का. ८८] १-२५

154 MEGHA DUTA : English Translation by H. H. Wilson. Fourth Edition. [Chow. Sans. Studies Vol. IX] 7-50

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

155 MANUAL OF CLASSICAL SANSKRIT PROSODY :
By Prof. S. N. Shastri, M. A., D. Phil., LL. B. Shortly

१५६ **मोहन की वंशी : भजनसंग्रह ।** डॉ० व्रजमोहन

कृष्ण-भक्ति की तन्मयता में साधक के हृदय की सहज गति से विगलित भावधारा अत्यन्त सरल एवं स्वाभाविक पदों के रूप में आबद्ध की गई है । एक बार अवश्य पढ़ कर जीवन सफल बनाइए । [चौ. पु.] ०-७५

१५७ **युधिष्ठिर-विजयम् ।** 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या विभूषित ।
व्याख्याकार—प्रो० व्रजेशचन्द्र श्रीवास्तव ।

महाकवि वासुदेव विरचित इस महाकाव्य की तुलना विविधवैचित्र्य से परिपूर्ण संस्कृत साहित्य में विरल है । इस ग्रन्थ की श्रेष्ठता अपने कुछ निजी मौलिक तत्त्वों के कारण है । इसमें महाभारत के पीयूष-पयोधि को अष्टसर्गीय काव्यरूप गागरमें भर देने का कार्य बहुत ही स्तुत्य है । संस्कृत साहित्य में यह एक अनूठा चित्र काव्य है, जिसमें शब्द, अर्थ तथा भावों के चित्रों की झाँकी एक साथ मिलती है । ऐसे काव्य ग्रन्थ को प्राञ्जल हिन्दी टीका के साथ प्रकाशित करने का उद्देश्य एकमात्र यही है कि सभी संस्कृत-हिन्दी प्रेमी पाठक इसका रस ग्रहण कर सकें । [वि० सं० १५२] १२-५०

१५८ **रघुवंशमहाकाव्यम् ।** 'मल्लिनाथी' 'सुधा' व्याख्योपेतम् ।

प्रत्येक श्लोक में क्रमशः अवतरण-श्लोक, मल्लिनाथकृत सञ्जीविनी टीका-अन्वय-'सुधाव्याख्या' कोश-समासादि-व्याकरण-वाच्यपरिवर्तन-तात्पर्यार्थ-हिन्दीभाषार्थ आदि विविध उपयुक्त विषयों से अलंकृत परीक्षोपयोगी टीका के साथ साथ मल्लिनाथ कृत सञ्जीविनी टीका सहित रघुवंश का यह संस्करण सर्वश्रेष्ठ है । १ सर्ग ०-७५, २ सर्ग ०-७५, १ व ५ सर्ग १-५०, १-२ सर्ग १-५०, २-३ सर्ग १-५०, १-४ सर्ग २-५०, १-५ सर्ग ३-००
पृथक् पृथक् प्रत्येक सर्ग [का. ८४] ०-७५

१५९ **रघुवंशमहाकाव्यम् ।** 'सञ्जीविनी' 'मणिप्रभा' टीकोपेतम् ।

'सञ्जीविनी' टीका को आदर्श मानकर 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका में प्रायः सञ्जीविनी टीका की व्याख्या भी कर दी गयी है । किं बहुना, यत्र तत्र विमर्श भी देकर महाकवि कालिदास के भावों को विशदरूप से व्यक्त कर दिया गया है । ग्रन्थ के आदि में समालोचनात्मक विस्तृत हिन्दी भूमिका में महाकवि की जीवनी, समय आदि का विस्तृत विवेचन कर प्रत्येक सर्ग का पृथक् पृथक् संक्षिप्त कथासार भी प्राञ्जल राष्ट्रभाषा में लिखा गया है । संपूर्ण ग्रंथ [का. ५१] ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१६० **रघुवंशमहाकाव्यम्** । 'सञ्जीविनी' 'सणिप्रभा' संस्कृत हिन्दी टीका 'विमर्श' सहितम् । १-५ सर्ग १-५०
६-१४ सर्ग २-०५ ५-१४ सर्ग [का. ५१] २-५०

१६१ **रघुवंशमहाकाव्यम्** । १३-१४ सर्ग । 'चन्द्रकला' संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार पं० श्री शेषराज शर्मा रेग्मी । [ह. २६४] १-७५

१६२ **हिन्दी रसगङ्गाधर** । 'चन्द्रिका' संस्कृत हिन्दी व्याख्या ध्वन्यालोक के सफल टीकाकार जगत् प्रसिद्ध कविशेखर आचार्य बदरी नाथ झा जी की अत्यन्त सरल सुबोध संस्कृत व्याख्या के साथ ही आचार्य मदनमोहन शास्त्री कृत आधुनिक सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या होने से तो सोनेमें सुगन्धि पैदा हो गयी है । यह हिन्दी व्याख्या केवल संस्कृत छात्रों के लिए ही नहीं प्रत्युत हिन्दी-अंगरेजी छात्रों की कठिनाइयों को विशेष ध्यान में रख कर प्रस्तुत की गयी है । इसकी समालोचनात्मक विशाल हिन्दी प्रस्तावना भी छात्रों के लिए अधिक उपादेय है ।
प्रथमानन पर्यन्त प्रथम भाग ९-००
द्वितीयानन का उत्प्रेक्षानिरूपणान्त द्वितीय भाग २०-००
अतिशयोक्त्यलङ्कारादि समाप्तिपर्यन्त तृतीय भाग २०-००
संपूर्ण १-३ भाग [वि. सं. ११] ४९-००

१६३ **रसगङ्गाधररहस्यम्** । (प्रश्नोत्तरी)
आचार्य श्रीमदनमोहन झा की विरचित इस ग्रन्थ में छात्रों के हितार्थ सभी प्रष्टव्य स्थलों पर प्रश्नोत्तर के रूप से सरल तथा सारगर्भित लेख लिखे गये हैं जिनके अभ्यास मात्र से छात्र परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं । [ह. २३३] १-००

१६४ **रसगङ्गाधरहृदयम्** । श्री ज्ञानचन्द त्यागी
इस पुस्तक में रसगंगाधर के सभी प्रश्नोत्तरों का संक्षेप में ही ज्ञान कराया गया है जिसके अभ्यास मात्र से परीक्षार्थी परीक्षा में अनायास सफलता प्राप्त करेंगे । [वि. सं. ११०] २-००

१६५ **हिन्दी रसमञ्जरी** । 'सुरभि' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित
हिन्दी तथा संस्कृत जानने वालों के लिए आचार्य बदरी नाथ झा विरचित 'सुरभि' नामक सरल सुबोध संस्कृत टीका के साथ पण्डित जगन्नाथ पाठक रचित सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या से विभूषित यह संस्करण छात्रों के लिए सर्वथा उपयोगी है [नि.] ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१६६ **रसचन्द्रिका** । श्रीविश्वेश्वरपाण्डेयनिर्मिता । [का. ५३] १-००

*१६७ **रसचन्द्रिका** । श्रीमधुसूदन कवीन्द्र विरचिता । चकोराख्य टिप्पणी सहिता । सम्पादक : डॉ० श्रीशिवनारायण घोषाल शास्त्री । २६-००

१६८ **रसमीमांसाविवेकः** । गङ्गाराम जी विरचित संस्कृत मूल । संस्कृत व्याख्या-आंग्लभूमिका-हिन्दी भूमिका युक्त । व्याख्याकार– डॉ० लाल रमायदुपाल सिंह । शीघ्र प्राप्त होगा

१६९ **रसराज** । कविवर मतिराम प्रणीत । आचार्य रामजी मिश्र रचित सरल सुबोध व्याख्या, समालोचनादि सहित

हिन्दी साहित्य का यह प्राचीन अथ च क्लिष्ट लक्षणग्रन्थ है जिस पर अत्यन्त सरस, सरल तथा प्रामाणिक व्याख्या प्रस्तुत की गई है । समालोचनात्मक विस्तृत भूमिका आदि के सहित यह संस्करण साहित्यानुरागियों तथा अध्येताओं के लिये परमोपादेय है । [वि. रा. ३३] ७-५०

१७० **रसिकाष्टककाव्यम्** । [चौ. पु.] ०-०५

१७१ **राक्षसकाव्यम्** । 'नूतनकिशोरकेलि' व्याख्यासहितम् [ह. ७३] ०-२५

१७२ **राघवनैषधीयम्** । श्रीहरदत्तसूरि विरचितम् । सविशेष-विमर्शिनी-प्रकाश-संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् । व्याख्याकार– पं० रामकुबेर मालवीय ।

इस काव्य में श्री राम के समान एक और युगीन राजा नल के महत्त्व का एक साथ चरित अंकित किया गया है । मानव राजा नल के सौन्दर्य आकर्षण को देवताओं की तुलना में अधिक प्रभावशाली दिखाकर इस चरित के द्वारा कवि देवताओं पर मनुष्य की अनिवार्य विजय घोषित करता हुआ प्रतीत होता है । यह ग्रंथ काव्यों में प्रायः सबसे क्लिष्ट माना जाता है । अभी तक इसका पठन-पाठन अथक श्रम-साध्य था । काशी के सर्वमान्य कवितार्किक मालवीयजी की लौह-लेखनी से सर्वांग-पूर्ण इसकी सुबोध व्याख्याने ग्रन्थ को अत्यन्त सरल बना दिया है । [का. १८९] ३-००

*१७३ **राजतरंगिणी** । हिन्दी टीका सहित २-०००

*174 Rajatarangini of Kalhana or the Chronicles Kings of Kashmir. By Dr. A. Stein. Sanskrit Text, with critical Notes. 75-00

१७५ **रामवनगमनम्** । 'सुधा' संस्कृत टीका के साथ साथ 'इन्दुमती' विस्तृत हिन्दी टीका में श्लोकों के गूढ़ अभिप्रायों को इस तरह सरल शब्दों में अभिव्यक्त कर दिया गया है कि श्लोकार्थ समझने में पाठकों को कठिनाई नहीं होगी । [ह. १८०] १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१७६ **हिन्दी राघवपाण्डवीय।** व्याख्याकार—पं० दामोदर झा।
प्रस्तुत महाकाव्य के रचयिता पण्डित कविराज ने इस ग्रन्थ में आदि से अन्त तक एक ही शब्दावली से रामायण तथा महाभारत दोनों कथानकों का वर्णन किया है। यही इस महाकाव्य की सबसे बड़ी विशेषता है। कविने पाण्डव पक्ष का वर्णन राम के पक्ष के वर्णन से मिला कर तथा कौरव पक्ष का वर्णन रावण पक्ष के वर्णन से मिलाकर किया है श्लेषकाव्यों में यह महाकाव्य सर्वोपरि है। इसके काठिन्य लोक प्रसिद्ध है। सरल सुबोध राष्ट्रभाषा में अनुदित यह ग्रन्थ प्रथम वार प्रकाश में आया है। भूमिका में ग्रन्थ के रचनाकाल, ग्रन्थकार, पात्र-परिचय आदि के वारे में अभिनव विचार सामग्री प्रस्तुत की गयी है [वि० सं० १२८] १२-५०

१७७ **रामाभ्युदययात्रा**—श्री रुद्रप्रसाद अवस्थी सम्पादित। (वाराणसी की शास्त्री प्रथम खण्ड परीक्षा के अनिवार्य प्रथम पत्र निर्धारित) संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित।
[वि. सं. ११९] २-५०

१७८ **रामायणमञ्जरी।** महाकवि क्षेमेन्द्र विरचित। विजयमित्र शास्त्री कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित।
वाल्मीकि रामायण के आधार पर रचित यह ग्रंथ विद्वानों के हृदयों को हर लेने वाला है। नवीन कवि कल्पनाओं से यह ग्रंथ परिपूर्ण है। यह अनुपम काव्य ग्रंथ अभी तक अव्याख्यान ही रहा है। मूल ग्रन्थ भी अप्राप्य था। शीघ्र प्राप्त होगा

*१७९ **रुक्मिणीकल्याणकाव्यम्।** राजचूड़ामणि दीक्षित कृतम्। नेट ५-००

१८० **हिन्दी वक्रोक्तिजीवित।** व्याख्याकार—राधेश्याम मिश्र
सावतरण हिन्दी अनुवाद, विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या, टिप्पणी (नोट्स) समालोचनात्मक प्रस्तावना तथा विविध परिशिष्ट-विभूषित संग्राह्य संस्करण। इस अभिनव संस्करण की विशेषता यह है कि इस क्षेत्र के समस्त मत-मतान्तरों एवं प्रस्तुत ग्रन्थ के पूर्ण टीकागत सम्यक् रूप से अप्रतिपादित अंशों का हृदयस्पर्शी मार्मिक युक्ति प्रमाणों द्वारा जो निराकार किया गया है वह निश्चित ही अभूतपूर्व है। भूमिका में व्याख्याकार ने अब तक की समस्त नवीन गवेषणाओं और उपलब्धियों का समाहार करते हुए पाठकों के लिए प्रस्तुत संस्करण को सर्वतोभावेन सुन्दर एवं उपयोगी वना दिया है। [का. १८०] १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१८१ **वरदाम्बिकापरिणयचम्पूः** । तिरुमलाम्बा विरचित । आंग्लानुवाद सहित । डा० सूर्यकान्त सम्पादित

प्रस्तुत चम्पूकाव्य मध्ययुगीन संस्कृत साहित्य का एक श्रेष्ठ रत्नस्वरूप है । इस चम्पूकाव्य में एक ऐतिहासिक-कथावस्तु को उपजीव्य कर कविकल्पना की पराकाष्ठा दिखलाई गई है । किन्तु खेद की बात यह है कि एक दाक्षिणात्य राज्ञी की इस कृति से उत्तर भारत के संस्कृतज्ञ परिचित नहीं रहे । प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री जी के प्राञ्जल अंग्रेजी अनुवाद तथा महत्त्वपूर्ण टिप्पणियों के साथ परिशुद्ध यह संस्करण सभी वर्ग के पाठकों को उपयोगी सिद्ध होगा । शीघ्र प्राप्त होगा

१८२ **वाग्भटालङ्कारः** । सिंहदेवगणिविरचित संस्कृत-व्याख्या डॉ० सत्यव्रतसिंह कृत 'शशिकला' हिन्दीव्याख्या सहित ।

संस्कृत टीका के साथ विमर्शात्मक हिन्दी व्याख्या हो जाने से अब साहित्य शास्त्र के जिज्ञासुओं की साहित्यविषयक जिज्ञासा इस एक ही लघुकाय ग्रन्थ से पूर्ण हो सकती है । [वि. सं. ३३] २-००

१८३ **वाग्वल्लभः** । पं० दुःखभञ्जनकविकृतः । महामहोपाध्याय कविचक्रवर्ति पं० देवीप्रसादकृत 'वरवर्णिनी' नामक टीकायुतः । छन्दोज्ञान के लिए यह अद्वितीय पुस्तक है । संस्कृत साहित्य में जितने बिखरे हुए छन्द है उन सभी के लक्षण व्याख्या सहित उल्लेख किए गए हैं । संस्कृत तथा हिन्दी उभय कवियों एवं कविता प्रेमियों के लिये यह अवश्य संग्रहणीय ग्रन्थ है । [का. १००] ५-००

१८४ **वासवदत्ता** । 'चपला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेता ।

नवीनपद्धति के अनुकूल इसकी सरल सुबोध संस्कृत टीका में प्रति पद का पर्याय, कोश, अलंकार आदि देकर तदनुरूप हिन्दी टीका में भी पद पद का विस्तृत विवेचन किया गया है । इसकी गवेषणात्मक हिन्दी प्रस्तावना भी अध्ययन करने योग्य है । द्वितीय संस्करण [वि. सं. २] ५-००

१८५ **विक्रमाङ्कदेवचरितम्** । व्याख्याकार—डॉ० गजानन शास्त्री

उच्च कक्षा के परीक्षार्थी विद्यार्थियों के लिये ही नाटक का यह प्रथम सर्ग पृथक् छापा गया है । इसकी व्याख्या में अन्वय देकर प्रतिपद के समास, विग्रह, पर्याय, कोश आदि दिये गये हैं । इसकी हिन्दी व्याख्या परीक्षार्थियों के लिये नोटस् का काम करता है । ४७ पृष्ठ की समालोचनात्मक इसकी भूमिका मात्र से ही परीक्षार्थी मौलिक सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे । प्रथम सर्ग [ह. २७९] २-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१८६ **विक्रमाङ्कदेवचरितम्** । 'प्रबोधिनी' व्याख्योपेतम् ।

राष्ट्रभाषा हिन्दी में छात्रोपयोगी व्याख्या तथा सुविस्तृत प्रस्तावना में ग्रन्थ और ग्रन्थकार का परीक्षार्थियों के लिए अधिक उपयोगी है ।

[ह. २५४] प्रथम सर्ग ०-६५

१८७ **विदुलोपाख्यानम्** । वाराणसी की पुराणेतिहास-पूर्व-मध्यमा प्रथम खण्ड परीक्षा पाठ्य ग्रंथ । 'लीला' 'विलास' संस्कृत हिन्दी टीका सहित । [ह. १८१] ०-६५

१८८ **विद्वद्विभूति** । (बिहार मध्यमा परीक्षापाठ्य ग्रन्थ)

इसमें संस्कृत के प्राचीन तथा नवीन प्रायः सभी उत्कृष्ट विद्वानों की जीवनियाँ सुललित राष्ट्रभाषा में लिखी गई हैं । संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी स्कूल तथा कालेज के छात्र इस ग्रन्थ से विशेष लाभान्वित होंगे ।

[ह. २५६] १-२५

*189 Village. By Mulkraj Anand. 7-50

१९० **विश्रुतचरितम्** । (परीक्षोपयोगी संस्करण)

'बालविबोधिनी' नामक संस्कृत-हिन्दी व्याख्या में समास-विग्रह, आदि से ग्रन्थ के दुरूहांशों को विशेष स्पष्ट कर दिया गया है । संस्कृत का थोड़ा भी ज्ञान रखने वाले छात्र इस संस्करण से विशेष उपकृत होंगे

[ह. ९२] १-२५

१९१ **विश्वगुणादर्शचम्पूः** । श्री बालकृष्ण शास्त्री विरचित 'पदार्थचन्द्रिका' संस्कृतटीका तथा श्री जटाशंकर पाठक कृत सान्वय हिन्दी व्याख्या विभूषित ।

इस दुर्लभ ग्रन्थ में नाटकीय शैली में भूलोक-वर्णनपूर्वक भारतान्तर्गत समस्त प्रमुख नगर-नगरियों, नदियों, आश्रमों, अरण्यों, तथा विविध विषयों के अध्येताओं का अत्यन्त ललित तथा सरस वर्णन संस्कृत भाषा में उपनिबद्ध है । अनूठी कल्पनाएँ तथा उक्ति-चमत्कार इसकी प्रधान विशेषता है । छात्र-अध्यापक तथा संस्कृत न जानने वाले लोग भी इस संस्करण से विशेष उपकृत होंगे । [वि. सं. ९८] १०-००

१९२ **वीरोत्साह-वर्द्धनम्** । श्री पं० सुरेशचन्द्र त्रिपाठी ।

भारत-सीमा पर चीनी आक्रमण के प्रसङ्ग पर छात्रों तथा सैनिकों में उत्साह एवं वीर भावों के उद्बोधन के लिये संस्कृत पद्यों में लिखी यह पुस्तिका अनुपम है । [वि. सं. ९४] ०-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१९३ **हिन्दी वेतालपञ्चविंशति** । व्या०–पं० दामोदर झा ।

प्रस्तुत पुस्तक में पचीस कथायें संगृहीत हैं । वेताल के मुख से कथित ये कथायें सर्वत्र रोचकता के साथ समाप्त होने पर प्रश्न का स्वरूप धर लेती हैं, पुनः राजा विक्रमादित्य के मुख से उनके यथार्थ उत्तरों का विवेचन कराकर पाठक को आनन्दविभोर कर देती हैं । क्लिष्ट संस्कृत में होने से इसकी हिन्दी व्याख्या की नितान्त आवश्यकता थी । बहुत ही सरल तथा प्रवाहमयी प्रस्तुत व्याख्या से मूल के प्रतिपद का अर्थ समझा जा सकता है । आबाल वृद्ध सभी को इससे पर्याप्त रुचिपूर्ण कहानी कहने सुनने की प्रवृत्ति तुष्ट होकर उत्कृष्ट मनोरंजन भी होगा । ग्रन्थ के आदि भाग से सम्पूर्ण ग्रन्थ के पचीसों कथाओं के अविकल हिन्दी रूपान्तर छापा गया है । असंस्कृतज्ञ भी राष्ट्रभाषा के माध्यम से महाराज विक्रम और वेताल के प्रश्नोत्तरात्मक संस्कृत कथाओं के रसास्वादन से अनिर्वचनीय आनन्द को प्राप्त करेगें

[वि. सं. १४४] १०–००

१९४ **वैद्यकीयसुभाषितसाहित्यम्** अथवा **साहित्यिक-सुभाषितवैद्यकम्** । संकलनकर्ता और व्याख्याकार-भास्कर गोविन्द घाणेकर । हिन्दी टीका सहित ।

इसमें आयुर्वेद के विविध ग्रन्थों से तथा श्रुति, स्मृति, पुराण, इतिहास, काव्य, नाटक, चम्पू, सूत्रग्रन्थ, दर्शन, ज्यौतिष, व्याकरण, कोश एवं भाष्यादि विविध स्वरूप के ढाई सौ से अधिक ग्रन्थों से संकलित किये गये संपूर्ण गद्यपद्य वचनों की संख्या ढाई हजार से अधिक है । वैद्यकीय सुभाषित एवं तत्सम, तद्भव तथा तत्सम्बन्धित वचनों का समावेश मूल ग्रन्थ में किया गया है । वैद्यकशास्त्र, स्वास्थ्यविज्ञान, व्याधि विज्ञान तथा चिकित्सा से सम्बन्धित विविध सुसंगतिक क्रम से पैंतालिस अध्यायों में विभक्त किये गये हैं । प्रत्येक अध्याय के मूल वचनों का प्रथम सरल हिन्दी अनुवाद दिया गया है और जहाँ विषयों को अधिक स्पष्ट करने की आवश्यकता रही वहाँ 'वैद्यकरहस्यदीपिका' नामक वक्तव्य दिया गया है । इस ग्रन्थ के पढ़ने से पाठकों को मनोहारी संस्कृत साहित्य-विश्व का मुखदर्शन होगा, साथ ही साथ शरीर स्वस्थ रखने के लिये आवश्यक आहार-विहारादि के नियमों का ज्ञान प्राप्त होगा । संस्कृत साहित्य में प्रौढ पाण्डित्य प्राप्त करने के लिये यह ग्रन्थ अद्वितीय है । विशेष कर आयुर्वेद के विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा चिकित्सकों को तो यह ग्रन्थ अध्ययन, अध्यापन एवं चिकित्सा व्यवसाय में अत्यन्त सहायक और मार्गदर्शक होगा [का. १८४] २५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१९५ **वैराग्यशतकम्।** भर्तृहरि विरचित। सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या तथा हिन्दीपद्यानुवाद सहित [वि. सं. ६१] १-२५

१९६ **वृत्तरत्नाकरः।** 'नारायणी' 'मणिमयी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतः भट्टनारायणभट्टीव्याख्या सहित सुविस्तृत टिप्पणी, मणिमयी हिन्दी टीका विभूषित इस तृतीय संस्करण से परीक्षार्थी विद्यार्थियों की सारी कठिनता दूर हो गई है। [का. ५५] ३-५०

१९७ **वृत्तरत्नाकरः।** मूल श्लोक तथा 'मणिमयी' हिन्दी टीका सहित बालकोपयोगी सुलभ संस्करण [का. १४७] ०-५०

१९८ **हिन्दी व्यक्तिविवेक।** आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी

प्रस्तुत संस्करण के चार अंश हैं—(१) मूलग्रन्थ, (२) व्यक्तिविवेक व्याख्यान नामक प्राचीन संस्कृत टीका, (३) दोनों का परिष्कृत हिन्दी में अनुवाद तथा (४) हिन्दी में ही दोनों की स्वतन्त्र तुलनात्मक समीक्षा। इस संस्करण की प्रमुख विशेषता यह है कि आधुनिक शोधशैली तथा प्राचीन विचारों के समन्वय से इसका महत्त्व और भी बढ़ गया है। विस्तृत भूमिका में विद्वान् लेखक ने काव्यशास्त्र के अनेक विषयों पर ऐसे विचार दिए हैं जो क्रान्तिकारी कहे जा सकते हैं जिससे विचारों को नवीन दिशा भी मिलती है। [का. १२१] १६-००

१९९ **व्यवहारविज्ञानम्।** वाराणसी की प्रथमा परीक्षापाठ्य स्वीकृत। सान्वय 'सुधा' हिन्दी व्याख्या सहित।

संपादक—श्री हरिहर झा।

जीवन-निर्माण में बालकों को भारतीय संस्कृति से अनुप्राणित किस व्यवहार-विधि का पालन करना चाहिए इसका शास्त्रसम्मत रोचक उपदेश ही इस पुस्तक का विषय है। बड़ी उपयोगी रचना है।

प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत प्रथम भाग ०-६०
द्वितीय भाग [ह. २६२] ०-७५

२०० **शिशुपालवधम्।** 'मल्लिनाथी' 'मणिप्रभा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या

इस ग्रन्थ में अनेकार्थक श्लोक अधिक हैं जो परीक्षा में पूछे जाते हैं; विविध प्रकार से उनकी व्याख्या कर दी गयी है और विमर्श में उन ग्रन्थियों को और भी खोल दिया गया है। ग्रन्थ में आई हुई पौराणिक कथायें, प्रत्येक सर्ग के संक्षिप्त कथासार, महाकवि के इतिवृत्त तथा काव्य-महाकाव्यादि के लक्षण-भेद आदि से सुसज्जित यह संस्करण मौलिक संस्करण के रूप में हो गया है।

१-६ सर्ग ३-००, संपूर्ण [वि. सं. ८] ८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०१ **शिशुपालवधम्**। सान्वय-मल्लिनाथी व्याख्या सहितम्।
१-३ सर्ग समाप्त १-२ सर्ग [ह. ८०] समाप्त

२०२ **शिशुपालवधम्**। (तृतीयसर्ग) मल्लिनाथी-वल्लभदेवीटीकाद्वयसहितम्
[चौ. पु.] ०-५०

२०३ **शिशुपालवधम् (प्रथमः सर्गः)** 'सुधा' व्याख्यासहित। संपादक : प्रो० कृष्णमोहन शास्त्री।
गोरखपुर विश्वविद्यालय की बी० ए० प्रथम वर्ष में निर्धारित इस संस्करण की विशेषताएँ—प्रत्येक श्लोक का १. अवतरण सहित दण्डान्वय, २. सरल सुबोध व्याख्या, ३. विग्रह, व्याकरण, कोश, अलङ्कार, छन्द, प्रमाण-प्रदर्शन, मल्लिनाथादि प्रदर्शित दोषोद्धार, व्युत्पत्ति, ४. भावार्थ, ५. हिन्दी भाषा में संक्षिप्त पदों के द्वारा श्लोकाभिप्राय, तात्पर्यार्थ, हिन्दी भाषार्थ, ६. वाच्यपरिवर्तन, ७. परीक्षोपयोगी टिप्पणियाँ (नोट्स), ८. समीक्षात्मक भूमिका, संस्कृत-हिन्दी कथासार आदि। परीक्षोपगोगी सर्वोत्तम संस्करण। [ह. ३३] १-००

२०४ **शिशुपालवधम्**। परीक्षोपयोगि 'सुधा' व्याख्योपेतम्।
परीक्षार्थी विद्यार्थियों के लिए इस संस्करण में प्रत्येक श्लोक के क्रमशः अवतरण, श्लोकान्वय, नवीन सुधाव्याख्या, कोश, समासादि, व्याकरण, वाच्यपरिवर्तन, तात्पर्यार्थ, हिन्दीभाषार्थ, उपयुक्त टिप्पणियाँ, संस्कृत-हिन्दी कथासार, प्रश्नपत्र आदि विषय दिये गये हैं। १-२ सर्ग
[ह. ३३] २-००

२०५ **शुकनासोपदेशः**। व्याख्याकार : झा-बन्धु।
कादम्बरी का यह शुकनासोपदेश प्रकरण सरल संस्कृत व्याख्या-समास-विग्रहादि, हिन्दी अनुवाद, अलंकार-निर्देश टिप्पणी, विशद आलोचनात्मक भूमिकादि सहित छात्रोपयोगी संस्करण [वि. सं. ६४] ३-००

२०६ **शुकसप्ततिः**। विनोदिनी संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेता। व्याख्याकार—श्रीरमाकान्त त्रिपाठी।
प्रस्तुत कथा ग्रंथ में उत्तम उपदेशप्रद ७० कहानियाँ हैं। क्लिष्ट संस्कृत में होने से इसकी व्याख्याओं की नितान्त आवश्यकता थी। बहुत ही सरल तथा प्रवाहमयी प्रस्तुत व्याख्याओं से मूल के प्रतिपद का अर्थ समझा जा सकता है। संस्कृत कथा-साहित्य का वैभव इस ग्रंथ में स्पष्ट देखने को मिलता है। एक से एक अनूठी कथाएँ हैं। व्याख्याओं सहित यह सर्वप्रथम संस्करण अवश्य पठनीय है। विशद भूमिकादि सहित।
[ह. २६९] १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*२०७ **श्रीगान्धिचरितम्**। 'प्रियंवदा' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेतम्। संपादक—श्रीब्रह्मानन्द शुक्ल १-७५

*२०८ **श्रीचालुक्यराज-अय्यणवंशचरितं काव्यम्**। श्रीश्यामभट्ट भारद्वाज। अनु०—श्रीविश्वनाथ शास्त्री भारद्वाज

चालुक्यवंश ने राष्ट्र की प्रशंसनीय सेवा की है। प्रस्तुत काव्य में प्रसाद एवं प्रभावमयी संस्कृत भाषा में इस वंश के त्याग, तप और शौर्य का सुन्दर चित्र उपस्थित किया गया है। इस काव्य से संस्कृत साहित्य की निश्चय ही गौरव-वृद्धि हुई है। प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने अपने करकमलों में इस ग्रन्थ को लेकर रचयिता और अनुवाद उभय को सम्मानित कर चुकी हैं। ५-००

*२०९ **श्रीरामानुजचम्पूः**। रामानुजाचार्यकृत। (सव्याख्यानम्) नेट ३-००

२१० **श्रीलक्ष्मीसहस्रम्**। श्रीमद्वेङ्कटाध्वरिविरचितम्। श्रीनिवासपण्डित विरचित सुबोधिनीव्याख्यया अवतरणेन निःश्रेणिकया च सम्भूषितं सम्पूर्णम्। [चौ. २३] २४-००

२११ **श्रुतबोधः**। 'आशुबोधिनी' व्याख्या सहित [नि.] १-००

२१२ **श्रुतबोधः**। (अश्लीलांशवर्जितः) 'विमला' टीकोपेतः।

इस संस्करण में प्रति छन्द का अन्वय, व्याख्या, हिन्दी अनुवाद, समास, व्याकरण, उदाहरण, प्रत्युदाहरण तथा साथ ही साथ छन्दोमञ्जरी के भी लक्षण दे दिये गये हैं। [वि. सं. ३४] ०-४०

२१३ **शृङ्गारतिलकम्** (मूलमात्रम्) [श्रीकृष्ण ५] ०-०५

२१४ **शृङ्गारतिलकम्**। संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। यन्त्रस्थ

२१५ **शृंगारशतकम्**। भर्तृहरिकृत। सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या पद्यानुवाद सहित [वि. सं. ६७] १-२५

*216 Shakespeare on Conscience and Justice. By G. S. Ghurye. 25-00

२१७ **संस्कृत-काव्य-कलिका**। डा० आद्याप्रसाद मिश्र।

इस पुस्तक में प्रतिज्ञायौगन्धरायण के साथ-साथ महाराज रघु तथा राजकुमार अज के परम-पावन एवं उदात्त चरित वर्णित हैं। इसमें उनके अलौकिक तेज, पराक्रम तथा संस्कृतिमूलक आचार आदि के भी दिव्य दर्शन होते हैं। [यू. पी. इण्टर के लिए पाठ्य-स्वीकृत] [चौ. पु.] १-००

२१८ **संस्कृत-गद्य-काव्यकैरवी**। प्रो० चारुदेव शास्त्री [चौ. पु.] समाप्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११९ **संस्कृत-गद्य-पद्य-संग्रहः**-बिहार मध्यमा परीक्षा पाठ्य ग्रंथ (हिन्दी-व्याख्योपेत नवीन संस्करण) संपादक—श्री बृहस्पति शास्त्री ।

नीति-ग्रन्थों के सारभूत समयोचित सुभाषितों के इस संग्रह की उपादेयता पर ही बिहार संस्कृत विश्वविद्यालय ने इसको मध्यमा परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत कर लिया है। [ह. २४३] २-५०

१२० **संस्कृतगद्यलहरी** । श्रीहरिहर झा ।

संस्कृत के २० निबन्धों की इस पुस्तक में विभिन्न आधुनिक वैज्ञानिक विषयों एवं नवीनप्रगति का पर्याप्त ज्ञान सुरक्षित है। प्रतिपाठ के अन्त में अभ्यास के लिये कुछ प्रश्न तथा आवश्यक स्थलों पर चित्र भी हैं। प्रथम भाग १-५०, द्वितीय भाग १-५०, १-२ भाग [ह. २६०] ३-००

१२१ **संस्कृत सौरभम्** (सचित्र : कक्षा ८ के लिये प्रस्तुत) पं. करुणापति त्रिपाठी—डा. सुभाषचन्द्र तनेजा ।

कक्षा ८ के अल्पवयस्क बालक-बालिकाओं को सरल संस्कृत का ज्ञान कराने के लिये यह पुस्तक लिखी गयी है। पाठों के अन्त में जो अभ्यास दिये गये हैं उनमें नवीन शैली अपनायी गई है। किं बहुना, पदे-पदे आकर्षक चित्रों द्वारा बालकों के लिये उपयोगी बनाने का भगीरथ प्रयत्न किया गया है। [चौ. पु.] १-२५

*222 Sadukti Karnamrita of Sridhardasa. Edited by S. C. Banerjee. 40-00

१२३ **समयमातृका** । श्री क्षेमेन्द्रविरचिता । सटिप्पण 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्योपेता ।

यह ग्रन्थ आठ समयों में विभक्त छः सौ पैंतीस श्लोकों का एक प्रबन्ध काव्य है। क्षेमेन्द्र ने इसके निर्माण का एकमात्र उद्देश्य वेश्याओं, कुट्टनियों तथा विटों से धनीमानियों की संपत्ति-रक्षा ही बतलाया है। मूल पुस्तक की भाषा अधिकांश स्थलों पर क्लिष्ट एवं दुर्बोध है। प्रो० रमाशंकर तिवारी ने इसकी सरल हिन्दी व्याख्या में गूढ ग्रन्थि अस्पष्टता के निवारण के लिये सुविशद व्याख्यात्मक विवेचन करके ग्रन्थाशय को सुस्पष्ट कर दिया है। सम्बद्ध विषयों के विचार से परिपूर्ण विशद भूमिका भी ग्रन्थ-गौरव के अनुकूल प्रस्तुत की गयी है। [वि० सं० १४३] ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*२२४ **संस्कृत-सूक्तिसागर।** श्रीनारायणस्वामीकृत हिन्दी टीका। संस्कृत के कवियों की अनुपम कल्पना का आनन्द अनायास ही आपको सुलभ कराने के लिए सरस हिन्दी भाषानुवाद के साथ संस्कृत साहित्य की देव-सूक्तियाँ तथा रस-सूक्तियाँ प्रस्तुत खण्ड में अकारादिक्रम से संगृहीत हैं। रस सूक्तियों में भी रसराज शृङ्गार का विस्तार के साथ तथा अन्य आठ रसों का संक्षिप्त विवरण के साथ सूक्तिसंग्रह है। २१-००

२२५ **समयोचितपद्यरत्नमालिका।** अकारादिक्रमेण सुभाषित पद्यों का अनुपम संग्रह [ह. १६५] ०-७५

*२२६ **समीक्षाशास्त्र।** आचार्य सीताराम चतुर्वेदी। ग्रन्थ चार खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में समीक्षा के सिद्धान्त हैं दूसरे खण्ड में भारतीय साहित्य सम्प्रदायों की विवेचना की गई है। तीसरे खण्ड में विभिन्न देशों की समीक्षा-पद्धतियोंका संक्षिप्त इतिहास दिया गया है। चौथे खण्ड में संसार के सभी साहित्यिक या साहित्य सम्बन्धी वादों का परिचय दिया गया है। इसे पढ़ लेने पर संसार का कोई समीक्षा-ग्रंथ पढ़ने की आवश्यकता नहीं रह जाती। २१-००

२२७ **हिन्दी सहृदयानन्द।** महाकवि कृष्णानन्दप्रणीत। व्याख्याकार—पं० वाचस्पति द्विवेदी। इस महाकाव्य में महाराज नल के जन्म से लेकर दमयन्ती से पुनर्मिलन तक की कथा आबद्ध है। सम्पूर्ण कथा पन्द्रह सर्गों में वर्णित है। संस्कृत साहित्य के आलंकारिकों द्वारा निर्दिष्ट महाकाव्य के सभी तत्त्व इस ग्रन्थ में उपलब्ध हैं। इसकी हिन्दी व्याख्या में नवीन भावयोजना, कवित्वपूर्ण उक्तियाँ कल्पना की प्रौढता, भाषा की प्रांजलता एवं सरलता पदे पदे प्रतिलक्षित है। प्रति सर्ग के कथासार, भूमिका आदि से सुसज्जित राष्ट्रभाषा में उपलब्ध प्रथम संस्करण [वि. सं. १४८] ५-५०

२२८ **साहित्यदर्पणम्।** सटिप्पण-'लक्ष्मी' टीकोपेतम्। कादम्बरी के सफल टीकाकार आचार्य श्रीकृष्णमोहन शास्त्री साहित्याचार्य ने इस सुविस्तृत टीका की रचना की है। म० म० हरिहरकृपालु जी द्विवेदी, म० म० गोपीनाथ जी कविराज, म० म० नारायण शास्त्री जी खिस्ते, साहित्यरत्नाकर पं० महादेव शास्त्री जी, कविशेखर पं० बदरीनाथ झा जी, जयपुर के भट्ट मथुरानाथ शास्त्री जी प्रभृति भारतविभूतियों ने प्रशंसापत्रों में मुक्तकंठ से इस टीका की प्रशंसा की है जो पुस्तक में प्रकाशित है [का. १४५] संपूर्ण १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१२९ **समस्यासमज्या।** (संस्कृत की १७२ दुरूह समस्याओं की लगभग ७५० श्लोकों में पूर्त्ति का अनुपम ग्रन्थ) भागवताचार्यस्वामिकृत २-५०

२३० **हिन्दी-साहित्यदर्पण।** व्याख्याकार, डॉ० सत्यव्रत सिंह।
इस संस्करण की विशेषता—इस संस्करण में पहले सर्वबोध्य सुगम भाषा में मूल का व्यवस्थित अनुवाद अंकित किया गया है तत्पश्चात् विमर्शाख्य विशद व्याख्या प्रस्तुत की गई है जिसके द्वारा विषय की दुरूह ग्रन्थियों का वस्तुतः सम्यक् समुन्मोचन बन पड़ा है। इसमें कहीं भी मूल की उपेक्षा हुई प्रतीत नहीं होती। आरम्भ में एक सौ पृष्ठों की विस्तृत भूमिका है जिसमें कुछ अलङ्कारों पर वैज्ञानिक शोधसम्बन्धी दृष्टिकोण, स्वरूप तथा परस्पर वैषम्य सङ्केतित हैं। सर्वश्रेष्ठ संस्करण संपूर्ण १२-५०
१-६ परिच्छेद ७-५०, ७-१० परिच्छेद [वि. सं. २९] ७-५०

२३१ **हिन्दी साहित्यदर्पण।** तृतीय परिच्छेद। विमर्शाख्य शशिकला हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार—डॉ० सत्यव्रत सिंह।
[वि. सं. २९] ४-००

२३२ **हिन्दी-साहित्यदर्पण।** षष्ठ परिच्छेद। शशिकला व्याख्या व्याख्याकार—डॉ सत्यव्रत सिंह। विविध विश्वविद्यालयों में पाठ्य स्वीकृत इस परिच्छेद की छात्रोपयोगी सर्वाङ्गपूर्ण व्याख्या कर दी गई है।
[वि. सं. २९] ४-५०

२३३ **हिन्दी साहित्यदर्पण।** दशम परिच्छेद। विमर्शाख्य शशिकला हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार—डॉ० सत्यव्रत सिंह
[वि. सं. २९] ५-००

२३४ **साहित्यदर्पणादर्शः।** (साहित्यदर्पण-प्रश्नोत्तरी)
इस प्रश्नोत्तरी में साहित्यदर्पण के सभी प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में परीक्षोपयोगी ढंग पर लिखे गये हैं तथा यथास्थान कोष्ठक देकर ग्रन्थाशय को भी सरल रूप में समझाया गया है। [ह. २३०] २-००

२३५ **साहित्य-निबन्धः** (अनेक शिक्षासंस्थाओं द्वारा पाठ्यस्वीकृत)
काशी के विद्वानों की सम्मति व साहित्यिक निबन्धों के आधार पर इस ग्रन्थ का निर्माण हुआ है। परीक्षा में पूछे जाने योग्य प्रायः सभी साहित्यशास्त्रविषयक निबन्ध इस पुस्तक में लिखे गये हैं। [ह. २५०] १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*२३६ **सुर्जनचरित-महाकाव्यम्**। महाकवि श्रीचन्द्रशेखर विरचितम्। हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार : डॉ० चन्द्रधर शर्मा। लुप्त-प्राय यह महाकाव्य बड़े ही छानबीन के साथ भगीरथ प्रयत्न से प्रकाश में लाया गया है। इस महाकाव्य की अपनी मौलिक विशेषता है। सोलहवीं शताब्दी के राजस्थान के सुप्रसिद्ध युद्धवीर, दानवीर, दयावीर बूँदी-नरेश राव सुर्जन पर यह महाकाव्य लिखा गया है। वस्तुतः यह ग्रन्थ ऐतिहासिक महाकाव्य है। इस ग्रंथ की पूर्वपीठिका में प्रचुर प्रमाणों के साथ यह सिद्ध किया गया है कि—जो सूर्यवंश इक्ष्वाकु के कारण इक्ष्वाकुवंश और रघु के कारण रघुवंश कहलाया वही सूर्यवंश 'चतुर्बाहुमान्' के कारण 'चौहान, चह्वाण या चौहाण-वंश कहलाया और उसी वंश की एक शाखा में महान् प्रतापी राव सुर्जन हुए। यद्यपि इस महाकाव्य में वासुदेव से लेकर राव सुर्जन के पुत्र राव भोज तक की लम्बी वंश-परम्परा दी गयी है तथापि अधिक वर्णन केवल महाप्रतापी राजाओं का ही किया गया है। इस ग्रन्थ पर महाकवि कालिदास की छाप स्पष्ट है। यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि यह महाकाव्य महाकवि कालिदास के रघुवंश को आदर्श मान कर लिखा गया है। ग्रन्थ संग्रहणीय, पठनीय और मननीय है। ८-००

२३७ **सुवृत्ततिलकम्**। श्री क्षेमेन्द्र प्रणीतम्। संस्कृत-हिन्दी व्याख्याद्वयोपेतम्। व्याख्याता—पं० व्रजमोहन झा।

इसकी सरल-सुबोध व्याख्याओं में अध्ययन-अध्यापन का ही दृष्टिकोण अपनाया गया है। संस्कृत व्याख्या में प्रतिपद का पर्याय, समास-विग्रह आदि देकर तदनुरूप हिन्दी व्याख्या में भी पद-पद का विस्तृत विवेचन किया गया है। भूमिका में छन्दःशास्त्र के अनेक विषयों पर ऐसे ऐतिहासिक विचार प्रस्तुत किये गये हैं जो छात्रों, अध्यापकों तथा अनुसन्धित्सुओं के लिए अधिक उपयोगी है। [ह० २७६] ३-५०

२३८ **सूक्तिमञ्जरी**। आचार्य बलदेव उपाध्याय।

अनेक साहित्यिक ग्रन्थ के रचयिता तथा सफल व्याख्याकार उपाध्याय जी ने इस ग्रन्थ में विशाल संस्कृत-साहित्य से सूक्तियाँ चुनकर उनकी इतनी चटपटी भाषा में ललित हिन्दी व्याख्या की है कि संस्कृत से अनभिज्ञ भी इस ग्रन्थ के अनुशीलन से अपनी रसपिपासा शान्त कर सकता है। [वि. सं. १४२] ८-००

*२३९ **सूक्तिमुक्तावली**। गोकुलनाथोपाध्याय विरचित। पं० भूपनारायणझा सम्पादित ७-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२४० **सूक्तिशतकम्**—सं० हरिहर झा

मानव-जीवन के नित्य व्यवहारों में प्रयुक्त होने वाली सभी प्रकार की नीति-रीति से संबंधित संस्कृत सुभाषित श्लोकों का यह मनोहर संग्रह है

१-२ भाग [ह. २६३] १-५०

२४१ **सूक्तिसंग्रहः**। श्रीराक्षसकविकृतः। 'प्राज्ञविनोदिनी' व्याख्या संवलितः [ह. १३४] ०-२०

२४२ **सूर्यशतकम्**। 'कला' हिन्दी टीका विस्तृत भूमिकादि सहित। अत्यन्त सरल तथा व्यवस्थित हिन्दी भाषा में व्याख्या तथा टिप्पणियों में पौराणिक अन्तःकथाएँ आदि विषय स्पष्ट किए गए हैं। विचार पूर्ण विशद भूमिका में भी कवि तथा काव्य से संबन्धित गवेषणापूर्ण अनल्प सामग्री प्रस्तुत की गई है। [वि. सं. १०६] २-५०

*२४३ **सौन्दरानन्दः**। अश्वघोषकृत। मूल संस्कृत और हिंदी अनुवाद संपूर्ण ३-००

*244 Stories from Panchatantra. Illustrated by Pulak Biswas. Foreword by Zakir Husain. Book I-III. 9-00

*२४५ **हरिचरितम्**। परमेश्वरकृतम्। सटीक नेट ७-५०

२४६ **हरिश्चन्द्रोपाख्यानम्**। सायणभाष्यसहित 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्याविमर्शोपेतम्। व्याख्याकारः उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

इसमें मूल के बाद उसका सरल हिन्दी अनुवाद, तब सायणभाष्य और फिर विमर्शात्मक टिप्पणी भी दी गई है। ग्रंथ का कोई भी अंश ऐसा नहीं छूटा जिस पर विवेचनात्मक प्रकाश न डाला गया हो। विशद भूमिका में शास्त्रीय विषयों तथा ग्रंथ से सम्बन्धित पाण्डित्यपूर्ण विचार प्रदर्शित किए गए हैं। [वि. सं. ९९] २-५०

२४७ **हिन्दी हर्षचरित**-(सङ्केत व्याख्या सहित) व्याख्याकार-आचार्य जगन्नाथ पाठक।

संस्कृत व्याख्या तथा विषयानुरूप सरल हिन्दी व्याख्या के साथ यह ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है। इस संस्करण की हिन्दी व्याख्या मात्र को यदि आद्योपान्त पढ़ा जाय तो यह अपने आप में इतनी पूर्ण है कि स्वतंत्र मौलिक रचना प्रतीत होगी। ग्रन्थ की विस्तृत भूमिका भी महाकवि का वंशवर्णन, कवि की आत्मकथा, पात्रालोचन, कादम्बरी का परिचय और उससे तुलना, कथासार, आलोचना आदि विविध परीक्षोपयोगी ज्ञातव्य विषयों से विभूषित है। सुसंस्कृत परिवर्धित द्वितीय संस्करण। [वि. सं. ३६] ७-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२४८ **हर्षचरितम्।** (पञ्चम उच्छ्वासः) 'सुधा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। व्या० श्री शिवनाथ शर्मा पाण्डेय

इस उच्छ्वास के प्रत्येक अनुच्छेद की पृथक्-पृथक् व्याख्या की गयी है। हिन्दी व्याख्या में भी ध्यान रखा गया है कि अनुवाद सरल एवं स्पष्ट हो तथा अनुच्छेद का वास्तविक स्वरूप लुप्त न होने पावे। 'विशेष' में व्याकरण एवं कोष-सम्बन्धी विषयों का तथा 'टिप्पणी' में सांस्कृतिक विषयों का भी निर्देश है। सुविशद भूमिका में परीक्षोपयोगी सभी शास्त्रीय विषयों पर व्यापक विवेचन है। [वि. सं. ८३] ३-००

२४९ **हर्षचरितम्।** (प्रथम उच्छ्वासः) जयश्री-कथाभट्टी संस्कृत हिन्दी टीका सहित। [ह. २६] २-००

२५० **हर्षचरितसारः।** संपादक हरिहर झा

महाकवि बाणरचित हर्षचरित के कथांश का सारभाग इस पुस्तक में अधिकतर उपशीर्षकों का प्रयोग कथा को अधिक स्पष्ट किए रहता है। मूल ग्रंथ का क्लिष्ट गद्यांश इसमें नहीं लिया गया। गद्य-साहित्य के विषय में सब आवश्यक जानकारी विचारपूर्ण भूमिका से ही प्राप्त हो जाती है [ह. २६१] १-५०

२५१ **हितोपदेशः।** विषमस्थलटिप्पणोपेतः। सम्पूर्ण [ह. ३८] १-००

२५२ **हितोपदेश-मित्रलाभः** (अश्लीलांशवर्जित : वाराणसी तथा दरभंगा उभय सं० विश्वविद्यालय की प्रथमा परीक्षा पाठ्य-स्वीकृत) सान्वय 'किरणावली' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या परीक्षोपयोगी कथासार आदि सहित।

प्रथमा परीक्षा के कोमलमति बालकों के लिए इसमें अन्वय, वाच्यपरिवर्तन, संस्कृत व्याख्या, सरलभावार्थ तथा हिन्दी-भाषार्थ आदि परीक्षोपयोगी सभी विषय दिये गये हैं। सबसे बड़ी विशेषता प्रस्तुत संस्करण की यह है कि ग्रन्थारंभ में प्रत्येक कथा का परीक्षोपयोगी कथासार भी दे दिया गया है। एकादश संस्करण [ह. ७७] १-००

२५३ **हितोपदेश-सुहृद्भेदः।** सान्वय 'किरणावली' व्याख्योपेतः।

अन्वय, संस्कृत मूल के प्रतिपद का संस्कृत पर्याय और हिन्दी पढ़ लेने के बाद बालकों को कोई ग्रन्थांश अविदित नहीं रह पावेगा। यह संस्करण सब प्रकार से छात्रोपयोगी है। [ह. ७७] १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२५४ **हितोपदेशः।** सान्वय 'किरणावली' हिन्दी टीका सहित। प्रस्तुत संस्करण, शब्दार्थ पद्यान्वय के साथ ही हिन्दी के अत्यन्त स्पष्ट एवं मधुर अनुवाद के साथ प्रकाशित किया गया है ताकि विद्यार्थिओं को सरलता से समझ में आ जाय। प्रत्येक अंश के प्रारम्भ में पूरी कथावस्तु भी संक्षेप में दी गई है। अभी तक इस पुस्तक का इतना सुन्दर संस्करण दुर्लभ था। सम्पूर्ण [ह. ७७] ३-५०

२५५ **हिन्दी-काव्य-मञ्जूषा।** आचार्य रमाशंकर पाण्डेय। (वाराणसी की उत्तरमध्यमा प्रथमखण्ड परीक्षा पाठ्य स्वीकृत) इसमें चन्दबरदायी से दिनकर तक २६ कवियों की रचनाओं के 'राष्ट्र शक्ति के विकास में योगप्रद' अंशों का संकलन किया गया है। प्रति पृष्ठ पर पर्यायबोधक विस्तृत टिप्पणी दी गई है तथा अन्त में प्रत्येक कवि का वृत्तबोधक संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है। शैली और कौशल की दृष्टि से यह हिन्दी साहित्य की सर्वोत्तम परिचायिका है [चौ. पु.] ३-५०

256 HISTORICAL AND LITERARY INSCRIPTIONS: By Dr. Rajbali Pandeya. M. A., D. Litt. [Chow. Sans. Studies Vol. XXIII] 15-00

नाट्य-नाटक-ग्रन्थाः

१ **अनर्घराघवम्।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्। आचार्य रामचन्द्र मिश्र विरचित व्याख्या के साथ यह नाटक प्रकाशित किया गया है। सरलता इस व्याख्या की प्रमुख विशेषता है। भूमिका में ग्रन्थकर्त्ता का विस्तृत जीवनवृत्त, उनके ग्रन्थ, उनका शास्त्र-पाण्डित्य, उनका कवित्व, फिर कथासार, कथा का आधार, पात्रालोचन आदि तथा परिशिष्ट में नोट्स, नाटकीय विषय, लक्षण सहित छन्द, सूक्तियाँ आदि उपयोगी विषय दिए गए हैं। [वि. सं. ४७] ८-००

२ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्।** 'किशोरकेलि' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या। प्रोफेसर कान्तानाथ शास्त्री तेलङ्ग सम्पादित विस्तृत प्रस्तावना नोट्स सहित। व्याख्या में प्रतिशब्द—पर्याय, कोष, व्याकरण, समास, अलङ्कार, सरल भाषार्थ आदि से ग्रन्थ के अभिप्राय को बड़ी सरलता से व्यक्त किया गया है। हिन्दी में इस प्रकार का सुविस्तृत नोट्स, समालोचना और पात्रालोचन सहित कोई भी संस्करण नहीं है। संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी के परीक्षार्थी छात्रों के लिए इसकी शाकुन्तल समीक्षा और नोट्स ही पर्याप्त है। [ह. ४१] ७-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3 ABHIJNANA ŚAKUNTAL : Text with Literal English Translation and Notes. By Monier Williams.
[Chow. Sans. Studies Vol. XII] 15-00

४ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** (चतुर्थ अङ्क) श्री देवदत्त शास्त्री विविध विश्वविद्यालयों में पाठ्य स्वीकृत इस चतुर्थ अङ्क की ऐसी सरल संस्कृत-हिन्दी व्याख्या कर दी गई है कि परीक्षार्थी स्वयं इस ग्रन्थ का अनुशीलन कर सकेंगे। लगभग ४० पृष्ठ की विस्तृत भूमिका में इस अंक का समीक्षात्मक विवेचन भी किया गया है [वि.सं. ५८] १-००

५ **अभिनयदर्पणम्** । आचार्य नंदिकेश्वर रचित । आलोचनात्मक परिचय तथा स्वतन्त्र हिन्दी व्याख्या सहित यन्त्रस्थ

६ **अभिषेकनाटकम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित । व्या०—आचार्य रामचन्द्रमिश्र भास विरचित इस नाटक की कथा श्रीरामाभिषेक पर आधारित है। प्रतिपद-बोधिनी इसकी संस्कृत-हिन्दी दोनों व्याख्याएँ भाव, भाषा आदि की दृष्टि से पर्याप्त समृद्ध हैं। भूमिका में नाट्यशास्त्रीय विषय सुसंगृहीत हैं। [वि. सं. ७६] २-५०

७ **अमृतोदय-नाटकम्** । म. म. श्री गोकुलनाथ उपाध्याय विरचित। आचार्य रामचन्द्रमिश्र कृत 'प्रकाश' संस्कृत हिन्दी व्याख्या, समालोचनात्मक विस्तृत भूमिकादि सहित। मुक्तितत्त्व का प्रतिपादक तथा न्यायवैशेषिक का समर्थक यह संस्कृत नाटक प्रत्येक दृष्टि से अधिक क्लिष्ट है। अतः संस्कृत नाटकों के सिद्ध-हस्त व्याख्याकार ने अपनी सरल सुबोध संस्कृत हिन्दी व्याख्याओं द्वारा इसके दुरुहांश को सर्वथा दूर कर दिया है। संस्कृत व्याख्या से मूल का प्रतिपद बड़ी सरलता पूर्वक लगाया जा सकता है। समीक्षण तथा परीक्षोपयोगी नोट्स आदि विषयों से सुसज्जित अभिनव सर्वश्रेष्ठ संस्करण [वि. सं. ११६] ५-५०

८ **अविमारकम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम् । आचार्य रामचन्द्र मिश्र-विरचित संस्कृत-हिन्दी व्याख्याओं में विषयानुकूल लालित्य तथा अधिक सरलता है। विस्तृत भूमिका तथा परिशिष्ट में नाट्यशास्त्रीय तथा सम्बद्ध ऐतिहासिक जानकारी का कोई अंश नहीं छूटने पाया है [वि. सं. ७३] ३-००

9 Introduction to Bharata's Natya-Sastra. By Adya Rangacharya. 9-50

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१० **आश्चर्यचूडामणिः** । महाकवि शक्तिभद्रविरचित । 'रमा' 'मालती' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित ।

महाकवि भवभूति विरचित 'उत्तररामचरित' के बाद रामचरित पर लिखे गये दृश्य काव्यों में यह नाटक अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इसकी व्याख्या में अर्थ की स्पष्टता के लिए भावार्थ-योजना का विधान आवश्यक समझ कर किया गया है। सविमर्श हिन्दी व्याख्या की भाषा इतनी प्रौढ़ और प्राञ्जल है कि उसे पढ़ने से ग्रंथ मूल जैसा ही प्रतीत होता है। वृहत् भूमिका, कथासार, नाटकीय सुभाषितावली आदि से सुसज्जित राष्ट्रभाषा में अनूदित यह संस्करण प्रथम बार प्रकाशित हुआ है [वि० सं० १३४] ४-५०

११ **उत्तररामचरितम्** । 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेतम्

प्रोफेसर कान्तानाथ शास्त्री तेलंग एम. ए. लिखित विशेष विवरण, 'नोट्स' समलंकृत इसकी सुविस्तृत सरल व्याख्या में प्रत्येक विषय का इतना सुन्दर और सरल रीति से स्पष्ट प्रतिपादन है जो किसी भी अन्य टीका में मिलना दुर्लभ है। यह संस्करण संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी कालेज के छात्रों के लिए समानरूप से उपयोगी है।

चतुर्थ संस्करण [ई. १९१] ४-५०

*१२ **उषारागोदया** । (नाटिका) श्री रुद्रचन्द्रदेव प्रणीता ।

सम्पादक श्री बाबूलाल शुक्ल, शास्त्री ३-००

१३ **ऊरुभङ्गम्** । महाकवि भास विरचित । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित ।

ऊरुभङ्ग महाभारत की कथा पर आधारित दुर्योधन की पराजय और मृत्यु का दुःखान्त रूपक है। इसकी नाटकीय वस्तु-योजना अत्यन्त कौशलपूर्ण है। इसकी सरल सुबोध संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, विस्तृत भूमिका, कथासार, पात्र परिचय आदि परीक्षार्थियों के लिए अधिक उपयोगी है [वि० सं० ८८] १-५०

१४ **कर्णभारम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् ।

आचार्य रामचन्द्र मिश्र विरचित दोनों व्याख्याएँ बड़ी सरल और ग्रन्थ के भावानुरूप हैं। सुविशद भूमिका में समस्त नाटकीय विषय, कवि का इतिवृत्त, रचना एवं पात्रों की विशेषताएँ आदि वर्णित हैं।

[वि. सं. ५०] १-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५ **कर्पूरमञ्जरी** । 'मकरन्द' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्या सहित ।

इस संस्करण में मूल (प्राकृत) के साथ ही साथ संस्कृत छाया को बैठाकर प्रतिपद की सविमर्श संस्कृत-हिन्दी व्याख्या कर दी गई है। इसकी समालोचनात्मक प्रस्तावना, कथासार तथा विविध प्रकार के परिशिष्ट तो आधुनिक परीक्षार्थियों के लिए अत्यन्त ही उपादेय हैं

[वि. सं. १२] ३-००

16 COMIC ELEMENT IN SAṀSKṚTA DRAMA by Dr. L. R. Singh. In the Press.

*१७ **कालिदासोपरूपकानां समुच्चयः** । ५-००

*१८ **काश्मीरसन्धानसमुद्यमः** (रूपकम्) निपीजे भीमभट्ट कृतः । नेट १-००

१९ **कुन्दमाला** । महाकवि दिङ्नागप्रणीत । 'बालबोधिनी' हिन्दी व्याख्या सहित ।

इसमें बाल्मीकि रामायण पर आधारित सीता-चनवास का चरित-चित्रण नाटकीय ढंग पर बहुत ही मनोरञ्जन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। विशारद परीक्षा में स्वीकृत इस नाटक का छात्रोपयोगी कोई भी संस्करण उपलब्ध नहीं था। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए व्याख्या में पहले मूलगत प्रत्येक शब्दों के हिन्दी अर्थ लिखे गये हैं। तदनन्तर सरल हिन्दी व्याख्या में छन्द का नाम, लक्षण, अलङ्कार आदि का उल्लेख भी किया गया है। ग्रन्थ के आदि में छात्रोपयोगी विशद भूमिका, पात्रालोचन, कथासार आदि भी दिये गये हैं। यन्त्रस्थ

२० **कृषकाणां नागपाशः** (रूपकम्) ।

इस पुस्तक की मौलिकता ने ग्रामीणपृष्ठभूमि पर आधृत रूपक के पात्रों में जान डाल दी है। सर्जन होते ही यह रूपक इलाहाबाद रेडियो स्टेशन के रंगमंच से पुरस्कृत हो चुका है। [वि. सं. ३८] ०-५०

२१ **कौमुदीमहोत्सवनाटकम्** । विज्जिका विरचित । हिन्दी व्याख्या विस्तृत भूमिकादि सहित । यन्त्रस्थ

२२ **गौरीदिगम्बर-प्रहसनम्** । श्रीशङ्करमिश्र विरचितम् । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार—पं० श्रीतारिणीश झा ।

प्रहसन संस्कृत रूपकों का ही एक भेद है। प्रस्तुत प्रहसन महेश्वर के साथ गौरी के विवाह को उपजीव्य करके लिखा गया है। हिन्दी अनुवाद के साथ प्रथम बार प्रकाशित इस प्रहसन से रसज्ञ पाठकों का पर्याप्त मनोविनोद होगा। [ह. २८३] १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२३ **चण्डकौशिकम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित संस्कृत-हिन्दी व्याख्या में जन साधारण के अनुकूल भाषा-प्रयोग आदि में सरलता का ध्यान रखा गया है। विस्तृत भूमिका तथा परिशिष्टादि में इतिहास, समीक्षा, लक्षण, आलोचन आदि विविध उपयोगी विषय दिए गए हैं। सभी के लिये यह सब दृष्टि से उपयोगी संस्करण है। [वि. सं. १२६] ४-००

२४ **चन्द्रकला नाटिका**। विश्वनाथ कविराज प्रणीत। 'प्रभावली' हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकारः श्रीबाबूलाल शुक्ल शास्त्री। नाट्यशास्त्र के अधिकारी विद्वान् श्री शुक्ल जी द्वारा रचित हिन्दी व्याख्या के साथ यह इसका सर्वप्रथम संस्करण है। व्याख्या विषयानुकूल मुहावरेदार भाषा में है, पढ़ने पर अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है, फिर भी मूल से कहीं भी संग-विच्युति नहीं है। विस्तृत भूमिका पद्यानुक्रमणिकादि सहित। [का. १७७] ६-५०

२५ **चारुदत्तम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्। व्याख्या अपने नाम के अनुरूप आधुनिक ढंग की है। इसकी आलोचनात्मक विस्तृत भूमिका में पात्रालोचन, व्यवस्थित कथासार आदि के साथ अन्य उपादेय विषय भी हैं [वि. सं. ४६] २-५०

२६ **चैतन्यचन्द्रोदयम्** । हिन्दीव्याख्योपेतम्। व्याख्याकारः आचार्य पं० रामचन्द्रमिश्र। संस्कृत साहित्य के इस अलौकिक नाटक में वेदान्तादि-गम्य ब्रह्मतत्त्व और उसकी प्राप्ति के विषय में अति सरस विवेचन और मार्गदर्शन प्राप्त होता है। 'बहुजनहिताय' हिन्दी व्याख्या के साथ प्रकाशित होने से हिन्दी मात्र पठित व्यक्ति भी इससे लाभ उठा सकते हैं। भूमिकानुक्रमणिकादिसहित। [ह. २६७] ७-००

२७ **जवाहरलालनेहरू-विजयनाटकम्** । पं० रमाकान्त मिश्र। संस्कृत भाषा में नाटकों की कमी नहीं है। उनमें कुछ नाटक तो विश्वसाहित्य के भी अमूल्य निधि हैं। परन्तु स्वतंत्र भारत के युगपुरुष पं० जवाहरलाल नेहरू पर सरल संस्कृत में लिखा गया यह नाटक अपना अलग स्थान रखता है। रंगमंच पर विद्यार्थियों के अभिनय के लिये यह अधिक रोचक, उपयोगी और शिक्षाप्रद है। [वि. सं. १५१] ४-००

*२८ **जीवानन्दम्** । आनन्दरायमखिकृत। संस्कृत व्याख्या सहित। नेट ३०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

29 DRAMAS or A COMPLETE ACCOUNT OF THE DRAMATIC LITERATURE OF THE HINDUS : By H. H. Wilson. [Chow. Sans. Studies Vol. XVIII] 4-00

*30 Drama in Sanskrit Literature. By Adya Rangacharya. 20-00

३१ **दूतघटोत्कचम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेतम् ।

इस एकांकी की प्रथम बार संस्कृत-हिन्दी व्याख्याएँ प्रस्तुत की गयी हैं। छात्रों के लिये विचारपूर्ण भूमिका मात्र ही पर्याप्त है। [वि सं. ५१] १-२५

३२ **दूतवाक्यम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् ।

अत्यन्त बोधगम्य हिन्दी एवं संस्कृत व्याख्या तथा सूक्ष्म विचारपूर्वक विशद आलोचनात्मक भूमिका से युक्त अपूर्व संस्करण [वि. सं. ५२] १-५०

३३ **दूताङ्गदं-नाटकम्** । 'दूताङ्गदचन्द्रिका' संस्कृत-हिन्दीटीकोपेतम्

ग्रन्थ के आरम्भ में महाकवि के ऐतिहासिक परिचय, संस्कृत-हिन्दी कथासार आदि भी दिये गये हैं। [ह. २०२] १-००

*३४ **नवग्रहचरितम्** । (समवकारः) श्री घनश्याम प्रणीतम् ।

भूमिका टिप्पणी आदि से युक्त। श्रीबाबूलाल शुक्ल शास्त्री १-८७

३५ **नागानन्दनाटकम्** । 'भावार्थदीपिका' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम । व्याख्याकार—आचार्य बलदेव उपाध्याय ।

उपाध्याय जी की सरल संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, विस्तृत भूमिका एवं छात्रोपयोगी विविध परिशिष्ट से अलंकृत सर्वांगपूर्ण यह संस्करण संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी के सभी छात्रों के लिये समान रूप से उपादेय है। [का. ८७] ४-००

३६ **नाटक-चन्द्रिका** । आचार्य श्री रूपगोस्वामी प्रणीत । सटिप्पण 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित ।

वैष्णव आचार्य श्री रूपगोस्वामी की यह नाट्यकृति सर्वप्रथम मूल, सुबोध हिन्दी व्याख्या, टिप्पणी, विचारपूर्ण आमुख तथा परिशिष्ट आदि के साथ प्रकाशित की गई है। इसमें उदाहरण भी वैष्णव रचनाओं से ही संगृहीत हैं। [चौ. ९७] ७-५०

३७ **नाटकलक्षणरत्नकोशः** । आचार्य श्रीसागरनन्दी प्रणीत । हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार—बाबूलाल शुक्ल शास्त्री

यह इसका परिशुद्ध एवं व्याख्या सहित सर्वप्रथम संस्करण है जिसमें टिप्पणी-भूमिका आदि संलग्न कर सर्वजनोपयोगी बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया गया है। **शीघ्र प्रकाशित होगा**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३८ **नाट्यशास्त्रम्।** (१-२ अध्याय विश्वविद्यालय पाठ्य-स्वीकृत) इस संस्करण की 'मयूख' नामक हिन्दी टीका में भरतमुनि के गूढ़ाशयों को बहुत ही सरल शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है। [ह. २२३] ०-६५

३९ **नाट्यशास्त्रम्।** (सचित्र: शोधपूर्ण संस्करण) 'प्रदीप' हिन्दीव्याख्या सहित। व्याख्याकार—श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री इसकी सारगर्भित सरल सुबोध व्याख्या में भ्रामक मत-मतान्तरों के निरासपूर्वक इस कौशल से विषय का यथार्थ स्वरूप प्रतिपादित किया गया है कि एक बार पढ़ लेने मात्र से हृदय पटल पर विषय अंकित-सा हो जाता है। सुविस्तृत भूमिका, पाठान्तर आदि से सुसज्जित।

१-७ अध्याय प्रथम भाग शीघ्र प्राप्त होगा

द्वितीय भाग यन्त्रस्थ

४० **नारीजागरण-नाटकम्।** पं० गोपाल शास्त्री दर्शनकेसरी स्त्रियाँ शिक्षा के क्षेत्र में आगे तो बढ़ रही हैं किन्तु उनके पठन-पाठन के लिये उपयुक्त पुस्तकों की नितान्त कमी है। नारीमहिमा से पूर्ण प्रस्तुत नाटक स्त्री शिक्षा के समर्थन एवं प्रयास की एक कड़ी है। इसमें इतिहास-पुराण-उपनिषद् आदि से उदात्त, मार्मिक तथा उपदेशप्रद चरित्रों का गुम्फन कौशल लेखक के जीवनव्यापी अध्यापनानुभव का फल है। भारतीय महिलाओं को उनके गरिमामय स्वरूप का बोध कराने के लिये लिखा गया यह सरल, सरस एवं मनोरंजक संस्कृत नाटक स्त्री-पुरुष सभी के पढ़ने योग्य है। [वि. सं. १४१] ४-००

४१ **पञ्चरात्रम्।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्। आचार्य रामचन्द्र मिश्र विरचित संस्कृत एवं हिन्दी व्याख्या ने मणि-काञ्चन संयोग कर दिया है। इसकी विस्तृत भूमिका में कथावस्तु से सम्बद्ध सभी पक्षों की विस्तृत विवेचना करके परिशिष्ट में नोट्स, तथा नाटकीय विषयों पर पर्याप्त विवेचन, प्रस्तुत किया गया है।

[वि. सं. ३५] २-५०

४२ **पाणिनीयनाटकम्।** पं० गोपालशास्त्री दर्शनकेसरी राजस्थान के राज्यपाल डॉ० सम्पूर्णानन्द जी, अहमदाबाद के पण्डितराज स्वामी भगवदाचार्य जी, महावैयाकरण आचार्य ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु तथा डॉ० मंगलदेव शास्त्री प्रभृति उद्भट विद्वानों की सम्मतियों से विभूषित।

'त्रिमुनि व्याकरणम्' इस नाटक की भित्ति है। महर्षि पाणिनि के इतिवृत्त के माध्यम से व्याकरण शास्त्र का संक्षिप्त इतिहास ही इस नाटक द्वारा रंगमंच पर दर्शाया गया है। [वि. सं. १०८] २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*43 Plays ascribed to Bhasa : Their Authenticity and Merits. By C. R. Devadhar. 2-00

४४ **प्रचण्डपाण्डवं नाटकम्।** श्री राजशेखर विरचित। 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित।

इस नाटक में व्यास और वाल्मीकि कवि का अद्भुत संवाद है। जिसके द्वारा महाकवि राजशेखर ने दोनों महाकाव्यों के गम्भीर अध्ययन की झलक को गम्भीरता के साथ प्रकट किया है। विद्वान् व्याख्याकार डॉ० हरदत्त शास्त्री ने नाटकीय ढङ्ग पर इसकी सरल-सुबोध हिन्दी व्याख्या, प्रस्तावना, कथासार आदि लिखकर नाटक को सर्वबोधगम्य बना दिया है। [ह. २८४] २-००

४५ **प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्।** सविमर्श 'प्रकाश' व्याख्योपेतम्।

संस्कृत-हिन्दी व्याख्या के साथ-साथ आलोचनात्मक टिप्पणी-नोट्स, विशद भूमिका हो जाने से यह संस्करण संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी छात्रों के लिए समान रूप से उपयोगी हो गया है। [वि. सं. ३९] २-००

४६ **प्रतिमानाटकम्।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्।

आचार्य रामचन्द्र मिश्र कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या युक्त यह नवीन संस्करण संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी छात्रों के लिये समान रूप से उपयोगी है। डॉ० सत्यव्रत सिंह सम्पादित इसकी समालोचनात्मक प्रस्तावना तथा नोट्स ही परीक्षार्थी के लिए पर्याप्त है [ह. २०८] २-५०

४७ **प्रबोधचन्द्रोदयनाटकम्।** 'प्रकाश' टीकोपेतम्।

आचार्य रामचन्द्र मिश्र जी विरचित सरल, सुबोध संस्कृत तथा सुललित हिन्दी टीका एवं नाटक समीक्षा, नाटककार की जीवनी, इतिवृत्त, नोट्स, नाटकीय विषय आदि से सुसज्जित यह संस्करण सर्वोत्तम है [वि. सं. १४] ३-००

४८ **प्रभावतीपरिणयम्।** म० म० हरिहरकृतम्। 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्योपेतम्। व्याख्याकार—आचार्य रामचन्द्र मिश्र।

प्रस्तुत नाटक में शृंगाररस प्रधान है। इसमें श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न और वज्रनाभासुर की कन्या प्रभावती का पावन परिणय वर्णित है। नाटकीय कथा का आधार हरिवंश पुराण है। शताधिक साहित्यिक ग्रन्थों के व्याख्याता आचार्य रामचन्द्र मिश्र ने विमर्शात्मक हिन्दी में इसकी व्याख्या प्रस्तुत की है। आज तक यह नाटक प्रकाश में नहीं आया था। इस नाटक की जीर्ण-शीर्ण पाण्डुलिपि को नागराक्षर में सुसम्पादन करने का सर्वाधिक श्रेय व्याख्याता को ही है। इस ग्रन्थ के प्राकृत की संस्कृत छाया व्याख्याता की अपनी मौलिक रचना है। [ह. २८५] ६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४९ **प्रसन्नराघवम्।** 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्। आचार्य श्री शेषराज शर्मा जी ने प्रतिपद की व्याख्या, समास-विग्रह, कोश, अलंकार आदि देकर इस संस्करण को अधिक सरल बना दिया है। इसकी समालोचनात्मक हिन्दी भूमिका, नोट्स तथा आधुनिक विविध परिशिष्ट तो परीक्षार्थी के लिए अधिक उपादेय हैं। [वि. सं. २०] ४-५०

५० **प्रियदर्शिका।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेता। आधुनिक टीकाकारों में आचार्य रामचन्द्र मिश्र जी का नाम सर्वोपरि है। इस नाटक को भी आपने व्याख्या, विग्रह, समास, अलङ्कार, हिन्दी अनुवाद, नोट्स, आदि से सर्वथा अलंकृत कर दिया है। [वि. सं. १८] २-००

५१ **बालचरितम्।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् सामान्य विद्यार्थियों का बुद्धिवैभव देखकर ही इसकी संस्कृत व हिन्दी टीकाएँ रची गई हैं जिनसे प्रतिपद का अर्थस्पष्ट हो जाता है। समस्त ज्ञातव्य नाट्यशास्त्रीय विषयों का ज्ञान विशद भूमिका मात्र से ही हो जाता है। [वि. सं. ५६] २-५०

*५२ **भरत नाट्यशास्त्र में नाट्यशालाओं के रूप।** राय गोविन्दचन्द ५-००

*५३ **भारतीय नाट्यपरम्परा और अभिनय दर्पण।** वाचस्पति गैरोला ११-५०

५४ **भासनाटकचक्रम्।** आचार्य बलदेव उपाध्याय सम्पादित 'महाकवि भास' नामक सुविस्तृत भूमिकादि विभूषित प्रकाश संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित। (शोधपूर्ण संस्करण) इस संस्करण में भास के १३ नाटकों में से प्रत्येक की अतिसरल संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्याएँ की गई हैं जिनसे ग्रन्थ का कोई शब्द अविदित नहीं रह जाता। उपाध्याय जी की शताधिक पृष्ठों की शोधपूर्ण भूमिका में भास संबन्धी अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इतनी अधिक उपयोगी सामग्री के साथ भास के सभी नाटकों का यह सम्मिलित संस्करण प्रथम बार ही प्रकाशित हुआ है। छात्रों, अध्यापकों तथा पाठकों के लिए यह नितान्त उपयोगी संस्करण है।
१-२ भाग [चौ. पु.] २२-००

*५५ **भैरवविलासः** (प्रेक्षणकम्) ब्रह्मत्र-वैद्यनाथ प्रणीतः। सम्पादक श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री ३-००

५६ **मध्यमव्यायोगः।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् भास विरचित इस संस्कृत एकांकी नाटक की संस्कृत और हिन्दी दोनों व्याख्याएँ ललित भाषा में की गई हैं। भूमिका में सभी नाट्यशास्त्रीय एवं परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी विषयों का समावेश है। [वि. सं. ५३] १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५७ **मत्तविलासप्रहसनम्।** श्री महेन्द्रविक्रमवर्म विरचित। 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या विभूषित।

इस पुस्तक में कवि ने उस समय (६०९ ई०) की धार्मिक दशा का प्रहसनरूप में वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया है। उस समय जैन तथा बौद्ध धर्म अवनति की ओर जा रहे थे और शैवसम्प्रदाय आगे बढ़ रहा था। व्याख्याकार ने दुष्प्राप्य इस प्रहसन को हिन्दी व्याख्या के साथ इस तरह सम्पादन कर दिया है कि संस्कृत-हिन्दी उभय रंगमञ्च पर इसका सफल अभिनय किया जा सकता है [वि० सं० १३५] १-२५

*५८ **मनोनुरञ्जननाटकम्।** अनन्तदेव विरचित १-००

59 Marathi Theatre (Marathi Natya Parishad). 7-50

*६० **मलयाजाकल्याणम्।** (नाटिका) वीरराघव प्रणीतम्। सम्पादक श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री ३-२५

६१ **महावीरचरितम्।** 'प्रकाश' संस्कृत हिन्दी व्याख्योपेतम्।

संस्कृत व्याख्या में प्रतिपद का पर्याय, समास, कोश, अलङ्कार आदि देकर आधुनिक प्रांजल राष्ट्रभाषा हिन्दी में अनुवाद कर दिया गया है। साथ ही परिशिष्ट में हिन्दी नोट्स, नाटकीय विषय आदि देकर तथा ग्रन्थ के आरम्भ में हिन्दी समालोचना, महाकवि की जीवनी, कथासार और गवेषणापूर्ण पात्रालोचन से सुसज्जित कर इस संस्करण को मौलिकता प्रदान की गयी है। द्वितीय संशोधित संस्करण[वि. सं. १०]६-००

६२ **मुद्राराक्षस-नाटकम्।** 'शशिकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या

डॉ० सत्यव्रत सिंह विरचित संस्कृत-हिन्दी व्याख्या तथा आधुनिक टिप्पणी द्वारा इस नाटक की विविध विशेषताओं की अभिव्यक्ति की गयी है। वस्तुतः यह टीका आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से लिखी हुई होने के कारण संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी के छात्रों और साहित्यप्रेमियों के लिये समान रूप से उपयोगी है। [ह. २४६] ३-५०

६३ **मालतीमाधवं नाटकम्।** 'चन्द्रकला' टीकोपेतम्।

महाकवि भवभूति के सर्वश्रेष्ठ, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी सभी परीक्षाओं में पाठ्य स्वीकृत इस ग्रन्थ की यह सर्वांगपूर्ण संस्कृत-हिन्दी टीका तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी में ग्रन्थ की आधुनिक समालोचना, महाकवि की जीवनी, कथासार, नोट्स आदि अत्यन्त उपादेय है। [ह. २४७] ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६४ **मालविकाग्निमित्रम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीटीकोपेतम् । आचार्य रामचन्द्र मिश्र ने नाटकीय ढंग पर इसकी ऐसी सरल टीका लिखी है कि परीक्षार्थी स्वयं भी इस ग्रन्थ का अभ्यास कर सकते हैं [ह. २१६] ३-५०

६५ **मृच्छकटिकम्** । 'प्रबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेतम् । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के यशस्वी प्रोफेसर पं० कान्तानाथ-शास्त्री तेलंग विरचित हिन्दी समालोचना, नोट्स आदि से सुसंस्कृत इसकी आधुनिक संस्कृत-हिन्दी टीका के सामने पूर्व प्रकाशित सभी टीकाएं नगण्य हो चुकी हैं । प्रत्येक विषय का इतना सुन्दर और सरल रीति से स्पष्ट प्रतिपादन किसी अन्य टीका में मिलना दुर्लभ है । [ह. २५२] ६-००

६६ **रत्नावली-नाटिका** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेता । व्याख्याकार आचार्य रामचन्द्र मिश्र ने इस संस्करण के मूल के प्रत्येक शब्द का पृथक् पृथक् पर्याय, कोश, व्याकरण, अलंकार, भावार्थ आदि देकर ग्रन्थ के अन्त में सरल राष्ट्रभाषा में विविध परिशिष्ट तथा आदि में समालोचनात्मक प्रस्तावना, कवि की जीवनी, संक्षिप्त कथासार आदि विषयों से ग्रन्थ को पूर्ण सुसज्जित कर दिया है [ह. २३२] ३-००

६७ **ललितमाधवं नाटकम्** । श्रीरूपगोस्वामि प्रभुपाद प्रणीत । नारायण प्रणीत टीका सहित । पाठान्तरादि समेत संस्कृत-अंग्रेजी विस्तृत भूमिका संवलित शोधपूर्ण संस्करण । सम्पादक—प्रो० श्रीबाबूलाल शुक्ल शास्त्री ।

गौडीय वैष्णव सम्प्रदाय के छः मुख्य आचार्यों में प्रभुपाद श्रीरूप गोस्वामी की गणना की जाती है । ये महाप्रभु श्रीचैतन्यदेव के समसामयिक और उनके प्रवर्तित रागानुगा भक्ति-दर्शन के एक महान् प्रवक्ता भी थे । इनकी कृतियाँ संस्कृतसाहित्य के अलङ्कार स्वरूप हैं, जिनमें प्रस्तुत ललित माधव नाटक एक मुख्य स्थान रखता है । प्रसाद माधुर्य, ललित पदविन्यास आदि गुणों से यह नाटक ग्रन्थकार की सहृदयता और विद्वत्ता को प्रकट करता है । इस नाटक के अध्ययन में भक्तों के हृदय में भक्तिरस की मन्दाकिनी प्रवाहित होती है और सहृदय काव्यरसिक इसमें ब्रह्मानन्द सहोदर रस का अनुभव कर आनन्दित होते हैं । आज तक इस नाटक का कोई सर्वाङ्ग पूर्ण सुन्दर संस्करण प्रकाशित नहीं हुआ था । अतः हमारे विद्वान महोदय के स्तुत्य परिश्रम के फलस्वरूप यह संस्करण भक्त सहृदयों को अवश्य ही आह्लादित करेगा । [का. १९०] १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६८ **लटकमेलकम्।** (प्रहसनम्) 'प्रकाश' व्याख्योपेतम्
हिन्दी व्याख्या से इसकी व्यापकता और बढ़ गई है। भूमिका में साहित्य-शास्त्रीय तथा ऐतिहासिक परिपार्श्व में नाटक का आलोचन, कथावस्तु, तात्कालिक सामाजिक रीति-नीति आदि पर उत्तम विचार है।
[वि. सं. ८७] १—२५

69 LAWS AND PRACTICE OF SANSKRIT DRAMA:
By Dr. S. N. Shastri, M. A., D. Phil., LL. B.
Vol. I. [Chow. Sans. Studies Vol. XIV] 25-00

७० **विक्रमोर्वशीयम्।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीटीकोपेतम्।
आचार्य रामचन्द्र मिश्र विरचित सरल सुबोध टीकायें छात्रों में विशेष सम्मानित हो चुकी हैं। इस ग्रन्थ को भी आपने विस्तृत हिन्दी समालोचनादि से सुसज्जित कर ऐसा बना दिया है कि अंग्रेजी-हिन्दी के छात्रों को तो उसीसे पूर्ण ज्ञान हो जायगा। [ह. २४२] ३-५०

७१ **विक्रान्तकौरवम्।** 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार—श्री पन्नालाल जैन।
विश्वविख्यात दिगम्बर जैन कवि हस्तिमल्ल रचित प्रस्तुत नाटक, नाटकों में उच्चकोटि का है। इसमें संस्कृत नाटक के सभी अङ्ग तथा सभी विशेषतायें विद्यमान हैं। नाटक में प्रयुक्त संस्कृत और प्राकृत दोनों ही भाषाएँ उच्चकोटि की हैं तथा यह नाटक छन्दोवैचित्र्य और अलंकार विन्यास की दृष्टि से भी विशेष महत्त्वपूर्ण है। प्राञ्जल हिन्दी अनुवाद के साथ यह संशोधित संस्करण पाठकों के लिए अवश्य ही अधिक लाभदायक है। [ह. २८२] ६-००

७२ **विदग्धमाधवम्।** श्रीरूपगोस्वामी विरचित सविमर्श 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्योपेतम्। व्या०—श्रीरमाकान्त झा
प्रस्तुत संस्करण में मूल के साथ विषयानुकूल सरल सुबोध हिन्दी भाषा के माध्यम से ग्रन्थ को सर्वबोधगम्य बनाने का भगीरथ प्रयत्न किया गया है। विस्तृत भूमिका में ग्रन्थ और ग्रन्थकार के सुविस्तृत विवेचन अधिक महत्त्व का है। यन्त्रस्थ

७३ **विद्धशालभञ्जिका।** श्री राजशेखर विरचित। 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित।
यह चार अङ्कों की नाटिका शृङ्गार रस से परिपूर्ण है। इसमें प्रभात-वर्णन, सन्ध्यावर्णन, वसन्तवर्णन तथा चन्द्रिका का वर्णन भी अत्यन्त सजीव है। इसकी हिन्दी टीका में अनावश्यक विस्तार न कर सुबोध व्याख्या प्रस्तुत की गई है। विशद भूमिका में भी ग्रन्थ के गम्भीर अध्ययन एवं शोध के परिणाम उपन्यस्त हैं। [वि० सं० १२५] ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७४ **विद्यापरिणयनम्**। 'प्रकाश' हिन्दीव्याख्या सहित।
व्याख्याकार—आचार्य रामचन्द्र मिश्र।
इस संस्कृत नाटक में बताया गया है कि अविद्या के प्रभाव में पड़कर संसार में भटकते हुए जीव को शिवभक्ति की प्रेरणा से जब विविदिषा उत्पन्न होती है तब साम्बशिव उसको महावाक्य का उपदेश देते हैं जिसके द्वारा विद्याप्राप्ति द्वारा उसे मोक्ष मिलता है। मानव आत्मा के शाश्वत संघर्ष का नाटकीय चित्र अद्वैत वेदान्त एवं विष्णु-भक्ति की समन्वयात्मक पृष्ठभूमि में मनोहर ढंग से चित्रित की गई है। सरल हिन्दी व्याख्या, विचारपूर्ण भूमिका तथा परिशिष्टादिसमन्वित उत्तम संस्करण है। [ह. २७०] ४-५०

७५ **वेणीसंहारनाटकम्**। 'प्रबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्।
इसमें टीका के साथ-साथ पात्र के लक्षण तथा नाटक, चम्पू, काव्य और महाकाव्य आदि के लक्षण भी जगह-जगह दे दिये गये हैं तथा विस्तृत 'भूमिका' में सम्पूर्ण ग्रन्थ की समालोचना एवं सभी अङ्कों का सुविस्तृत हिन्दी 'कथासार' भी लिख दिया गया है, जिससे हिन्दी, अंगरेजी के छात्रों को भी इस ग्रन्थ का कथानक समझने में बड़ी सुगमता हो गई है। परिष्कृत द्वितीय संस्करण [ह. १२१] ४-००

*७६ **संकल्पसूर्योदयनाटकम्**। वेङ्कटनाथकृतम्। प्रभाविलास-प्रभावली व्याख्याद्वयसहितम्। १-२ भाग नेट ४५-००

*७७ **संस्कृत महाकवियों के सम्बन्ध में प्रचलित लोकोक्तियाँ : एक विश्लेषण**। श्री पं० रामचन्द्र झा
प्रस्तुत पुस्तक में संस्कृत के महाकवियों के संबन्ध में प्रचलित यथाप्राप्त अधिकतम संस्कृत सूक्तियों का अलग-अलग निबन्ध के रूप में युक्ति-संगत विवेचन किया गया है। १-५०

७८ **सत्यहरिश्चन्द्रनाटक**। (छात्र-संस्करण) समालोचना, टिप्पणी सहित। शुभाशंसक—पं० बाबूराव विष्णुपराड़कर [ह. २०६] ०-६५

७९ **सुभद्राहरणम्**। सान्वय 'प्रकाश' हिन्दीव्याख्योपेतम्।
श्रीगदित महाभारतीय रोचक आख्यान के आधार पर रचा गया यह नाटक अब सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या के साथ प्रकाशित किया गया है। [वि. सं. ६९] १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८० **सौगन्धिकाहरणम्** । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्योपेतम्

महाभारतीय आख्यान पर आधारित यह संस्कृत नाटक हिन्दी व्याख्या सहित प्रस्तुत है। भूमिका में कविपरिचय, कथावस्तु, पात्रालोचन तथा और भी शास्त्रीय विषयों पर विचार है। [वि. सं. ९६] २-००

८१ **स्वप्नवासवदत्तम्** । 'प्रबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पं० कान्तानाथ शास्त्री तेलंग सम्पादित समालोचनात्मक हिन्दी प्रस्तावना से सुसज्जित संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित यह संस्करण छात्रों के लिये अधिक उपादेय है। अंग्रेजी छात्रों के लिये तो शास्त्री जी की समालोचनात्मक भूमिका ही परीक्षा के लिये पर्याप्त है। [ह. ५२] ३-००

८२ **हनुमन्नाटकम्** । 'विभा' संस्कृत-हिन्दीव्याख्या सहित।

अपनी कोटि का यह संस्कृत आर्ष नाटक अपनी अलग विशेषता रखता है। यद्यपि इस पर अनेक प्राचीन टीकाएँ प्राप्त हैं पर वे पाण्डित्यपूर्ण व्याख्यानवाली तथा पुरानी शैली से लिखी होने के कारण आधुनिक सहृदयों की रुचि नहीं तुष्ट कर पातीं। प्रस्तुत संस्कृत व्याख्या में अनावश्यक विस्तार न कर सुबोध व्याख्या प्रस्तुत की गई है तथा हिन्दी व्याख्या में सरलता लाने का प्रयास किया गया है। पाण्डित्यपूर्ण विचारों से पूर्ण लेखक की विशद भूमिका में ग्रन्थ के गंभीर अध्ययन एवं शोध के परिणाम उपन्यस्त हैं। कथासार, समालोचना, पात्र-परिचय, श्लोकानुक्रमणिका आदि प्रायः सभी उपयोगी विशेषताओं से मण्डित यह अभिनव संस्करण अवश्य पठनीय है। [ह. २७१] ६-५०

*83 Harsha and his Three Dramas. By Sadashiva Lakshmidhara Katre. 3-00

८४ **हास्यार्णवप्रहसनम्** । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित।

प्रस्तुत संस्करण में मूल के साथ विषयानुकूल सरल हिन्दी भाषा के माध्यम से संस्कृत साहित्य का हास्यरस प्रस्तुत किया गया है।

[वि. सं. १०३] २-५०

८५ **हिन्दी के पौराणिक नाटक** । डॉ० देवर्षि सनाढ्य

संस्कृत, हिन्दी, बँगला, मराठी, गुजराती आदि भारतीय भाषाओं में पौराणिक नाटकों की परंपरा का इतिवृत्त इस शोध ग्रंथ में उपस्थित किया गया है। [वि. रा. ३५] १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

❀संगीत-ग्रन्थाः

१ अप्रकाशित राग। १-३ भाग ६—००
२ आवाज सुरीली कैसे करें। ३—५०
३ आसावरी थाट अंक। ३—००
४ कत्थक नटवरीनृत्य। ३—५०
५ कथक नृत्य। प्रकाशनारायण २—५०
६ कथक नृत्य। लक्ष्मीनारायण ८—००
७ कथकलि नृत्यकला। ३—००
८ कल्याण थाट अंक। ४—००
९ काफी थाट अंक। ३—००
१० क्रमिकपुस्तकमालिका १-६ भाग ६९—२५
११ खमाज थाट अंक। ३—००
१२ ठुमरी अंक। ३—००
१३ ठुमरी गायकी। ३—५०
१४ ताल अङ्क। ५—००
१५ तालप्रकाश। ६—००
१६ तालमार्तण्ड। ६—००
१७ तोड़ी थाट अंक। ३—००

१८ दत्तिलम्। आचार्य दत्तिल विरचित।

संगीतशास्त्र का यह प्राचीनतम ग्रन्थ अधिक श्रम से प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी व्याख्याकार-श्रीदेवदत्त शास्त्री यन्त्रस्थ

१९ ध्वनि और संगीत। ४—५०
२० नलदवदन्तीरास। महीराजकृत। भोगीलाल जे० सांदेसरा संपादित ४—२५
२१ नृत्य अंक। ३—५०
२२ नृत्य भारती। प्रथम भाग ४—००
२३ पूर्वी थाट अंक। ३—००
२४ बाल संगीत शिक्षा। १-३ भाग ३—००
२५ बेलाविज्ञान। ५—००
२६ बैंजोमास्टर। २—००
२७ भरत का संगीत सिद्धान्त। ६—५०
२८ भातखण्डे संगीत पाठमाला। प्रथम भाग १—५०
२९ भातखण्डे संगीतशास्त्र। १-४ भाग ३६—००
३० भातखण्डे स्मृति अंक। १—२५

३१ भारतीय संगीत का इतिहास। (वैदिक काल से गुप्त काल तक) डॉ० शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे।

इस ग्रंथ में वैदिक काल से गुप्त काल तक के भारतीय संगीत का प्रमाणबद्ध इतिहास प्रस्तुत किया गया है। संस्कृत भाषा का जो स्थान तुलनात्मक भाषाविज्ञान के अन्तर्गत है, वही स्थान भारतीय संगीत का तुलनात्मक संगीत विज्ञान में है। इसी दृष्टिकोण से भारतीय संगीत के महत्त्वपूर्ण कालखण्ड के इतिहास का उद्घाटन संस्कृत साहित्य के माध्यम से राष्ट्रभाषा में प्रस्तुत किया गया है। संगीत के ऐतिहासिक विकासक्रम के अध्ययन के लिये यह ग्रंथ अद्वितीय है। ३०—००

३२ भैरव अंक। ३—००
३३ भैरव थाट अंक। ३—००
३४ मणीपुरी नृत्य। १—००
३५ महिला हारमोनियमगाइड। १—५०
३६ मारवा थाट अंक। ३—००
३७ मारिफुन्न ग़मात। १-३ भाग १५—५०
३८ मृदंग तबला प्रभाकर। १-२ भाग ५—५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३९ मृदङ्गसागर। ५—००
४० मेलरागमालिका। महावैद्यनाथ शिव कृत ५—००
४१ म्यूजिक मास्टर। २—५०
४२ रविशंकर के आरकेस्ट्रा। ६—००
४३ रवीन्द्र संगीत। ३—५०
४४ राग अंक। ४—००
४५ राग अने रास। ओंकारनाथ ठाकुर (गुजराती) १—७५
४६ रागनिर्णय। २—५०
४७ रागपरिचय। १-३ भाग ७—७५
४८ राग विज्ञान। १-७ भाग २८—००
४९ रागविबोधः। सोमनाथ कृत स्वकृत विवेक व्याख्या सहित १५—००
५० राष्ट्रिय संगीत अंक। ३—५०
५१ वाद्यशास्त्र। २—५०
५२ वाद्य संगीत अंक। ३—५०
५३ वितत वाद्य शिक्षा। प्रथम सोपान १—२५
५४ विलावल थाट अंक ३—००
५५ वीणा लक्षण-वीणा प्रपथक। जे० एस० पादे संपादित ३—५०
५६ संगीत अर्चना। ६—००
५७ संगीत कादम्बिनी। ६—००
५८ संगीत किशोर। १—७५
५९ संगीत चूड़ामणि। जगदेक मल्ल कृत ६—५०
६० संगीतदर्पणः। चतुरदामोदरप्रणीत ३—००
६१ संगीतदर्पणः। हिन्दी टीका सहित २—५०
६२ संगीत निबन्धमाला। २—२५
६३ संगीत निबन्धावली। प्रथम भाग २—५०
६४ संगीत पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन। ३—००
६५ संगीतपारिजातः। हिन्दी टीका सहित ५—००
६६ संगीत प्रश्नपञ्जिका। ४—००
६७ संगीतरत्नाकरः। शार्ङ्गदेव कृत। चतुरकल्लिनाथ सिंह-भूपालकृत व्याख्याद्वय सहित १-४ भाग ९५—००
६८ संगीत रहस्य। श्री पदवन्द्योपाध्याय २—२५
६९ संगीतराजः (पाट्यरत्नप्रवेश)। कालसेन महारानाकुम्भ कृत। कुन्हनराजा सम्पादित प्रथम भाग ३—००
७० संगीतराज। नृपति कुम्भकर्ण प्रणीत। संपादिका-डॉ० प्रेमलता शर्मा। प्रथम खण्ड ४०—००
७१ संगीतलहरी। संग्रहकर्त्री—देवी मेहता १—००
७२ संगीतविशारद। ६—००
७३ संगीत शास्त्र। प्रथम भाग १—२५
७४ संगीत शास्त्र। के० वासुदेव शास्त्री ६—५०
७५ संगीतशास्त्र दर्पण। १-२ भाग ५—२५
७६ संगीतशास्त्र परिचय। १-२ भाग १—२५
७७ संगीतशास्त्र मीमांसा। ४—००
७८ संगीत शिक्षा। २—५०
७९ संगीतसागर। ७—००
८० संगीतसीकर। ६—००
८१ संगीत सुधा सागर। २—००
८२ संगीतसोपान। ३—००
८३ संगीतोपनिषदसारोद्धार। वचनाचार्य सुधाकलश विरचित १२—००
८४ संग्रहचूड़ामणि। गोविन्दाचार्यकृत १५—००
८५ सन्त संगीत अंक। ३—५०
८६ सहगल संगीत। ३—००
८७ सारेगम। २—५०
८८ सितार मार्ग। १-३ भाग १५—००
८९ सितार मालिका। ६—००
९० सितारसुबोधिनी। पांचवां भाग ४—००
९१ सूर संगीत। १-२ भाग ४—००
९२ स्वरमेलकलानिधिः। हिन्दी टीका सहित १—२५
९३ हमारे संगीत रत्न। १५—००
९४ हरिदास अंक। १—२५
९५ हाई स्कूल संगीत शास्त्र। २—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*96 Evolution of Songs & Lives of Great Musicians. 3—37

97 UNIVERSAL HISTORY OF MUSIC. By S. M. Tagore. [Chow. Sans. Studies. Vol. XXXI] 20-00

98 HINDU MUSIC FROM VARIOUS AUTHORS : By Raja Sir Sourindro Mohun Tagore [Chow. Sans. Studies. Vol. XLIX] 25-00

नीति-अर्थशास्त्र-ग्रन्थाः

१ अपराध और दण्डशास्त्र । श्री कौशलकुमार राय

यह विषय प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में स्वीकृत है। इस पर हिन्दी में कुछ पुस्तकें निकली भी हैं परन्तु उनमें किसी में भी दण्डशास्त्र पर सामग्री उपलब्ध नहीं है। इसी कमी की पूर्ति के लिए इस पुस्तक की रचना हुई है। [वि. रा. ८८] ८-००

***२ अभिलषितार्थचिन्तामणिः** । सोमेश्वरदेवकृत । नेट २-५०

*3 Organisation of Government in Maharastra : Indian Institute of Public Administration. Maharastra Regional Branch. Preface by N. S. Pardasani. With Charts. 20-00

*4 In Search of Freedom. By Jogesh Chandra Chatterji. 25-00

*5 Indian Cameralism. By K. V. Rangaswamy Aiyangar Nett 12—00

*6 Indian National Congress. By P. C. Ghosh. 15-00

*7 Indian Nationalism Versus International Communism : Role of Ideology in International Politics. By J. Bandyopadhyaya. 25-00

*8 Indian Political Associations & Reforms of Legislature (1818–1917). By B. P. Majumdar. 25-00

*9 Indian Voting Behaviour. Studies of the 1962 General Elections. Edited by Myron Weiner and Rajni Kothari. 15-00

*10 Imperial Policy of British in India (1876–1880). Birth of Indian Nationalism. By Dr. Vijaya Chandra Prasad Chaudhary. With a Foreword By K. K. Dutta. 35-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११ **कथासंवर्तिका** (बालोपयोगी मनोरम कथानक संग्रह)

सन्धिविरहित अति सरल तथा सारगर्भित संस्कृत में लिखी कथाओं की यह पहली पुस्तक है। कहानियाँ अपने ढंग की निराली होती हुई भी नीति और शिक्षापूर्ण हैं। [वि. सं. ४०] ०-७५

*12 Congress & Congressmen in the Pre-Gandhian Era, 1885-1917. By B. B. Majumdar and B. P. Majumdar. 35-00

१३ **हिन्दी कौटिलीय-अर्थशास्त्र** (उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत) व्याख्याकार—श्री वाचस्पति शास्त्री गैरोला। प्रस्तुत संस्करण में इस बात पर विशेष ध्यान रखा गया है कि अनुवाद की भाषा सुगम तथा वाक्ययोजना लघु हो। मूल के प्रतिपद का अर्थ इसमें स्पष्टतया देखा जा सकता है। पाण्डित्यपूर्ण विशद भूमिका में वैदिक युग के आदिम साम्यसंघ से लेकर दासराज्यों, गणराज्यों, और उनके बाद अधिष्ठित साम्राज्यों के उदय-अस्त, का ऐतिहासिक दृष्टि से समीक्षण किया गया है तथा अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नई चेतना को जन्म देने वाले और आधुनिक दृष्टि से उस पर नये सिरे से विचार करने वाले कार्ल मार्क्स, एंगल्स और लेनिन जैसे महान् राजनीतिज्ञों एवं धुरन्धर अर्थशास्त्रियों के सिद्धान्तों की भी समीक्षा विस्तार से की गई है। ग्रन्थान्त में लगभग ८०० प्रशासनिक शब्दों के अँगरेजी-हिन्दी पर्यायों का संयोजन भी किया गया है जिनसे कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इन्हीं सब विशेषताओं के कारण उत्तरप्रदेशीय शासन ने एक सहस्र रजत मुद्राओं से लेखक को पुरस्कृत किया है। तात्पर्य यह कि यह बृहत्संस्करण अब तक के प्रकाशित समस्त संस्करणों में अद्वितीय है। छात्र, अध्यापक, राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, शोधकर्ता—कोई भी हों, प्रस्तुत संस्करण में अपनी जिज्ञासा का समाधान अवश्य प्राप्त करेंगे। [वि. सं. ७५] २०-००

१४ **कौटिल्य का अर्थशास्त्र** (शोधपूर्ण हिन्दी रूपान्तर) रूपान्तरकार—श्री वाचस्पति शास्त्री गैरोला।

आलोचनात्मक मनोवैज्ञानिक विमर्श, पारिभाषिक संस्कृत-हिन्दी शब्द-कोश ऐतिहासिक प्रस्तावनादि सभी विषयों से विभूषित। [वि. रा. ५१] १०-००

15 KAUTILYA'S POLITICAL IDEAS AND INSTITUTIONS : By Prof. Radha Krishna Choudhary. 20-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१६ **चाणक्यसूत्रम्।** (प्रथमोऽध्यायः) । 'बालबोधिनी'-'सरला'-संस्कृत-हिन्दीटीकासहितम् [ह. ८५] ०-४५

१७ **चाणक्यसूत्रम्।** अनुवादक—वाचस्पति गैरोला अर्थशास्त्र पर चाणक्य के लगभग ५०० परमोपयोगी सूत्रों का व्यवस्थित भाषानुवाद। [वि. सं. ७७] ०-७५

*18 Tribal Economy in Central India. By R. P. Saxena. Illustrated. 20-00

*19 Dravidian Movement. By Robert L. Hardgrave. 10-00

*२० **नीतिमंजरी।** श्री द्याद्विवेदविरचिता सभाष्या। भूमिका टिप्पणी परिशिष्टादिभिः संयोज्य सम्पादिता। ४-५०

२१ **नीतिशतकम्।** 'ललिता' 'बाला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। भर्तृहरि योगीन्द्र प्रणीत इस नीति शतक के १०० श्लोक बालक-बालिकाओं को अभ्यास करा देने से निश्चय ही उनका जीवनस्तर उन्नत हो जायगा। व्याख्या अत्यन्त सरल तथा सुबोध है। [ह. ९७] १-२५

*22 National Movement in Modern China. By K. L. Chatterjee. 10-00

२३ **पञ्चतन्त्रम्।** (शोधपूर्ण संस्करण) 'सरला' हिन्दी व्याख्या सहित। (व्याख्याकार—श्री गोकुलदास गुप्त)

इस ग्रन्थ की जो अन्यान्य हिन्दी टीकाएँ प्रकाशित हुई हैं वे शोधपूर्ण नहीं होने से इस कोटि की हैं कि संस्कृत के ज्ञाता ही उनसे लाभान्वित हो सकते हैं। अतः आधुनिक ढंग की यह व्यवस्थित सरल हिन्दी टीका प्रस्तुत की गई है। इस टीका की यह विशेषता है कि केवल हिन्दी जानने वाले भी पंचतंत्र की कथाओं में आए हुए उपदेशों तथा नीतितत्त्वों से भली भाँति अवगत हो जायँगे। यह संस्करण विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं साहित्य तथा नीतिप्रेमियों के लिए समान रूप से उपयोगी है।

मित्रभेद (प्रथमतन्त्र) २-५०, **मित्रसम्प्राप्ति** (द्वितीयतन्त्र) १-५०
काकोलूकीय (तृतीयतन्त्र) १-२५, **लब्धप्रणाशम्** (चतुर्थतन्त्र) ०-७५
अपरीक्षितकारक (पञ्चमतन्त्र) ०-७५, संपूर्ण अजिल्द ४-००
सजिल्द [वि. सं. १७] ५-००

२४ **पञ्चतन्त्रम्।** अश्लीलांश-वर्जितम्। विषमस्थलबोधिनीविवृति सहित बालकोपयोगी सर्वोत्तम पुस्तक। पञ्चमतन्त्र ०-१५ सम्पूर्ण [ह. १३] २-००

२५ **पञ्चतन्त्र-मित्रभेदः** (प्रथमतन्त्रम्) अश्लीलांशवर्जित। 'बोधिनी' नामक विवृति सहित : [ह. १३] ०-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२६ **पञ्चतन्त्रम्** (अपरीक्षितकारकम्) 'सुबोधिनी' व्याख्योपेतम् । अश्लीलांशवर्जित । संस्कृत-हिन्दी टीका, टिप्पणी, संक्षिप्त-कथा, शिक्षासंग्रह, विस्तृतभूमिका आदि विषयों से विभूषित [वि. सं. १७] ०-७५

*२७ **पाश्चात्यं नीतिशास्त्रम्** । विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि विरचित ४-००

*२८ **प्रियदर्शिप्रशस्तयः** Edicts of Asoka with Sanskrit and English translation. Nett 12—00

२९ **बार्हस्पत्य राज्य-व्यवस्था** । डॉ० राघवेन्द्र वाजपेयी ।

राजनीति के प्रमुख आचार्य बृहस्पति ने राज्य-शासन तथा राज्य प्रबन्ध के लिये जिन विधि-विधानों का आदेश दिया है, उन पर पाण्डित्यपूर्ण आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत पुस्तक में दर्शनीय है । इससे वर्तमान भारतीय राज्य-व्यवस्था के गुण-दोषों पर अनजाने ही पर्याप्त प्रकाश पड़ जाता है । राजनीति के क्षेत्र में यह अभिनव ग्रन्थ है ।

[वि. रा. ९७] १०-००

*30 British Policy towards the Pathans and the Pindaris in Central India, 1805–1818. By Dr. Biswanath Ghosh. 30-00

३१ **भर्तृहरिशतकत्रयम्** (नीति-शृङ्गार-वैराग्य शतकम्) हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद सहित

महायोगी महाराज भर्तृहरि-रचित इन ग्रन्थरत्नों के श्लोकों का मूल के साथ हिन्दी भावानुवाद, तथा साथ में हिन्दी पद्यानुवाद भी प्रकाशित किया गया है । संस्कृत न जानने वाले व्यक्ति भी ग्रन्थों के मूल भावों को हृदयङ्गम कर आनन्द के भागी हो सकते हैं । गद्य, एवं पद्य दोनों अनुवादों की भाषा अत्यन्त सरल, ललित तथा भावों के सर्वथा अनुकूल है । [चौ. पु.] ३-००

*३२ **भारतराष्ट्रसंघटना** । सी० कुन्हन राजा नेट २-००

*33 Bhumij Revolt (1832–33) (Ganga Narain's Hangama or Turmoil). By Dr. Jagdish Chandra Jha. With a Foreword by Dr. Ram Sharan Sharma. 20-00

*34 Ryotwari System in Madras 1792–1827 : An Analysis of the Social and Economic Consequences of the Ryotwari System Adopted under Munro. By N. Mukherjee. With a Foreword by Dr. N K. Sinha. 20-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३५ **राजनय के सिद्धान्त और व्यवहार** । श्रीमती कृष्णाराय । इस पुस्तक में प्रायः भारतीय विश्वविद्यालयों के एम० ए० के इतिहास और राजनीतिशास्त्र के पाठ्यक्रम में सम्मिलित सभी विषयों का समावेश है । अतः यह पुस्तक विद्यार्थियों की एक बहु प्रतीक्षित माँग की पूर्ति करती है । 'राजनय' की जटिलता एवं दुरुहता से इतिहास व राजनीतिशास्त्र के विद्यार्थी भली भाँति परिचित हैं । आज अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में फैली विषमताओं और शान्ति समस्याओं को देखते हुए इस विषय की जानकारी और भी आवश्यक हो गयी है । अतः सरल एवं सुस्पष्ट उदाहरणों द्वारा इसे अधिकाधिक बोधगम्य बनाने की चेष्टा की गयी है । पुस्तक निर्माण में अनेक अंग्रेजी पुस्तकों की सहायता ली गयी है । 'राजनीति' में रुचि रखने वाले सामान्य नागरिक का भी इससे हित साधन होगा । अन्त में अंग्रेजी हिन्दी पर्यायसहित परिभाषिक शब्दानुक्रमणिका तथा एक विस्तृत सहायक ग्रन्थ सूची भी दे दी गयी है । [वि. रा. ७५] ५-००

३६ **राजनीतिरत्नाकरः** । श्रीचण्डेश्वरविरचितः । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्योपेतः । व्याख्याकार—वाचस्पतिशास्त्री गैरोला । भारतीय राजनीति विषयक ग्रन्थों में विषयविभाजन की दृष्टि से यह ग्रन्थ बड़े महत्त्व का है । इसमें राजा, मंत्री, पुरोहित, न्यायाधीश आदि के निरूपण सोलह तरंगों में हैं । प्रत्येक तरंग की व्यवस्था एवं क्रमबद्धता में ग्रन्थकार ने विशेष दृष्टि अपनायी है । 'कौटिलीय अर्थशास्त्र' के सुविख्यात टीकाकार गैरोलाजी ने इसकी व्याख्या में इस बात पर विशेष ध्यान रखा है कि अनुवाद की भाषा सुगम तथा वाक्ययोजना लघु हो । इसकी सरल व्याख्या में मूल के अनुरूप ही प्रत्येक विषय पर समस्त पूर्ववर्ती ग्रन्थों एवं ग्रन्थकारों के विचारों का एकसाथ समन्वय देखने को मिलेगा । राजनीति में रुचि रखने वाले सामान्य नागरिक का भी इससे हितसाधन होगा । ८-००

*37 Lodhas of West Bengal : A Socio-Economic Study. By Dr. P. K. Bhowmick. With a Foreword by N. K. Bose. With Illustrations. 30-00

३८ **विदुरनीतिः** । 'तत्त्वार्थदर्शिनी' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । स्वतन्त्र भारत के जनतन्त्र राज्य में प्रत्येक व्यक्ति को साधारण व्यावहारिक नीति के साथ ही राजनीति जानना भी परमावश्यक हो गया है । इस ग्रन्थ के अध्ययन से प्रत्येक व्यक्ति नीति में निपुण होकर योग्य नागरिक तथा राष्ट्रनेता बन सकता है । [ह. ९८] २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*39 Welfare Economics in India. By S. Guha. 12-00

*४० वैशम्पाय ननीतिप्रकाशिका। सीतारामकृत तत्त्वविवृति सहिता ४-१२

४१ शुक्रनीतिः। (शोधपूर्ण संस्करण) 'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्या सहित। व्या०-पं० ब्रह्मशंकर मिश्र। भूमिका-पण्डितराज राजेश्वरशास्त्री पद्मभूषण, प्रस्तावना-पं० श्रीनारायण मिश्र। महाभारतादि प्राचीनतम आर्ष ग्रन्थों में शुक्राचार्य की नीति की मुक्तकंठ से प्रशंसा की गयी है; प्रस्तुत ग्रन्थ में-राजोत्पत्ति, राजस्वरूप, राज-कर्तव्य, उत्तराधिकार, राज्य-विभाजन, उपाय, राज्याङ्ग, मंत्रिपरिषद् आदि प्रमुख अर्थशास्त्रीय विषयों का क्रमबद्ध मनोरम विवेचन प्रस्तुत किया हुआ है। शुक्रनीति के १-२ संस्करण पहले भी प्रकाशित हो चुके हैं परन्तु विद्वानों को वह अपूर्ण सा प्रतीत हो रहा था। इसका निदान क्या है? इसकी छानबीन करके काशी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों के तत्त्वावधान में यह शोधपूर्ण संस्करण प्रकाशित किया गया है। इसकी हिन्दी व्याख्या अत्यन्त सरल है। इससे ग्रन्थाशय समझने तथा मूल लगाने में समुचित सहायता प्राप्त होती है। पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या पर विशेष ध्यान दिया गया है। पू० शास्त्री जी की भूमिका में नीतिशास्त्र विषयक उत्तम पाण्डित्य पूर्ण विचारों की प्रमाणिक व्यवस्था देखने को मिलती है। सर्वोपरि प्रस्तुत संस्करण अनेकानेक उपयोगिता के कारण अवश्य संग्रहणीय है। [का. १८५] १२-५०

*42 Sri Aurobindo and the New Thought in Indian Politics: A Study in the Ideas of Indian Nationalism based on the rare Writings of Sri Aurobindo in the Daily Bande Mataram during the years 1906-1908. By Haridas Mukherjee and Uma Mukherjee. With a Foreword by Dr. Radha Kumud Mookerji. 12-00

*43 Survey of India's Social Life and Economic Condition in the Eighteenth Century (1707-1813). By Dr. K.K. Datta. 15-00

*44 Social Rural Economy of Northern India. Vols. I-II. By A. N. Bose. 35-00

*45 Studies in Kautilya. By Dr. M. V. Krishna Rao. 12-50

*46 Studies in the Development of Capitalism. By S. C. Jha. 20-00

*४७ हरिहरचतुरङ्गम्। गोदावरीमिश्रप्रणीतम्। नेट ६-५०

४८ हितोपदेशः। सटिप्पण। सम्पूर्ण [ह. ३८] १-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४९ **हितोपदेश-मित्रलाभः।** (अश्लीलांश वर्जित। वाराणसी तथा बिहार की प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत) सान्वय किरणावली संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित।

प्रथमा परीक्षा के कोमलमति बालकों के लिए इसमें अन्वय, वाच्यपरिवर्तन, संस्कृत व्याख्या, सरलभावार्थ तथा हिन्दी-भावार्थ आदि परीक्षोपयोगी सभी विषय दिये गये हैं। सबसे बड़ी विशेषता प्रस्तुत संस्करण की यह है कि ग्रन्थारम्भ में प्रत्येक कथा का परीक्षोपयोगी कथासार भी दे दिया गया है। एकादश संस्करण [ह. ७७] १-००

५० **हितोपदेश-सुहृदभेदः।** परीक्षोपयोगी सान्वय किरणावली संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित [ह. ७७] १-२५

५१ **हितोपदेशः।** 'किरणावली' संस्कृत-हिन्दी व्याख्यासहित। इसकी अत्यन्त सरल सान्वय संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्या ग्रन्थ लगाने के लिये अपने ढंग की बड़ी उत्तम व्याख्या है। प्रत्येक प्रकरण के कथासार तथा तद्गत श्लोकों की अकाराद्यनुक्रमणिका भी दी गई है। छात्रों को विशेष ज्ञान तथा परीक्षा की दृष्टि से इसी संस्करण का संग्रह करना चाहिए। सम्पूर्ण शोधपूर्ण संस्करण [ह. ७७] ३-५०

कोश-ग्रन्थाः

१ **अभिधानचिन्तामणिः।** आचार्य हेमचन्द्रकृतः। 'मणिप्रभा' हिन्दी व्याख्या विमर्श सहित। व्याख्याकार—पं० हरगोविन्द शास्त्री प्रस्तुत कोश ग्रन्थ सारपूर्ण विस्तृत हिन्दी टीका एवं अपूर्व कोश-कला से परिपूर्ण है। इसकी विस्तृत भूमिका, विषयसारिणी, नव-शब्द-योजना तथा अंतिम शब्दानुक्रमणिका अत्यंत ही उपादेय और प्रशस्त है [वि. सं. १०९] २०-००

२ **अमरकोशः।** 'मणिप्रभा' हिन्दीव्याख्या, टिप्पणी सहित। हिन्दी व्याख्या में मूल श्लोकों के पर्याय, लिङ्ग, पाठान्तर और मतान्तर के पर्याय, अन्य ग्रन्थों या कोषों में मिलने वाले आंशिक समानाकार बाहरी शब्द तथा हिन्दी में अर्थ दिये गये हैं और 'अमरकौमुदी' नामक संस्कृत टिप्पणी में वेद, वेदाङ्ग, स्मृति, पुराण और साहित्यादि अनेक ग्रन्थों से प्रमाण-वचन, पाठान्तर आदि, तथा अक्षौहिणी सेना, मन्वन्तर काल, द्रोण खारी आदि परिमाण (तौल) इत्यादि के अनेक चक्र भी दिये गये हैं। प्रथम काण्ड ०-७५ द्वितीय काण्ड १-६ सर्ग २-००, तृतीय काण्ड ३-१० १-३ काण्ड सम्पूर्ण [ह. ३०] ७-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३ **अमरकोश-रामाश्रमी**। सटिप्पण 'प्रकाश' नामक हिन्दी व्याख्या सहित (क्षेपक श्लोकों सहित शोधपूर्ण संस्करण)

इसके पूर्व जो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, उन पूर्व प्रकाशित संस्करणों में जो प्रमापक वचन या ग्रन्थ नाम आदि आये हैं, उनमें मुद्रणादि की परम्परा से प्रमादवश बहुत से स्थल अशुद्ध, अपूर्ण या नामान्तरित हो गये हैं। हमारे कुशल सम्पादक मण्डल ने उन प्रत्येक वचनों में आने वाले शब्दों को उन ग्रन्थों से मिलान कर प्रस्तुत शोध संस्करण तैयार किया है। मूल में सब क्षेपक श्लोक भी दे दिए गए हैं तथा उनकी भी हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की गई है। प्रमाण तथा उदाहरण के लिये उद्धृत वचनों में मूल ग्रन्थ के अध्याय-श्लोकांक आदि भी जोड़े गए हैं। साथ ही यथास्थान उपयुक्त टिप्पणियाँ, पाठ-भेद, अकारादिक्रम से शब्दानुक्रमणिका आदि देकर इस संस्करण को पूर्णतया शुद्ध एवं परमोपयोगी बना दिया है। शीघ्र प्रकाशित होगा

४ **अमरकोशः-मूल**। प्रथम काण्ड मात्र [श्रीकृष्ण १] ०-२५

५ **अमरकोशः-मूल**। द्वितीय काण्ड मात्र [नि.] ०-४०

६ **अमरकोशः**। तृतीय काण्ड मात्र। 'प्रभा' टीका सहित [ह. १४४] ०-५०

७ **अमरकोशः**। [गुटका सम्पूर्ण] 'प्रभा' टीका सहित।

यह प्रामाणिक संस्कृत टीका यद्यपि संक्षिप्त है पर कोई विषय छूटा नहीं है। हिन्दी में भी निर्देश किया गया है कि ये इतने अमुक के नाम हैं। परीक्षा की दृष्टि से छात्रों के लिये यह विशेष उपयोगी है [ह. १४४] १-५०

८ **अनेकार्थध्वनिमञ्जरी**। द्विरूपकोश-एकाक्षरकोश सहिता [नि.] ०-२०

९ **अनेकार्थसंग्रहः कोशः**। हेमचन्द्रविरचितः [का. ६८] १०-००

१० **आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोशः**। प्रो० रामसरूप शास्त्री।

इस कोश में लगभग चालीस सहस्र हिन्दी-हिन्दुस्तानी शब्दों तथा मुहावरों के संस्कृत पर्याय दिये गये हैं। प्रत्येक शब्द का लिंगनिर्देश भी किया गया है। हिन्दी क्रिया पदों के संस्कृत धातुओं के गण, पद, सेट, अनिट्, वेट्, णिजन्त आदि के रूप भी दिये गये हैं। कोश की उपयोगिता पर डॉ० सूर्यकान्तशास्त्री, श्रीविश्वबंधु शास्त्री, महामहोपाध्याय श्री परमेश्वरानन्द शास्त्री, आदि-आदि विद्वानों ने अपनी-अपनी अमूल्य सम्मतियाँ प्रदान की हैं; जो पुस्तक में छपी हैं। विद्वान् लेखक ने इस द्वितीय संस्करण को आद्योपान्त सुसंस्कृत तथा परिवर्धित करके अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया है। [वि. सं. ३२] १२-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११ आख्यातचन्द्रिका नाम क्रियाकोषः । श्रीभट्टमल्लविरचितः [चौ. २२ । यन्त्रस्थ

*१२ आख्यानकमणिकोशः । नेमिचन्द्र सूरि विरचित । आम्रदेव सूरि कृत वृत्ति सहित । मुनि पुण्य विजय संपादित २१-००

13 ENGLISH-SANSKRIT DICTIONARY. By M. Williams [Chow. Sans. Studies Vol. XIII] 32-00
Library edition 75-00

14 KALIDASA KOSA. A Classified Register of the Flora, Fauna, Geographical Names, Musical Instruments and Legendary Figures in Kalidasa's Works. By Prof. Sures Chandra Banerji.

All those terms have been alphabetically arranged and explained with reference to the places of occurrence in Kālidāsa's works. The technical names (Latin names of the flora and fauna) have given mentioned and authories quoted such an informative and interesting work must be consulted by every student of Sanskrit literature. [Chow. Sans. Studies Vol. LXI] 15-00

१५ **गणितीय कोश ।** (गणितीय परिभाषा तथा शब्दावली)

डॉ० ब्रजमोहन एम० ए०, एल० एल० बी०, पी-एच० डी०, प्राध्यापक, गणित विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी [ह. २५३] ९-००

*16 Dictionary of Indian Birds. By Dr. Raghuvira. Nett 15-00

१७ **पालि-हिन्दी-शब्दार्णव ।** (हिन्दी में प्रचारित सर्वाङ्गपूर्ण पालि कोश) । सम्पादक : श्री सत्कारिशर्मा वङ्गीय ।

स्वतन्त्रभारत में पालिवाङ्मय का समादर बढ़ता ही जा रहा है, किन्तु पालि भाषा के भाषा वैज्ञानिक ढङ्ग से अध्ययन के लिए उपयुक्त साधन आज भी राष्ट्रभाषा हिन्दी में उपलब्ध नहीं है। केवल हिन्दी में ही नहीं आज तक किसी भी भारतीय भाषा में, भारतीय विद्वान् के द्वारा तथा भारतीय दृष्टिकोण से रचित एक भी पालिकोश प्रकाशित नहीं हुआ है। इसी अभाव की पूर्ति के लिए प्रस्तुत कोश में प्रायः १५,००० पालिशब्दों का संग्रह किया गया है और प्रत्येक शब्द की संस्कृत और पालि व्याकरण सम्मत व्युत्पत्ति, उनके भाषा विज्ञान सम्मत रूपान्तर, यौगिक तथा पारिभाषिक विभिन्न अर्थ, आवश्यक स्थल पर पूरा-पूरा शास्त्रीय विवेचन, टीका ग्रन्थों से प्रासङ्गिक उद्धरण एवं विशाल त्रिपिटक एवं अट्ठकथा साहित्य से प्रत्येक शब्द का प्रयोगस्थल उपन्यस्त किये गये हैं। इस कोश ग्रन्थ से पालि एवं हिन्दी उभयसाहित्य की पर्याप्त श्रीवृद्धि होगी। इस कोश ग्रन्थ से छात्र, अध्यापक तथा शोधकर्ता समानरूप से लाभान्वित होंगे। शीघ्र प्राप्त होगा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१८ बंगला-हिन्दी-शब्दकोश। गोपालचन्द्र चक्रवर्ती ८-००

१९ **महाभारत कोश।** (महाभारत के नामों और विषयों की व्याख्यात्मक अनुक्रमणिका) रचनाकार : डॉ० रामकुमार राय।

प्रस्तुत ग्रन्थ में अकारादि क्रम से महाभारत के नामों तथा विषयों की सर्वाधिक विस्तृत, वैज्ञानिक तथा व्याख्यात्मक अनुक्रमणिका व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत की गई है। व्याख्यायें इतनी विस्तृत हैं कि उनके बाद मूल ग्रन्थ पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। सन्दर्भ संकेत पर्व, अध्याय और श्लोक संख्याओं में दिये गये हैं। प्रथम भाग (अ-क) २०-००

द्वितीय भाग (ख-द) [चौ. ९८] २०-००

शेष भाग शीघ्र प्रकाशित होंगे

*२० **मानस शब्दसागर।** संकलनकार-बद्रीदास अग्रवाल २०-००

२१ **राजतरंगिणीकोश।** (कह्लण कृत राजतरङ्गिणी में आने वाले नामों और विषयों की व्याख्यात्मक अनुक्रमणिका, सुभाषित और वंशावलियाँ इत्यादि) डॉ० रामकुमार राय

कल्हण कृत राजतरङ्गिणी का यह कोश हिन्दी में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमें राजतरङ्गिणी में आये सभी नामों और विषयों की ससन्दर्भ व्याख्या प्रस्तुत की गई है। साथ ही लेखक ने एक विस्तृत भूमिका में कल्हण के व्यक्तित्व और कृतित्व का विवेचन करते हुये विभिन्न विषयों, जैसे राजनीति, समाजशास्त्र, धर्म, और नीति आदि से सम्बद्ध उनके विचारों को प्रस्तुत किया है। राजतरङ्गिणी में आये विभिन्न राजाओं की वंशावलियों तथा कलिक्रमागत तालिकाओं का भी भूमिका के अन्तर्गत समावेश किया गया है।

कल्हण की जटिलशैली और पग-पग पर बिना विशेष विवरण के ही नित्य नूतन नामों के समावेश के कारण राजतरङ्गिणी को समझने तथा इतिहास-विषयक शोध के लिये सामग्री एकत्र करने में बहुधा जिस कठिनाई का अनुभव किया जाता रहा है उसका अब इस कोश से निराकरण हो जायगा।

इन विशेषताओं के कारण इतिहासकारों तथा साहित्यकारों सभी के लिये यह कोश एक अपूर्व आकर ग्रन्थ सिद्ध होगा।

[वि. रा. १०९] १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२२ **मेदिनीकोशः** (नानार्थशब्दकोशापरपर्यायः) श्रीमेदिनिकर विरचितः । शोधपूर्ण तृतीय संस्करण ।

अमरकोश-रामाश्रमी टीका का सटिप्पण विशुद्ध शोधपूर्ण संस्करण चौखम्बा संस्थान से प्रकाशित हुआ है। रामाश्रमी टीका में प्रायः संपूर्ण मेदिनीकोश का उद्धरण बिखरा हुआ है। सुयोग्य सम्पादक ने इस शोध संस्करण को उसी रामाश्रमी के माध्यम से आद्योपान्त संशोधन कर दिया है। शब्दानुक्रमणिका आदि से सुसंस्कृत यह संस्करण अधिक उपयोगी है [का० ४१] ६-००

२३ **वाचस्पत्यम्** । बृहत्संस्कृताभिधानम्। तर्कवाचस्पति श्रीतारानाथ भट्टाचार्येण सङ्कलितम्। संपूर्ण १-६ भाग

वृत्ति-उदाहरण-सहित पाणिनीय लिंगानुशासन, पाणिनीयप्रत्यय- उणादि-प्रत्यय-परिनिष्ठित रूप, पूर्वोत्तरपदों में परिवृत्तिसहत्वासहत्व आदि यथेष्ट सामग्री भूमिका रूप में देकर चार्वाक आदि समस्त दर्शन, समस्त श्रौतसूत्र-गृह्यसूत्र-स्मृति-पुराण आदि, रामायण-महाभारत, ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, राजशास्त्र, शकुनशास्त्र, तन्त्रशास्त्र, नीतिशास्त्र, पाकशास्त्र, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, छन्दोलंकारादि शास्त्रों में प्रयुक्त शब्दों के लिंग, विग्रह, व्युत्पत्ति, विभिन्न अर्थों में पर्याय, उदाहरण तथा तत्तत् शब्द के सम्बन्ध में यथाशक्य अधिकतम ज्ञातव्य सामग्री प्रस्तुत की गई है। विश्व में इससे बड़ा कोई दूसरा संस्कृत कोश नहीं है।

[चौ. ९४] २७५-००

२४ **शब्दकल्पद्रुमः** । राजा राधाकान्तदेव बहादुर विरचितः संस्कृताभिधान ग्रन्थः । तृतीय संस्करण

इस देश के समस्त कोशों और सम्पूर्ण शास्त्रों में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों की व्युत्पत्ति, विग्रह वाक्य, पर्याय, कौन शब्द कहाँ किस अर्थ में प्रयुक्त है इसका सोदाहरण विवेचन आदि सर्वविध शब्दज्ञान से परिपूर्ण। यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि हमने कतिपय विशिष्ट विद्वानों के आग्रह पर इस भीषण महर्घता के समय में भी इस ग्रन्थ का तृतीय संस्करण पूर्ववत् ही प्रकाशित किया है। प्रत्येक वर्ग का ग्राहक लाभान्वित हो सके इस दृष्टि से मूल्य वही रखा है जो पहले था। प्रतियाँ अवश्य कम छपी हैं जो क्रमशः बिकती जा रही हैं अतः ग्राहकों से निवेदन है कि अपनी प्रति शीघ्र मगा लें।

[चौ. ९३] १५०-००

१-५ भाग संपूर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*२५ वाङ्मयार्णवः (संस्कृत पद्यबद्ध विश्व कोश)।
म० म० पांडेय रामावतार शर्मा विरचित १००-००

२६ **वाल्मीकीय रामायण कोश।** डॉ० रामकुमार राय।
वाल्मीकीय रामायण के नामों और विषयों की सर्वप्रथम और विस्तृत व्याख्यात्मक अनुक्रमणिका जिसमें इस रामायण में आने वाले सभी नामों और प्रसङ्गों का व्याख्या सहित स-सन्दर्भ उल्लेख है।
[का. १६८] २०-००

२७ **विश्वप्रकाशकोशः।** हिन्दी टीका भूमिकादि सहितः
[चौ. ३७] यन्त्रस्थ

*२८ **वैदिक कोश।** (वैदिक विषयों एवं नामों का) डा० सूर्यकान्त २२-५०

२९ **शब्दस्तोममहानिधिः।** श्री तारानाथ तर्कवाचस्पति भट्टाचार्य विरचित।
प्रायः एक शताब्दी से दुर्लभ यह ग्रन्थरत्न संस्कृत का उत्तम कोशग्रन्थ है। इसमें संस्कृत के प्रायः सभी शब्दों के पर्यायों के साथ आवश्यक व्युत्पत्ति-विवरण—धातु-प्रत्यय, विग्रहवाक्यादि, प्रयोगस्थल आदि—भी दिए गए हैं। विवरण संक्षिप्त होने से बहुसंख्यक शब्दों का समावेश हो गया है। संस्कृत भाषा के प्रचार एवं प्रसार कार्य में इस कोश का प्रथम स्थान है। [चौ. १०१] ४५-००

३० **श्रीकोश।** (बालकोपयोगी हिन्दी से संस्कृत जेबी कोष)
इसमें लिङ्ग, क्रियाविशेषण, संज्ञा, भाववाचक संज्ञा आदि का निर्देश समुचित रूप से दिया गया है। एक्सरे, कुर्सी, टेबुल, आलमारी, बेंच, आदि वर्तमान चलते-फिरते शब्दों के प्रामाणिक संस्कृत शब्द अनेक संस्कृत कोश के सहारे सप्रमाण उद्धृत किए गये हैं। [ह. १२७] १-२५

*31 Sanskrit-English Dictionary. By V. S. Apte. Revised edition. Complete in 3 Vols. Nett 125-00

३२ **संस्कृतसाहित्यकोश।** श्रीराजवंशसहाय 'हीरा'।
हिन्दी में संस्कृत वाङ्मय की सभी प्रमुख शाखाओं, ग्रन्थों, ग्रन्थकारों विधाओं, प्रवृत्तियों एवं चिन्तनधाराओं तथा तत्सम्बन्धी अद्यतन अनुसन्धानों एवं गवेषणाओं का एक साथ प्रामाणिक विवरण प्राप्त करने के लिए यह अभिनव कोश एकमात्र साधन है। तीन विशाल खण्डों में पूर्ण हुआ यह कोश ग्रन्थ अध्यापक, छात्र तथा शोधकार्यार्थी सभी के लिए अनुपम सहायक है यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कामशास्त्र-ग्रन्थाः

१ अनङ्गरङ्गः । कल्याणमल विरचितः । [का. ९] यंत्रस्थ

+२ कामकला । विजयबहादुर सिंह ४–५०

३ **कामकुञ्जलता** । सम्पादक–पण्डितराज दुण्ढिराज शास्त्री ।

श्रीमीननाथ, भरत, पुरूरवा, दैवज्ञ सूर्य आदि द्वादश राजर्षियों द्वारा विरचित इस ग्रन्थ की द्वादश मंजरियों में कामशास्त्र के पोषक विभिन्न प्रकार के प्राचीन रसपूर्ण उपाख्यान, इस शास्त्र से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के मोहन-वशीकरणादि सिद्ध तंत्र तथा अनुभवसिद्ध लेप, तैल, पोटली, काष्ठौषधि, रसौषधि आदि का विषयानुसार सरस संस्कृत में विशद वर्णन है। अपने विषय का सर्वश्रेष्ठ आनन्ददायी तथा उपयोगी ग्रन्थ है। [चौ. ९२] २०–००

४ **हिन्दी कामसूत्र (जयमङ्गला टीका सहित)**

व्याख्याकार—श्री देवदत्तशास्त्री ।

वात्स्यायन का कामसूत्र और उसकी 'जयमंगला' टीका जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ पर यह हिन्दी व्याख्या अपनी निजी विशेषताएँ रखती है। व्याख्याकार ने शास्त्रार्थ के दुरूह स्थलों पर विमर्श लिख कर इतना सुविस्तृत और गंभीर विवेचन किया है कि यह व्याख्या कामसूत्र की एक स्वतन्त्र मौलिक रचना ही बन गई है [का. २९] १६–००

*५ **कामसूत्र परिशीलन** (वात्स्यायन कृत कामसूत्र का प्रामाणिक शास्त्रीय विवेचन) वाचस्पति गैरोला १६–००

*६ केलिकुतूहलम् । म० म० मथुराप्रसाददीक्षित विरचितम् २–००

*७ केलिकुतूहलम् । हिन्दी टीका सहित ४–००

८ **पञ्चसायकः–नर्मकेलिकौतुकसंवादश्च** । कविशेखर श्री ज्योतीश्वराचार्य तथा कविराज मुकुटेन दण्डिना विरचितः [चौ. पु.] १–००

९ **रतिमंजरी** । हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद सहित [ह. २५८] ०–४०

१० **रतिरत्नप्रदीपिका** । श्रीप्रौढदेवराज विरचिता [चौ. पु.] १–००

*११ **वात्स्यायन के योग** । श्री केदारनाथ पाठक रासायनिक ।

वैवाहिक जीवन का उत्कृष्ट आनन्द प्राप्त करने के अभिलाषी स्त्री-पुरुषों के स्वास्थ्य-सौन्दर्यादि की वृद्धि के लिये इस पुस्तिका में कामसूत्रकार महर्षि वात्स्यायन के अनुभवसिद्ध क्वाथ-चूर्ण-घृत-तैल-लेप-पोटली-उबटन-मञ्जन आदि के अनेक गोपनीय नुस्खे दिए गए हैं। विलासी पुरुषों तथा स्त्रियों के लिये भी यह उत्तम पुस्तिका संग्रहणीय है। १–००

*12 SEX LIFE IN ANCIENT INDIA. By C. Chakravarti. 15–00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तन्त्रशास्त्र-ग्रन्थाः

1 ABHINAVA GUPTA : An Historical & Philosophical Study. By Dr. Kanti Chandra Pandeya. [Chow. Sans. Studies. Vol. I] Revised and Enlarged Second Edition. 45-00

*२ **अहिर्बुध्न्यसंहिता** । (पाञ्चरात्रागमान्तर्गता) १-२ भाग ४०-००

*३ **आनन्दलहरी** । हिन्दी टीका व विस्तृत व्याख्या सहित २-२५

*४ **आरतिमाला** । ०-७५

*5 Introduction to the Ahirbudhnya Samhita. Nett 10-00

*६ **उपदेश मुक्तावली** । रहस्य भरा भजन-संग्रह । १-४ भाग ७-७५

७ **काथबोधः** । साजनीकृत टीकोपेतः [का. ५२] १-५०

*८ **कामधेनुतंत्र** । सम्पादक भद्रशील शर्मा २-५०

*९ **कालीकर्पूरस्तवः** । सविधि । पुण्यशील शर्मा १-००

*१० **कालीतन्त्रम्** । सं० भद्रशील शर्मा २-००

*११ **कुलार्णवतन्त्रम्** । भद्रशील शर्मा सम्पादित ३-५०

*१२ **कौलकीर्तनम्** । सत्यान्वेषी १-२५

*१३ **कौलावली निर्णय** । रमादत्त शुक्ल । हिन्दी भाषा मात्र ५-००

१४ **कमदीपिका** । जगद्विजयिश्रीकेशवभट्टाचार्य प्रणीता । विद्याविनोद श्रीगोविन्दभट्टकृत विवरणोपेता । 'गुरुभक्तिमन्दाकिनी' व्याख्या सहिता 'लघुस्तवराजस्तोत्र' विभूषिता च [चौ. ४९] ९-००

*१५ **गायत्री तत्व विमर्श** । अपने विषय में बेजोड़ २-००

१६ **गायत्री-तन्त्रम्** । 'तत्त्वदीपिका' हिन्दी व्याख्या विभूषित । (सानुवाद-गायत्रीशापोद्धार, कवच, दशमहाविद्यास्तोत्र सहित)

भारतीय संस्कृति के मूलाधार वेदों में गायत्री को सर्वोच्च स्थान मिला है । प्रस्तुत पुस्तक में उसी भगवती गायत्री का चरितचित्रण एवं महात्म्य का वर्णन है, जिसको भगवान् शंकर ने स्वमुख से प्रश्नोत्तर के रूप में भगवती पार्वती से वर्णन किया था । पं० शिवदत्तमिश्र कृत इसकी सुसंस्कृत हिन्दी व्याख्या से विज्ञ समाज, उपासकवर्ग तथा समालोचक विद्वान् को बड़ा ही संबल प्राप्त होगा [का. १४३] यन्त्रस्थ

१७ **गायत्रीपूजापद्धतिः** । श्री विभाकराचार्यसंगृहीता [ह. ३१] ०-२५

*१८ **चंडिकामाहात्म्य** । १-००

*१९ **चंडीचरितावली** । ०-७५

*२० **चक्रपूजा के स्तोत्र** । निशापूजा के सभी स्तोत्रों का अपूर्व संग्रह १-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*२१ ज्ञानसंकलनीतंत्र । सं० भद्रशील शर्मा १-५०

२२ तन्त्रसारः । म० म० श्रीकृष्णानन्दवागीशभट्टाचार्य विरचितः [चौ. ९०] ३-००

*२३ तन्त्रसारसंग्रहः (विषनारायणीयं) सटीकः । नारायणकृतः नेट १५-२५

*24 Tantras–Studies on their Religion and Literature. By Chintaharan Chakravarty. 16-50

*२५ तान्त्रिक पञ्चाङ्ग । स्वामीजी महाराज दतिया २-००

२६ तारापारिजातः । यन्त्रस्थ

२७ तारारहस्यम् । हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार-तन्त्रशास्त्र-पारंगत श्री सरयूप्रसाद शास्त्री 'द्विजेन्द्र' यन्त्रस्थ

*२८ तारिणीपारिजातः । विद्वद्वुपाध्याय प्रणीत ४-००

*२९ तोडलतन्त्रम् । मूलमात्र । सम्पादक भद्रशील शर्मा १-५०

३० त्रिपुरारहस्यम् । माहात्म्यखण्डम् । [का. ९२] १२-००

31 TRIPURA-RAHASYA (Jnanakhanda) English Translation and a comparative Study of the Process of Individuation. By A. U. Vasavada [Chow. Sans. Studies Vol. L] 15-00

३२ त्रिपुरारहस्यम्-ज्ञानखण्डम् । 'ज्ञानप्रभा' हिन्दी व्याख्या सहित । व्या० स्वामी सनातनदेवजी महाराज

महर्षि हारितायनप्रणीत प्रस्तुत ग्रन्थ भारतीय आगम-समुद्र का अनोखा रत्न है । अध्यात्मतत्त्व का प्रतिपादन करनेवाले ग्रन्थों में इस ग्रन्थ का निजी महत्त्व है । जीव-जगत-शुद्धचिति, ध्यान-धारणासमाधि, अष्टपाश आदि के विवरणपूर्वक जीवन्मुक्ति प्राप्त करने के साधन आदि काव्यापक, प्रामाणिक एवं युक्तियुक्त विवेचन इस ग्रन्थ का विषय है । हिन्दी ज्ञाता भी इसका लाभ उठा सकें एतदर्थ आध्यात्मिक अनुभवों से पूर्ण श्री स्वामी सनातनदेव जी ने इसकी 'ज्ञानप्रभा' नामक सरल हिन्दी व्याख्या की है । मात्र इस व्याख्या से मूल के भावों का अविकल बोध होना इसकी सही विशेषता है । उन्हीं के बहुमूल्य विचारों से युक्त विशद भूमिका भी पर्याप्त महत्त्व की है । उत्तम शैली और सुबोधता की दृष्टि से यह अवश्य पठनीय ग्रन्थ है । [का. १७६] १३-००

*३३ दकारादि श्री दुर्गासहस्रनामसहस्रम् । ०-७५

३४ दुर्गापञ्चाङ्गम् । [ह. ११८] १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२५ **दुर्गासप्तशती।** (सचित्र) 'सर्वमङ्गला' हिन्दी व्याख्या, परिशिष्ट सहित विशुद्ध संस्करण। व्याख्याकार : श्री पं० हरेकान्त मिश्र।

दुर्गासप्तशती का मुख्य महत्त्व स्तुति में है। इसमें चार स्तुतियाँ हैं। स्तुति अर्थात उपास्य के महिमा वर्णन परक वचन उपासना का एक उत्तम उपाय है। वेद मन्त्र भी मुख्यतया स्तुतियाँ ही हैं। दुर्गासप्तशती की स्तुतियाँ, विषय गाम्भीर्य, तत्त्व की प्राञ्जलता, भक्ति का स्वच्छ उद्गार एवं कवित्व के कारण स्तोत्र साहित्य में अपना प्रमुख स्थान रखती है। इसीलिए यह ग्रन्थ आसमुद्र हिमाचल आस्तिक हिन्दुओं के पारायण ग्रन्थ का स्थान प्राप्त कर चुका है। प्रस्तुत संस्करण के सम्पादक तथा व्याख्याकार देवी के अनन्य भक्त तथा दुर्गा के नित्य पाठी हैं। अपनी उपासना का एक अङ्ग समझ कर उन्होंने साङ्गोपाङ्ग दुर्गासप्तशती का यह विशुद्ध संस्करण प्रस्तुत किया है। पुस्तक के आरम्भ और अन्त में सप्तशत्यंग षट्क पूजाविधि, मंत्रकोश, नवचण्डी, नवदुर्गा, शतचण्डी, सहस्रचण्डी विधानादि सभी उपयोगी विषयों का समावेश दुर्गापटल के आधार पर किया गया है। इसमें भक्त उपासकों के लिए बहुत ही उपयोगी सामग्री एकत्रित हो गई। श्री सत्कारी शर्मा बंगीय लिखित विस्तृत भूमिका भी शक्ति-साधना के इतिहास व तत्त्व के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। प्रसङ्ग के अनुसार सभी अध्यायों के आदि में देवी के चित्र तथा पुस्तक के अन्त में सम्प्रदाय भेद से सप्तशती के सहस्राधिक पाठ भेदों को एकत्र संकलन कर दिया गया है। यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि यह उपलब्ध सभी संस्करणों में श्रेष्ठ है [ह. २७८] ४-००

२६ **दुर्गासप्तशती।** (सचित्र, शोधपूर्ण गुटका संस्करण) सम्पादक-श्री पं० हरेकान्त मिश्र।

इस विशुद्ध संस्करण के सम्पादन में अनेक ग्रन्थों एवं विशिष्ट विद्वानों की सहायता से विविध पाठान्तरों को पुस्तक के अन्त में देकर मूल पुस्तक में शुद्ध पाठ का ही उल्लेख किया गया है। दुर्गासप्तशती का यह एक मात्र शोधपूर्ण संस्करण प्रकाशित हुआ है। इसके अलावा दुर्गापाठ संकल्प, षोडशोपचार पूजनविधि, दुर्गोष्टत्तर शतनाम, रात्रिसूक्त, देव्यर्थशीर्ष, दुर्गासप्तशती हृदय तथा दुर्गादल आदि भी पुस्तक के शुरू-अन्त में दिए गए हैं। [वि. वि. २६] २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३७ **दुर्गासप्तशती** । स्थूलाक्षर । पत्रात्मक [मि. २७] २-००

*३८ **दुर्गा सप्तशती** । शब्दशः पद्यानुवाद १-५०

*३९ **दुर्गास्तवमञ्जरी** । हिन्दी टीका सहित २-५०

*४० **दोहावली** । ०-५०

*४१ **धन प्राप्ति के प्रयोग** । भद्रशील शर्मा १-५०

*४२ **निरुत्तरतन्त्रम्** । सम्पादक-भद्रशील शर्मा ३-००

*४३ **निर्वाणतंत्र** । सम्पादक भद्रशील शर्मा २-००

*४४ **नीलतंत्र** । सम्पादक भद्रशील शर्मा २-००

*४५ **पञ्चमकार तथा भावत्रय** । ४-००

*४६ **परशुरामतंत्र** । सम्पादक भद्रशील शर्मा १-००

*४७ **परातन्त्रम्** । श्रीधन शमशेर जंगबहादुर राणा २-००

*४८ **पारमेश्वरसंहिता** । (पाञ्चरात्रान्तर्गत) नेट १५-००

*४९ **पारायणविधि** । प्रणेता-राष्ट्रगुरु श्री १००८ श्री स्वामी जी महाराज २-००

५० **पुराणसंहिता** । श्रीमद्वेदव्यास विरचिता ।

आळमन्दार संहिता-बृहत्सदाशिवसंहिता-सनत्कुमारसंहिता संवलिता

[चौ. ८९] १२-००

५१ **पूतनाशान्तिः** । शिशुतोषिणी हिन्दी टीका सहितः [ह. १०२] समाप्त

५२ **मन्त्र और मातृकाओं का रहस्य** । (तन्त्रानुसार)

डॉ० शिवशङ्कर अवस्थी, शास्त्री ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में व्याकरणागम, सूतादिसंहिताओं, पुराणवचनों तथा रहस्यमयी स्मृतियों का प्रमाणार्थ उपयोग हुआ है। अहन्ता, कामकला, कुण्डलिनी, परा-पश्यन्ती आदि वाग्भेद, ओङ्कार तथा तद्गत अकार, उकार, मकार, बिन्दु, अर्द्धचन्द्र, रोधिनी, नाद, नादान्त, शक्ति आदि कलाओं, पूर्णा या परा प्रकृति एवं तदन्तर्गत पर पुरुष, अपर पुरुष, पर काल, अपर काल, पर प्रकृति, अपर प्रकृति तथा प्रतिभा आदि तत्वों की व्यापक चर्चा इसमें द्रष्टव्य है। वर्णों का वैज्ञानिक एवं दार्शनिक विवरण, मन्त्रों के स्वरूप तथा शक्ति का तलस्पर्शी विवेचन इस ग्रन्थ की विशेषता है। ग्रन्थ में विषय-विभाग इस प्रकार है—तन्त्र और आगम, आगम-समुच्चय, मातृका के विविध स्वरूप और मातृका वर्ण, मातृकाओं के वर्णरूप मातृकावर्णविकास, मातृकावर्णरूप-वाचक और उनके वाच्य, तथा मन्त्रस्वरूपविचार एवं प्रकार-भेद। हिन्दी भाषा का यह सर्वप्रथम ग्रन्थ है जिसमें तन्त्र जैसे दुरूह विषय का व्यवस्थित और बोधगम्य वर्णन देखने को मिलेगा। [वि. रा. ९५] १६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*53 Pratyabhijnahrdayam. Text and English Translation. By K. F. Leidecker. 10-00

*५४ **भैरवीचक्रपूजनम्।** १-००

*५५ **मन्त्रकोषः।** २-००

*५६ **मन्त्रसिद्धि का उपाय।** मन्त्र-साधना की सर्वोत्तम पुस्तक २-००

५७ **महामृत्युञ्जयपञ्चाङ्गम्।** [ह. ८९] १-२५

*५८ **मातृ-उपासना।** मातृ-उपासना का रूप एवं माहात्म्य २-५०

*५९ **मातृकाभेदतन्त्रम्।** ३-००

६० **माहेश्वरतन्त्रम्।** अस्य माहेश्वरतन्त्रस्य मुद्रणं न कुत्रापि सञ्जातमित्यालोच्य एतत्तन्त्रशास्त्रं पाठभेदादियोजनपुरःसरं परमपुरुषोत्तमपादसरोजानुरागिणां तन्त्रशास्त्रोपासकानामुपकाराय सम्मुद्रापितम् [चौ. ८५] ९-००

*६१ **मुद्रायें एवं उपचार।** सम्पादक—भद्रशील शर्मा २-००

*६२ **मुमुक्षु-मार्ग।** एक अनूठी कृति। १-३ भाग ६-००

63 YUGANADDHA (The Tantric View of Life). By Dr. Herbert V. Guenther, Ph. D. Second Edition Thoroughly Revised.

It is the central problem in the Buddhist Tantra. It is essentially a psychological problem, while the philosophical implication is more or less accidental. This book is based exclusively on the original texts and their symbolism is revealed with their ramifications into the world of matter and mind. [Chow. Sans. Studies. Vol. III] 16-00

*६४ **योगिनीहृदय।** अमृतानन्द योगी कृत दीपिका-भास्करराय कृत सेतुबन्ध व्याख्या सहित १०-००

*६५ **रामार्चामाहात्म्यम्** (कथा-पूजा) नेट ०-७५

*६६ **वन्दे मातरम्।** महामन्त्र 'वन्दे मातरम्' का रहस्य २-५०

*६७ **वाममार्ग।** परिचय नाम ही से प्रकट है ४-००

*६८ **विनय सुधा।** उक्त स्तोत्रों के आधार पर रचित हिन्दी पद्यों का संग्रह १-२५

*६९ **शतचण्डी-विधान।** मण्डप, कुण्ड, होमद्रव्य आदि प्रयोग-विधि ३-७५

७० **शारदातिलकम्।** लक्ष्मण देशिकेन्द्र विरचित। श्रीमद्राघवभट्टकृत 'पदार्थादर्श' टीकासहितम्।

[का. १०७] १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*७१ **शाक्त दर्शन** । कालीचरण पन्त ३-००

*७२ **शाक्त धर्म क्या है ?** देवीदत्त शुक्ल ३-००

*७३ **षट्चक्रनिरूपणम्** । स्वामी पूर्णानन्द परमहंस प्रणीत । पं० जयानन्दझा तान्त्रिक कृत हिन्दी व्याख्या सहित । तन्त्रशास्त्र में षट्चक्र के विषय-विवेचन में यह ग्रन्थ छोटा होने पर भी बेजोड़ है । विदेशी विद्वान् आर्थर ऐवेलेन ने भी अंगरेजी में इसकी टीका लिखी है । तन्त्रशास्त्र पारंगत म० म० गोपीनाथ कविराज जी के शिष्य श्री झाजी ने उस अंगरेजी टीका के भी गुणदोषों का विवेचन कर इसकी विमर्शात्मक हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की है । राष्ट्रभाषा प्रेमी तन्त्रशास्त्र जिज्ञासुओं के लिये षट्चक्रनिरूपण का मूल के साथ यही एक मात्र हिन्दी संस्करण उपलब्ध है । १-५०

*७४ **श्री उच्छवगीतांजलिः** । २-५०

*७५ **श्रीकमलास्तवमंजरी** । २-५०

*७६ **श्रीकल्पद्रुमः** । 'गुप्तावतार' बाबा मोतीलाल जी । १-२ भाग ५-५०

*७७ **श्री काली-नित्यार्चनम्** । अर्गला, कीलक, कवच आदि स्तोत्र सहित ४-००

*७८ **श्री कालीस्तवमञ्जरी** । हिन्दी अनुवाद सहित ३-५०

*७९ **श्री कालीस्वरूपतत्त्व** । भगवती आद्या के ध्यान का आध्यात्मिक रहस्य २-००

*८० **श्री छिन्नमस्तानित्यार्चनम्** । २-००

*८१ **श्री तारा-नित्यार्चन** । ३-५०

*८२ **श्री तारास्तवमञ्जरी** । २-५०

*८३ **श्री तारास्वरूपतत्त्व** । २-००

*८४ **श्रीत्रिपुरामहोपनिषद्** । १-५०

*८५ **श्रीनाथादिगुरुत्रयम्** । 'गुप्तावतार' बाबा मोतीलाल ३-५०

*८६ **श्रीपाञ्चरात्ररक्षा** । वेदान्तदेशिक विरचित २०-००

*८७ **श्री बगला-नित्यार्चन** । २-००

*८८ **श्री बगलापूजापद्धति** । २-००

*८९ **श्रीबालानित्यार्चन** । ४-००

*९० **श्री बालास्तवमञ्जरी** । भगवती बाला त्रिपुरसुन्दरी के त्रैलोक्यविजय कवच, हृदय, अष्टोत्तरशतनाम, खड्गमाला, मालातन्त्र, सहस्रनाम, कर्पूरादि स्तवराज, शान्ति-स्तोत्र जैसे अनूठे स्तोत्रों और श्रीबाला के सूक्त उपनिषद् आदि का अनूठा संग्रह । २-५०

*९१ **श्री भगवती गीता** । पद्यानुवाद व व्याख्या सहित ५-००

*९२ **श्रीभुवनेश्वरी-नित्यार्चन** । ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*९३ **श्रीभुवनेश्वरीरहस्य** । ३-००
*९४ **श्रीभुवनेश्वरीस्तवमंजरी** । ३-००
*९५ **श्री भैरवोपदेश** । गीता के समान महत्त्वपूर्ण पुस्तक ३-२५
९६ **श्रीमहालक्ष्मीपूजापद्धतिः** । सर्वदेव पूजा विधान पूजनमीमांसा, सम्पुटित श्रीसूक्त आदि विविध परिशिष्ट युक्त । हिन्दी टीका सहित [ह. १४८] १-२५
*९७ **श्रीविद्याखड्गमाला** । सविधि ४-००
*९८ **श्री विद्या-नित्यार्चन** । ५-५०
*९९ **श्री श्रीविद्यार्णव तन्त्रम्** । विद्यारण्य यति विरचित । सं० भद्रशील शर्मा । प्रथम भाग १५-००
*१०० **श्रीविद्यास्तवमञ्जरी** । ४-५०
*१०१ **श्रीश्यामापूजापद्धतिः** । ३-००
१०२ **श्रीश्यामापूजापद्धतिः** । (दुर्गापूजापद्धति सहित) सुसंस्कृत तृतीय संस्करण [मि० २५] यन्त्रस्थ
*१०३ **श्रीश्यामासपर्यावासना** । प्रातःकृत्य से लेकर समस्त अर्चनविधान के एक-एक अङ्ग का दार्शनिक विवेचन । ४-५०
*१०४ **संक्षिप्त तान्त्रिकमाह्निकं** । भद्रशील शर्मा सम्पादित ४-५०
*१०५ **सन्तानसुखप्राप्ति के प्रयोग** । भद्रशील शर्मा १-००
*१०६ **सप्तशतीमीमांसा** । रमादत्त शुक्ल २-५०
*१०७ **सप्तशतीरहस्य** । ३-५०
*१०८ **सम्पादक के पचीस वर्ष** । ४-००
*१०९ **सविधि आपदुद्धारबटुकभैरवस्तोत्रम्** । ०-७५
*११० **सांख्यायनतन्त्र** । सम्पादक-भद्रशील शर्मा ३-००
+१११ **साङ्गसप्तशतिः गुटिका** । १-५०
११२ **सात्वततन्त्रम्** । (वैष्णवतन्त्रम्) एतत्तन्त्रं नारायणेन शिवायोपदिष्टं शिवेन नारदायेति ग्रन्थतो ज्ञायते [चौ. ७९] ३-००
*११३ **साधक का संवाद** । एक शक्ति-साधक की आत्मकथा ४-५०
*११४ **साधनारहस्य** । त्रिलोकीनाथ पण्डित विरचित । हिन्दी टीका सहित १-००
*११५ **सार्थ सौन्दर्यलहरी** । प्रत्येक श्लोक की टीका और व्याख्या के साथ उसके यन्त्र-मन्त्रात्मक प्रयोग का हिन्दी में पहला और बेजोड़ प्रकाशन ५-५०
*११६ **हिन्दी कुलार्णव** । २-५०
*११७ **हिन्दी तन्त्रसार** । रमादत्त शुक्ल ८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*११८ हिन्दी शाक्तानन्दतरङ्गिणी। (शाक्तधर्म के सिद्धान्तों का परिचय) ३–५०

*११९ हिन्दुओं की पोथी। जेबी पुरोहित ३–००

Works By Sir John Woodroffe (Arthur Avalon)

*120 Garland of Letters (Studies in Mantra Shastra). 15–00

*121 Greatness of Shiva (Mahimnastava of Pushpadanta). 3–00

122 Hymn to Kali (Karpuradi Stotra) Text & Commentary with English Translation and Notes. 6–00

*123 Hymns to the Goddess (From Tantras and Stotras of Shankaracharya). 6–00

*124 Kamakalavilasa (Text, Commentary and Translation). 10–00

*125 Kularnava Tantra. Sanskrit Text. Introduction in English and Readings in English. 25–00

*126 Mahāmāyā (The World as Power: Power as Consciousness). By Sir John Woodroffe & P. N. Mukhopadhyaya. 10–00

*127 Serpent Power. 30–00

*128 Shakti & Shakta (Essays and Addresses). 25–00

*129 Tantraraja Tantra. 6–00

*130 The Great Liberation (Mahanirvana Tantra). Text Translation and Commentary. 25–00

*131 The World as Power (Reality, Life, Mind, Matter, Causality & Continuity). 15–00

*132 Wave of Bliss (Anandalahari). 3–00

वैदिक-ग्रन्थाः

१ **अथर्ववेदः**। (शोधपूर्ण संस्करण) विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार, डॉ० रामकृष्ण शास्त्री। सम्पादक, आचार्य विश्वनाथ शास्त्री वेदाचार्य यन्त्रस्थ

२ **अथर्ववेद संहिता**। मूलमात्र। सम्पादक आचार्य ऋषिशंकर अग्निहोत्री यन्त्रस्थ

३ **अथर्ववेदसंहिता**। सायणभाष्य सहित। सम्पूर्ण यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४ **अथर्ववेद एवं गोपथ-ब्राह्मण।** (M. Bloomfield सम्पादित संस्करण का अविकल हिन्दी रूपान्तर) अनुवादक– डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री [का० १६६] २५-००

5 ATHARVA-VEDA PRATISAKHYA or Saunakiya Caturadhayika: Text, Translation and Notes: By W. D. Whitney. [Chow. Sans. Studies Vol. XX] 20-00

*६ **अथर्ववेद संहिता।** सायणभाष्यावलम्बी सरल हिन्दी भावार्थ सहित। १३-५०, १६-००

*७ **अथर्ववेदे शान्तिपुष्टिकर्माणि।** डॉ० माया मालवीया विरचित ८-००

८ **आश्वलायनसूत्रप्रयोगदीपिका।** भट्ट मज्जनाचार्यविरचिता[व. ३१]६-००

*9 Rigbhashya Sangraha. By Dr. Devraj Chanana. 10-00

*१० **ऋग्वेद की ऋक्संख्या।** युधिष्ठिर मीमांसक ०-५०

*११ **ऋग्वेदघनसारः-गानिलक्षणम्-स्वरलक्षणम्।** वेङ्कटराम शास्त्रि-संकलितम् १-५०

१२ **हिन्दी ऋग्वेदभाष्य-भूमिका।** श्री जगन्नाथ पाठक। सायणाचार्य के 'ऋग्वेदभाष्य भूमिका' की यह हिन्दी व्याख्या बहुत ही उपयोगी और ग्राह्य शैली में प्रस्तुत की गई है, जिससे विद्यार्थी और इस विषय के जिज्ञासु लाभान्वित होंगे। एम० ए० के विद्यार्थियों के लिये तो यह संस्करण विशेष उपयोगी बन गया है। पहले मूल ग्रन्थ को छाप करके बाद में उसके सारे तथ्यों को पूर्णरूप से हिन्दी में विवेचन करके समझाया गया है और साथ ही सायणाचार्य के जीवन तथा साहित्य पर भी विचार किया गया है। [वि. सं. ४५] ३-५०

*१३ **ऋग्वेदव्याख्या।** माधवकृत व्याख्या। द्वितीय भागमात्र। नेट २०-००

१४ **ऋग्वेदसंहिता।** (प्रथम अध्याय, सूक्त १–१९) सम्पादक–प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'।

इस अभिनव संस्करण में सस्वर संहितापाठ, पदपाठ, सायणभाष्य तथा स्कन्दभाष्य के महत्वपूर्ण अंश, हिन्दी-व्याख्या, हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद तथा प्रत्येक पद का स्वर-विचार दिया गया है। अनुसंधित्सु लेखक ने फ्रेंच जर्मन आदि विद्वानों के विचारों का भी सार संकलन करके वेदार्थ-निर्णय का नूतन प्रयास किया है। आरम्भ में विस्तृत भूमिका देकर वेदविषयक अज्ञातपूर्व सामग्री का क्रमबद्ध विवरण तथा ग्रन्थान्त में वैदिक व्याकरण और स्वर का विवेचन देकर पदानुक्रमणी (अर्थसहित) दे देने से ग्रन्थ की उपयोगिता विश्वविद्यालय के छात्रों और सामान्य जिज्ञासुओं के लिए भी अधिक हो गई है। यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५ **ऋग्वेदसंहिता। (पदपाठ सहित)** डॉ० मैक्समूलर सम्पादित

यह ग्रन्थ डॉ० मैक्समूलर द्वारा दीर्घकालीन शोध एवं श्रम के बाद सम्पादित होकर बहुत दिन पूर्व जर्मनी में छपने के कारण भारत में दुष्प्राप्य था। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के अनन्तर निरन्तर प्रयास के बाद यह इसका सर्वप्रथम भारतीय संस्करण प्रकाशित किया गया है। इसमें बाएँ पृष्ठ पर मूलपाठ तथा दाहिने पृष्ठ पर पदपाठ अंकित किया गया है। बड़े अक्षरों में सुस्पष्ट मुद्रण तथा परिशुद्धता इसी संस्करण की विशेषता है। लेखकों, देवताओं, छन्दों और प्रत्येक छन्द के आरम्भिक अंशों की सूची तथा सर्वोत्तम पाण्डुलिपि और प्रातिशाख्य के प्रमाणों के आधार पर शुद्धाशुद्धि की विस्तृत सूची बड़ी ही उपयोगी हैं। १-२ भाग। लाइब्रेरी संस्करण [का. १६७] ५०-००

साधारण संस्करण ४०-००

16 HYMNS OF THE ṚGVEDA In Samhita and Pada Texts. By F. Max-Muller. 2 Vols. Library Edition 50-00
Ordinary Edition [K. 167] 40-00

१७ **ऋग्वेदसंहिता।** (सायणभाष्य सहित) श्री मैक्समूलर सम्पादित।

बहुत दिन पहले जर्मनी में छपने के कारण भारत में यह ग्रन्थ अलभ्य था। २० वर्षों के अनवरत प्रयत्न के अनन्तर इसका यह प्रथम भारतीय संस्करण प्रकाशित किया जा सका है। सम्पादक महोदय के जीवन-व्यापी श्रम एवं शोध का परिणाम इस परिशुद्ध संस्करण के रूप में आपके सम्मुख है। इसमें प्रति संस्करण तथा प्रति भाग के विचारपूर्ण आमुख, संकेतसूची, पाठान्तरों की एकत्रित सूची आदि उपयोगी विषय भी प्रारम्भ में उपन्यस्त हैं। डिमाई चारपेजी पृष्ठ संख्या ३६००, बहुत उत्तम मोटा कागज, सुस्पष्ट मुद्रण तथा पक्की जिल्द। १-४ भाग [चौ. ९९] १४०-००

18 RIG-VEDA SAMHITA with the Commentary of Sayanacharya. Edited by Dr. Max Muller. Vols. I-IV Complete. [Chow. 99] 140-00

*१९ **ऋग्वेद संहिता।** सायणभाष्यावलम्बी सरल हिन्दी भावार्थ सहित २४-००, २७-००

*२० **ऋग्वेदीयम्-शमानलक्षणम्-उपलेखसूत्रम्।** वेङ्कटराम-शास्त्रि-सङ्कलितम् २-००

*21 Collection of the Fragments of Lost Brahmanas. By Bata Krishna Ghose. 25-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२२ **कौषीतकिब्राह्मणपर्यालोचनम्** अथवा **कौषीतकिब्राह्मण आचारविचाराः** । डा. मंगलदेव शास्त्री [वि. सं. ७०] २-५०

*23 Critical Study of the Nivids. Full Text of the Nividadhyaya. A Rigveda Appendix with English Translation, Word-Notes, Alphabetical List of the Mantras, Etc. By S. P. Niyogi. 10-00

*२४ **गलितप्रदीपः** । लक्ष्मीधर सूरि विरचित । श्रीकृष्णदेव सम्पादित २-००

२५ **चतुर्वेदभाष्यभूमिकासंग्रहः** । (सायणाचार्यविरचितानां स्ववेदभाष्यभूमिकानां संग्रहः) सं० आचार्य बलदेव उपाध्याय । सायणाचार्य कृत भाष्यभूमिका सहित तैत्तिरीय संहिता, ऋक्, साम, यजुः और अथर्व इन चतुर्वेदभाष्यभूमिका नामक इस संग्रह ग्रन्थ को उपाध्याय जी ने बहुत ही छान-बीन के साथ विस्तृत अंग्रेजी-संस्कृत भूमिका के साथ सम्पादित किया है । [का. १०२] ५-००

२६ **चरणव्यूहः** । महर्षिशौनकप्रणीतः । आचार्य महिदासकृतभाष्ययुक्तः [का. १३२] १-५०

*२७ **छन्दस्वतीवाक्** । वासुदेवशरण अग्रवाल कृत आंग्लानुवाद सहित १-५०

२८ **ताण्ड्यमहाब्राह्मणम्** । सायणाचार्यविरचितभाष्य सहितम् । १-२ भाग सम्पूर्णम् [का. १०५] ३०-००

*२९ **दैवम्** । 'पुरुषकार' वार्तिकोपेतम् । कृष्णलीला शुक मुनि विरचित । इस पद्यबद्ध ग्रन्थ का प्रतिपाद्य है । पाणिनीय धातुपाठ । वार्तिक-सहित यह दुष्प्राप्य ग्रन्थ पाण्डित्य-पूर्ण भूमिका, बहुमूल्य टिप्पणियों तथा उपयोगी ६ परिशिष्टों के साथ प्रकाशित किया गया है । ६-००

३० **हिन्दी निरुक्त** । व्याख्याकार- प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' सभी विश्वविद्यालयों में १ से ४ और ७ वां अध्याय पाठ्य स्वीकृत है । अतः इस परीक्षोपयोगी संस्करण को इसी रूप में रखकर अनुवाद शब्दशः किया गया है तथा वैदिक मन्त्रों के अन्वय और शब्दार्थ के साथ अर्थ दिये गये हैं । यथास्थल अनुसन्धानात्मक टिप्पणियाँ भी की गयी हैं । अन्त में वैदिक मन्त्रों का हिन्दी-अनुवाद तथा प्रारम्भ में १२५ पृष्ठों की सर्वांगपूर्ण समालोचनात्मक भूमिका भी दी गयी है जो छात्रों तथा अनुसन्धित्सुओं के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । [वि. सं. ५७] ७-५०

*३१ **निरुक्तम्** । निघण्टु देवराज यज्वन कृत टीका सनाथी कृतम् पञ्चमोध्याय पर्यन्त तथा दुर्गाचार्य कृत टीका सहित । १-४ भाग संपूर्ण २८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*३२ **निरुक्त-समुच्चयः** । वररुचि प्रणीत । युधिष्ठिर मीमांसक संपादित ५-००

*३३ **नीतिमञ्जरी** । सभाष्या श्रीद्याद्विवेद विरचिता । भूमिका-टिप्पणी-परिशिष्टादिभिः संयोज्य सम्पादिता ४-५०

*३४ Naigeya Shakhanukramani belonging to the Samaveda. By Dr. S. R. Sehgal. 20-00

+३५ **पाणिन्यादि (द्वात्रिंशत्) शिक्षासंग्रहः** । २ से ४ खण्ड [ब. ११] ९-००

*३६ **पादविधानम्** । शौनककृतम् । १-५०

*३७ **पितृसंहिता-पितृकल्पः** । रामगीता सहित ०-७५

३८ **पुष्पसूत्रम्** । (सामप्रातिशाख्यं) पुष्पर्षिप्रणीतम् । श्रीमदजातशत्रु-कृतभाष्य सहितम् [चौ. ५७] ९-००

३९ **मूल संस्कृत उद्धरण (ओरिजिनल संस्कृत टेक्स्ट्स)**
लेखक-प्रो० जे० मूइर । सम्पादक और हिन्दी अनुवादक : डॉ० रामकुमार राय । १-५ भाग में संपूर्ण

इस संस्करण की विशेषता—

भाग १ : हिन्दू जातियों की उत्पत्ति-सम्बन्धी पौराणिक विवरणों से सम्बद्ध मूल संस्कृत उद्धरणों का संकलन, उनका हिन्दी अनुवाद तथा यह विवेचन कि वैदिक काल में भी जातिवाद का अस्तित्व था अथवा नहीं । २०-००

भाग २ : इस तथ्य की विवेचना करते हुये कि हिन्दू जाति के लोग हिमालय के उस पार से आये तथा भारोपीय जाति की पश्चिमी शाखा से सम्बद्ध थे, अथवा नहीं, इस विषय पर मूल संस्कृत उद्धरणों का संग्रह तथा उनका हिन्दी अनुवाद । २०-००

भाग ३ : ऋग्वेदिक सूक्तों के संग्रह के ठीक पूर्व अथवा उसके पाश्चात् के भारतीय कृतिकारों के वेदों की उत्पत्ति, विभाजन, प्रेरणा-स्रोत और आधिकारिकता को व्यक्त करने वाले मूल संस्कृत उद्धरणों का संग्रह तथा हिन्दी अनुवाद । २०-००

भाग ४ : वैदिक सूक्तों, ब्राह्मण-ग्रन्थों तथा इतिहास-पुराण में मिलने वाले ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और अम्बिका आदि देवी-देवताओं से सम्बद्ध मूल संस्कृत उद्धरणों का हिन्दी अनुवाद सहित संग्रह तथा यह विवेचन कि देवी-देवताओं सम्बन्धी आरम्भिक धारणायें बाद की कृतियों के किस प्रकार उत्तरोत्तर परिवर्तित होती गई । २०-००

भाग ५ : वैदिक कालीन भारतीयों के सृष्टिरचना, पुराकथाशास्त्रीय और धार्मिक विचारों तथा जीवन और रीति-रिवाजों को व्यक्त करने वाले सानुवाद मूल संस्कृत उद्धरणों का संग्रह तथा उनकी विवेचना । शीघ्र प्राप्त होगा

मूल्य प्रत्येक भाग [वि. रा. ६७] २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४० **पुरुषसूक्तम्** । 'बालबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। अनुष्ठान-विधान भी ग्रन्थारंभ में दिया गया है।

[ह. २०३] ०-१५

४१ **पुरुषसूक्तम्** । सायणभाष्य-महीधरभाष्य-मंगलभाष्य-निम्बार्कमत-भाष्य चतुष्टय सहितम्। [का. १२] समाप्त

४२ **बृहद्देवता (शौनकीय)** । (ऋग्वेदिक देवताओं और पुराकथाओं का सारांश)।

मूल श्लोकबद्ध हिन्दी व्याख्या तथा टिप्पणियों से विभूषित। सम्पादक तथा व्याख्याकार :—डॉ० रामकुमार राय [का. १६४] १५-००

४३ **मन्त्रार्थदीपिका** । म० म० श्रीशत्रुघ्नमिश्रविरचिता। सटीक। [का. १०८] ६-००

४४ **यजुर्वेदीय-रुद्राष्टाध्यायी** । सटिप्पण 'रुद्रप्रिया' हिन्दी व्याख्या, अनुष्ठानविधान सहित। विशुद्ध संस्करण।

वैदिक उपासना का सर्वोपरि लोकप्रसिद्ध यह पुस्तक है। परन्तु अनधिकारी विद्वान द्वारा सम्पादित होने से इसका कोई भी विशुद्ध प्रामाणिक संस्करण उपलब्ध नहीं था। काशी के वयोवृद्ध कर्मठ वैदिक विद्वान् श्री पं० सरयूप्रसाद शास्त्री ने बहुत ही छान-बीन करके हिन्दी व्याख्या के साथ इसका सुसम्पादन किया है। स्नपनविधान का सर्वांगपूर्ण विवेचन भी इसमें विद्वान् को प्राप्त होगा [ह० २७४] २-५०

*४५ **यज्ञतत्त्वप्रकाशः** । म० म० श्री चिन्नस्वामि शास्त्रिकृतः। नेट ४-००

४६ **रुद्रस्वाहाकारपद्धतिः** । [ह. १६८] ०-२५

*47 Lectures on Rigveda. By Ghate. Revised and Enlarged by Dr. V. S. Sukthankar. 8-50

*४८ **वेदविज्ञानविन्दुः** । गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी १-००

४९ **वेदार्थचन्द्रिका** । डॉ० मुंशीराम शर्मा।

प्रस्तुत ग्रन्थ के २५ भावपूर्ण निबन्धों में कुछ प्रमुख प्रकाशदाता वेदमन्त्रों की यथार्थ हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की गई है। लेखक वेद के मर्मज्ञ हैं। उनके हृदय की सम्पूर्ण श्रद्धा इस पुस्तक की प्रत्येक पंक्ति में व्याप्त मिलेगी। प्रकाश प्राप्ति के लिये स्वाध्याय के प्रति प्रेरणा, उत्साह एवं दिशा प्रदान करने में यथार्थता और श्रद्धापूर्ण भावुकता का यह दुर्लभ संयोग पूर्ण प्रभावकारी है। इसके भाव, भाषा, शैली आदि देखकर आप मुग्ध हो जायँगे। एक बार अवश्य पढ़ें।

[वि. रा. ११२] ६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५० **वैदिक आख्यान** । डॉ० गङ्गासागर राय

इस पुस्तक में जीवन को सुगठित एवं समुन्नत बनानेवाले प्रेरणाप्रद वैदिक आख्यानों का गुम्फन इतनी सरस भाषा एवं शैली में किया गया है कि एक ही बैठक में बिना पुस्तक समाप्त किए जी नहीं मानता ।

[वि. रा. ६६] २-००

५१ **वैदिक इण्डेक्स** । मैकडौनेल और कीथ (हिन्दी रूपान्तर) अनुवादक—डॉ० रामकुमार राय ।

अनुवाद की सर्वाधिक विशेषता यह है कि इसमें सन्दर्भ संकेत संख्यायें तथा फुटनोट में उनकी व्यवस्था का क्रम वही किया गया है जैसा कि मूल ग्रन्थ में है । इस व्यवस्था के कारण जो निःसन्देह अत्यन्त कठिन और कहीं-कहीं असम्भव सा कार्य था, अनुवाद की उपयोगिता और विषय-व्यवस्था की प्रामाणिकता अत्यन्त बढ़ गई है । अनुवाद की भाषा इतनी प्रौढ़ और प्राञ्जल है कि उसे पढ़ने से ग्रन्थ बिल्कुल मूल जैसा ही प्रतीत होता है । १-२ भाग सम्पूर्ण [वि. रा. ४६] ४०-००

५२ **वैदिक निबन्धावली** । डॉ० मुंशीराम शर्मा ।

इस निबन्ध संग्रह में वेदों की एक स्वल्प झाँकी प्रस्तुत करने वाले २५ निबन्ध हैं । यह निबन्ध उच्च कक्षा के विद्यार्थियों, शोध-छात्रों एवं जन साधारण वेदप्रेमियों के लिए अत्यन्त लाभप्रद है [वि. रा. ६१] ४-००

५३ **वैदिक माइथौलोजी** (वैदिक पुराकथाशास्त्र) प्रो. ए. ए. मैकडॉनल (हिन्दी रूपान्तर) अनुवादक—डॉ. रामकुमार राय ।

यह ग्रन्थ वेद की आत्मा का भासमान प्रदीप है । वैदिक देवताओं का रहस्य जानना यदि अभीष्ट हो तो इस ग्रन्थरत्न को अवश्य पढ़कर लाभ उठाइये । [वि. रा. ४०] १५-००

५४ **वैदिकयुग के भारतीय आभूषण** । डॉ. राय गोविन्दचन्द

वैदिक युग में मनुष्य कौन-कौन से आभूषण किस प्रकार धारण करता था, किस आभूषण के कितने भेदोपभेद या प्रकार थे, आदि का प्रामाणिक तथा सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत ग्रन्थ का विषय है । चारो वेदों तथा वैदिक साहित्य का सूक्ष्म परिशीलन करके इस विषय पर विचार व्यक्त किए गए हैं, यह इसकी लेखन-शैली से स्पष्ट हो जाता है । प्रमाण रूप में सर्वत्र ही वैदिक साहित्य ऋचायें तथा मन्त्र सानुवाद उद्धृत किए गए हैं । उपर्युक्त विवेचन के माध्यम से भारतीय संस्कृति, सामाजिक रीति-नीति आदि की भी सुस्पष्ट झाँकी प्राप्त हो जाती है । इतिहास, शोध, मानव-विज्ञान आदि के अध्येताओं के लिये यह अवश्य संग्रहणीय संस्करण है । [वि. रा. ८४] १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५५ **वैदिक योगसूत्र** । श्री हरिशंकर जोशी ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में वेद-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद-पुराणादि में विकीर्ण तथा व्याप्त उस प्राचीन योगदर्शन का चूडान्त विवेचन किया गया है जिसे जाने बिना हम अपनी संस्कृति, दर्शन और ज्ञान-सम्पत्ति का न तो उचित मूल्यांकन कर सकते, न उनके रहस्यों की अनुभूति ही पा सकते हैं। उपनिषद्-युग के साथ लुप्त हुए उस योगदर्शन का इस ग्रन्थरूप में पुनरभ्युदय आपको चकित कर देगा। सोमयोग, अग्नियोग आदि का विवेचन तो इस ग्रन्थ के अतिरिक्त कहीं मिलेगा ही नहीं। अकाट्य तर्कों तथा युक्तियों के साथ आकर-ग्रन्थों के वचन भी प्रमाणत्वेन उपन्यस्त हैं। वेदों का मुख्य प्रतिपाद्य योगदर्शन ही है यह प्रमाणित करने के लिये वेदों के अतिप्रसिद्ध पुरुषसूक्त और अस्यवामीय सूक्त सुविशद व्याख्यासहित दिए गए हैं। प्रवाहपूर्ण प्राञ्जल भाषा-शैली में लिखे इस शोधपूर्ण ग्रन्थ का पारायण वेदों, प्राचीन ऋषियों तथा स्वात्मस्थ ज्ञानभण्डार के निकट पहुँचाकर आपको अवश्य चमत्कृत कर देगा। अविलम्ब क्रय करने योग्य ग्रन्थ है [चौ. रा. ३] २०-००

*५६ **वैदिक-वाङ्मय में प्रयुक्त विविध स्वराङ्कन-प्रकार**।
युधिष्ठिर मीमांसक १-५०

*५७ **वैदिक-विज्ञानम्**। म० म० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी। इस ग्रन्थ में वेदों का स्वरूप, वैदिक ऋषि और देवता, वैदिक यज्ञ, वेदों में पितर तथा भारत की प्राचीन सीमा और देवलोक का विवेचन वेदमूर्ति मधुसूदनओझा के सिद्धान्त पर किया गया है। ५-००

*५८ **वैदिक-विज्ञान**। म० म० गिरधर शर्मा चतुर्वेदी। इस पुस्तक द्वारा वेदमूर्ति विद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझाजी की अनेक रचनाओं में प्रवर्तित वैदिक व्याख्या के महत्त्वपूर्ण पहलुओं का प्रसार हिन्दी रूपान्तर में किया गया है। हिन्दी में वेदरहस्य को समझने के लिये अद्वितीय पुस्तक है। ५-००

५९ **वैदिक सूक्तपञ्चकम्**। (१. वाचस्पतिसूक्तं, २. कृषिसूक्तं, ३. सहृदयतासूक्तं, ४. शुद्धिसूक्तं, ५. निर्भयतासूक्तम्)
'प्रकाश' हिन्दी व्याख्योपेतम्।

इस पुस्तक में अथर्ववेद तथा यजुर्वेद के चुने हुए पाँच सूक्त प्रस्तुत किए गए हैं। हिन्दी में मन्त्रों का अर्थ तथा भाष्य हो जाने से सर्वसाधारण के लिये यह बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा। [वि. सं. ८९] ०-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६० **हिन्दी वैदिक व्याकरण** । डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय बी० ए० तथा एम० ए० परीक्षाओं के पाठ्यक्रमानुसार नवनिर्मित इस पुस्तक में वेद का सुबोध व्याकरण, स्वरचिह्न, पद-पाठ आदि के विषय में समाधान तथा क्रियारूपों का कोश भी प्रकाशित किया गया है

[वि. रा. ३७] २-००

६१ **वैदिक सूक्त-मंजरी** (VEDIC-SELECTIONS) पदपाठ, समन्वय भाषार्थ, ऋज्वर्थ, निरुक्त व्याकरण, हिन्दी-अंग्रेजी व्याख्या सहित । संपादक डॉ० रामकृष्ण शास्त्री विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रम के अनुसार प्रस्तुत पुस्तक में ऋग्वेद तथा शुक्लयजुर्वेद के निम्न लिखित सूक्तों का संकलन है—(ऋग्वेद)—(१) विश्वेदेवाः सूक्तम् (१-११८९।१-१०।४-११९०।६-९), (२) विष्णुसूक्तम् (५-१।२२।१६-२१), (३) प्रजापतिसूक्तम् (८-१०। १२१।१-१०), (४) वागम्भृणीसूक्तम् (९-१०।१२५।१-८), (५) अघमर्षणसूक्तम् (११-१०।१९०।१-३), (६) ज्ञानसूक्तम् (१२-१०।१९१) (यजुर्वेद)-(७) शिवसंकल्पसूक्तम् (१३-३४। १-६), (८) पुरुषसूक्तम् (१५-३१।१-२२), (९) उत्तरनारायण-सूक्तम् (१६-२०।१४, १७।२०-२१), (१०) सूर्यसूक्तम् (१७-७।४१-४३), (११) आपःसूक्तम् (१८-३६।१४,१८-२४), (१२) रुद्रसूक्तम् (१९-१६।४१) और (१३) लिंगसूक्तम् (२०-२२।२२)। इन सूक्तों की उपर्युक्त व्याख्याओं से मन्त्रों का यथार्थ स्वरूप छात्रों के हृदय में अवश्य अंकित हो जायगा और वे उसकी परिष्कृत व्याख्या प्रस्तुत करने में समर्थ हो सकेंगे [वि. सं. १०२] १-७५

62 ŚATAPATHA BRAHMAṆ. In the Madhyandin Śākha with extracts from the commentaries of Sayaṇa, Hari Swamin and Dvivedaganga. Ed. by. A. Weber.

[Chow. 96] 100-00

६३ **शतपथब्राह्मणम्** (शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनीयां शाखा-मनुसृत्य) सायणाचार्य-हरिस्वामी द्विवेदगङ्ग कृत भाष्येभ्यः सारमुद्धृत्य । डॉ० अल्बेर्तेन वेबेरेण शोधितम् । [चौ. ९६] १००-००

६४ **शतपथब्राह्मणम्** । [सस्वरम्] सम्पादक-म० म० श्रीचिन्नस्वामीशास्त्री

[का. १२७] १ से ७ काण्ड ६-००

65 THE ŚUKLA YAJUPRATIŚAKHYA OF KĀTYĀYANA with English Translation. By Shrimati Indu Rastogi.

[K. 179] 10-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६६ **शुक्लयजुःप्रातिशाख्यम्** । अँगरेजी अनुवाद सहित । अनुवादिका—श्रीमती इन्दु रस्तोगी ।
इस संस्करण में प्राचीन पाण्डुलिपियों के आधार पर शोधपूर्वक संशुद्ध पाठ दिया गया है । अँगरेजी अनुवाद भी भाषाशैली, मूलानुसारिता आदि गुणों की दृष्टि से प्रथम कोटि का है । [का. १७९] १०-००

६७ **शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहिता** । श्रीसायणाचार्यविरचितभाष्यसहिता [का. ३५] यन्त्रस्थ

*६८ **शुक्लयजु० माध्य० बृहद् मन्त्रसंहिता** । ५२३ मन्त्रयुक्त ४-००

६९ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता** । सम्पादक-श्री दौलतराम गौड़ वेदाचार्य ।
प्रस्तुत संस्करण सम्पूर्ण शुक्लयजुर्वेद का ३२ पेजी छोटा गुटका संस्करण है । वेदमन्त्र सब सस्वर दिए गए हैं । प्रसिद्ध कर्मकाण्डी वैदिक विद्वान् ने आवश्यक स्थलों पर 'प्रकाश' नामक टिप्पणी भी दी है । एतद्विषयक पाण्डित्यपूर्ण विचारों तथा विविध उपयोगी विषयों से परिपूर्ण विशद भूमिका भी परमोपयोगी है । [वि. सं. १२९] ३-००

*७० **शुक्लयजुर्वेद संहिता** । स्वामी भगवदाचार्य कृत यजुःसंस्कारभाष्य सहित १५-००

*७१ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता** । सायणभाष्यावलम्बी सरल हिन्दी भावार्थ सहित । ६-७५, ८-००

७२ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता** । 'श्रीविद्या' हिन्दी टीका विभूषिता । यज्ञीय पात्रादि का लक्षण विधान आदि विविध विषयों से समलंकृत । [ह. २०४] ०-५०

७३ **शुक्लयजुर्वेदीयरुद्राष्टाध्यायी** । रुद्राभिषेकमाहात्म्य, स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्याय, शान्त्यध्यायादि विविध परिशिष्ट सहित [वि. १४] ०-५०

७४ **शुक्ल यजुर्वेदीय-रुद्राष्टाध्यायी** । सटिप्पण 'रुद्रप्रिया' हिन्दी व्याख्या, अनुष्ठानविधान सहित । विशुद्ध संस्करण ।
वैदिक उपासना की सर्वोपरि लोकप्रसिद्ध यह पुस्तक है । परन्तु अनधिकारी विद्वान् द्वारा सम्पादित होने से इसका कोई भी विशुद्ध प्रामाणिक संस्करण उपलब्ध नहीं था । काशी के वयोवृद्ध कर्मठ वैदिक विद्वान् श्री पं० सरयूप्रसाद शास्त्री ने बहुत ही छान-बीन करके हिन्दी व्याख्या के साथ इसका सुसम्पादन किया है । स्नपनविधान का सर्वांगपूर्ण विवेचन भी इसमें विद्वान् को प्राप्त होगा [ह० २७४] २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

+७५ **शुक्लयजुस्सर्वानुक्रमसूत्रम्** । कात्यायनप्रणीतम् । श्रीयाज्ञिकानन्त-देवविरचितभाष्यसहितम् [ब. १३] १०-००

७६ **शुल्वसूत्रम्** । श्रीकर्कभाष्य-महीधरवृत्तिसहितम् [का. १२०] १-००

७७ **श्रीसूक्तम्** । भाष्यत्रयेण टिप्पण्या च समलङ्कृतम् । [का. ४] यन्त्रस्थ

७८ **सांख्यायनगृह्यसंग्रहः** । पं० वासुदेवकृतः तथा—**कौथीतकिगृह्य-सूत्राणि** च [ब. ३६] ३-००

*७९ **सामवेदः** । स्वामि भगवदाचार्य कृत सामसंस्कार भाष्य नामक हिन्दी अनुवाद सहित । १-३ भाग नेट १७-००

८० **सामवेदसंहिता** । सायणभाष्य सहित (विशुद्ध संस्करण) यह ग्रन्थ बहुत दिनों से अप्रकाशित होने के कारण अनुपलब्ध था। विद्वानों की अनवरत माँग देखकर बहुत खोजबीन करने पर प्राप्त शुद्ध प्रति के आधार पर इसका प्रस्तुत संस्करण प्रकाशित हो रहा है। प्रतियाँ कम ही छपेंगी अतः ग्राहकगण अपनी प्रति सुरक्षित करा लें। यन्त्रस्थ

*८१ **सामवेदसंहिता** । सायणभाष्यावलम्बी सरल हिन्दी भावार्थ सहित । ६-७५, ६-००

*82 Sama Veda Samhita (English Translation). Rev. J. Stevenson. D. D. 12-00

८३ **सामवेदीय आह्निकं-उपाकर्मपद्धति (श्रावणी) सहितम्** । सामवेदाचार्य पं० दुर्गादत्तत्रिपाठिसम्पादितम् [ह. १११, १४६] समाप्त

८४ **सामवेदीयत्रिकालसन्ध्यातर्पणप्रयोगः** । सटिप्पण [ह. ११३] ०-१५

८५ **सामवेदीयरुद्रजपविधिः**—पञ्चवक्त्रपूजनम्, लघुरुद्र-विधानयुतञ्च । [वि. १५] १—५०

८६ **सामवेदीय-रुद्रजप-विधिः** (सचित्र) । आचार्य ऋषि शंकर अग्निहोत्री श्रीमाली कृत हिन्दी भाष्य-आंग्लानुवाद गायन-पदपाठ सहित [चौ. पु.] ४-००

87 STUDIES IN VEDIC INTERPRETATION : By Sri A. B. Purani. [Chow. Sans. Studies Vol. XXXII] 20-00

88 Sparks from the Vedic Fire. By Dr. V. S. Agrawala. 30-00

८९ **स्वस्त्ययनकलशप्रतिष्ठापूजनविधिः** । [चौ. पु.] ०-१०

९० **स्वस्तिवाचनप्रयोगः** । चतुर्वेदोक्त तत्तन्मन्त्र सहित [ह. ९६] समाप्त

91 HYMNS OF THE ATHARVA-VEDA : Translated into English with a popular commentary. By Ralph T. H. Griffith. 2 Vols. [Chow. Sans. Studies Vol. LXVI] 40-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

92 HYMNS OF THE RIG-VEDA : Translated into English with a popular commentary. By Ralph T. H. Griffith. 2 Vols. [Chow. Sans. Studies Vol. XXXV] 40-00

93 HYMNS OF THE SAM-VEDA : Translated into English with a popular commentary. By Ralph T. H. Griffith. [Chow. Sans. Studies Vol. XXVIII] 20-00

94 A HISTORY OF VEDIC LITERATURE. By Sri Sambhu Nath Sharma. In the Press

पाकशास्त्र-ग्रन्थाः

१ **नलपाकः (पाकदर्पण)** । नलविरचितः । सम्पूर्णः [का. १] यन्त्रस्थ

*२ **पाकचन्द्रिका** ६-०० *३ **पाकविज्ञान** ४-००

*४ **बृहत् पाक संग्रह** ४-०० *५ **बृहत् पाकावली** । हिन्दी टीका १-२५

*६ **स्वादिष्ट अचार** । श्रीमती आद्यादेवी २-५०

समालोचनात्मक-इतिहास-ग्रन्थाः

१ **अक्षर अमर रहें** । (निबन्ध-संग्रह) श्री वाचस्पति शास्त्री गैरौला ।

यह निबन्ध-संग्रह संस्कृत हिन्दी के सामान्य विद्यार्थियों तथा शोधकार्य-रत स्नातकों के लिये पुरातत्त्व, इतिहास, साहित्य, शोध और कला की दृष्टि से विशेष उपयोगी है । [वि. रा. १९] ५-००

*२ **अग्निपुराणविषयानुक्रमणी** । समीक्षात्मक भूमिका सहित । डॉ० रामशंकर भट्टाचार्य ८-००

*३ **अभिनवमनोविज्ञान** । प्रभुदयाल ९-००

*4 Early European Accounts of the Sikhs. Edited and Annotated by Ganda Singh. 12-50

*5 Early Hindu Civilisation. By Romesh Chandra Dutt. 16-00

*6 Early History of Bengal (From the Earliest Times to the Muslim Conquest). By Pramoda Lal Paul. Vols. I-II. 45-00

*७ **अर्वाचीनं मनोविज्ञानम्** । मामराजदत्त-कपिल-विरचितम् १२-००

८ **अलंकार-मीमांसा** । श्री राजवंश सहाय 'हीरा'

'अलंकार-मीमांसा' में अलंकारों का विश्लेषण है । इसमें लगभग १०० अलंकारों का विवेचन किया गया है । ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९ **अलंकारानुशीलन** । श्री राजवंश सहाय 'हीरा'

(संस्कृत-हिन्दी)

अलंकारों का ऐतिहासिक अनुशीलन तथा इनसे सम्बन्धित सभी शास्त्रीय विवादों का एकत्र समावेश प्रस्तुत करनेवाला हिन्दी में यह प्रथम ग्रन्थ है। इसमें लगभग ११० अलंकारों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक अलंकार का स्वरूप-निरूपण, ऐतिहासिक दृष्टि से विश्लेषण, प्रत्येक का संस्कृत तथा हिन्दी उदाहरण, विभिन्न अलंकारों का परस्पर अन्तर तथा सूक्ष्म भेद आदि देते हुए यह अध्ययन पूर्ण किया गया है। विद्वत्तापूर्ण शास्त्रीय विचारों से युक्त भूमिका में—काव्य में अलंकारों का स्थान, अन्य भारतीय काव्यशास्त्रीय सम्प्रदायों से उनका सम्बन्ध तथा संस्कृत के सभी प्रसिद्ध अलंकारिकों के एतद्विषयक मतों का सार आदि महत्त्वपूर्ण विषय संगृहीत हैं। सरल एवं सरस भाषा-शैली में लिखा यह अलंकारों के विषय में अभिनव प्रामाणिक ग्रन्थ है। १६-००

*10 Abanindranath Tagore (His Life and Arts). Dr. Rai Gobind Chanda. 18-00

११ **अवन्तिकुमारियाँ** । श्री देवदत्त शास्त्री।

इस पुस्तक में तीन अवन्तिकुमारियों (अवन्तिसुन्दरी, मालविका, सरस्वती) के जीवन की मर्मस्पर्शी कहानियों के बीच लेखक ने उस युग की सांस्कृतिक, धार्मिक एवं नैतिक स्थितियों का बड़ा ही सुन्दर गवेषणात्मक चित्र प्रस्तुत किया है। [वि. रा. ३८] २-००

*१२ **आचार्य पाणिनि के समय विद्यमान संस्कृत वाङ्मय** । युधिष्ठिर मीमांसक ०-३७

*13 Aspects of Sanskrit Literature. By S. K. De. 15-00

*14 Archives in India. By S. Ghose. Foreword by K. D. Bhargava. 25-00

15 THE ARCHAEOLOGY OF KUMAON (INCLUDIHG DEHRADUN). By Sri K. P. Nautiyal. In the Press

*16 Art-Culture of India and Egypt. By S. M. El. Mansouri. 12-00

*17 Aryan Occupation of Eastern India. By H. C. Chakladar. Edited with an Introductory Note by N. K. Basu. 12-50

*18 India Three Thousand Years Ago. By John Wilson. 5-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*19 Iron Age in India. By Dr. N. R. Banerjee. With 24 Figures, 4 Plates and 6 Tables. With a Foreword by Prof. Robert Heine-Geldern. 35-00

*20 Indian Awakening and Bengal. By N. S. Bose. 15-00

*21 Indian Influences in American Literature and Thought. By John T. Reid. 9-50

*22 Indian National Movement : An Outline. By N. S. Bose. 5-00

*23 Indian Revolutionaries in Conference. By J. C. Chatterjee. 5-00

*24 India-China Relations. By P. C. Chakravarti. 12-00

*25 India's Fight for Freedom or the Swadeshi Movement (1905-1906). By H. Mukherjee & Uma Mukherjee. 7-50

*26 An Interpretative Study of Kalidas. By Dr. Dimbeswar Sharma.

It is quite in the fitness of things that modern Indian scholars well-equipped with the western method of critical research work and Indian intensity of learning would come forward to interpret our national literary treasures in the true spirit. All conscientious readers will find a fulfilment of this desideratum in the present work where the learned author has treated all works of Kalidasa in a wonderful manner. All students of Indian literature will find it emmensely interesting and at the same time informative. 30-00

*27 Introduction to Pali Literature. By Dr.S.C. Banerjee. 12-00

*२८ **इतिहास-पुराण का अनुशीलन।** (इतिहास-पुराणोक्त विशिष्ट तथ्य और समस्याओं का विवेचन) डॉ० रामशङ्कर भट्टाचार्य १०-००

29 INDO-ARYAN LETERATURE AND CULTURE (ORIGINS). By Nagendranath Ghose. [Chow. Sans. Studies Vol. LI] 20-00

30 INSCRIPTIONS OF ASOKA. By Sri Naresh Prasad Rastogi. In the Press

*31 Essays on Sanskrit Literature (Bearing on Ancient Sanskrit Literature and Indian Culture). By Prof. Sadhu Ram. Foreword by B. Ch. Chabra. 10-00

*32 Expansion of Indo-Aryan Culture during the Pallava Rule (As evidenced by Inscriptions). By Dr. B. Ch. Chhabra. With 20 Illustrations. 15-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*33 Educational Policy of the East India Company in Bengal to 1854. By D. P. Sinha. 26-00

*34 Age of the Kushanas. By B. Chattopadhyaya. 48-00

*35 Ancient India : Its Language and Religions. By H. Oldenberg. 7-50

*36 Ancient India and South-Indian History and Culture. By Dr. S. K. Aiyangar. 2 Parts. 40-00

*37 Ancient and Hindu India-The Brahmanic Period. By J. Talboys Wheeler. 12-00

*38 Ancient Geography of India. By Alexander Cunningham. 25-00

*39 Ancient Peoples of Punjab : The Udumbaras and the Salvas. By S. Przyluski. 6-00

40 ETHNOLOGY OF ANCIENT BHARATA. By R. C. Jain. In the Press

*41 Antiquities of India : An Accouut of the History and Culture of Ancient Hindustan. By Dr. L. D. Barnett. With Numerous Illustrations and a Map. 27-50

42 THE AESTHETIC EXPERIENCE ACCORDING TO ABHINAVAGUPTA. By Raniero Gnoli. Second Edition. Revised, Enlarged and Re-elaborated by The Author. [Chow. Sans. Studies Vol. LXII] 45-00

*43 Origin and Growth of Caste in India. 2 Vols. By N. K. Dutt. 40-00

४४ औचित्य सम्प्रदाय का हिन्दी-काव्यशास्त्र पर प्रभाव (प्रत्यक्ष तथा परोक्ष) डॉ० चन्द्रहंस पाठक ।

छः अध्यायों में विभक्त यह शोध-प्रबन्ध-ग्रन्थ सर्वथा मौलिक विषय पर मौलिक रचना है। यह सुगठित वैज्ञानिक शैली में लिखा गया है। प्राचीन और नवीन उभयविध विचारकों में औचित्य-मत के प्रभाव की चर्चा करने के हेतु इसमें व्यापक भूमिका और सन्दर्भों का उपयोग किया गया है। प्राचीनता के प्रति उपेक्षा के इस युग में इस ग्रंथ का अवतरण निश्चय ही शुभ-सम्पादक है। इससे हिन्दी के शास्त्रीय अनुसन्धान क्षेत्र को अवश्य ही नई दिशा प्राप्त होगी। इसके लेखन में अथक श्रम, अध्यवसाय और असामान्य प्रतिभा का प्रयोग पद-पद पर देखने को मिलता है। अधिकारी विद्वानों के निर्णायक विचारों से समन्वित, उत्तम साज-सज्जा-मुद्रण-आवरण आदि से युक्त यह ग्रंथ सर्वथा संग्रहणीय है। [वि. रा. ११०] २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४५ **ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य।**
वी० एम० चिन्तामणि।

लेखक ने इस नवीन कृति में हिन्दी के उपन्यासों, विशेषकर ऐतिहासिक उपन्यासों की बहुत सुन्दर समीक्षा प्रस्तुत की है। नयी सूझ-बूझ और गंभीर मन्थन की परिचायक यह रचना हिन्दी के आलोचना-क्षेत्र में महत्वपूर्ण देन है। [वि. रा. १८] ३-००

*46 On Yuan Chwang's Travels in India (A. D. 629-645). By Thomas Watters. Edited by T. W. Rhys Davids and S. W. Bushell. With 2 Maps and an Itinerary by Vincent A. Smith. 40-00

47 COMIC ELEMENTS IN SANSKRIT DRAMA. By Lal Rama Yadupal Singh. In the Press

48 A COMPARATIVE STUDY OF THE CONCEPTS OF SPACE AND TIME IN INDIAN THOUGHT. By Dr. Kumar Kishore Mandal. [Chow. Sans. Studies Vol. LXV] 20-00

*49 Cultural Contours of Tribal Bihar. By Dr. L. P. Vidyarthi. Foreword by N. K. Bose. 22-00

*50 Cultural History of Gujarat (From Early Times to Pre-British Period). By M. R. Majumdar. Foreword by G. S. Ghurye. With a Map, 89 Art-Plates in Monochrome and 4 in Colour. 75-00

*51 Cultural Heritage of Bengal : A Biographical and Critical History from the Earliest times closing with a Review of intellectual Progress under British Rule in India. By Romesh Chunder Dutt. 12-00

52 THE CULT OF BRAHMA. By Dr. T. P. Bhattacharya. In the Press

५३ **कवियों की लोक दृष्टि**—(संस्कृत साहित्य के कुछ रससिद्ध कवियों के चिरन्तन साहित्य का परि-मन्थन)
श्री शिवशंकर त्रिपाठी।

इस पुस्तक में 'राष्ट्रीयता के शाश्वत स्वर', 'संस्कृत साहित्य में आयुध चर्चा', 'सीता के विविध रूप' आदि २२ निबन्धों में सारगर्भित प्रामाणिक विवेचन प्रस्तुत किया गया है [वि० रा० ११७] १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५४ **कविवर डा० रामकुमार वर्मा और उनका काव्य।** प्रो० दशरथ राज।

कविवर डा० रामकुमार वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रस्तुत करने का यह सर्वोत्तम प्रयास है। [वि. रा. ९६] ३-००

*५५ **कविसमय-समीक्षा।** डॉ० विष्णुस्वरूप।

संस्कृत और हिन्दी साहित्य में कवियों के सम्प्रदाय में प्राचीन काल से स्वीकृत कुछ ऐसी मान्यताओं का विचार इस ग्रन्थ में है जो लोकदृष्ट स्थितियों से भिन्न होती हैं। अजिल्द ८-०० सजिल्द संस्करण ९-००

*56 Katyayana and Patanjali : Their Relation to Each Other and to Panini. By F. Kielhorn. 5-00

५७ **कालिदास : एक अनुशीलन।** पं० देवदत्त शास्त्री।

कालिदास के जीवन, जन्मभूमि और स्थिति पर ठोस प्रमाणों सहित ऐसी नई स्थापनाएँ आपको इस ग्रन्थ में मिलेंगी जिनपर मत प्रकट करने या विचार करने की उत्सुकता अवश्य आप में उत्पन्न होगी। छात्रों के लिये अधिक उपयोगी पुस्तक है। [वि. रा. ८७] २-५०

*५८ **कालिदास निबन्धाङ्क।** (कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय पत्रिका) ३-००

*५९ **कालिदाससाहित्यम्।** डॉ० आद्याप्रसाद मिश्र २-००

६० **काव्यात्ममीमांसा।** डॉ० जयमन्त मिश्र

काव्यात्म सम्बन्धी विचारों का आलोचनात्मक ढंग से शोधपूर्ण एवं विश्लेषण करके रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति तथा औचित्य तत्त्वों का विश्लेषणात्मक स्वरूप निर्देश, ऐतिहासिक क्रम से साङ्गोपाङ्ग विवेचन तथा उनके तात्त्विक रहस्यों का समुद्घाटन किया गया है। 'पृष्ठभूमि और प्रेरणा-स्रोत' नामक प्रथम-अध्याय में वैदिक साहित्य से लेकर भरत पूर्व के संस्कृत वाङ्मय में प्रतिपादित रस का गवेषणात्मक विचार है। द्वितीय अध्याय में भरत से लेकर अर्वाचीन संस्कृत काव्य शास्त्र में रसात्म-विषयक विचारों का विश्लेषण तथा तृतीय से सप्तम अध्याय तक इसी प्रकार अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति तथा औचित्य का क्रमशः आलोचन हुआ है। अन्तिम अष्टम अध्याय में गवेषणा-प्रसूत निष्कर्षों का प्रतिपादन है, जिसमें वस्तुतः काव्य की आत्मा क्या है इस विषय का अभूतपूर्व विचार हुआ है। अन्त के परिशिष्टों में काव्य सम्बन्धी कतिपय अन्य विषयों का विचार किया गया है [वि. रा. ७२] १६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६१ **काव्य-चिन्ता** । डॉ० रमाशंकर तिवारी ।

प्रस्तुत ग्रन्थ के दो खण्डों में काव्य के मूल स्वरूप तथा जीवन के साथ उसके सम्बन्ध एवं काव्य के प्रयोजन का जो मार्मिक विश्लेषण सम्पन्न हुआ है, वह सर्वथा मौलिक एवं विचारोत्तेजक है। काव्य-चिन्तन की आधुनिक परम्परा में इससे निश्चित ही परिष्कार का प्रवेश होगा।

[वि. रा. ५७] ६-००

६२ **काव्यवल्लरी** । श्री व्यथित हृदय [चौ. पु.] समाप्त

*६३ **काश्मीरेतिहासः** । आचार्य हनुमत्प्रसाद शास्त्री । प्रस्तावनालेखक-डॉ० कर्णसिंह । काश्मीर सुरभारती का प्रदेश होने से भारत का शिरोमुकुट माना जाता है । महाकवि श्रीहर्ष ने तो—'काश्मीरं चतुर्दशविद्यानां पीठम्' कह कर इस सरस्वती प्रदेश की मुक्तकण्ठ से स्तुति की है। सैकड़ों युगप्रवर्तक विद्वान्, तपस्वी, सन्त, महात्मा इस तपोभूमि में प्रकट हुए हैं। भामह, वामन, आनन्दवर्धन, कुन्तक, महिमभट्ट, भट्टनायक, अभिनवगुप्त, मम्मट, क्षेमेन्द्र, श्रीहर्ष आदि विद्वत-शिरोमणियों द्वारा लिखित शताधिक ग्रन्थों का दर्शन इसी देव-भूमि ने कराया है। इस ग्रन्थ में काश्मीर की प्राकृतिक श्री से लेकर इसके राजाओं, विद्वानों और वर्तमानकाल तक की स्थिति का प्रामाणिक इतिवृत्त प्रांजल संस्कृत भाषा में प्रस्तुत किया गया है। अनुसन्धित्सुओं के लिये अधिक उपयोगी है। १५-००

*64 Chronicles of the Pathan Kings of Delhi. By Edward Thomas. With Supplement on the Revenue Resources of the Mughal Empire. 45-00

६५ **कृष्णभक्ति काव्य में सखीभाव** । (सचित्र) श्रीशरण-बिहारी गोस्वामी । सखीसम्प्रदाय का सारगर्भित ग्रंथ ।

गोपीतत्त्व और सखीतत्त्व पर गम्भीर विचार, उपास्य तत्त्व का विस्तृत विवेचन तथा सखी-सम्प्रदाय की उपासना-पद्धति का संयोजन आदि इस ग्रन्थ के प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है। सखीभाव-विषयक हिन्दी-साहित्य की सामग्री का परिचय एवं समीक्षा, रस-परिपाटी का विवेचन, लगभग ५० वैष्णवसम्प्रदायाचार्यों के सदुपदेशों का सचित्र वर्णन तथा कवियों और काव्यों का परिचय समीक्षण आदि अत्यन्त सरल भाषा और शैली में विवेचित हैं। यह ग्रन्थ अत्यन्त रसपूर्ण और उपादेय है।

[वि. रा. १०४] २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*66 Classical Accounts of India. By R. C. Majumdar. 23-00

*67 Classical Doctrine of Indian Medicine : Its Origins and Greek Parallels. By J. Filliozat. Translated from the French by Dr. Devraj Chanana. 25-00

68 CHRONOLOGY OF INDIA. From the earliest Times to the Beginning of the Sixteenth Century. By C. Mabel Duff. In the Press

69 A CRITICAL STUDY OF THE BHAGAVATA PURANA. With Special Reference to Bhakti. By Dr. T. S. Rukmani. In the Press

*70 Gods and Men : The Origins of Western Culture. By Henry Bamford Parkes. 36-00

७१ **गोस्वामी तुलसीदास** । आचार्य सीताराम चतुर्वेदी ।

तुलसीदासजी के जन्मकाल, जन्मस्थान, जीवन की अनेक घटनाओं और उनकी रचना के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिये यह एक ही ग्रन्थ है जिनकी ओर सामान्य समीक्षकों का ध्यान अब तक नहीं पहुच पाया था। [वि. रा. ९] ३-००

*72 Glimpses of Bengal in the Ninenteenth Century. By R. C. Majumdar. 6-00

*73 Glories of India and Indian Culture and Civilization. By Dr. Prasanna Kumar Acharya. 15-00

७४ **चम्पूकाव्य का आलोचनात्मक एवं ऐतिहासिक अध्ययन** । डॉ० छविनाथ त्रिपाठी

इसमें चम्पू-काव्य का स्थान-निर्धारण, उसकी सर्वथोपयुक्त परिभाषा, गद्य-पद्य-मिश्रित काव्यों के विकास का ऐतिहासिक एवं खोजपूर्ण विवरण, २४५ चम्पू-काव्यों का सविवरण आलोचनात्मक परिचय, वर्ण्य वस्तु और चम्पू-काव्यों के मूल स्रोतों का अन्वेषण करके उनका वर्गीकरण आदि उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की गई है। [वि. रा. ८३] १२-००

७५ **चित्र और चिन्तन** । श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी

इस पुस्तक में चित्र : जीवन के दैनिक अनुभवों के हैं, चिंतन : सामयिक परिस्थितियों, समस्याओं और नवनिर्माण के हैं। इसमें व्यक्ति, समाज और विश्व की धड़कन है। आप भी इसमें अपनी धड़कन पायेंगे और युग के प्राण-प्रवाह से एकमेव हो जांयगे [वि. रा. ६९] २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७६ **चिन्तन के नये चरण** । श्री देवदत्त शास्त्री ।

भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान, इतिहास, पुराण-उपनिषद्, नृत्य-नाटक-अभिनय ये पाँच इस पुस्तक के विषय-स्तम्भ हैं । इस पुस्तक के निबन्धों के सभी विषय सामान्य और व्यापक होने के साथ ही साहित्यकारों एवं अनुसन्धायकों के नित्य उपयोग के हैं । विद्यार्थियों को तो इन निबन्धों में नई दृष्टि, नई चेतना और अनुसन्धान के नये आयाम मिलेंगे ।

[वि. रा. ३१] ६-००

७७ **जवाहरलालनेहरू-विजयनाटक** । (हिन्दी रूपान्तर)

यह निर्विवाद सत्य है कि देश की स्वतन्त्रता के लिये नेहरूजी ने अपनी उठती जवानी में ही देश के लिये अपनी सुख-सुविधाओं का बलिदान कर दिया था । उसी का चित्रण नाटकीय ढंग से इस पुस्तक में किया गया है । इसके द्वारा नवयुवकों के हृदय में देश-भक्ति की प्रेरणा प्राप्त होगी । वार्षिकोत्सव के रंगमंच पर खेलने योग्य अपूर्व उत्साहप्रद राष्ट्रीय नाटक है । [वि. रा. १२०] १-००

*78 Jinnah and Gandhi : Their Role in India's Quest for Freedom. By S. K. Majumdar. 20-00

७९ **जीवनदर्शन** । डॉ० मुंशीराम शर्मा ।

जीवन क्या है ? वह कैसे विकसित होता है तथा उन्नत बनता है ? जीवन-पथ में कैसे-कैसे मोड़ आते हैं आदि आदि। 'जीवनदर्शन' पढ़कर आप जीवन का वास्तविक मूल्याङ्कन कर सकेंगे । [वि. रा. १६] ३-००

८० **जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज** ।
डॉ० जगदीशचन्द्र जैन

हर्ष, शोक, विस्मयादि नाना भाव धाराओं में अवगाहन करते हुए भारतीय समाज की जैनागमसाहित्य में प्राप्त ऐतिहासिक स्थिति का, शैली और कौशल की दृष्टि से उनका वर्णन प्राप्त करने के लिये यह एक ही ग्रन्थ है । [वि. रा. ९३] २५-००

*81 Jaina Sources of the History of Ancient India (100 B. C.–A. D. 900). By Dr. Jyoti Prasad Jain. 20-00

*82 Jonathan Duncan and Varanasi 1959. By V. A. Narain. 12-50

*83 Tuzuk-I-Jahangiri or Memoirs of Jahangir. Translated by Alexander Rogers and edited by Henry Beveridge. 50-00

*84 Two Great Indian Revolutionaries : Ras Behari Bose and Jyotindra Nath Mukherjee. By U. Mukherjee. Illustrated. 15-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

85 TRADE AND COMMERCE IN ANCIENT INDIA. From earliest times upto circa 3 rd. Century A. D. By Dr. Balaram Srivastava. [Chow. Sans. Studies Vol. LIX] 30-00

*86 Dutch in Bengal and Bihar, 1740-1825 A. D. By Dr. K. Dutt. 10-00

*87 Decade of Indo-British Relations 1937-47. By K. P. Bhagat. 25-00

*88 Democratic Hinduism. By G. Krishna Sastri. 5-00

89 THEORIES OF PERSONALITY TYPES IN INDIAN THOUGHT. By Dr. Ram Kumar Rai. In the Press

९० **दक्षिण भारत का इतिहास**। (आरंभ से प्राचीन राजवंशों के पतन तक) डॉ० बलराम श्रीवास्तव।

इस ग्रंथ का लक्ष्य दक्षिण भारत के राजनीतिक व्यक्तित्व की समीक्षा है। इसमें प्राचीन राजवंशों के उदय और अस्त की गाथा भी बड़े ही छानबीन के साथ लिखी गयी है [वि० रा० ११६] १०-००

९१ **दिनकर की उर्वशी**। डॉ० रमाशंकर तिवारी

'दिनकर' की नवीन काव्य कृति 'उर्वशी' के अत्यंत सूक्ष्म परिशीलन, मार्मिक समीक्षात्मक अध्ययन, प्रौढ़ चिन्तन एवं अधिकारिक मीमांसा से संयुक्त संग्रहणीय ग्रंथ [वि. रा. ५२] ३-००

*92 Dharma-Sutras : A Study in Their Origin and Development. By Sures Chandra Banerjee. 40-00

93 THE DHVANI THEORY IN SANSKIT POETICS. By Dr. Mukunda Madhava Sharma M. A., D. Phil., Kavyatirtha. [Chow. Sans. Studies Vol. LXIII] 25-00

*९४ **नन्ददास जीवनी और काव्य**। डॉ० भवानीदत्त उप्रेती १२-००

95 NORTH INDIA. During the Seventeenth Century A. D. By Dr. B. N. Srivastava. In the Press

*96 Norris Embassy to Aurangzib (1699-1702). By H. H. Das. Condensed and Rearranged by S. C. Sarkar. 25-00

९७ **परिक्रमा**। श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। वाराणसी की उत्तर मध्यमा द्वितीय खण्ड परीक्षा पाठ्य स्वीकृत।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के शब्दों में—भारतीय साहित्य और जीवन की इस परिक्रमा में कालिदास, रवीन्द्र, पन्त, महादेवी आदि की समालोचना एवं संस्मरणों का मणिकांचन योग है। शैली प्रांजल, प्रवाहपूर्ण एवं सरस है। **वाराणसी परीक्षापाठ्य स्वीकृत अंश** २-००

संपूर्ण [वि. रा. ५४] ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९८ **न्याय-परिचय** । मूललेखक—म० म० फणिभूषण तर्कवागीश । हिन्दी रूपान्तरकार डॉ० किशोरनाथ झा ।

प्रत्यक्ष तथा आगम के अविरोधी अनुमान के द्वारा तत्त्वश्रवण के वाद अनुमान प्रमाणरूप मुक्ति से मनन करना ही अन्वीक्षा है (तथा प्रवर्तते 'आन्वीक्षिकी') वेदमूलक इसी आन्वीक्षिकी विद्या का प्रसिद्ध नाम न्याय है । परार्थ अनुमान को तथा उसी को उद्देश्य करके प्रयुक्त प्रतिज्ञा आदि पञ्चावयवरूप वाक्य को महर्षि वात्स्यायन न्याय शब्द से कहते हैं । यह न्यायशास्त्र प्रत्येक शास्त्रों की आत्मा है । इसका उद्भव सर्वज्ञ परमेश्वर से है । तर्क शास्त्र होने से इसे न्यायतर्क भी कहते हैं । महर्षि पंतजलि ने अपने महाभाष्य के प्रथम आह्निक में वाकोवाक्य नाम से भी इस न्यायशास्त्र का उल्लेख किया है । वहुत व्यक्ति इस न्याय शास्त्र का अध्ययन करते हैं किन्तु इसके अनिर्वचनीय रहस्य को कम ही विद्वान समझ पाते हैं । विद्वान् लेखक ने गहन अध्ययन के पश्चात् ऐतिहासिक, दार्शनिक तथा मनोवैज्ञानिक अध्ययन की विभिन्न विचार धाराओं पर भी यथेष्ट विचार करके यह ग्रन्थ प्रस्तुत किया है । न्यायशास्त्र के प्रमाणिक सजीव और क्रमवद्ध इतिहास के परिचय के लिये यह ग्रन्थ अद्वितीय है । [वि. रा. ११८] १०-००

९९ **पल्लव इतिहास और उसकी आधार सामग्री** । डॉ० बलराम श्रीवास्तव ।

प्रस्तुत पुस्तक के आरम्भ में दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध पल्लव राजवंश का यशस्वी इतिहास प्रस्तुत किया गया है । तदुपरान्त पल्लवों तथा उनसे सम्वन्धित अन्य राजवंशों के सताधिक अभिलेखों पर टिप्पणी तथा उनमें से महत्त्वपूर्ण अभिलेखों के ऐतिहासिक अंश का मूलपाठ तथा हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है । पल्लवों के मुद्राओं के ऐतिहासिक महत्त्व की विवेचना करते हुये उसमें उनके समस्त मुद्रा-प्रकारों की गवेषणात्मक विवेचना की गयी है । अन्तिम अध्याय में पल्लवों के वास्तु शैली की विवेचना के साथ ही साथ उनके शैलीगत विकास की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है । दो परिशिष्टों में क्रमशः 'पल्लव लिपि के विकास' तथा 'महावंश के पल्लवों से सम्वन्ध अंश का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है । लिपि, मुद्रा और वास्तु की रूपरेखा स्पष्ट करने के लिये अनेक चित्र और नक्शे दिये गये हैं ।

[वि. रा. १२९] ६-००

*100 Paharpur and its Monuments. By Charu Chandra Das Gupta. 5-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०१ **पाणिनिकालीन भारतवर्ष** । (पाणिनिकृत अष्टाध्यायी का सांस्कृतिक अध्ययन) डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ।

इस ग्रन्थ में महर्षि पाणिनि विरचित संस्कृत-व्याकरण के सूत्रों के आधार पर उस काल के भारतीय जीवन और संस्कृति का विस्तृत प्रामाणिक अध्ययन है। अष्टाध्यायी के कितने ही भूले हुए शब्दों को यहाँ नये अर्थों के साथ समझाने का प्रयास किया गया है। ऐसे ३००० शब्दों की अकारादि-सूची ग्रन्थान्त में सन्निविष्ट है। लेखक की मान्यता है प्राचीन भारतीय संस्कृति-विषयक प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करने के लिये पाणिनीय सामग्री का अध्ययन आवश्यक है।

संशोधित द्वितीय संस्करण [वि. रा. ५०] २०-००

१०२ **पुरुषार्थ** । भारतरत्न डॉ० भगवानदास (द्वितीय संस्करण)

मनीषी लेखक के आध्यात्मिक एवं चिंतन का सार इस ग्रन्थ में आज के मानव के लिये सर्वथोपयुक्त शैली में उपनिबद्ध है। इससे मानव-मात्र को श्रेयःसम्पादन के लिए यथार्थ दिशा एवं प्रेरणा प्राप्त होती है। सम्पूर्ण वाङ्मय का सार ही इसे समझना चाहिए। [वि. रा. १०१] १२-५०

103 THE POLITICAL AND SOCIO-RELIGIOUS CONDITION OF BIHAR (185 B. C. to 319 A. D.). By Dr. Hari Kishore Prasad. In the Press

*104 Political Change in South Asia. An Intense and up-to-date Appraisal of the new patterns and forces with special reference to India. By Myron Weiner. 15-00

१०५ **प्रतिभा-दर्शन (भाषा-तत्त्वशास्त्र)** । आचार्य हरिशंकर जोशी । स. ले. : म. म. डॉ. गोपीनाथ कविराज ।

भाषा-तत्त्वशास्त्र प्राचीन भारतीयों की अपूर्व देन है जिसका पाश्चात्य विद्वानों ने वैज्ञानिक यन्त्रों के सहारे बहुत अधिक विकास कर लिया है। भारत में इसके ज्ञाता बहुत कम हैं और उनके पास इसे पढ़ाने के लिये हिन्दी ग्रन्थों का अभाव था, पाश्चात्य विद्वानों को कई प्राचीन भाषातत्त्व के सिद्धान्तों का ज्ञान भी नहीं हो सका है। उसकी भी इस ग्रंथ ने पूर्ति कर दी है। इस ग्रन्थ में भारतीय भाषाओं के क्रमिक युगों के प्रामाणिक विकासों के साथ-साथ अर्वाचीन भाषाओं तक के भाषातत्त्वों का विशद् विवेचन तीन बड़े भागों में दिया गया है। इसकी भाषा प्राञ्जल और धारावाही है। प्रत्येक विषय को सुगम बनाने के लिये स्थान-स्थान पर चित्र और मानचित्र भी दिये गये हैं [वि. रा. ७१] २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०६ **प्रयोगवादी काव्य-धारा।** (तथोक्त नई कविता) डॉ० रमाशंकर तिवारी। भू० ले०—श्री लक्ष्मीनारायण सुधांशु, अध्यक्ष, विधानसभा, बिहार।

प्रस्तुत ग्रन्थ में 'नई कविता' कही जानेवाली प्रयोगवादी काव्यधारा का तटस्थ एवं पूर्वग्रह-विमुक्त, विस्तृत एवं प्रामाणिक विवेचन प्रथम वार प्रस्तुत किया गया है। इससे प्रयोगवादी धारा को समझने तथा उसके प्रति समुचित एवं सन्तुलित न्याय वरतने की सम्भावनाएँ निश्चित ही परिष्कृत एवं परिपुष्ट होंगी। [वि. रा. ७०] १२-५०

१०७ **प्राकृत साहित्य का इतिहास।** प्रो० जगदीशचन्द्र जैन। वेद से लेकर प्राचीनतम शिलालेख, प्राचीन नाटक, कथाग्रन्थ आदि के व्यापक समीक्षण और समालोचनापूर्वक अपने विषय का यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य में प्रथम अवतरित हुआ है। [वि. रा. ४२] २०-००

१०८ **प्राचीन भारत में अपराध और दण्ड।** डॉ० हरिहरनाथ त्रिपाठी।

प्रस्तुत पुस्तक में समाजशास्त्र, विधि, न्यायपालिका एवं प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के सम्बन्ध में वैदिक काल से लेकर निबन्ध ग्रन्थों तक की सामग्री एक स्थान पर वैज्ञानिक विधि से प्रस्तुत की गई है। अपराध और दण्ड की सूची इतने व्यापक रूप में दी गई है कि उससे सभी लाभ उठा सकते हैं। पुस्तक विद्यार्थियों से लेकर शोधकार्य करने वालों तक सभी के लिए उपयोगी है [वि. रा. ६८] ६-००

१०९ **प्राचीन भारतीय मिट्टी के बर्तन।** डॉ० रायगोविन्दचन्द भारत के विभिन्न स्थलों पर खोदाई में जो मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं उनके कलात्मक आकार के आधार पर भारतीय सभ्यता के विकास का आरम्भ से लेकर गुप्तकाल तक का इतिहास इस पुस्तक में वर्णित है [वि. रा. ३४] १२-००

११० **प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति।** डॉ० राजबली पाण्डेय

इसके विविध खण्ड हैं—(१) भौगोलिक और जातीय आधार (२) राजनीतिक इतिहास (३) राजनीतिक विचार और संस्थायें (४) आर्थिक जीवन (५) सामाजिक चिंतन और संस्थायें (६) धार्मिक जीवन (७) दार्शनिक सिद्धान्त (८) भाषा और साहित्य (९) कला तथा (१०) उपसंहार। भारतीय जीवन और मान्यताओं का एक संतुलित चित्र इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया गया है। यंत्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१११ **प्राचीन भारतीय मूर्ति-विज्ञान**। डॉ० वासुदेव उपाध्याय। प्रतिमाओं के गूढ रहस्यों तथा मूर्ति की उत्पत्ति एवं विकास पर प्रकाश डालने वाले ग्रन्थ का निन्तात अभाव था। इसी अभाव की पूर्ति के लिये धार्मिक दार्शनिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण को सम्मुख रख कर इस ग्रंथ की रचना की गई है। इसमें प्रतिमानिर्माण के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तर, धातु एवं मण्मूर्तियों का क्रमवद्ध ऐतिहासिक विवेचन अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। इस ग्रन्थ में ब्राह्मण बौद्ध तथा जैन देव कुल का सविस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। मिश्रित देव प्रतिभा तथा ब्राह्मणधर्म के गौड़ देवताओं का एवं प्रतिभा सम्बन्धी तालमान का प्रामाणिक रूप में उल्लेख है। मूर्तियों में रसाभास का विवेचन इस ग्रन्थ की निजी विशेषता है। प्राचीन कलाविदों का जीवन चरित भी लेखक ने प्रस्तुत करने का सफल प्रयत्न किया है। प्रतिभा सम्बन्धी अभिलेख एवं तिथियों का परीक्षण भी इसमें संनिहित है। प्रामाणिक तथा ऐतिहासिक रीति से देव मूर्ति के विवरण के लिए यह ग्रन्थ पठनीय है तथा ज्ञान की अमूल्यनिधि है। यन्त्रस्थ

*112 Pre-History and Proto-History of Eastern India. With a detailed account of the Neolithic Cultures in Mainland South East Asia. By A. H. Dani. 35-00

113 FINE ARTS AND TECHNICAL SCIENCES IN ANCIENT INDIA: With Special Reference to Someswara's Manasollasa. By Dr. Shiba Shekhar Misra. M. A., Ph. D. In the Press

114 FALL OF MOGUL EMPIRE. By Sidney J. Owen, M. A. Second Edition. [Chow. Sans. Studies Vol. VII] 8-00

*115 Food and Drinks in Ancient India (From earliest times to C. 1200 A. D.). By Dr. Om Prakash. With a Foreword by Dr. B. Ch. Chhabra. 30-00

११६ **बघेलखण्ड के संस्कृत काव्य**। डॉ० राजीवलोचन अग्निहोत्री यन्त्रस्थ

*117 Bengal's Contribution to Sanskrit Literature and Studies in Bengal Vaisnavism. By S. K. De. 12-50

*118 Bengal Native Infantry: Its Organisation & Discipline 1796-1852. By A. Barat. 25-00

*119 Bodh-Gaya Temple. By Tarapada Bhattacharyya. Illustrated. 8-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२० **बौद्ध न्याय।** मूल-लेखक : एफ० टी० शेर्बात्स्की। अनुवादक : डॉ० रामकुमार राय।

शेर्बात्स्कीकृत 'Buddhist Logic' वस्तुतः बौद्धन्याय के क्षेत्र में आज तक प्रकाशित सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा प्राच्य अनुसन्धान के क्षेत्र में एक युगान्तरकारी ग्रन्थ है। लेखक ने दिङ्नाग तथा उनके अनुयायियों, विशेषतः धर्मकीर्त्ति द्वारा प्रवर्तित महायान सम्प्रदाय के बौद्धन्याय का एक सर्वाङ्गपूर्ण इतिहास तथा विवेचन प्रस्तुत किया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ दो भागों में विभक्त है। प्र० भाग में भारतीय न्यायशास्त्र तथा उसके मध्य एशिया में प्रचार-प्रसार का विवेचन करने के बाद लेखक ने दिङ्नाग के प्रमाण्यवाद तथा प्रत्यक्ष आदि का अध्ययन प्रस्तुत किया है। द्वि० भाग प्रमुखतः धर्मकीर्त्ति के न्यायबिन्दु तथा उस पर धर्मोत्तर की टीका का अनुवाद है। इस भाग के परिशिष्टों में तिब्बती भाषा के न्यायशास्त्रीय ग्रन्थों तथा हिन्दू नैयायिकों के बौद्धन्याय पर किये गये आक्षेपों से सम्बद्ध संस्कृत न्यायग्रन्थों के उद्धरणों का अनुवाद भी दिया गया है।

हिन्दी में अनूदित होकर यह ग्रन्थ अब व्यापक होकर सभी पाठकों के लिये उपयोगी हो गया। [वि. रा. १२४] प्रथम भाग ३०-००

१२१ **भक्ति का विकास।** डा० मुंशीराम शर्मा

परमपुरुषार्थरूप में प्राप्य 'भगवत्' और 'भक्ति' तत्त्व के विषय में जितना कुछ जानना आवश्यक है वह सब इस कौशल से इस ग्रन्थ में उपनिबद्ध है कि प्रत्येक वर्ग, वर्ण एवं स्तर के मानव इसे पढ़कर तुष्ट होंगे एवं उन्हें आत्मकल्याण का सर्वसम्मत मार्ग अनायास सुलभ होगा।

[वि. रा. १५] २०-००

१२२ **भारतीय इतिहास के स्रोत, सिक्के।** (ई० जे० रैपसन के 'इण्डियन कॉएन्स' का हिन्दी अनुवाद) अनुवादक : डा० रामकुमार राय।

रैपसन का प्रस्तुत ग्रन्थ भारतीय मुद्राशास्त्र के क्षेत्र में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। इसके लेखक कुछ उन आरम्भिक पाश्चात्य इतिहासकारों में एक थे जिन्होंने वस्तुतः भारतीय इतिहास के अध्ययन-अनुसन्धान को वह वैज्ञानिक रूप प्रदान किया जो आज हमें उपलब्ध हैं।

अनुवाद में मूल ग्रन्थ के फलक ज्यो-के-त्यों छापे गये हैं जिससे इसमें कोई भी कमी नहीं रह गई है। [वि. रा. १००] १२-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

123 THE BHAKTI CULT IN ANCIENT INDIA. By Mm. Dr. Bhagabat Kumar Goswami Shāstri. M. A., Ph. D. [Chow. Sans. Studies Vol. LII] 25-00

१२४ **भारतीय इतिहास-परिचय।** डॉ० राजबली पाण्डेय।

इस पुस्तक में भारत का संक्षिप्त, सरल और सुबोध इतिहास प्रस्तुत किया गया है। इसमें उन्हीं घटनाओं, व्यक्तियों और विचारधाराओं का समावेश किया गया है, जिन्होंने भारतीय जीवन की परम्परा को किसी न किसी प्रकार प्रभावित किया है। यह पुस्तक केवल विदेशी इतिहासकारों का अनुकरणमात्र नहीं है। इसमें भारतीय ऐतिहासिक परम्परा का समुचित आदर के साथ उपयोग किया गया है। साथ ही इस देश के उत्थान और पतन तथा जय और पराजय को भारतीय दृष्टि से देखने का प्रयास किया गया है। भारत के प्रामाणिक, सजीव और क्रमबद्ध इतिहास के परिचय के लिये यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

[वि. रा. ५८] १०-००

*१२५ **भारतीय कला।** (प्रारंभिक युग से तीसरी शती तक) डा० वासुदेवशरण अग्रवाल २४-००

१२६ **भारतीय प्रज्ञा।** (मॉनियर विलियम्स कृत इण्डियन विज़डम का हिन्दी अनुवाद) अनुवादक : डा० रामकुमार राय।

पुस्तक में हिन्दुओं के धार्मिक, दार्शनिक और नैतिक विचारों तथा सिद्धान्तों के उदाहरणों का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही संस्कृत साहित्य के प्रमुख विभागों का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करते हुये भारत की अतीत तथा वर्तमान नैतिक और बौद्धिक स्थिति का भी विवरण दिया गया है।

मूल लेखक का, जो कि सर्वाधिक महान पाश्चात्य प्राच्यविदों और भाषा वैज्ञानिकों में से एक है, परिचय देने की आवश्यकता नहीं। जिस विद्वत्ता, गहन सूझ-बूझ और सहानुभूति के साथ उन्होंने यहाँ विषय का विवेचन किया है इसने इस कृति को भारतीय दर्शन, धर्म, नीतिशास्त्र, और भाषाविज्ञान का एक अपूर्व ग्रन्थ बना दिया है।

हिन्दी अनुवाद में मूल ग्रन्थ के समस्त गुणों को सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया है। [वि. रा. ९२] २५-००

१२७ **भारतीय भाषा विज्ञान।** पं० किशोरीदास वाजपेयी।

भारतीय भाषाओं का मौलिक पद्धति पर विवेचन-विश्लेषण और वर्गीकरण इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है। [वि. रा. २३] ६-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२८ **भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि-सिद्धान्त।** श्री राजवंश सहाय 'हीरा'।

प्रस्तुत ग्रंथ में रस, ध्वनि एवं अलंकार को प्रतिनिधि-सिद्धान्त मान कर उन्हीं का विवेचन किया गया है। काव्य के स्वरूप, कारण, हेतु एवं भेद, शब्दशक्ति, ध्वनि, रस, गुण एवं दोषों का वर्णन प्रमुख है। दूसरे खण्ड में अलंकारों का विश्लेषण, विशेषतः ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक दृष्टि से किया गया है। शब्दशक्तियों के वर्णन में शास्त्रार्थ वाले स्थानों पर तथा अभिधा, लक्षणा, व्यंजना के विषय में विस्तृत एवं निर्भ्रान्त विवेचन है। संस्कृत के मूल ग्रन्थों के उद्धरणप्रमाण स्वरूप उपन्यस्त हैं। ग्रन्थ अपने में पूर्ण है। [वि. रा. ११३] १५-००

१२९ **भारतीय दर्शन में चेतना का स्वरूप।** श्रीकृष्ण सक्सेना।

डॉ० सक्सेना की Nature of Conciousness in Hindu Philosophy नामक अंग्रेजी पुस्तक भारतीय दर्शन शास्त्र के अनुरागियों में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी है; उसी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का हिन्दी रूपान्तर पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः स्थावर जङ्गमात्मक इस विश्व में चेतना का अस्तित्व, उसका स्वरूप तथा भिन्न-भिन्न प्रकाश, दार्शनिक और वैज्ञानिक दोनों के ही सामने बहुत सी समस्याएँ रखते हैं और दार्शनिक चिन्तन के प्रारम्भिक युग से इन समस्याओं को हल करने के लिए हमारे सभी दार्शनिकों ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म विचार उपन्यस्त किये हैं। डॉ० सक्सेना ने अपने इस शोध ग्रन्थ में बड़े ही सुन्दर और व्यवस्थित ढङ्ग से उसी विचार-परम्परा का विवेचन प्रस्तुत किया है। राष्ट्रभाषा प्रेमी भारतीय दर्शन के अनुरागी विद्वान् इससे अधिकाधिक लाभान्वित होंगे। [वि. रा. १२३] १०-००

*१३० **भारतीय-रत्न-चरितम्।** श्री रुद्रदत्त पाठक

संस्कृत के ललित एवं सरल वाक्यों में गुम्फित यह कथाशैली का प्रथम भारतीय इतिहास-ग्रन्थ है। जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति से भारतीय-स्वातन्त्र्य-प्राप्ति तक की घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। ८-००

१३१ **भारतीय साहित्य की रूपरेखा।** डॉ० भालाशंकर व्यास

वाराणसी का शास्त्री द्वितीय खण्ड परीक्षा पाठ्य स्वीकृत

वेदों से लेकर अब तक के समस्त भारतीय साहित्य—वैदिक, संस्कृत, पालि-प्राकृत तथा अपभ्रंश साहित्य—की रूपरेखा के अलावा भारत की सभी आधुनिक भाषाओं—हिन्दी, उर्दू, बँगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, आदि—के प्राचीन तथा अद्यतन साहित्य की गतिविधि का सुन्दर परिचय इसी एक ग्रन्थ से प्राप्त हो जाता है [वि. रा. ५३] ७-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३२ **भारतीय साहित्यशास्त्र और काव्यालंकार।** डॉ० भोलाशंकर व्यास

अलंकार भारतीय साहित्यशास्त्र का कठिनतम तथा जटिलतम अंग है पर अभी तक अलंकारों पर शास्त्रीय, वैज्ञानिक तथा तुलनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत कोई विवेचना नहीं मिलती। प्रस्तुत ग्रन्थ द्वारा यह कमी पूरी हो जाती है। पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के गंभीर अध्ययन के साथ ही भारतीय साहित्यशास्त्र के मूल ग्रन्थों का ठोस परिज्ञान इस ग्रन्थ में प्रतिपद लक्षित होता है। नवीन दृष्टि से भारतीय साहित्यशास्त्र की प्राचीन स्थापनाओं की ऐसी प्रामाणिक तथा आधिकारिक विवेचना हिंदी क्षेत्र में कम ही मिलेगी। भरत से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तक तथा अरस्तू से इलियट तक सभी भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्य शास्त्रियों के प्रासंगिक मतों को कुशलतापूर्वक आत्मसात् कर प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रन्थ की अन्य मूल्यवत्ता यह भी है कि अलंकारों के सम्बन्ध में प्रचलित शास्त्रार्थों और प्रसिद्ध उदाहरण-पद्यों को विवेचना में खास तौर पर लिया गया है और साथ में मध्ययुगीन तथा अर्वाचीन हिन्दी-कविता से भी तत्-तत् अलंकारों के उदाहरण दिये गये हैं। प्रथम भाग

[वि. रा. ८९] ८-००

१३३ **भारवि काव्य में अर्थान्तर न्यास।** उमेशप्रसाद रस्तोगी

प्रस्तुत ग्रन्थ में भारवि के जन्मकाल, स्थान तथा काव्य का परिचय देते हुए प्रवाहपूर्ण भाषा तथा मार्मिक शैली में उनके अर्थान्तरन्यास-सम्बन्धी काव्य, कवित्व तथा प्रतिभा का समुचित विवेचन तथा यथार्थ विश्लेषण किया गया है। [वि. रा. ८२] ६-००

*134 Bhasa : A Study. By Dr. A. D. Pusalkar. With a Foreword by Dr. A. Berriedale Keith. 33-00

१३५ **भाषा वैज्ञानिक संस्कृत व्याकरण।** डॉ० लाल रमायदुपाल सिंह यन्त्रस्थ

१३६ **मधुपर्क।** श्री देवीरत्न अवस्थी 'करील'।

व्रजभाषा के ललित पद्यों में कृष्णचरित-वर्णन के माध्यम से यह काव्य जनतन्त्र की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है तथा भारतीयों के मन में देशप्रेम एवं वीर-भावों को उद्बुद्ध कर सकने में पूर्ण समर्थ है। यह अभिनव ललित काव्य बड़े कौशल से रचा गया है। [वि.रा.११५] १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३७ **मध्यकालीन साहित्य में अवतारवाद।** डॉ० कपिलदेव पाण्डेय। भू० ले०, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

इस ग्रंथ में वैदिक साहित्य से लेकर उत्तर-मध्यकालीन साहित्य तक के अवतारवादी रूपों और प्रवृत्तियों का विशद विवेचन किया है। एकत्र ही वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, महाकाव्य, पुराण, गीता, आगम तथा बौद्ध, जैन, नाथ, शैव, शाक्त, संत, सूफी, भागवत, पांचरात्र आदि साम्प्रदायिक साहित्यों के विभिन्न अवतारवादी तत्त्वों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। साथ ही दशावतार, चौबीस अवतार, राम, कृष्ण, अर्चा, आचार्य, भक्त आदि विविध अवतारों का भी मौलिक विवेचन हुआ है। अंत में अवतारवाद के मानवशास्त्रीय (एन्थ्रोपोलौजिकल), ऐतिहासिक, दार्शनिक, साहित्यिक तथा मनोवैज्ञानिक अध्ययन की विभिन्न विचारधाराओं पर भी यथेष्ट विचार किया गया है। समस्त ग्रंथ में अवतारवाद और भक्ति से सम्बद्ध सैकड़ों पारिभाषिक शब्दों पर स्वतन्त्र शोधपूर्ण विस्तृत निबंध लिखे गये हैं, प्राचीन एवं मध्यकालीन शोधकों के लिए यह संदर्भग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और उपादेय है। [वि. रा. ६०] ३०-००

१३८ **मराठी का भक्ति साहित्य।** प्रो० भी० गो० देशपांडे

मराठी के भक्ति-साहित्य के विभिन्न काव्यरूपों के मूल स्रोत और विकास का मनोवैज्ञानिक ढंग से हिन्दी में अत्यन्त प्रामाणिक एवं सटीक विवेचन किया गया है। साधारण संस्करण ८-००

राज संस्करण [वि. रा. २०] १०-००

१३९ **महर्षि वेदव्यास।** (एक ऐतिहासिक व सांस्कृतिक पर्यालोचन)) पं० उमाशंकर दीक्षित।

इस पुस्तक में ज्ञान के महोदधि भगवान् वेदव्यास के सम्बन्ध में सभी पुराणों का हवाला देते हुए इतिवृत्तात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। पौराणिक जिज्ञासुओं के लिए यह ग्रन्थ अधिक उपादेय है

[वि० रा० ११९] ४-५०

१४० **महाकवि कालिदास।** (देव पुरस्कार से पुरस्कृत) डॉ० रमाशंकर तिवारी।

अब तक उपलब्ध सम्पूर्ण सामग्री का विवेकपूर्ण उपयोग कर कालिदास का देश-काल तथा उनकी सौन्दर्य भावना, प्रेम भावना, काव्यादर्श, लोकादर्श आदि विषयों की १८ अध्यायों में प्रामाणिक विवेचना की गई है।

[वि. रा. ४१] यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४१ **मध्यभारतीय भाषा-चयन।** डॉ० वीरमणिप्रसाद उपाध्याय
नागरी लिपि में प्रथम वार प्रकाशित प्रस्तुत चयन मध्यभारतीय भाषा के तिथिक्रम और वैविध्य को ध्यान में रखकर किया गया है। एण्डर्सन के 'पालिरीडर' तथा डॉ० कुमारसेन के 'मिडिल इण्डो आर्यन रीडर' से इस चयन में विशेषरूप से प्रेरणा ली गयी है। पुस्तक के प्रारम्भ में मध्यभारतीय भाषा के विकास का संक्षिप्त क्रम वतलाया गया है तथा अन्त में कठिन शब्दों पर भाषाविज्ञान की दृष्टि से टिप्पणी भी दी गयी है। विश्वविद्यालयीय छात्रों तथा भाषाशास्त्रियों के लिये पुस्तक अधिक उपयोगी और अद्वितीय है [वि० रा० १२५] ५-००

१४२ **महाकविभवभूति।** डॉ० गङ्गासागर राय।
इस ग्रन्थ में महाकवि भवभूति के व्यक्तित्व तथा कृतियों का अनूठा, साङ्गोपाङ्ग विवेचन तथा उनकी रससिद्ध वाणी का यथार्थ मूल्याङ्कन प्रस्तुत किया गया है। अनुसन्धान पूर्ण परिशिष्ट बड़े श्रम से संकलित किये गये हैं। अनुसन्धानकर्त्ताओं तथा उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए अत्युपयोगी ग्रन्थ है। [वि. रा. ७९] ५-००

१४३ **महाकवि भास : एक अध्ययन।** आचार्य बलदेव उपाध्याय।
आज से लगभग २४०० वर्ष पूर्व महाकवि भास ने संस्कृत में जिन नाटकों की रचना की थी, उनकी उत्कृष्टता तथा एतद्विषयक किसी उपयुक्त ग्रन्थ के अभाव के कारण इस पुस्तक का जन्म हुआ है। इसमें भास के नाटकों का परिचय, समीक्षण, तत्कालीन देश-काल की स्थिति आदि का प्रामाणिक तथा सांगोपांग विवेचन किया गया है। भास के समय आदि का भी प्रामाणिक निर्णय किया गया है तथा इस संबन्ध में उपलब्ध विभिन्न मत-मतान्तरों की तटस्थ एवं पूर्वग्रह-विमुक्त समीक्षा प्रस्तुत की गई है। [वि. रा. ७३] ४-००

१४४ **महाकवियों की अमर रचनायें।** श्री चक्रधर शर्मा।
इस पुस्तक में संस्कृत के विख्यात महाकवियों (वाणभट्ट, कालिदास, भवभूति, भारवी, माघ आदि) के जीवनवृत्त एवं उनकी प्रमुख उत्कृष्ट रचनाओं का हिन्दी में सुसम्बद्ध, संक्षिप्त कथानक औपन्यासिक, सरस एवं आकर्षक ढङ्ग से विन्यस्त किया गया है। इसे एक बार पढ़ लेने से ही उन महाकवियों एवं उनकी रचनाओं के सम्बन्ध में सभी आवश्यक विषय भली प्रकार ज्ञात हो जायेंगे। [वि. रा. ३] २-००

145 MYTHOLOGY OF THE ARYAN NATIONS : By Sir George W. Cox. [Chow.Sans.Studies Vol. XXVII] 30-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४६ **महाकवि शूद्रक** । आचार्य रमाशंकर तिवारी ।

प्रस्तुत पुस्तक में शूद्रक सम्बन्धी सम्पूर्ण अध्ययन का विवेचनात्मक आलोडन कर, मृच्छकटिक के रचयिता के ऊपर पहली बार विशद एवं प्रामाणिक प्रकाश डाला गया है। पुस्तक में समाविष्ट ऐतिहासिक पर्यालोचन का अपना विशिष्ट महत्त्व है और लेखक ने संस्कृत साहित्य की इस विशिष्ट यथार्थवादी नाट्यकृति का प्रौढ़ एवं प्राञ्जल विवेचन प्रस्तुत किया है। उपपादन की शैली नितांत तर्कपूर्ण एवं व्यवस्थित है तथा शूद्रक सम्बन्धी अनेक कल्पनाओं एवं मान्यताओं का संतुलित विवेचन यहाँ उपलब्ध है [वि. रा. १०८] १२-५०

१४७ **सोमेश्वर कृत मानसोल्लास : एक सांस्कृतिक अध्ययन** । डा० शिवशेखर मिश्र ।

चालुक्य कुलोत्पन्न महाराज सोमेश्वर विरचित धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ मानसोल्लास के परिशीलन माध्यम से तत्कालीन संस्कृति एवं रीति-नीति का सुस्पष्ट परिचायक ग्रन्थ। [वि. रा. ९९] २५-००

*148 Medieval Nepal. By D. R. Regmi. Part-I Early Medieval Period 750-1530 A. D., Part II-A History of the Three Kingdoms 1520-1768 A. D., Part III-Source Materials for the History and Culture of Nepal., Part IV—Select Inscriptions 1524-1768 A.D. 170-00

149 Medieval Malwa. A Political and Cultural History 1401-1562. By Dr. Upendra Nath Day. 30-00

150 MITHILA IN THE AGE OF VIDYAPATI. C. 1330-1525 A. D. A Study in Cultural History. By Prof. Radha Krishna Choudhary. In the Press

*151 Military System in Ancient India. By B. K. Majumdar. 10-00

*152 Methods of Social Research. By N. A. Thoothi. 9-50

153 Manual of Pali. By C. V. Joshi. 5-50

*154 Mohen-Jo-Daro. By Prof. C. L. Mariwalla. 3-00

*१५५ **युगाराध्य निराला** । पं० गंगाधर मिश्र ।

इस ग्रन्थ में हिन्दी साहित्य के सर्वांगीण परिचय के साथ महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के गद्य-पद्य मय समस्त वाङ्मय की सारगर्भिति समीक्षा सुलभ की गई है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि हिन्दी के महारथी विद्वानों ने इसकी भूरि २ प्रशंसा की है—जो पुस्तक में छपी है १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*156 Marwar and the Mughal Emperors (A. D. 1526–1748). By Dr. V. S. Bhargava. 15-00

+१५७ **यूरोप और वहाँ के संग्रहालय** । डॉ० सतीशचन्द्र काला। यूरोप के संग्रहालयों का विविध दृष्टिकोणों से प्रामाणिक एवं हृदयग्राही वर्णन तथा भारत से यूरोप ले जाई गई दुष्प्राप्य वस्तुओं का विवेचन प्रस्तुत ग्रन्थ का विषय है। आर्ट पेपर पर छपे लगभग ५० दुष्प्राप्य चित्र भी दिए गये हैं। ५-००

*158 European Agency Houses in Bengal (1783–1833). By S. B. Singh. 20-00

*159 Rise of the Mahomedan Power in India. Reprint. 4 Vols. By J. Briggs. 160-00

*160 Rise and Fall of the Maratha Empire. By Rajaram Vyankatesh Nadkarni. Foreword by D. V. Potdar. 30-00

*161 Rashtrakutas and their Times. By Dr. A. S. Altekar. 20-00

*162 Riddle in Indian Life: Lore and Literature. By Durga Bhagwat. 16-26

*163 Record of the Buddhist Religion. As practised in India and the Malay Archipelago (A. D. 671–695). By I-Tsing. Translated by J. Takakusu. With a letter from the Right-Hon. F. Max Muller. With a Map. 20-00

*164 Lyric in Indian Poetry. A Comparative Study in the Evolution of Bengali Lyric forms up to the Seventeenth Century. By A. R. Dasgupta. 10-00

*165 Lectures on Rajput History. By A. C. Banerjee. 8-00

१६६ **लौकिक संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास**

(हिन्दी रूपान्तर) मूल लेखक : डा० गौरीनाथ शास्त्री उपकुलपति : वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी। प्रस्तुत संस्करण लेखक के मूल अंग्रेजी 'A Concise History of Classical Sanskrit Literature' ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद है। अंग्रेजी संस्करण अपनी संक्षिप्त सीमा में लौकिक संस्कृत साहित्य के एक अत्यन्त व्यापक तथा यथातथ्य विवेचन के कारण विद्यार्थियों में अत्यन्त लोकप्रिय रहा है। इसे हिन्दीभाषी विद्यार्थियों को सुलभ बनाने के उद्देश्य से ही हम हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत कर रहे हैं। एक बार ग्रन्थ के अवलोकन से इसकी उपयोगिता का लाभ स्वयं स्पष्ट हो जायगा। [वि. रा. ११४] ९-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*167 Later Indo Scythians. By Sir Alexander Cunningham.

*168 Later Hindu Civilisation. By Ramesh Chandra Dutt. 25-00

१६९ **लौकिक संस्कृत साहित्य।** (Classical Sanskrit Literature by A. B. Kieth) अनुवादक— श्री चारुचन्द्र शास्त्री। 14-50

अनुवाद में स्थान-स्थान पर मूल ग्रन्थों के उद्धरण देकर बड़े श्रम के साथ ग्रन्थ का सम्पादन हुआ है। [वि. रा. ५५] ७-५०

१७० **वाग्विज्ञान।** (भाषाशास्त्र)—आचार्य सीताराम चतुर्वेदी। भाषा-शास्त्र के अन्य प्रचलित ग्रन्थों से इस ग्रन्थ में तीन मुख्य विशेषताएँ हैं—१. विदेशी भाषा-वैज्ञानिकों के उन मतों का युक्ति युक्त तर्कों के आधार पर खण्डन करके नवीन तथा पूर्णतः मौलिक सिद्धान्तों की स्थापना की गई है। २. ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर भाषाओं का विवेचन, वर्गीकरण तथा परीक्षण किया गया है। ३. भाषा और मन का घनिष्ठ सम्बन्ध स्पष्ट करने मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भाषा के विभिन्न स्वरूपों का विस्तृत सोदाहरण विवरण दिया गया है। केवल भारतीय भाषाशास्त्र के ही क्षेत्र में नहीं, विश्व के भाषा-शास्त्र के क्षेत्र में भी यह ग्रन्थ पूर्णतः मौलिक और अभिनव है। आकार डिमाई ८ पेजी, पृष्ठ संख्या लगभग ८००, सुन्दर पक्की जिल्द। [वि. रा. १२२] २०-००

*171 Wahabi Movement in India. By Q. Ahamad. 25-00

१७२ **विक्रमादित्य** [संवत्—प्रवर्तक]। डा० राजबली पाण्डेय सम्राट् विक्रमादित्य को ऐतिहासिक सिद्ध करने वाला यह बहुत ही शोधपूर्ण प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसमें वह सभी संगत सामग्री एकत्रित की गई है जिससे पूर्वाग्रहरहित कोई भी पाठक अपने ढङ्ग से निष्कर्ष निकाल सकता है। [वि. रा. २५] १०—००

१७३ **विविधार्थ**—भारतरत्न, डॉ० भगवानदास (द्वितीय संस्करण) डॉ० साहब ने अपने जीवन काल में ही १२ लेखों का संग्रह 'विविधार्थ' नाम से प्रकाशित कर दिया था। इन लेखों में 'बुद्धि प्रबल वा शास्त्र' लेख लगभग १०० पृष्ठों में, 'भगवद्गीता का आशय और उद्देश्य' १२५ पृष्ठों में, एवं संस्कृति सम्मेलन का अभिभाषण भी १०० पृष्ठों में समाप्त हुआ है। इनमें स्वतन्त्र ग्रन्थों जैसी प्रामाणिकता और गम्भीर विवेचनात्मक शैली है। [वि. रा. ९०] ६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

174 VISNUDHVAJ or QUTB MANAR. By Dr. D. S. Triveda [Chow. Sans. Studies Vol. XXIV] 5-00

१७५ **विष्णुपुराण का भारत।** डा० सर्वानन्द पाठक

प्रस्तुत ग्रन्थ में विष्णुपुराण के आधार पर भौगोलिक आधार, समाजव्यवस्था, राजनीतिक संस्थान, शिक्षा-साहित्य, संग्रामनीति, आर्थिकदशा, धर्म आदि विषयों पर प्रामाणिक रूप से तत्कालीन भारत की जीवन्त झाँकी प्रस्तुत की गई है। ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से इसका प्रमुख महत्त्व है। [चौ. रा. २] २०-००

176 WOMEN IN ANCIENT INDIA. By M. E. R. Martin. [Chow. Sans. Studies Vol. XLIV] 20-00

*177 Women in Mughal India. By Dr. Rekha Misra. 15-00

१७८ **वेदकालीन समाज।** डॉ० शिवदत्त ज्ञानी

ग्रन्थ का पतिपाद्य विषय है—वेदों के समय में समाज की व्यवस्था और उसकी सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक, एवं कला और मनोरञ्जन इत्यादि से सम्बन्धित स्थितियाँ क्या थीं। लेखक ने बड़े श्रम एवं कौशल से इस ग्रन्थ का प्रणयन किया है। प्रत्येक स्थिति या आचार सप्रमाण निरूपित है। भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण तथा प्राञ्जल है प्रत्येक कोटि के पाठक की रुचि इसे पढ़कर तुष्ट होगी। ग्रन्थ अवश्य पठनीय है। [वि. रा. १०७] २५-००

*179 Vedic India (as Embodied principally in the Ṛgveda). By Lenaide A. Ragozin. With 2 Maps. 20-00

१८० **वैदिक युग के भारतीय आभूषण**—डॉ० रायगोविन्दचन्द

वैदिक युग में मनुष्य कौन-कौन से आभूषण किस प्रकार धारण करता था, किस आभूषण के कितने भेदोपभेद या प्रकार थे, आदि का प्रामाणिक तथा सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत ग्रन्थ का विषय है। प्रमाण रूप में सर्वत्र ही वैदिक ऋचाएँ तथा मन्त्र सानुवाद उद्धृत किए गए हैं। उपर्युक्त विवेचन के माध्यम से भारतीय संस्कृति, सामाजिक रीति-नीति आदि की भी सुस्पष्ट झाँकी प्राप्त हो जाती है। इतिहास, शोध, मानवविज्ञान आदि के अध्येताओं के लिये यह संग्राह्य है।

[वि. रा. ८४] १५-००

181 VRATYAS IN ANCIENT INDIA. By Prof. Radha Krishna Choudhary [Chow. Sans. Studies. Vol. XXXVIII] 15-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१८२ **वैदिक योगसूत्र** । श्री हरिशंकर जोशी ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में वेद-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद-पुराणादि में विकीर्ण तथा व्याप्त उस प्राचीन योगदर्शन का चूडान्त विवेचन किया गया है जिसे जाने बिना हम अपनी संस्कृति, दर्शन और ज्ञान-सम्पत्ति का न तो उचित मूल्यांकन कर सकते, न उनके रहस्यों की अनुभूति ही पा सकते हैं। उपनिषद्-युग के साथ लुप्त हुए उस योगदर्शन का इस ग्रन्थरूप में पुनरभ्युदय आपको चकित कर देगा। सोमयोग, अग्नियोग आदि का विवेचन तो इस ग्रन्थ के अतिरिक्त कहीं मिलेगा ही नहीं। अकाट्य तर्कों तथा युक्तियों के साथ आकर-ग्रन्थों के वचन भी प्रमाण-त्वेन उपन्यस्त हैं। वेदों का मुख्य प्रतिपाद्य योगदर्शन ही है यह प्रमाणित करने के लिये वेदों के अतिप्रसिद्ध पुरुषसूक्त और अस्यवामीय सूक्त सुविशद व्याख्या सहित दिए गए हैं। प्रवाहपूर्ण प्राञ्जल भाषा-शैली में लिखे इस शोधपूर्ण ग्रन्थ का पारायण वेदों, प्राचीन ऋषियों तथा स्वात्मस्थ ज्ञानभण्डार के निकट पहुँचाकर आपको अवश्य चमत्कृत कर देगा। अविलम्ब क्रय करने योग्य उत्तम ग्रन्थ है। [चौ. रा. ३] २०-००

१८३ **वैदिक साहित्य की रूपरेखा** । प्रो. हंसराज अग्रवाल

कई विश्वविद्यालयों में वैदिक साहित्य की रूपरेखा पाठ्यक्रम में नियत है। इस पुस्तक में वैदिक साहित्य के आदि से अन्त तक की प्रत्येक महत्त्वपूर्ण अङ्ग की जानकारी पाठक को संक्षेप से करा दी गई है। इसके अध्ययन से छात्रों को सर्वांगपूर्ण वैदिक साहित्य की महत्त्वपूर्ण बातों का आवश्यक ज्ञान हो जायगा। [वि. रा. ८७] २-००

*१८४ **वैदिक साहित्यचरित्रम्** । नेट ३-००

१८५ **शृङ्गार रस का शास्त्रीय विवेचन** । डॉ० इन्द्रपाल सिंह

प्रस्तुत ग्रन्थ में आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र से आरम्भ कर भानुदत्त की रसमञ्जरी से सम्बद्ध अंशों का आकलन करते हुए शृङ्गार रस से सम्बन्धित सिद्धांतों का समीक्षात्मक एकत्रीकरण भी किया गया है। उदाहरण संस्कृत और प्राकृत दोनों के ही हैं जिनकी आवश्यक व्याख्या भी दी गई है। काम और शृङ्गार के व्युत्पत्तिपरक अर्थ के अनन्तर उनकी सर्वव्यापकता और अन्योन्याश्रयता का अनूठा विवेचन इस ग्रन्थ की प्रमुख विशेषता है। इस प्रकार इस ग्रन्थ में शृङ्गार रस से सम्बन्धित सम्पूर्ण शास्त्रीय विवेचन एवं तत्त्व-संचयन पाण्डित्य पूर्ण ढंग से प्रस्तुत कर दिया गया है [चौ. रा. ४] १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

186 SRI AUROBINDO AND THE THEORIES OF EVOLUTION. A Critical and Comparative Study. By Dr. Rama Shanker Srivastava. [Chow. Sans. Studies Vol. LX] 30–00

*187 Sanskrit and Prakrit Mahakavyas. By R. Upadhyaya. 10–00

१८८ **संस्कृत-कवि-दर्शन** । डॉ० भोलाशङ्कर व्यास ।

इस पुस्तक में कई कवियों के विषय में ऐसे मौलिक सङ्केत किये गये हैं, जो अनुसन्धान-कर्ताओं को मार्ग-दिशा दे सकते हैं। साहित्यिक समाज को बहुत दिनोंसे संस्कृत कवियों पर हिन्दी में सैद्धान्तिक, व्यावहारिक और समाजशास्त्रीय आलोचना का अभाव खटकता था। डॉ० व्यास ने इस अभाव की पूर्ति कर दी है। शास्त्री, आचार्य तथा बी० ए०, एम० ए० और साहित्यरत्न की परीक्षाओं में निबन्ध और इतिहास के लिये यह पुस्तक अधिक उपादेय है द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण [वि. रा. ४] ७–००

१८९ **संस्कृत के विद्वान् और पंडित** । श्री रामचन्द्र मालवीय ।

संस्कृत वाङ्मय की उपासना में जीवन व्यतीत करनेवाले, भारतीय गौरव के आधार-स्तम्भ २४ महामनीषियों का प्रेरणाप्रद चरित इस पुस्तक में वर्णित हैं। इनमें पश्चिम के उन महनीय पुरुषों का भी चरित है जिनकी साधना भारतीय वैदिक ज्ञान की समृद्धि में सहायक रही है। कल के भारत के लिये आज के विद्यार्थी को वस्तुतः ऐसी ही पुस्तकों की नितान्त आवश्यकता है [चौ० पु०] १–७५

१९० **संस्कृत महाकाव्य की परम्परा** । (कालिदास से श्रीहर्ष तक) डॉ० केशवराव मुसलगाँवकर ।

इस ग्रंथ के पूर्वार्ध में काव्यों के सिद्धान्तों का विवेचन करते हुये उत्तर-कालीन महाकाव्यों को कृत्रिम रूप देनेवाले कारणों का उल्लेख करके रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति तथा औचित्य का विश्लेषणात्मक विवेचन करते हुये यह सिद्ध कर दिया है कि वस्तुतः काव्य की आत्मा क्या है। ग्रन्थ के उत्तरार्ध में २६ महाकाव्यों के कथानक, रसभावाभिव्यक्ति, वस्तुवर्णन, व्युत्पत्ति, अलंकार, छन्द, भाषा आदि का सुविस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार यह ग्रन्थ छात्र विद्वान् तथा संस्कृत साहित्य के जिज्ञासुओं के लिये परम उपयोगी एवं संग्राह्य है। २५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१९१ **संस्कृत नाट्यसिद्धान्त** । डॉ० रमाकान्त त्रिपाठी ।

प्रस्तुत प्रबन्ध में १ से ६ अध्यायों मे नाट्यसम्बन्धी सिद्धान्तों की विवेचना की गयी है । विषय विभाजन इस प्रकार है—१. रूपक और उसके भेद-प्रभेद, २. अर्थप्रकृति, सन्धि और सन्ध्यङ्ग, ३. नायक-नायिका-भेद एवं अलंकार, ४. वृत्ति और अभिनय तथा ५. रस-भेद । इस प्रकार आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से नाट्यसिद्धान्तों का एकत्र एक ही पुस्तक में राष्ट्रभाषा में सर्वांगपूर्ण विवेचन होने के कारण यह संस्करण संस्कृत, हिन्दी, अंगरेजी के छात्रों, अध्यापकों तथा साहित्य प्रेमियों के लिये समान रूप से उपयोगी है । [वि. रा. १२८] १०-००

१९२ **संस्कृत-भाषा-विज्ञानम्** । श्रीरामाधीन चतुर्वेदी

इस निबन्ध-ग्रन्थ में शिक्षा-प्रातिशाख्य-तन्त्र-निरुक्त आदि ग्रन्थों में आए शब्दों की उत्पत्ति के प्रकार तथा शब्द-विकृति के नियमों की विवेचना की गई है । संस्कृत भाषा में लिखा यह अपने विषय का सर्वप्रथम सफल ग्रन्थ है । इसमें वेदों से लेकर आज तक के इस सम्बन्ध के जितने भी विषय हैं, सब पर सुचिन्तित प्रौढ़ सामग्री प्रस्तुत की गई है । ग्रन्थ की श्रेष्ठता का अनुमान विषय-सूची देखकर ही कर लिया जा सकता है ।

[वि. सं. १०४] ६-००

१९३ **संस्कृतवाङ्मयपरिचयः** । (संस्कृत ऐतिहासिक ग्रन्थ)

पण्डित मधुसूदन प्रसाद मिश्र (शास्त्री परीक्षोपयोगी)

वेद से लेकर बीसवीं सदी तक के संस्कृत साहित्य के ग्रन्थों का उद्गम-काल, इतिहास, रचयिताओं के संक्षिप्त इतिवृत्त इस ग्रन्थ में दिए गये हैं । संस्कृत साहित्य में इस ढङ्ग का श्रेष्ठ यह प्रथम ग्रन्थ है ।

[वि. सं. १३] १—५०

१९४ **संस्कृत साहित्य का इतिहास** । (बृहत् संस्करण)

श्री वाचस्पति गैरोला । (बिहार आदि की साहित्याचार्य परीक्षा पाठ्य स्वीकृत) उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

आर्यों का आदि देश एवं आर्य-भाषाओं के उद्भव से लेकर उन्नीसवीं सदी तक की सहस्राब्दियों में संस्कृत-साहित्य की जिन विभिन्न विचार-वीथियों का निर्माण हुआ और राजवंशों के प्रश्रय से संस्कृत भाषा को जो गति मिली उसका भी समावेश पुस्तक में देखने को मिलेगा ।

[वि. रा. २८] २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१९५ **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** (वैदिक साहित्य की रूपरेखा सहित) श्री हंसराज अग्रवाल ।

इस पुस्तक का विषय प्रमुखतया संस्कृत साहित्य के गौरवपूर्ण इतिहास का संक्षिप्त वर्णन है। बी० ए० के छात्रों की आवश्यकता पूर्ण करने वाला और संस्कृत साहित्य के अध्ययन में उनकी सहायता करने वाला कोई ग्रंथ नहीं है, क्योंकि संस्कृत के उपलभ्यमान इतिहास ग्रंथों में से अधिक ग्रंथ उनकी योग्यता से बाहर के हैं। यह ग्रन्थ बी० ए० श्रेणी के ही छात्रों की आवश्यकता को पूर्ण करने के विशेष प्रयोजन से लिखा गया है। प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में यह निर्धारित है

संशोधित परिवर्धित संस्करण [वि. रा. ८६] ७-५०

१९६ **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** आर्थर मैक्डॉनल (हिन्दी संस्करण) अनुवादक—श्री चारुचन्द्र शास्त्री

मैकडॉनल-प्रणीत 'हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर' अपने विषय का सर्वमान्य तथा सर्वत्र पाठ्य स्वीकृत ग्रन्थ है। प्रस्तुत ग्रन्थ उसी का सरस अनुवाद है जो छात्रों तथा अध्यापकों के लिये नितान्त उपयोगी है। वैदिक काल पर्यन्त प्रथम भाग [वि. रा. ४८] ७-५०

द्वितीय भाग यन्त्रस्थ

१९७ **संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास।** (A New History of Sanskrit Literature by Sri Krishna Chaitanya का हिन्दी अनुवाद) अनुवादक—डॉ० विनयकुमार राय

इस ग्रन्थ में लेखक ने आरम्भिकतम सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आरम्भ करते हुए वैदिक साहित्य से लेकर अब तक के संस्कृत साहित्य की समीक्षा की है। प्रायः आद्योपान्त विभिन्न ग्रन्थों और लेखकों से प्रतिनिधि उद्धरण देकर विवेच्य-विषय को और सुस्पष्ट बनाने की चेष्टा की गई है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में उससे सम्बद्ध सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची देकर भी लेखक ने और अधिक अनुसंधान करने वालों के लिए सामग्री का संकेत कर दिया है। सम्पूर्ण विषय का तत्कालीन सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि में अध्ययन करते हुए लेखक ने एक ऐसा नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है जो अबतक के किसी भी संस्कृत साहित्य के इतिहास में नहीं मिलता। ग्रन्थ अपनी मौलिकता तथा अपने विषय के व्यापक विवेचन के कारण विद्वानों तथा विद्यार्थियों दोनों के लिए समान रूप से अवलोकनीय है। [वि. रा. ७७] २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१९८ **संस्कृत भाषा।** मूल लेखक टी० बरो, रूपान्तरकार डॉ० भोलाशंकर व्यास

इस पुस्तक में अद्यतन गवेषणाओं को आत्मसात् करते हुए प्राचीन भारत-योरोपीय भाषा, संस्कृत तथा तत्संबद्ध भाषाओं का आधिकारिक तुलनात्मक अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है। [वि. रा. ८१] ३०-००

१९९ **संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास।** [संशोधित एवं परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण] श्री वाचस्पति गैरोला।

संस्कृत साहित्य के इतिहास विषयक ज्ञानार्जन के लिए छात्रों के समक्ष जो कठिनाइयाँ थीं उनको दृष्टि में रखकर इस पुस्तक का निर्माण किया गया है। इसमें विशाल एवं अगाध संस्कृत वाङ्मय की विभिन्न शाखाओं का क्रमबद्ध विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस दृष्टि से अब तक जितने भी इतिहास लिखे गये हैं उनमें इतनी सर्वांगीणता और विषय-विस्तार नहीं है।

उसकी उपयोगिता एवं विशेषता को दृष्टि में रखकर ही वाराणसी, बिहार, आगरा और सागर आदि विश्वविद्यालयों ने उसे अपने पाठ्यक्रम में स्थान दिया।

छात्रों और आध्येताओं की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए नवीन संस्करण में हमने काव्य विद्याओं को सर्वथा परिवर्द्धित एवं नवीन रूप में प्रस्तुत किया है। इस सन्दर्भ में लगभग सौ पृष्ठों की नयी सामग्री बढ़ा दी गयी है, जिससे कि निर्धारित पाठ्यक्रम का कोई भी अंग अछूता न रहे और परीक्षाकाल में छात्रों को कोई असुविधा न हो। परीक्षार्थियों के लिये यह सर्वश्रेष्ठ संस्करण है। [वि. रा. २९] १३-००

२०० **संस्कृत साहित्य में नीतिकथा का उद्गम एवं विकास।** डॉ० प्रभाकर नारायण कवठेकर।

पंचतन्त्र के पूर्व भारतीय नीतिकथा का उद्गम किन परिस्थितियों में हुआ, उसका वेदकालीन रूप क्या रहा होगा, जातक में लोककथा का आदान, उसके प्रसार के कारण विदेशों में उसका निर्गमन तथा महाभारत में नीतिकथा का राजनीतिक प्रज्ञा के निदर्शन के लिए प्रयोग आदि तथ्यों की गवेषणा इस प्रबन्ध की मुख्य विशेषता है। परिशिष्टों में सम्पूर्ण विश्व के नीति-कथा-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। [चौ. रा. ७] २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०१ **संस्कृत साहित्य में मौलिकता एवं अनुहरण।** श्री उमेशप्रसाद रस्तोगी।

प्रस्तुत प्रबन्ध में 'मौलिकता और अनुहरण' की दृष्टि से संस्कृत साहित्य के विशिष्ट स्थलों का अध्ययन करते हुए संस्कृत काव्यपाठकों के सम्मुख मौलिकता और अनुहरण विषयक नई वस्तु प्रस्तुत की गई है। भाषा-शैली आदि सभी विषयानुरूप हैं। [वि. रा. ९१] ८-००

*२०२ **संस्कृत साहित्य में सादृश्यमूलक अलङ्कारों का विकास।** डॉ० ब्रह्मानन्द शर्मा

बड़े-बड़े आचार्यों तथा उनके मतों की आलोचना करते समय लेखक ने परम्परा तथा पूर्वाग्रह का मोह नहीं रखा। अलंकारों का आन्तरिक तत्त्व समझने में यह ग्रन्थ परम सहायक होगा। अलंकारों के विषय में इतना व्यापक, विशाल तथा प्रामाणिक विवेचन प्रथमबार ही प्रकाशित हुआ है १२-००

२०३ **संस्कृतसाहित्येतिहासः** (संस्कृत) आचार्य रामचन्द्रमिश्र वाराणसी की शास्त्री द्वितीय खण्ड के अनिवार्य द्वितीय पत्र के लिए पाठ्य स्वीकृत ग्रन्थ।

इसमें वेद-वेदांग आदि से लेकर यथाक्रम काव्यकाल तथा वैशिष्ट्य विवेचन आदि विषय हैं। अतिविस्तृत विषय को संक्षिप्त करना साधारण छात्रों के लिये कष्टकर होता है अतः संक्षेप में ही विषय का यथार्थ ज्ञान कराया गया है [वि. सं. ४९] ४-००

२०४ **संस्कृत सुकविसमीक्षा।** आचार्य बलदेव उपाध्याय

विक्रमपूर्व पंचम शती से लेकर वाल्मीकि, व्यास, पाणिनि, वररुचि, कालिदास, अश्वघोष, भर्तृमेण्ठ, भारवि, भवभूति, दण्डी, बाण—आदि लगभग ३० कवि तथा कवयित्रियों के रूप तथा स्वरूप से, काव्य की आलोचना तथा रोचक दृष्टान्तों से यदि पाठक परिचय पाना चाहता है, तो वह इस प्रामाणिक ग्रन्थ का अवलोकन अवश्य करे। 'शंकराचार्य का आलोचनात्मक विवरण' एक सौ से अधिक पृष्ठों में दिया गया है जिसमें आचार्य की सम्पूर्ण जीवनी, समय, ग्रन्थ, शिष्यपरम्परा, तथा आध्यात्मिक उपदेशों का विशिष्ट विवरण विस्तार से दिया गया है। ग्रन्थ का परिशिष्ट-कविप्रशस्तयः-कविविषय का प्राचीन आलोचनामयी सूक्तियों का एकत्र संग्रह है जो पहिली बार इस रूप में प्रस्तुत किया गया है। तदनन्तर 'ऐतिहासिक परिचय' में इन अज्ञात तथा अल्पज्ञात, अप्रसिद्ध तथा अल्पप्रसिद्ध कवियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। शैली सुबोध तथा भाषा रोचक है [वि. रा. ६३] २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

205 Dr. SATKARI MUKHERJI FELICITATION VOLUME. A Scholarly Felicitation to a Renowned Scholar. Edited by Dr. S. Bhattacharya etc.

This Felicitation volume comprises more than sixty learned articles both critical and reflective on Buddhism, Jainism, various branches of Indian Philosophy, History, etc. by renowned scholars. It covers a wide field of Indological studies, besides, some articles published in this volume illumine quite a few problems of the day. [Chow. Sans. Studies Vol. LXIX] 90-00

२०६ **सब धर्मों की बुनियादी एकता।** डॉ० भगवानदास।

इस ग्रन्थ में संसार भर के धार्मिक मज़हबों और उनके श्रेष्ठ धर्मग्रन्थों की बारीक जानकारी देते हुए यह समझाया गया है कि सब धर्मों-मजहबों का उद्देश्य भौतिक और आध्यात्मिक कल्याण पाना ही है

[वि. रा. ३६] १२-००

*२०७ **समन्वय**—डॉ० भगवानदास। परिवर्धित संस्करण

इस ग्रन्थ में सरल शैली में समन्वय के सिद्धान्त की व्याख्या की गई है। सर्वत्र ऋषियों और मनीषियों के सुचिन्तित विचारों के मूल श्लोक प्रमाण रूप में उद्धृत किए गए हैं। इस ग्रन्थ का पारायण शिक्षा और आनन्द का साधक होगा। ५-००

*208 Some Problems of Sanskrit Poetics. By S. K. De. 15-00

*२०९ **सरस्वती भवन स्टडीज।** (वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय) १-१७ भाग १११-००

२१० **सावित्री-सत्यवान्।** बिहार मध्यमा पाठ्य स्वीकृत।

इस पुस्तक में औपन्यासिक रूप से भावुकतापूर्ण कथा का सृजन करके विद्वान् लेखक ने महाभारतीय सावित्री-उपाख्यान को सर्वथा नवीन एवं परमोपादेय रूप दिया है जो प्रत्येक बालक-बालिका तथा वयस्क के लिये भी अनिवार्य रूप से पठनीय है। [वि. रा. २४] २—००

२११ **साहित्य और सिद्धान्त।** प्रो० श्यामलाकान्त वर्मा। वाराणसी की उत्तरमध्यमा प्रथमखण्ड परीक्षापाठ्य स्वीकृत।

हिन्दी साहित्य एवं काव्यशास्त्र के सम्पूर्ण ज्ञातव्य विषयों का सार-सङ्कलन स्वरूप यह ग्रन्थ छात्रों, अध्यापकों तथा अनुसन्धित्सुओं के लिए परम उपयोगी है। [वि. रा. १७] ३—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*212 Survey of Recent Studies on Modern Indian History. By Dr. K. K. Datta. 8-00

२१३ **साहित्य-शास्त्र-सार।** श्री हंसराज अग्रवाल तथा श्रुतिकान्त जी।

संस्कृत के लक्षण-ग्रन्थों की तरह अत्यन्त व्यवस्थित तथा संक्षेप में साहित्य के सभी अंगों की हिन्दी में प्रामाणिक जानकारी देनेवाला यह प्रथम ग्रन्थ है। इसकी शैली बड़ी सुबोध है और विषय के वर्गीकरण में बड़े कौशल से काम लिया गया है। प्रत्येक प्रकरण के अन्त में जो अभ्यास दिए गए हैं उनके मनन से उस प्रकरण के बुद्धिस्थ होने में तनिक भी आयास नहीं होता। पाण्डित्यपूर्ण विशद भूमिका भी एतद्विषयक उत्तम विचारों से पूर्ण है। अनूठा ग्रन्थ है, एकबार देखकर ही उपयोगिता समझी जा सकती है। [वि. रा. १०३] ४-५०

२१४ **साहित्यशास्त्रीय तत्त्वों का आधुनिक समालोचनात्मक अध्ययन।** पं० मधुसूदन शास्त्री।

प्रस्तुत ग्रन्थ में मुख्यतः तीन पदार्थों का विवेचन है—साहित्य, उसके तत्त्व और उसका आलोचन। प्राचीन आचार्यों ने काव्य का लक्षण किया है—"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्"। इस लक्षण में आचार्यों का कोई गम्भीर अभिप्राय आवश्यक है। इस लक्षण का विश्लेषण सूक्ष्म दृष्टि से किया जाय तो इस स्वरूप आनन्द का अनुभव, रसानुभव को विकृत करने वाले दोषों का त्याग, रस के अभिव्यञ्जक गुणों का संग्रह, संग्रह करने के लिए रीति, सौन्दर्य की अभिवृद्धि के लिए अलंकार आदि-साहित्य के नौ तत्त्व प्राप्त होंगे। इस पुस्तक में उन नौ पदार्थों का क्रमशः आलोचन किया गया है। प्रसङ्गवश और तत्त्वों का भी आलोचन इसमें है। लेखक की भाषा प्राञ्जल तथा शैली हृदयग्राहिणी है। यह ग्रन्थ सहृदयों एवं अलंकार शास्त्र के छात्रों के लिए निश्चित रूप से उपयोगी प्रमाणित होगा। [वि. रा. १२१] १०-००

*215 Cities and Civilization. By G. S. Ghurye. 20-00

*216 Sepoy Mutiny and the Revolt of 1857. By R. C. Majumdar. 20-00

*217 Subhas Chandra Bose: As I know Him. By K. Kurti. Foreword by S. K. Bose. Illustrated. 8-00

218 Socio-Religious, Economic and Literary Condition of Bihar (From C. 319 A.D. to 1000 A.D.). By Dr. Bhagawati Sharan Verma. With 36 Illustrations. 20-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*219 Studies in Indo-Muslim History. By S. H. Hodiwala. Vol. II. 30-00

220 STUDIES IN JAINISM AND BUDDHISM IN MITHILA. By Dr. Upendra Thakur. [Chow. Sans. Studies Vol. XLIII] 15-00

*221 Studies in Nayaka-Nayika-Bheda. By Dr. Rakesa-gupta. 50-00

222 STUDIES IN THE DEVELOPMENT OF ORNAMENTS AND JEWELLERY IN PROTO-HISTORIC INDIA. By Dr. Rai Govind Chanda. [Chow. Sans. Studies Vol. XLI] 75-00

223 THE STUDY OF INDIAN ART. By K. De B. Codrington. In the Press

224 A STUDY OF HINDU ART AND ARCHITECTURE : With Special Reference to Terminology. By Dr. Lalit Kumar Sukla. In the Press

*225 Storia Do Mogor. By Manucci. 4 Vols. Reprint. (English Translation). 160-00

२२६ **स्मृति के हस्ताक्षर** । श्री देवदत्त शास्त्री ।

'स्मृति के हस्ताक्षर' निःसन्देह हिन्दी के संस्मरण-साहित्य के लिए नई देन साबित होगा । हर संस्मरण एक नया शिल्प, निखरा सौष्ठव लेकर इस पुस्तक के माध्यम से अवतरित हुआ है । कोई संस्मरण ऐसा नहीं है जो पाठक के हृदय को तरल और सरल न बनाता हो । रोमांचकारी यात्रायें, व्यक्तिगत जीवन में घटी मधुर-अम्ल-लवण-कटु-कषाय-तिक्त घटनायें पाठक में प्रेरणा, स्फूर्त्ति एवं संघर्षों से जूझने की अदम्य भावना उत्पन्न करने में पूर्ण सक्षम हैं । इन संस्मरणों के माध्यम से अज्ञात भारतीय भूगोल का रोचक अध्ययन हो जाता है । [वि. रा. ५६] ५-००

२२७ **स्वतंत्र कलाशास्त्र** । डॉ० कान्तिचन्द्र पाण्डेय ।

प्रथम भाग-भारतीय

व्यापक दृष्टि रखकर कला शब्द पर कितना विशद अध्ययन प्रस्तुत किया जा सकता है । यह इस एक ही ग्रन्थ को देखकर समझा जा सकता है । भारतीय मनीषी का प्रौढ़ पाण्डित्य और बहुज्ञत्व इस ग्रन्थ के एक एक शब्द से परिलक्षित होता है । कला को विचारों की कसौटी में कस देने पर जो ज्ञान की चिनगारियाँ प्रस्फुटित हुई हैं उन्हीं का संकलन ग्रन्थ के रूप में आपके हाथों में है । यह सचमुच अपने विषय का पूरा शास्त्र ही है । एकबार देखने पर अवश्य तुष्टि होगी । [चौ. रा. १] ३५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२२८ **स्मृतियाँ और कृतियाँ**। श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी।

हिन्दी साहित्य के सुपरिचित सिद्ध लेखक श्री द्विवेदी की प्रस्तुत पुस्तक में १० निबन्ध संस्मरणात्मक हैं तथा १५ समीक्षात्मक। लेखक की सरलता तथा सूक्ष्म दृष्टि पुस्तक के पृष्ठों में सुस्पष्ट झलकती है। प्रत्येक हिन्दी पढ़ने-जानने वाले व्यक्ति के लिये इस पुस्तक का अवलोकन निश्चित ही उपयोगी होगा। [वि. रा. १०२] ४-००

२२९ **हमारे आधुनिक कवि और उनकी कविताएँ**।

श्री व्यथितहृदय। वाराणसी की शास्त्री प्रथमखण्ड परीक्षा स्वीकृत। इसमें सरल और सुबोध ढङ्ग से हिन्दी के उन सर्वमान्य कवियों और उनकी कविताओं की आलोचना की गई है, जो उच्च कक्षाओं में अध्ययन के लिये सर्वत्र स्वीकृत हैं। समीक्षा और विषय-विवेचन में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ही प्रमुख रूप से महत्व दिया गया है।

[वि. रा. ११] ३—५०

*२३० **हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची**। (वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय)

१-१२ भाग ८६-३७

२३१ **हिन्दी काव्य की सामाजिक भूमिका**। डा. शम्भुनाथ सिंह

इसमें आदि काल से लेकर अब तक के हिन्दी काव्य के इतिहास का समाजशास्त्रीय विवेचन किया गया है। दूसरी विशेषता यह है कि इसमें हिन्दी भाषा और साहित्य के उद्भव और विकास के सम्बन्ध में बिलकुल नये ढंग से और विस्तार से विचार किया गया है और हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन वैज्ञानिक पद्धति से नये रूप में किया गया है। हिन्दी काव्य की युग-सापेक्ष्यता का ज्ञान जितना इस पुस्तक से हो सकता है, उतना अब तक प्रकाशित अन्य किसी इतिहास-ग्रन्थ से नहीं हो सकता। इसमें हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ आठवीं शताब्दी से माना गया है जो लेखक के गम्भीर शोधकार्य का परिणाम है। यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य के अन्वेषकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है। [वि. रा. १०५] ७-५०

२३२ **हिन्दी के पौराणिक नाटक**। डॉ० देवर्षि सनाढ्य

भारतीय पुराणों ने किस प्रकार भारतीय जन-मन को प्रभावित किया है और किस प्रकार पुराण की दिव्य कथाओं ने भारतीय मनीषी को प्रेरित किया है, इन सब का प्रामाणिक विवरण इस शोध-ग्रन्थ में उपस्थित किया गया है। [वि. रा. ३५] १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२३३ **हिन्दी और मराठी का निर्गुण सन्त काव्य।**

डॉ० प्रभाकर माचवे।

इस ग्रन्थ में दक्षिण और उत्तर की भाषाओं के आरम्भिक भक्ति-साहित्य के साम्य और विभेद पर सामाजिक, ऐतिहासिक तथा साहित्यशास्त्र-विषयक मान्यताओं के परिपार्श्व में प्रामाणिक अध्ययन तथा १२वीं से १५ वीं सदी के भारतीय वाङ्मय का एक रेखाचित्र प्रस्तुत किया गया है। यह लेखक के १० वर्षों से अधिक के परिश्रम का निचोड़ है

[वि. रा. ४९] १२-००

२३४ **हिन्दुओं की प्रबुद्ध रचनाएँ।** थि० गोल्डस्टकर।
अनुवादिका-सुश्री डॉ० रमा शास्त्री।

वैदिक काल में आर्यों की संस्कृति और सभ्यता एवं उनके आचार, विचार कितने समुन्नत थे तथा किन उत्कृष्टतम ग्रन्थों से इसका प्रामाणिक विवरण प्राप्त होता है इसका विशुद्ध विवेचन राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रथम बार ही प्रकाशित किया गया है। [वि. रा. २६] ४—००

*235 Hindu Colonies in the Far East. By R. C. Majumdar. 15-00

२३६ **हिन्दू संस्कार।** (सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन)
डॉ० राजबली पाण्डेय (परिवर्द्धित परिष्कृत द्वितीय संस्करण)।

यह ग्रन्थ हिन्दू संस्कृति के अध्ययन की दिशा में महत्वपूर्ण देन है। गर्भ में आने के समय से मृत्यु के समय तक और मृत्यूत्तर संस्कारों के माध्यम से उसके परवर्ती लोकोत्तर प्रयाण तक के हिन्दू जीवन को समझने के लिए यह ग्रन्थ कुञ्जी का काम देता है। हिन्दुओं की सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं के विविध अंगों के रहस्य इससे स्पष्ट हो जाते हैं। वेदों से प्रारम्भ कर मध्ययुगीन और किन्हीं स्थलों में आधुनिक भारतीय साहित्य के अध्ययन के परिणाम इस ग्रन्थ में समाविष्ट हैं

[वि. रा. १२] १६-००

237 HISTORY OF ANCIENT SANSKRIT LITERATURE: By F. Max Muller. Third Edition. Dr. F. Max Muller always sought for a scientific interpretation of the ancient most written record of mankind i.e., the vedic literature and the result of his long researches is embodied in this work. Faithful English translation of all quotations in languages other than English has been appended to this edition.

[Chow. Sans. Studies Vol. XV] 25-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

238 HISTORY OF INDIAN LITERATURE. By Albercht Weber. Translated from the Second German Edition by John Mann, M. A., and Theodor Zachariale Ph. D.

A work of emense importance in the field of Ancient Indian literature, enjoying popularity for more than a century. [Chow. Sans. Studies Vol. VIII] 25-00

*239 History of the Gurjara-Pratiharas. By Dr. Baij Nath Puri. 20-00

*240 History of the Candellas of Jejakabhukti. By N. S. Bose. 12-00

*241 History of the Freedom Movement in India. By R. C. Majumdar. 3 Vols. 55-00

*242 History of Firoz Shah Tughluq. By Dr. Jamini Mohan Banerjee. With a Foreword by Dr. Banarsi Prasad Saksena. 20-00

243 HISTORY OF MUSLIM RULE IN TIRHUT (1200-1765). By Prof. Radha Krishna Choudhary. In the Press

*244 History of Sanskrit Poetics. By S. K. De. 35-00

*245 History of Sanskrit Literature. By Arthur A. Macdonell. Ordinary Edition 5-00 Library Edition 20-00

*246 History of Suicide in India. An Introduction. By Dr. Upendra Thakur. With 8 Illustrations. 15-00

*२४७ हिस्ट्री ऐण्ड पालियोग्राफी आफ मौर्यन ब्राह्मी स्क्रिप्ट्स। १२-००
डॉ० सी० एस० उपासक

248 HISTORICAL AND LITERARY INSCRIPTIONS: By Dr. Rajbali Pandeya, M. A., D. Litt.

A handy but scholarly and critical collection of Inscriptions bearing on Ancient Indian History and Culture. Latest informations enbodied and upto date research materials utilised. [Chow. Sans. Studies Vol. XXIII] 15-00

*249 Hellenism in Ancient India. By Dr. Gauranga Nath Banerjee. 20-00

*250 Hand Book of Literary Criticism. By R. Sadasiva Aiyar. 5—00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

251 THE HUNAS IN INDIA : By Dr. Upendra Thakur. A thoroughly original and documented work, the account is so graphic and scintillating and the style so penetrating that at times the reader will feel that he is reading a book on literature than on History. [Chow. Sans. Studies Vol. LVIII] 25-00

२५२ **हेमचन्द्राचार्य जीवनचरित्र** । (सचित्र) अनु०— कस्तूरमल बाँठिया

युगपुरुष कहलाने के अधिकारी आचार्य हेमचन्द्र के जीवन के विषय में प्रामाणिक जानकारी देनेवाला यह एक मात्र ग्रन्थ हिन्दी में सर्व प्रथम प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त इस विषय में जर्मन और अँगरेजी प्रतियाँ ही कठिनता से देखने को मिल सकेंगी। मानव-समाज, विशेषतः जैन समाज की आत्मा के कितने निकट रहकर, कितने प्रकार से उसकी सेवा करते हुए उसके हित में उन्होंने अपना जीवन अर्पित कर दिया यह ग्रन्थ पढ़कर ही अंशतः जाना जा सकता है। ऐसे सिद्ध महापुरुष के प्रति समुचित सम्मान प्रकट न करने का ऋण इसे पढ़कर भी दूर किया जाय तो उचित होगा। आज ही खरीद कर पढ़ने योग्य ग्रन्थ है। विविध परिशिष्टों तथा विचारपूर्ण भूमिका, शब्दानुक्रमणिका आदि से अलंकृत। [वि. रा. १११] ७-००

बौद्ध-ग्रन्थाः

१ **अवदानकल्पलता** । श्रीक्षेमेन्द्रविरचिता तृतीयपल्लवः [चौ. पु.] ०-२५

2 A MANUAL OF BUDDHISM, In its modern Development. Translated from Singhalese Mss. by R. Spence Hardy. [Chow. Sans. Studies Vol. LVI] 30-00

3 AN INTRODUCTION TO BUDDHIST ESOTERISM. By Dr. Benoytosh Bhattacharya. [Chow. Sans. Studies Vol. XLVI] Second Edition. 30-00

*4 Outline of Early Buddhism (A Historical Survey of Buddhology, Buddhist Schools and Sanghas mainly based on the Study of Pre-Gupta Inscriptions). By Dr. Ajay Mitra Shastri. 10-00

*५ **आर्यशालिस्तम्बसूत्रं, प्रतीत्यसमुत्पादविभङ्गनिर्देशसूत्रं, प्रतीत्यसमुत्पादगाथासूत्रम्** । नेट ९-००

*६ **जातकमाला** । हिन्दी टीका सहित । १-२० जातक ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७ **धम्मपदं**। सटिप्पण 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार—श्री कन्छेदीलाल गुप्त। सविमर्श टिप्पणीकार—श्री सत्कारिशर्मा वङ्गीय।

प्रस्तुत संस्करण सामान्य छात्र से लेकर विशिष्ट विद्वान् तक सभी स्तर के पाठकों के लिये उपयोगी है। सिंहली, बर्मी आदि पाठों तथा टीकाओं के आधार पर प्रस्तुत विशुद्ध पाठ; भाषाविज्ञानसम्मत संस्कृत छाया; प्राञ्जल हिन्दी व्याख्या; सभी महत्त्वपूर्ण शब्दों पर दार्शनिक, पारिभाषिक, वैयाकरणिक, ऐतिहासिक, भाषावैज्ञानिक और तुलनात्मक टिप्पणियाँ; अंगरेजी, जर्मन, लातिन, हिन्दी बँगला आदि भाषाओं में प्रस्तुत पूर्व-पूर्व संस्करणों में उपलब्ध सामग्री का पूर्णतया विवेचन; गाथासूची, शब्दकोश आदि अनेकविध शोधपूर्ण नवीनताओं से मण्डित यह संस्करण भारतीय भाषाओं में आजतक के प्रकाशित संस्करणों में सभी दृष्टियों से शोधपूर्ण सर्वोत्तम एवं तत्काल क्रय कर लेने योग्य है। [वि. सं. १५०] ३-००

*८ **नवनालन्दा महाविहार रिसर्च पब्लिकेशन**।
संपादक एस० मुखर्जी। १-२ भाग ३०-००

९ **निदान कथा**। अनुवादक—डा० महेश तिवारी।

भदन्त बुद्धघोष कृत जातकट्कथा का यह भूमिका भाग पालि साहित्य के विद्यार्थियों के लिये विशेष महत्त्वपूर्ण है। विद्यार्थियों के उपयोग को ध्यान में रखते हुए यह शोधपूर्ण संस्करण विभिन्न देशी संस्करणों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है, और उसी के साथ विशुद्ध प्राञ्जल हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है। इससे विद्यार्थी विशेष लाभ उठा सकेंगे शीघ्र प्राप्त होगा

१० **न्यायबिन्दुः**। संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतः।

इसमें तीन परिच्छेद हैं। प्रथम परिच्छेद में प्रत्यक्ष, द्वितीय में स्वार्थानुमान और तृतीय में परार्थानुमान का वर्णन है। इसकी हिन्दी टीका में मूल के साथ धर्मोत्तराचार्यकृत संस्कृत टीका का भी सांगोपांग अनुवाद करके भूमिका में गौतमन्याय, जैनन्याय तथा बौद्धन्यायों के समालोचना करते हुए बौद्धदर्शन का संपूर्ण संक्षिप्त इतिहास भी लिख दिया गया है। [का. २२] ५-००

*११ **पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा**। पठमो भागो (धातुकथा-पुग्गलपञ्ञत्ति-अट्ठकथा) मूल-टीका सहिता। डॉ० महेशतिवारी शास्त्री सम्पादित ८-३७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२ **पालिजातकरत्नावलिः** । हिन्दी व्याख्या सहित ।
सम्पादक-श्री कन्छेदीलाल गुप्त-श्री सत्कारिशर्मा वङ्गीय ।
पालिभाषा के शिक्षार्थियों के लिए जातक की रोचक तथा उपदेशप्रद कहानियाँ विशेष उपयोगी हैं । इसलिए प्रायः प्रत्येक विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में जातकों के कुछ अंश निर्दिष्ट किया जाता है । विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लाभ की दृष्टि से इस संकलन में ४० जातकों का संग्रह संस्कृत छाया तथा प्राञ्जल हिन्दी अनुवाद के साथ किया गया है । पालिभाषा का प्रारंभिक अध्ययन करने वालों के लिये यह बहुत उपयोगी है यन्त्रस्थ

13 PALI READER. Part I-Selections. By Dharmananda Kosambi. In the Press

14 PALI READER. Part II-Notes and Glossary. By C. V. Rajwade. In the Press

*१५ **प्रमाणवार्त्तिकम्-स्वार्थानुमानपरिच्छेदः** । आचार्य धर्मकीर्ति कृत । स्वोपज्ञवृत्ति सहितम् । १-५१ कारिका आंग्लानुवाद सहित ४-००

16 Buddha and His Message : The Heart of Enlightenment (Bodhi Chitta). By N. Gangulee. 4-50

१७ **बौद्ध न्याय** । मूल लेखक : एफ० टी० शर्बाट्स्की ।
हिन्दी अनुवादक : डा० रामकुमार राय
शर्बाट्स्की 'Buddhist Logic' वस्तुतः बौद्धन्याय के क्षेत्र में आज तक प्रकाशित सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा प्राच्य अनुसन्धान के क्षेत्र में एक युगान्तकारी ग्रन्थ है । लेखक ने दिङ्नाग तथा उनके अनुयायियों, विशेषतः धर्मकीर्त्ति द्वारा प्रवर्तित महायान सम्प्रदाय के बौद्धन्याय का एक सर्वाङ्गपूर्ण इतिहास तथा विवेचन प्रस्तुत किया है । सम्पूर्ण ग्रन्थ दो भागों में विभक्त है, प्रथम भाग में भारतीय न्यायशास्त्र तथा उसके मध्य एशिया में प्रचार-प्रसार का विवेचन करने के बाद लेखक ने दिङ्नाग के प्रामाण्यवाद तथा प्रत्यक्ष आदि का अध्ययन प्रस्तुत किया है । द्वितीय भाग प्रमुखतः धर्मकीर्त्ति के न्याय बिन्दु तथा उस पर धर्मोत्तर की टीका का अनुवाद है । इस भाग के परिशिष्टों में तिब्बती भाषा के न्यायशास्त्रीय ग्रन्थों तथा हिन्दू नैयायिकों के बौद्धन्याय पर किये गये आक्षेपों से सम्बद्ध संस्कृत न्याय-ग्रन्थों के उद्धरणों का अनुवाद भी दिया गया है ।
हिन्दी में अनूदित होकर यह ग्रन्थ अब व्यापक होकर सभी पाठकों के लिये उपयोगी होगा । [वि. रा. १२४] प्रथम भाग ३०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१८ **बुद्धचरितम्।** अश्वघोष कृतम्। वाराणसी की पूर्वमध्यमा प्रथमखण्ड परीक्षा पाठ्य स्वीकृत। संस्कृत मूल श्लोक-हिन्दी अनुवाद सहित। अनुवादक—महन्त श्रीरामचन्द्रदास शास्त्री। इसमें हिन्दी टीका विषयानुकूल प्रवाह-युक्त तथा सरल एवं सरस है। प्रथम भाग (१–१४ सर्ग) २–५०, द्वितीय भाग (१५–२८ सर्ग) ३–००
सम्पूर्ण १–२ भाग [वि. सं. ८२] ५–५०

19 BUDDHISM. By Monier Williams. [Chow. Sans. Studies Vol. XLV] 35–00

*20 Buddhism in the East Asia. An Outline of Buddhism in the History and Culture of the Peoples of East Asia. By Sukumar Dutt. With 27 Plates. 30–00

21 BUDDHIST PHILOSOPHY IN INDIA & CEYLON. By A. B. Keith D. C. L., D. Litt. [Chow. Sans. Studies Vol. XXVI] 15–00

२२ **बौद्धदर्शन मीमांसा।** आचार्य बलदेव उपाध्याय। (प्रान्तीय १०००) रु० तथा डालमिया २१००) रु० से पुरस्कृत)
इसमें पांच खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में बुद्ध के मूल धर्म का वर्णन, द्वितीय में बौद्ध-धर्म का विकास, तृतीय में वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार तथा माध्यमिक संप्रदायों के गूढ़तथ्यों का सरल विवेचन, चतुर्थ में बौद्ध-न्याय, बौद्ध-योग तथा बौद्ध-तन्त्रों का वर्णन एवं पंचम में बौद्धधर्म का विस्तार से उपाख्यान है। अभिनव द्वितीय संस्करण
[वि. रा. १] ६–००

*२३ **बौद्धदर्शनबिन्दुः।** डॉ० सातकड़ि मुखोपाध्याय १–००

२४ **मिलिन्दपञ्हो।** मूल पालि, संस्कृतच्छाया, हिन्दी अनुवाद, पाठान्तर, भूमिका आदि सहित शोधपूर्ण संस्करण। सम्पादक व अनुवादक श्री सत्कारिशर्मा वङ्गीय।
हिन्दी व्याख्या सहित प्रस्तुत संस्करण का मूलपाठ विभिन्न देशीय मुद्रित ग्रन्थ तथा पाण्डुलिपियों के आधार पर परिशोधित होने के कारण आज तक प्रकाशित सभी संस्करणों से श्रेष्ठ है। पालि मिलिन्दपञ्हो संस्कृत से ही पालि में अनुवादित हुआ था ऐसी परम्परा की परीक्षा के लिए सम्पूर्ण ग्रन्थ की भाषाविज्ञान सम्मत संस्कृत छाया दी गई है। साथ ही साथ पालि, तथा सिंहली टीका के ऊपर आधारित हिन्दी अनुवाद भी विशेष महत्त्वपूर्ण है। भूमिका में ग्रन्थ के रचनाकाल, ग्रन्थकार, कथापात्र आदि के बारे में अभिनव विचार सामग्री उपस्थित की गई है यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२५ **विज्ञप्तिमात्रतासिद्धिः**। विंशतिका-त्रिंशिकाभिधान प्रकरण-द्वयात्मिका भाषानुवाद समुल्लसिता। अनु०—डा० महेश तिवारी

आचार्य वसुबन्धु विरचित यह ग्रन्थ विज्ञानवाद का आधार ग्रन्थ है। इसमें विंशतिका (बीस कारिकाएँ) तथा त्रिंशिका (तीस कारिकाएँ) दो प्रकरण हैं। देशी-विदेशी दुर्लभ पाण्डुलिपियों के आधार पर इसका शुद्ध मूलपाठ निश्चित किया गया है, तदनुसार सरल-सुबोध हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की गई है। विषय दार्शनिक होते हुए भी व्याख्या जटिलता से रहित तथा स्पष्ट है। अधिक बोधगम्य बनाने के लिये सरल शब्दों में पाण्डित्यपूर्ण दार्शनिक विचारों से युक्त भूमिका तथा अन्त में शब्दानुक्रमणिका आदि उपयोगी सामग्री भी दी गई है।

[वि. सं. १३९] ६-००

*२६ **सद्धम्मसंगहो**। सं० डॉ० महेश तिवारी ३-००

*२७ **सम्मोहविनोदिनी नाम विभंगट्ठकथा**। सं० डा० यू० धर्मरत्न १५-००

*२८ **सामन्तपासादिका नाम विनयट्ठकथा**। वीरबल शर्मा संपादित

१-३ भाग ४१-००

*२९ **सासनवंश**। सं० डॉ० डी० सी० एस० उपासक ६-००

३० **सौगतसिद्धान्तसारसङ्ग्रह**। डॉ० चन्द्रधर शर्मा।

इस ग्रन्थ में भगवान् बुद्ध के उपदेशों से लेकर जब तक भारत में बौद्ध धर्म का प्रभाव रहा तब तक के आचार्यों के उपलब्ध दार्शनिक ग्रन्थों में से बौद्धदर्शन के सारभूत तत्त्वों का संग्रह किया गया है।

[ह. २४८] ५-००

31 THE STORY OF KING UDAYANA AS GLEANED FROM SANSKRIT, PALI AND PRAKRIT SOURCES. By Dr. Niti Adaval. In the Press

*३२ **हिस्ट्री ऐण्ड पालियोगाफ्री आफ मौर्यन ब्राह्मी स्क्रिप्ट्स**।

डॉ० सी० एस० उपासक १२-००

जैनदर्शनम्

१ **जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज**।

डॉ० जगदीशचन्द्र जैन।

भारतीय समाज की जैनागमसाहित्य में प्राप्त ऐतिहासिक स्थिति का-शैली और कौशल की दृष्टि से उनका-वर्णन प्राप्त करने के लिये यह एक ही ग्रन्थ है।

[वि. रा. ९३] २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२ **जैनन्यायखण्डखाद्य** । विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार—आचार्य बदरीनाथ शुक्ल, अध्यक्ष—न्यायवैशेषिक विभाग, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ।

न्यायखण्डखाद्य जैनदर्शन का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रामाणिक ग्रंथ है। इस ग्रंथ की प्रस्तुत सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या की भाषा अतीव प्राञ्जल परिष्कृत और प्रवहमान है, इसमें विभिन्न दर्शनों के अनेक सिद्धान्तों की गम्भीर आलोचना के साथ जैन दर्शन के सभी प्रमुख सिद्धान्तों का बड़ा विशद एवं हृदयङ्गम विवेचन किया गया है, व्याख्या इस ढङ्ग से लिखी गई है कि वह केवल व्याख्या न होकर एक मौलिक रचना सी बन गई है, दर्शनशास्त्र के अध्येताओं के लिए यह ग्रंथ अत्यन्त ज्ञानवर्धक और नितान्त उपादेय है । [का. १७०] ८-००

*३ **तत्त्वार्थसूत्रम्** । उमास्वामिविरचितम् । भास्करानन्द विरचित सुखबोध व्याख्या सहितम् । नेट २-७५

*४ **नन्दिसूत्रचूर्णि** । नन्दीसुत्तं सिरि देववायग विरइयं । सिरि जिगदासमणि महत्तर विरइयास चुण्णी सहित । मुनि पुण्य विजय सम्पादित १०-००

*५ **नन्दिसूत्र टीका वृत्ति** । नन्दिसूत्रम्-देववाचक विरचित । चन्द्राचार्य कृत दुर्गपद व्याख्या-अज्ञातकर्तृक विषमपद-पर्याय-हरिभद्र सूरि कृत वृत्ति सहित १५-००

*६ **पाइअसद्दमहण्णवो** । हरगोविन्ददास कृत २०-००, ३०-००

*७ **पासनाहचरीऊ** । पासणाह चरिउ-आयरिय सिरि पदम कित्तिविरइउ । प्रफुल्लकुमार मोदी सम्पादित । हिन्दी अनुवाद-कोष टिप्पणी सहित २५-००

८ **प्रमेयरत्नमाला** । अनुवादक-हीरालाल शास्त्री जैन ।

आचार्य माणिक्यनन्दी ने परीक्षामुख की रचना सूत्र रूप में की थी। इसके ऊपर आचार्य प्रभाचन्द्र ने प्रमेयकमलमार्तण्ड, विस्तृत भाष्य के रूप में लिखा था। इसके पश्चात् लघु अनन्तवीर्य ने प्रमेयरत्नमाला नाम की टीका लिखी थी। यह छात्रों के लिए कुछ दुरूह थी। अतः इसके हिन्दी अनुवाद में मूल के एक-एक शब्द का रहस्य तथा कठिन स्थलों का मर्म बीच-बीच में विशेषार्थ देकर खोला गया है। हिन्दी अनुवाद अत्यन्त सरल, सरस और हृदयग्राह्य है । [वि. सं. १०७] १५-००

*९ **प्रमेयरत्नालङ्कारः** । अभिनव चारुकीर्ति पण्डिताचार्य विरचितः । नेट ३-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१० **सुत्तागमे**। सम्पादगो-पुप्फभिक्खू। १-२ भाग ६४-००

११ **स्याद्वादमञ्जरी**। श्रीमल्लिषेणनिर्मिता। श्रीमदार्हतधुरन्धर श्रीसिद्ध-हेमचन्द्रनिर्मितवीतरागस्तुतिव्याख्या सम्पूर्णा [चौ. ९] समाप्त

१२ **हेमचन्द्राचार्य जीवनचरित्र**। (सचित्र) अनु०—कस्तूरमल बाँठिया।

युगपुरुष कहलाने के अधिकारी आचार्य हेमचन्द्र के जीवन के विषय में प्रामाणिक जानकारी देनेवाला यह एकमात्र ग्रन्थ हिन्दी में सर्वप्रथम प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त इस विषय में जर्मन और अँगरेजी प्रतियाँ ही कठिनता से देखने को मिल सकेंगी। आचार्य हेमचन्द्र ने जैन समाज की आत्मा के कितने निकट रहकर, कितने प्रकार से उसकी सेवा करते हुए उसके हित में अपना जीवन अर्पित कर दिया यह ग्रन्थ पढ़कर ही अंशतः जाना जा सकता है। ऐसे सिद्ध महापुरुष के प्रति समुचित सम्मान प्रकट न करने का ऋण इसे पढ़कर भी दूर किया जाय तो उचित होगा। [वि. रा. १११] ७-००

स्तोत्र-माहात्म्य-व्रत-ग्रन्थाः

१ **अन्नपूर्णास्तोत्रम्**। लक्ष्मीलहरी सहित [स्तो. १८] ०-१५

२ **अपराजितास्तोत्रम्**। [स्तो. १७] ०-१५

*३ **अष्टोत्तरशतनाममालिका**। विद्यासागर शास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित। सम्पादक-युधिष्ठिर मीमांसक ६-००

४ **आदित्यहृदयस्तोत्र**। नवग्रहसहित [स्तो. ९] ०-१०

५ **आळवन्दारस्तोत्रम्**। [ह. १०९] ०-१५

६ **ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्रम्**। [स्तो. २५] ०-०५

७ **एकादशीमाहात्म्यम्**। 'सरला' हिन्दी टीकासहित।

धर्मप्राण जनता के प्राणभूत इन पौराणिक ग्रन्थों की भाषा आज प्रायः उपेक्षा की दृष्टि से देखी जाती है। श्लोकों के भाव भी परम्परा का अनुसरण करने के कारण यत्र-तत्र अव्यवस्थित से हैं। अतः सुयोग्य विद्वानों से आमूल संस्कार कराकर व्यवस्थित हिन्दी अनुवाद के साथ यह संस्करण प्रकाशित किया गया है [वि. २२] ४-००

८ **कालीकवचम्**। काली ताराध्यान सहित [स्तो. ७] ०-१०

९ **गङ्गालहरी**। मूलमात्र [स्तो. १३] ०-१५

१० **गङ्गालहरी**। पीयूषलहरी व्याख्या सहित [ह. ६९] १-००

११ **गङ्गालहरी**। निर्मला नामक भाषा टीका सहित [ह. १२५] ०-३५

१२ **गणेशमहिम्नस्तोत्रम्**। पुष्पदन्त विरचित [स्तो. १६] ०-१०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१३	गणेशसहस्रनामावली।		०-७०
१४	गायत्रीरामायणम्।	[स्तो. ६]	०-१०
१५	चर्पटपञ्जरी। इन्दुमती नामक भाषा टीका सहित	[स्तो. १]	०-१५
१६	तुलसीपूजापद्धतिः।	[स्तो. ११]	०-१५
१७	दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्।	[स्तो. ३०]	०-१०
*१८	दत्तात्रयस्तोत्रम्।		०-२०
१९	दुर्गाकवचम्। अर्गला-कीलक सहित	[स्तो. ३]	०-१०
*२०	देवीपुष्पाञ्जलिः। रामकृष्ण विराचत। रामसहायकृत व्याख्या सहित		१-००
२१	देवीपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम्। शङ्कराचार्यकृत	[स्तो. १५]	०-१०
*२२	देवीसहस्रनामावली।		०-५०
२३	देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्।	[स्तो. १४]	०-१५
*२४	धन्वन्तरिस्तोत्रम्।		०-१०
२५	नर्मदाष्टकम्।	[स्तो. २०]	०-१०
*२६	परशंभुमहिम्नस्तवः।		०-३७
*२७	पादुकासहस्रम्। वेदान्तदेशिककृत।	नेट	३-५०
२८	प्रश्नोत्तरी (मणिरत्नमाला)। इन्दुमती भाषाटीका	[स्तो. १]	०-१५
२९	बगलामुखीस्तोत्रम्।	[स्तो. ८]	०-१५
३०	बटुकभैरवस्तोत्रम्। अनुष्ठानविधिसहित	[स्तो. ५]	०-१५
३१	बृहत्स्तोत्ररत्नाकरः—संपादक पं० श्री शिवराम शर्मा। नाना पुराणोक्त तथा विभिन्न सम्प्रदायाचार्यों द्वारा प्रणीत गणपत्यादि स्तोत्रों का यह गुटका साइज का अभूतपूर्व अनुपम संग्रह है।	[स्तो. २९]	४-५०
*३२	भगवन्नाममाहात्म्यसंग्रहः। रघुनाथेन्द्रकृत। सव्याख्या		२-७५
३३	महालक्ष्मीस्तोत्रम्। महालक्ष्म्यष्टक-अम्बाष्टकद्वयोपेतं	[स्तो. २४]	०-०५
३४	महाविद्यास्तोत्रम्।	[स्तो. २१]	०-१०
३५	महिम्नस्तोत्रम्। शिवताण्डवस्तोत्रञ्च। मूल	[स्तो. ४]	०-१५
३६	महिम्नस्तोत्रम्। मधुसूदनी-संस्कृतटीका-सहितम्	[ह. ६८]	०-६०
३७	महिम्नस्तोत्रम्। इन्दु नामक भाषाटीका सहित	[ह. १२३]	०-१५
३८	मृतसञ्जीविनीजपविधि-महामृत्युञ्जयजपस्तोत्रादि युत	[स्तो. १९]	०-२०
३९	मृत्युञ्जयमानसिकपूजनम्।	[चौ. पु.]	०-२०
४०	रामनामसहस्रनामस्तोत्रम्।	[स्तो. २८]	०-१५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४१ रामरक्षास्तोत्रम् । [स्तो. २२] ०-१५

*४२ ललितात्रिशतिस्तोत्रम् । शाङ्करभाष्य सहित नट २-००

४३ विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् । सचित्र [स्तो. १२] ०-१५

४४ शनिस्तोत्रम् । शङ्कराचार्यकृत कृष्णाष्टकयुत [स्तो. २३] ०-१५

४५ शिवताण्डवस्तोत्रम् । सर्वमङ्गला भाषाटीका सहित [ह. १२६] ०-१०

४६ **हिन्दी शिवमहिम्नस्तोत्र** । हिन्दीपद्यानुवाद सहित ।

प्रस्तुत संस्करण में मूल की हिन्दी व्याख्या तथा छन्दोबद्ध हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है । श्लोक का पूरा भाव-वैभव इस अनुवाद में उतर आया है । अवश्य अवलोकनीय संस्करण है [वि. रा. ९८] ०-७५

४७ शिवस्तोत्रम् । शिवकवच-शिवमानसपूजा-शिवमहिम्न-शिवापराधक्षमापनस्तोत्र सहित [स्तो. २६] ०-१५

४८ शीतलाष्टकम् । [स्तो. १०] ०-०५

*४९ श्रीनटराजसहस्रनामावली । १-००

*५० श्रीनटराजसहस्रनामभाष्यम् । १-२ भाग ४-००

५१ **श्रीशिवकर्णामृतस्तोत्रम्** । सम्पादक पं० जगन्नाथ शर्मा ।

महामुनि भरद्वाज-विरचित यह दुर्लभ शिवस्तोत्र अनुप्रासादिवश सचमुच कानों के लिये अमृत ही है । यही एक मात्र ऐसा सरस स्तोत्र है जिसमें आप उत्तम काव्यगुणों की भी छटा देखकर मुग्ध हो जायेंगे

[स्तो. ३१] ०-७५

५२ **श्रीशिवस्तोत्रावली** । श्रीमदुत्पलदेवाचार्य विरचित । श्री क्षेमराजाचार्य निर्मित विवृति समेत । काश्मीरी स्वामी श्री राजनक लक्ष्मण कृत हिन्दी टीका सहित ।

संस्कृत स्तोत्र साहित्य की इस अनूठी कृति में अद्वैत-शैव-दर्शन के मूल सिद्धान्तों के आधार पर चरम सीमा को पहुँची हुई समावेशमयी भक्ति की पूर्ण अभिव्यक्ति हुई है । शिवतत्त्व का प्रामाणिक इसका अध्ययन साहित्य-रसिकों को भी उत्कृष्ट कविता के रसास्वादन का आनन्द प्रदान करने की पूरी क्षमता रखता है । संस्कृत व्याख्या में तो गूढ़ भावों का स्पष्टीकरण हुआ ही है, इसकी अन्वयार्थबोधिनी हिन्दी व्याख्या केवल हिन्दी ज्ञाताओं को भी तुष्टि देने में पूर्ण समर्थ है । [चौ. १५] १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४३ श्रीलक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं-श्यामलादण्डक-श्यामलानवरत्नमालिका श्रीवेङ्कटेश्वराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रञ्च । [स्तो. २७] ०-१५

४४ **सत्यनारायणव्रतकथा** । 'विष्णुप्रिया' हिन्दी टीका सहित । इसमें मूलपाठ को विचारपूर्वक सर्वथा शुद्ध करके सरल हिन्दी व्याख्या, सत्यनारायण व्रत कारिका, सविधि गणपति-नवग्रहादि-पूजन, कलशस्थापन-पूजन, षोडशोपचार-सत्यनारायणपूजन, अन्त में सत्यनारायणाष्टक तथा सांगोपांग हवन-विधि आदि प्रस्तुत संस्करण की उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं । रफ ०-६२ ग्लेज [वि. २३] ०-७५

४५ **सन्तानगोपालस्तोत्रम्** । [स्तो. २] ०-१०

४६ **सिद्धसरस्वतीस्तोत्रम्** । (गणेशस्तवराजस्तोत्रम्, सरस्वतीस्तोत्रम्, सरस्वत्यष्टकम्, सरस्वतीकवचम्, देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्, कालभैरवाष्टकम्) प्रत्यक्षफलोपयोगी । [स्तो. १४] ०-१५

४७ **सूर्यशतकम्** । 'कला' हिन्दी टीका सहित अत्यन्त सरल तथा व्यवस्थित हिन्दी भाषा में व्याख्या तथा टिप्पणियों में पौराणिक अन्तःकथाएँ आदि विषय स्पष्ट किए गए हैं । विचार पूर्ण विशद भूमिका में भी कवि तथा काव्य से संबन्धित गवेषणापूर्ण अनल्प सामग्री प्रस्तुत की गई है । [वि. सं. १०६] २-५०

४८ **सूर्यादिद्वादशस्तवीस्तोत्रं-अन्नपूर्णादिस्तोत्र** सहित [मि. ७] ०-२०

४९ **भारतीय व्रतोत्सव** । आचार्य पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी । भारतीय व्रतों व त्योहारों के विषय में अब तक जितनी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं उनसे इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें सभी व्रतोत्सवों का काल-विज्ञान एवं विधि-विज्ञान बुद्धिगम्य रूप में दिया गया है तथा शास्त्र व लोक दोनों के अनुसार विधियों की युक्तियुक्तता सिद्ध की गई है । [वि. रा. १०] ३-००

५० **हमारे त्योहार** । डॉ० व्रजमोहन । [चौ. पु.] समाप्त

प्रकीर्ण-ग्रन्थाः

*1 Abdul Ghaffar Khan : Faith is a Battle. By D. G. Tendulkar. 60-00

*२ **अर्पण** । डॉ० सर्वानन्द पाठक । पुस्तक में काव्य सम्बन्धी हास्य, शृङ्गार, करुण आदि विविध रसभक्ति-योग, ज्ञानयोग, विवेकानन्द, शंकराचार्य, बालयोगिनी, कुण्डलिनीयोग, अन्तर्लोक आदि रोचक विषयों का सम्मिश्रण हुआ है । १-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*3 Anatomy of a Rururban Community. By G. S. Ghurye. 25-00

४ **अभिनव निबन्धावली।** श्री श्यामलाकान्त वर्मा। वाराणसी की शास्त्री प्रथम-द्वितीय खण्ड के अनिवार्य हिन्दी निबन्ध के लिये स्वीकृत।

प्रस्तुत पुस्तक को विषयानुसार ३ खण्डों में विभक्त करके इसमें प्रायः सभी प्रकार के लगभग १०० परीक्षोपयोगी हिन्दी निबन्धों का संग्रह किया गया है छात्रों के लिए इसी प्रकार वर्गीकरण की आवश्यकता थी। भाषा, शैली, कौशल आदि सभी दृष्टियों से इसकी उत्तमता स्वीकृत की गई है [वि. रा. ७४] ४-५०

५ **असामान्य मनोविज्ञान।** डॉ० रामकुमार राय।

इस अद्वितीय पुस्तक में सभी विश्वविद्यालयों के बी. ए. तथा एम. ए. के असामान्य मनोविज्ञान के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित विषयों का समावेश है। सम्पूर्ण पुस्तक उपयुक्त रेखा-चित्रों से सुसज्जित है; जिससे इसकी उपयोगिता बहुत बढ़ गयी है। तृतीय परिवर्द्धित संस्करण

[वि. रा. २७] १०-००

*६ **आजादी की लड़ाई और सुभाष बाबू।** डॉ० जगदीशचन्द्र जैन।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जीवन और उनके कृत्य हमारे अन्दर स्वार्थत्याग और प्रचण्ड देश-भक्ति की भावना का संचार करते हैं। उन महान् पुरुष के जीवन की झाँकी इस पुस्तक में मिलेगी २-५०

*7 After a Century and a Quarter: Lonikand then and now. By G. S. Ghurye. With Illustrations. 12-50

*8 Asian Studies I: A Collection of Papers on Aspects of Asian History and Civilization. Edited by Balkrishna G. Gokhale. 25-00

*9 Anthropo-Sociological Papers. By G. S. Ghurye. 25-00

*10 Indian Costume. By G. S. Ghurye. With 412 Plates. 90-00

*11 Indian Buddhist Iconography. By B. Bhattacharyya. 75-00

*12 Indian University. By Robert. L. Gaudino. 20-00

*13 India—What Can It Teach Us. By Max Müller. Indian Edition by K. A. Nilakantha Sastri. 10-00

*14 Enduring Art of Japan. By Langdon Warner. 39-00

*15 Elphinstone College Centenary Commemoration Lectures. Delivered by M. P. Desai, C. D. Deshmukh etc. etc. 4-50

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*16 Aurngabad Sculptures. By Amita Ray. Illustrated. 30-00

*17 Corpus Inscriptionum Indicarum. Vol. I–Inscriptions of Asoka. By Alexander Cunningham. With 31 Plates. 50-00

*18 Corpus Inscriptionum Indicarum. Vol. III–Inscriptions of Early Gupta Kings and their Successors. By. John Fleet. With Innumerable Plates. 175-00

*19 Corpus of Bengal Inscriptions. A Complete Collection of text with Translation, Notes and a Detailed analysis. By S. K. Maiti & R. R. Mukherjee. 40-00

२० **हिन्दी-काव्य-मञ्जूषा।** आचार्य रमाशंकर पाण्डेय। (वाराणसी की उत्तरमध्यमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत) इसमें चन्दबरदायी से दिनकर तक २६ कवियों की रचनाओं के 'राष्ट्र शक्ति के विकास में योगप्रद' अंशों का संकलन किया गया है। प्रति पृष्ठ पर पर्यायबोधक विस्तृत टिप्पणी दी गई है तथा अन्त में प्रत्येक कवि का वृत्तबोधक संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है। शैली और कौशल की दृष्टि से यह हिंदी साहित्य की परिचायिका है [चौ. पु.] ३-५०

२१ **काशी-दर्शन।** इसके पढ़ने से समस्त काशी के नवीन एवं प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों एवं घाट, मन्दिर, भवन, कला तथा शिक्षालयों आदि का परिचय हो जाता है [चौ. पु.] ०-३५

*22 Canons of Indian Art or A Study on Vastuvidya. By T. P. Bhattacharyya. 30-00

*23 Coins of Ancient India. By Alexander Cunningham. 25-00

*24 Coins of Mediaeval India. By Alexander Cunningham. 15-00

२५ **हिन्दी चारुचर्या।** व्याख्याकार–पं० देवदत्त शास्त्री। महाकवि क्षेमेन्द्र विरचित 'चारुचर्या' का यह हिन्दी रूपान्तर है। भारतीय सदाचार तथा शिष्टाचार पर इससे उत्तम दूसरा ग्रन्थ कोई नहीं है। श्लोकार्थ अंकित कर 'तात्पर्य' द्वारा तन्निहित उदाहरण कथा व्यक्त कर देने से बच्चों का बड़ा हित हुआ है [वि. रा. ४४] २-००

*26 G. S. Ghurye Felicitation Volume. Edited by Dr. K. M. Kapadia. 18-00

*27 Jaina Community : A Social Survey. By Dr. Vilas Adinath Sangave. 25-00

*28 Jha Commemoration Volume. (Dr. Ganganath Jha) 30-00

*29 Dynamic Brahmin : A Study of the Brahmin's Personality in Indian Culture with special reference to South India. By Balakrishna N. Nair. 15-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३० **तुलसीकृत रामायण सुन्दरकाण्ड** । विजयश्री भाषा टीका 'इन्दुमती' टिप्पणी सहित । बिहार मध्यमा परीक्षोपयोगी

[ह. १७८] १-५०

३१ **दिव्य जीवन-दर्शन** । श्री पथिक ।

ज्ञान, भक्ति तथा कर्मयोग का समन्वय जिसके जीवन में हुआ हो ऐसे ज्ञानी भगवदी के १०८ सदुपदेश इस पुस्तक में संगृहीत हैं [चौ. पु.] ०-५०

*३२ **द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग-यात्रा** । स्वामी रामानन्द सरस्वती १-५०

३३ **नगरीय समाजशास्त्र** । श्री कौशलकुमार राय ।

प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में नगरीय समाजशास्त्र का पठन-पाठन आरंभ हो गया है । लेकिन इस विषय पर हिन्दी में कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं थी । इसी अभाव की पूर्ति के हेतु प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गई है ।

[वि. रा. ९४] ८-००

३४ **नागरिक शास्त्र (सचित्र)** । प्रो० हनुमानप्रसाद शर्मा ।

नागरिक शास्त्र के सर्वांग पूर्ण विधान की जानकारी के लिए यह अद्वितीय पुस्तक है । आज के युग में प्रत्येक नागरिक को इसकी आवश्यकता पदे-पदे पड़ती है । इसका निर्माण इसी उद्देश्य से किया गया है । १-१ प्रति शीघ्र मँगाकर इससे लाभ उठाइए । [वि. रा. ८] ०-७५

*३५ **निबन्ध शेखर** । श्रीमहेश चन्द्र गर्ग । इसके निबन्ध छोटे-छोटे, भाषा सधी हुई सरल और भाव प्रभावोत्पादक है । हिन्दी की इस शैली में निबन्ध लिखने का यह प्रथम प्रयास है । उच्च कक्षा के छात्रों के लिये यह अधिक उपयोगी है । ५-००

*36 Nationalism in India and other Historical Essays. By Dr. Damodar P. Singhal. 30-00

३७ **पथचिह्न** । श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ।

बिहार की मध्यमा तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की इण्टर परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत ।

इसमें कृतिकार के निर्माण-संकल्प का क्रमिक विकास और उसका रूप-विन्यास अत्यन्त मनोहर और हृदयंगम हुआ है । इसकी शैली सम्पन्न, अनुरूप, भावप्रवण तथा व्यञ्जक है । प्रतिपृष्ठ पर ये विशेषताएँ लक्षित होती हैं । [वि. रा. ५] १-५०

*38 Personnel System for Development Administration. By V. A. Pai Panandikar. 24-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*३९ हिन्दी पाठमाला ०-५०

*40 Palaeography of India (Bhartiya Prachina Lipimala). By Late Gaurishankar Hirachand Ojha. With 84 Plates. 75-00

*41 Picturesque Orientalia. By Dr. R. N. Sardesai. Album of 103 Photos of Western Indologists. 15-00

*42 P. K. Gode Commemoration Volume. Edited by H. L. Hariyappa and M. M. Patkar. 65-00

४३ **प्रारम्भिक भूगोल** (सचित्र) ।

(प्रथमा परीक्षापाठ्य सर्वोत्तम संस्करण) वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी की नियमावली के अनुसार क्रम से विषयों का उपन्यास कर यह पुस्तक प्रथमा-परीक्षार्थियों के लिए प्रस्तुत की गई है । यथास्थल चित्र और नकशे भी दिए गए हैं । हाई स्कूल के अनुभवी अध्यापक मण्डल द्वारा इसका सम्पादन हुआ है । अतः भूगोल का प्रारम्भिक ज्ञान कराने में इसके अतिरिक्त दूसरी कोई उत्तम पुस्तक नहीं है [चौ. गु.] २-५०

*44 Festschrift (Commemoration Volume). Prof. P. V. Kane. 35-00

* ४५ **ब्रज और ब्रजयात्रा** । सम्पादक सेठ गोविन्ददास-रामनारायण अग्रवाल । समस्त संस्कृत वाङ्मय तथा हिन्दी और अंगरेजी साहित्य में प्राप्त ब्रज-सामग्री का मंथन करके विद्वानों और शोधकों ने पर्याप्त श्रमपूर्वक इस ग्रंथ के लिये लेख लिखे हैं । ब्रजयात्रा की परम्परा का इतिहास इस ग्रन्थ द्वारा ही पहली बार प्रकाश में आया है । ५-५०

*४६ **भक्त ध्रुव** । हर्षवर्द्धन शुक्ल ०-६५

४७ **भारत का भूगोल (सचित्र)** । प्रो० रामस्वरूप

प्रस्तुत संस्करण में भारत के भूगोल के साथ विश्व भूगोल भी सम्मिलित है । प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यासार्थ प्रश्न तथा आवश्यक स्थलों पर चित्र भी दिए गए हैं। सभी विषय छात्रों की ग्रहण-योग्यतानुसार ही संग्रहित किए गए हैं तथा भूगोलसंबन्धी नवीनतम सूचनाओं को भी स्थान दिया गया है [वि. रा. ७] १-००

*४८ **भारततीर्थ-यात्रा** । निर्माता- स्वामी रामानन्द सरस्वती ६-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४९ **भारतीय इतिहास** (सचित्र) । प्रो० रामस्वरूप

३९ अध्यायों में विभक्त इस पुस्तक में वैदिक सभ्यता से लेकर अब तक का विशद इतिहास इस कौशल से उपनिबद्ध है कि कोई विषय छूटने नहीं पाया है । स्थान-स्थान पर अनेक चित्र तथा अध्याय के अन्त में अभ्यासार्थ प्रश्न भी दिए गए हैं। इस इतिहास में भारत की आत्मा साकार हो उठी है । आवरण अत्यन्त मनोरम छपा है [वि. रा. ६] १-५०

५० **भारतीय इतिहास की रूपरेखा** । डॉ० बलराम श्रीवास्तव (वाराणसी की प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत)

इसमें भारतीय इतिहास के प्रमुख तथ्य ही सूक्ष्म रूप में व्यवस्थित किए गये हैं, फिर भी पुस्तक इतिवृत्तात्मक नहीं है । प्रथमा-छात्रों की व्यावहारिक कठिनाइयों तथा उनके एतद्विषयक बौद्धिक स्तर का विशेष ध्यान रखा गया है । यथावसर चित्र और नक्शे भी दिये गए हैं ।

[चौ पु.] २-५०

*51 Bhilsa Stupa. By Alexander Cunningham. 75-00

*52 Mahabodhi or the Great Buddhist Temple under Bodhi Tree at Buddha Gaya. By Alexander Cunningham. 50-00

*53 Mahadev Kolis. By G. S. Ghurye. 22-50

*५४ **महारास** । नरेशचन्द्र मिश्र 'भञ्जन' । प्रस्तुत ग्रन्थ में श्रीमद्भागवत पर आधृत कल्पना के अनुसार 'महारास' शब्द की शास्त्रीय विवेचना के माध्यम से प्राणियों के लिये आध्यात्मिक उपासना की आवश्यकता, इसका स्वरूप एवं उसका फल—विस्तार से, नौ सर्गों में, हिन्दी काव्य के रूप में उपनिबद्ध है । ५-००

*५५ **महावीर वर्धमान** । डॉ० जगदीशचन्द्र जैन ।

जैन और बौद्ध ग्रन्थों की गहरी छान-बीन के बाद विद्वान् लेखक ने भगवान् महावीर के संबन्ध में यह प्रामाणिक विवरण लिखा है । इसमें महावीर जीवन और उनकी शिक्षाओं को एक नयी दृष्टि से देखने का प्रयास किया है । अजिल्द ०-७५, सजिल्द १-२५

*५६ **मानव-जीवन** । पाण्डेय रामावतार सिंह । पुस्तक में मानव-जीवन सम्बन्धी प्रायः सभी बातों का यथाशक्ति उल्लेख है । मानव-जीवन के चार भाग समझे जाते हैं—बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था । इन चारों अवस्थाओं के कर्तव्याऽकर्तव्य का बड़े ही मनोरंजन के साथ इसमें सप्रमाण विवेचन किया गया है । ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*५७ **युरोप और वहाँ के संग्रहालय**—डॉ० सतीशचन्द्र काला भारत से जो दुष्प्राप्य वस्तुएं यूरोप ले जाई गई हैं उनका भी यथाशक्य विवेचन इसमें प्राप्त होता है। अन्त में आर्ट पेपर पर छपे लगभग ५० दुष्प्राप्य चित्र भी हैं। अनुसंधान प्रेमियों के लिए पुस्तक उपयोगी है। ५-००

५८ **राष्ट्रभारती।** श्री करुणापति त्रिपाठी। वाराणसी की प्रथमा परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत। [चौ. पु.] १-५०

*५९ **रासलीला : एकपरिचय।** सम्पादक सेठ गोविन्द, रामनारायण अग्रवाल। रास के इतिहास, उसके संगीत, नाट्य-रूप तथा उसकी कलात्मक व्यापकता और संस्कृत तथा व्रज-साहित्य में उपलब्ध तत्संबंधी विवरणों के साथ-साथ संक्षेप में रासलीला के प्राचीन और वर्तमान रूप का परिचय तथा रास के लौकिक रूप के अतिरिक्त आध्यात्मिक रूप का परिचय प्रस्तुत करना इस ग्रन्थ का विषय है। २-५०

*60 Report on the Buddhist Cave Temples and their Inscriptions. Being Part of the Results of the Fourth, Fifth and Sixth Sessons (Archaeological Survey of Western India, Vol. IV). By James Burgess. 75-00

६१ **वंदनीय भारतीय।** श्री व्यथित हृदय।
छात्रों में चरित्र के भाव दृढ़ करने के उद्देश्य से लिखी गई इस पुस्तक में अतीत के १२ वन्दनीय भारतीयों के चरित्रों का मनन, चिन्तन तथा उनकी जीवन-कथाओं का अनुशीलन घटनाओं के माध्यम से किया गया है। छात्रों के लिये यह सर्वाधिक आवश्यक पुस्तक है [चौ. पु.] २-८५

६२ **वरदपुत्र।** श्री व्यथित हृदय।
भारतमाता के जिन स्वनाम धन्य पुत्रों ने नवीन भारत के निर्माण के लिये शूलियों पर शैया, कारागारों में, देवमंदिरों और विदेशों की गलियों में स्वदेश के सुखों की अनुभूतियाँ संजोई हैं उन्हीं का त्याग, उनका स्वदेश प्रेम और उनका साहस ही प्रस्तुत पुस्तक में विचित्र कलमों द्वारा अंकित है। छात्रों के लिये यह निश्चित रूप से बहुमूल्य कृति है। [चौ. पु.] २-१५

*६३ **शरतचन्द्र।** श्रीमती लावण्यप्रभा राय
प्रस्तुत पुस्तक में शरच्चन्द्र के जीवन पर इस प्रकार प्रकाश डाला गया है कि छोटी से छोटी भी मार्मिक घटना छूटी नहीं है। इनके उपन्यासों से इनके व्यक्तिगत जीवन की घटनाओं का क्या सम्बन्ध था यह इस पुस्तक से भलीभाँति समझा जा सकता है। २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*64 Villages, Towns and Secular Buildings in Ancient India. C. 150 B. C.-C. 350 A. D. By Amita Ray. Illustrated. 25-00

६५ **विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान।** अरविन्द वसावड़ा।

डॉ० सी० जी० युंग के मनोविज्ञान पर लिखित इस प्रारंभिक पुस्तक में उनकी जीवनी की पृष्ठभूमि में विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के आधारभूत सिद्धान्तों का विवेचन और प्रमुखतः व्यक्तित्व के संश्लेषण से सम्बन्धित विचारों को प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी में युंग के मनोविज्ञान पर यह एक ऐसे विद्वान् द्वारा लिखित एक मात्र पुस्तक है जो भारतीय दर्शन में शिक्षित होने के साथ ही साथ अनेक वर्षों तक युंग के भी घनिष्ठ सम्पर्क में रहा है। [वि. रा. ५९] २-००

६६ **व्यावहारिक मनोविज्ञान।** डॉ० रामकुमार राय।

बी० ए० परीक्षा के पाठ्यक्रम के अनुसार लिखित इस पुस्तक मे विद्यार्थियों को आवश्यक समस्त सामग्री का इतना व्यापक विवरण मिलेगा कि उन्हें अन्य किसी पुस्तक को देखने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। पुस्तक में अनेक चित्र, प्रत्येक अध्याय का सारांश; विभिन्न प्रकार की अनुक्रमणिकायें और सन्दर्भ ग्रन्थ की विस्तृत सूची भी दी गई है। [वि. रा. ६४] ८-००

६७ **व्यावहारिक मनोविज्ञान की रूपरेखा।** डॉ० रामकुमार राय।

प्रस्तुत पुस्तक इण्टर श्रेणी के नवीन पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर लिखी गई है। इस विषय का अध्ययन आरम्भ करने वाले छात्र सरलता से विषय समझ सकें, लेखक का यह प्रयास सफल है। जिन मनोवैज्ञानिकों के सिद्धान्तों का उपयोग किया गया है उनके नाम, सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची, प्रत्येक अध्याय के अन्त में सारांश और प्रश्नावली, अनेक चित्र और रेखाचित्र, अंग्रेजी-हिन्दी तथा हिन्दी-अंग्रेजी शब्दसूची, पृथक्-पृथक् नामों और विषयों की अनुक्रमणिका आदि को देखते हुए छात्रों के लिए यह अत्यधिक उपयोगी संस्करण है। [वि. रा. ६५] ५-००

६८ **संक्षिप्त सामाजिक ज्ञान।** श्री जगदीशसहाय बिसारिया।

(वाराणसी की प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत)

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की नवीन नियमावली के अनुसार निर्धारित विषयों को क्रम से सजा कर आवश्यक स्थलों पर चित्र देते हुए सरल भाषा में यह पुस्तक लिखी गई है [चौ. पु.] १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*६९ **शिक्षामयी कहानियाँ**। लक्ष्मीनारायण उपाध्याय २-००

७० **सतरंगी कहानियाँ**। (सचित्र) श्री उदयन।

जूनियर हाई स्कूल के बच्चों के लिये शिक्षाप्रद मनोरंजक कहानियों का सर्वोत्तम पुस्तक [चौ. पु.] १-४०

७१ **सदाचार-सोपान**। पं० श्री रामबालक शास्त्री।

विद्वान लेखक ने इसमें विद्यार्थी, अभिभावक और गुरु का कर्तव्य तथा शिक्षा में सदाचार की आवश्यकता का निरूपण करते हुये विद्यार्थियों की दिनचर्या और कर्तव्याकर्तव्य का चित्र ही खींच दिया है।

[वि. रा. २] ०-५०

*72 Sansis of Punjab. A. Gypsy and Denotified Tribe of Rajput Origin. By Sher Singh 'Sher'. With eight Illustrations. 25-00

*73 Survey of Indian Sculpture. By S. K. Saraswati. Illustrated. 40-00

*७४ **साधन-रहस्य**। श्री त्रिलोकीनाथ पण्डित। आत्मतृप्ति को प्राप्त कर लेने पर सन्त साधक ने इस लघु पुस्तक द्वारा उन नवयुवकों एवं युवतियों के लिये प्रशस्त भाग प्रस्तुत करने का प्रयास किया है; जो जीवन में आनन्द की खोज के लिये व्याकुल होकर भटक रहे थे। १-००

*75 Seal of Aetea and the Minoan Scripts. By Michael Ridley. 3-00

७६ **सुनो कहानी**। (सचित्र) श्री उदयन।

कहानी के माध्यम से बच्चों को पुस्तक पढ़ने के अभ्यास के लिए यह पुस्तक लिखी गई है। बच्चों के लिए यह अधिक रोचक और शिक्षाप्रद है। [चौ. पु.] १-४०

*77 Scheduled Tribes. By G. S. Ghurye. 18-75

*78 Select Asokan Epigraphs. With Annotations by S. Bhattacharya. 6-00

*79 Studies in Early Buddhist Architecture of India. By H. Sarkar. With numerous Line drawings and 24 Illustrations. 30-00

*80 Stupa of Bharhut : A Buddhist Monument ornamented with numerous Sculptures Illustrative of Buddhist Legend and History in the Third Century B. C. with 57 Plates. By A. Cunningham. With Introduction by Dr. V. S. Agrawala. 100-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८१ **हिन्दी निबंधादर्श**। आचार्य रमाशंकर पाण्डेय।

इसमें परीक्षा में प्रष्टव्य लगभग ४० आधुनिक सरल संक्षिप्त हिन्दी निबन्धों का संग्रह किया गया है। प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में भाषा, शैली, कौशल आदि की दृष्टि से इस संस्करण की उत्तमता स्वीकृत की गई है।

पूर्वार्द्ध [चौ. पु.] २-२५
उत्तरार्ध यन्त्रस्थ

८२ **हिन्दी साहित्य सरोवर**। श्री चक्रधरशर्मा

इस पुस्तक में हिन्दी के नवीन एवं प्राचीन विद्वानों के संक्षिप्त जीवनवृत्त एवं उनकी उपयोगी पद्यात्मक रचनायें हैं। शब्दार्थ और भावार्थ देकर विषय को अधिक से अधिक सुबोध बनाने का प्रयत्न किया गया है। (यू० पी० हाईस्कूल के लिए पाठ्य स्वीकृत) [चौ. पु.] २-१७

*83 Hindu Pantheon. By Edward Moor. A New Edition with Additional Plates Condensed and Annotated by the Rev. W. O. Simpson. 75-00

पं० बलदेव उपाध्याय साहित्य

*१ **धर्म और दर्शन**। ४-००
२ **नागानन्द**। संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ४-००
३ **पुराण विमर्श**। २०-००
४ **बौद्धदर्शन मीमांसा**। ६-००
*५ **भारतीय दर्शन**। १६-००
६ **महाकवि भास : एक अध्ययन**। ४-००
*७ **वैदिक साहित्य और संस्कृति**। १५-००
*८ **संस्कृत वाङ्मय**। १-७५
*९ **संस्कृत साहित्य का इतिहास**। १५-००
१० **संस्कृत सुकवि समीक्षा**। २०-००
११ **सूक्तिमञ्जरी**। ८-००

नवनालन्दा महाविहार के प्रकाशन

*१ **नवनालन्दा महाविहार रिसर्च पब्लिकेशन, भाग-१**

सम्पादक—एस० मुखर्जी, संचालक—नवनालन्दा महाविहार।

डा० सातकड़ि मुखर्जी ने इसका संपादन किया है। इसमें छः प्रबन्ध हैं, जैसे 'दि ऐब्सोल्यूटिस्ट स्टैण्ड पांइण्ट इन लॉजिक', 'पट्टिचसमुम्पाद', 'महावग्ग महावस्तु ऐण्ड ललितविस्तर', 'भावविवेक ऐण्ड दि प्रासङ्गिक स्कूल', 'कुमारिल्स रिऐक्शन टु स्ट्रिक्चर्स ऑन सर्टेन एपेरेण्ट ग्रामेटिकल लैप्सेज' और 'विज्ञप्ति-मात्रतासिद्धि'। इनमें से पाँच प्रबन्ध बौद्ध दर्शन से सम्बद्ध हैं, और एक में पाणिनि के व्याकरण के एक जटिल समस्या का विवेचन है। १५—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*२ नवनालन्दा महाविहार रिसर्च पब्लिकेशन, भाग-२

सम्पादक—डॉ० सातकड़ि मुखर्जी। इसमें १५ लेख हैं। यद्यपि इनमें से अधिकांश बौद्ध विषयों से सम्बद्ध हैं तथापि यह कैथोलिक सा है, क्योंकि इसमें अन्य विषयों से सम्बन्ध लेख भी हैं। आनन्दवर्धन का कान्सेप्ट आफ दोष और चार्वाक सृष्टिका दार्शनिक विवेचन—ऐसे ही लेख हैं। औमिनीसिएण्ट ऐज दी फाउण्डर आफ रीजिलन में ऐसे विषय का विवेचन है जो धार्मिक के साथ-साथ तत्त्वमीमांसात्मक भी है। नेचर इन थेर गाथा में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि बौद्ध अर्हतों ने प्रकृति के सौन्दर्यशास्त्रीय पक्ष का किस प्रकार वर्णन किया है। इसमें अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में ही लेख हैं। चार लेख हिन्दी में हैं। १५—००

*३ सद्धम्मसंगहो

सम्पादक—डॉ० महेश तिवारी

धम्मकित्ति महासामी रचित इस ग्रन्थ में बुद्ध के महापरिनिब्वान से लेकर अब तक के बौद्धमत के धार्मिक और साहित्यिक इतिहास का वर्णन है। ग्रन्थ गद्य और पद्य की मिश्रित द्रुत शैली में लिखा गया है जो विषयवस्तु को अत्यन्त स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करती है। सम्पादक ने एक विचारपूर्ण प्रस्तावना भी लिखी है। ३—००

*४ समन्तपासादिका नाम विनयट्ठकथा

सम्पादक—श्री बीरबल शर्मा

रजिस्ट्रार, नवनालन्दा महाविहार, पटना।

प्रस्तुत ग्रन्थ पालि विनयपिटक के ऊपर भदन्त बुद्धघोषाचार्य विरचित विस्तृत टीका है। इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का यह सर्वप्रथम देवनागरी संस्करण है। सम्पादक ने इस संस्करण को श्रेष्ठ एवं शोधपूर्ण बनाने के लिए भरसक प्रयास एवं समस्त उपलब्ध सामग्री का यथेष्ठ उपयोग किया है। सिंहल, बर्मा तथा श्याम देशीय एवं रोमन लिपि में मुद्रित पाठों के तुलनात्मक अध्ययन से शुद्धपाठ उपन्यस्त किया गया है और विभिन्नदेशीय पाठान्तर टिप्पणी में दे दिए गए हैं। जिससे इस संस्करण का महत्त्व रोमन संस्करण से भी कई एक गुणा बढ़ गया है। विस्तृत अंग्रेजी भूमिका एवं विविध शब्दानुक्रमणिका इस संस्करण के प्रमुख वैशिष्ट्य है।

भाग १—पाराजिक ग्रन्थ के प्रथम अंश की टीका जिसमें मैथुनधर्म और चोरी इन दो प्रमुख पापों का विचार किया गया है।

भाग २—पाराजिक ग्रन्थ के शेष भाग और पाचित्तिय ग्रन्थ की टीका है जिसमें अवशिष्ट पापों का विचार है।

भाग ३—महावग्ग, चुल्लवग्ग और परिवार—इन तीन ग्रन्थों की टीका है।

प्रत्येक भाग का मूल्य १५-००

सम्पूर्ण १-३ भाग ४५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*५ पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा

पठमो भागो (धातुकथा-पुग्गल-पञ्ञत्ति-अट्ठकथा मूलटीका सहिता)

सम्पादक—डॉ० महेश तिवारी

यह पुस्तक अभिधर्म पिटक के दो ग्रन्थ धातुकथा तथा पुग्गलपञ्ञत्ति पर भाष्य है। इसमें स्कन्ध, आयतन तथा धातुओं के पारस्परिक सम्बन्धों पर प्रश्नोत्तर शैली से विवेचन उपस्थित करते हुए बौद्ध दर्शन के प्रमुख सिद्धान्त नैरात्म्यवाद पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही यहाँ विविध प्रकार के पुरुषों के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के द्वारा बौद्ध दर्शन की मान्यताओं की विस्तृत व्याख्या है। इसकी अंग्रेजी भूमिका में विद्यार्थी, अध्यापक, शोधकर्ता सबों के ज्ञातव्य सामग्री उपस्थित है। इस ग्रन्थ का नागरी लिपि में यही प्रथम प्रकाशन है ८-३७

*६ सम्मोहविनोदिनी नाम विभंगट्ठकथा

सम्पादक—डॉ० यू० धर्मरत्न

अभिधम्मपिटक की द्वितीय पुस्तक विभंगप्पकरण पर बुद्धघोष द्वारा प्रस्तुत टीका का नाम 'सम्मोहविनोदिनी' है। देवनागरी लिपि में टीका साहित्य विषयक यह प्रथम ग्रन्थ है जो अभिधम्म साहित्य के विशेषज्ञ सम्पादक के प्रयास से एक पूरा समालोचनात्मक संस्करण बन गया है। इस ग्रन्थ में ३९ पेजों की एक विस्तृत प्रस्तावना भी है। यह पालि-अभिधम्म के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रंथ है। १५—००

*७ सासनवंश

सम्पादक—डॉ० डी० सी० एस० उपासक

आधुनिक युग का एक सुविख्यात बौद्ध इतिहास विषयक यह पालि ग्रन्थ बर्मा के राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास को समझाने के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण है। ग्रन्थ में लगभग ३०० पालि कृतियों का संदर्भसंकेत है। लेखक ने अपने समय के समस्त उपलब्ध ग्रन्थों के नामों का समावेश किया है। यह पालि और प्राचीन भारतीय इतिहास तथा संस्कृति के विद्यार्थियों के लिए एक अनिवार्य स्रोत ग्रन्थ है। सम्पादक ने अपनी प्रस्तावनात्मक टिप्पणियाँ देकर इसे और भी विस्तृत बना दिया है। यह ग्रन्थ अब अनेक विश्वविद्यालयों द्वारा पालि एम० ए० के पाठ्यक्रम के लिए भी निर्धारित कर लिया गया है। ६—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*८ हिस्ट्री ऐण्ड पालियोग्राफी आफ मौर्यन ब्राह्मी स्क्रिप्ट्स

लेखक—डॉ० सी० एस० उपासक

इसमें प्रमुखतः ब्राह्मी लिपि और मौर्य-शिलालेखों में आनेवाले प्रत्येक अक्षर की उत्पत्ति का विवेचन तथा अशोक के ब्राह्मी लिपि के एक मानक प्रकार का अनुसन्धान किया गया है। ग्रन्थ का प्रत्येक पृष्ठ अक्षरों से सम्बद्ध रूपरेखात्मक विस्तृत चित्रों से समृद्ध है। यह भारतीय लिपि-शास्त्र के क्षेत्र में एक निर्णायक ग्रन्थ है। अनेक विश्वविद्यालयों ने इसे अपने प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुराशास्त्र विषयक स्नातकोत्तर कक्षाओं के पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित किया है। १२—००

*वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के कतिपय प्रकाशन

१ अग्निनिर्वचनम्। श्री मथुरा प्रसाद दीक्षित संकलित १–५०
२ अथर्ववेदे शान्ति पुष्टि कर्माणि। डा० माया मालवीया विरचित ८–००
३ अद्वैतविद्यातिलकम्। समरपुङ्गवदीक्षित प्रणीत। धर्मण्यदीक्षित विरचित व्याख्या सहित। प्रथम भाग १–२५
४ अभिनव मनोविज्ञान। प्रभुदयाल ९–८०
५ अर्वाचीन ज्योतिर्विज्ञानम्। रमानाथ सहाय विरचित १३–००
६ अर्वाचीनं मनोविज्ञानम्। मामराज दत्त कपिल विरचित १२–००
७ आश्वलायनश्रौतसूत्र। सिद्धान्तिभाष्य सहित। द्वितीय भाग मात्र ४–००
८ उपेन्द्रविज्ञानसूत्रम्। उपेन्द्रदत्त विरचित। सव्याख्या १–००
९ काव्यप्रकाशः। चण्डीदास प्रणीत दीपिका व्याख्या सहित। २–३ भाग ११–५०
१० काव्यप्रकाशविवरणम्। गोकुलनाथोपाध्याय विरचित। अपूर्ण पञ्चम उल्लास पर्यन्त ८–००
११ कोविन्दानन्दः। आशाधर भट्ट विरचित। स्वोपज्ञ कादम्बिनी व्याख्यायुत १–५०
१२ गणितकौमुदी। नारायण पण्डित विरचित। १–२ भाग ४–१२
१३ गर्गसंहिता। श्री विभूतिभूषण भट्टाचार्येण संशोधिता। प्रथमो भागः १०–००
१४ गलितप्रदीपः। लक्ष्मीधर सूरि विरचित २–००
१५ गैरिकसूत्राणि। जड्युनामक गङ्गारामोन्नति वृत्ति, रघुनाथ शर्मा विरचित विवरण समेत १–००
१६ ग्रहगणित मीमांसा। मुरारिलाल शर्मा विरचित ५–५०
१७ चलराशिकलन। पं० सुधाकर द्विवेदी विरचित। द्वितीय भाग मात्र १–७५
१८ ज्योतिर्विज्ञानम्। धूलिपाल अर्क सोमयाजी विरचित ९–००
१९ तन्त्ररत्नम्। पार्थसारथिमिश्र कृत। तृतीय भाग मात्र ५–५०
२० तारिणीपारिजातः। विद्वदुपाध्याय विरचित ४–००
२१ तौतातिकमततिलकम्। भवदेवमिश्र विरचित। २–३ भाग ४–३७
२२ त्रिपुरारहस्यं (ज्ञानखण्डम्)। श्री निवासबुध विरचित तात्पर्य दीपिका व्याख्या सहित ९–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२३ त्रिस्थलीसेतुः । भट्टोजिदीक्षित विरचितः । तीर्थेन्दुशेखरः । नागेशभट्ट प्रणीत । काशीमोक्षविचारः । सुरेश्वराचार्य विरचितः १–५०

२४ द्वैतनिर्णयसिद्धान्तसंग्रहः । भानुभट्ट मीमांसक प्रणीत १–००

२५ दृक्सिद्धपञ्चाङ्गनिर्माणपद्धतिः । गणपतदेव शास्त्री विरचित ६–००

२६ धर्मशास्त्रीयव्यवस्थापत्रसंग्रहः । सुभद्र झा सम्पादित १०–००

२७ 'न च' रत्नमालिका । शास्त्र शर्मा विरचित । स्वोपज्ञ नूतनालोक व्याख्या तथा आलोक प्रकाश टिप्पणी सहित ६–५०

२८ न्यायकौस्तुभः । महादेवपुणतामकर विरचित । अनुमानखण्ड १०–००

२९ न्यायसिद्धाञ्जनम् । वेदान्तदेशिक विरचित । हिन्दी टीका सहित २५–००

३० नृसिंहप्रसादः । दलपतिराज विरचित । प्रायश्चित्तसारः ३–२५ श्राद्धसारः २—०० तीर्थसारः १—५० व्यवहारसारः ४–००

३१ पदवाक्यरत्नाकरः । गोकुलनाथोपाध्याय विरचित । सव्याख्या १५–००

३२ पाणिनीय धातुपाठ समीक्षा । डा० भागीरथप्रसाद त्रिपाठी (वागीश शास्त्री) १८–५०

३३ पारसीक प्रकाशः । विहारि कृष्णदास मिश्र विरचित ५–५०

३४ पाश्चात्यं नीतिशास्त्रम् । विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि विरचित ४–००

३५ प्रक्रियाकौमुदी विमर्शः । डा० आद्याप्रसाद मिश्र विरचित ८–००

३६ प्रमाणविनोदः । चित्रधर मिश्र विरचित १–५०

३७ प्रशस्तपादभाष्यम् । (पदार्थधर्म संग्रह रूपम्) श्रीधरभट्ट प्रणीत न्याय कन्दली व्याख्या तथा दुर्गाधरझा कृत हिन्दी टीका सहित २५–००

३८ बृहच्छब्देन्दुशेखरः । नागेशभट्ट विरचित । १–३ भाग ४५–००

३९ भगवद्गीतायाः । भगवदाशयानुसरणाभिधान भाष्यम् । भास्कराचार्य कृत ५–५०

४० भगवन्नाममाहात्म्यसंग्रहः । रघुनाथेन्द्रकृत । सव्याख्या २–७५

41 Bhaskari Vol. III. An English Translation of the Isvara-Pratyabhijnavimarsini in the Light of the Bhaskari. 7–94

४२ मनोनुरञ्जननाटकम् । अनन्तदेव विरचित १–००

४३ योगीनीहृदय । अमृतानन्दनाथ विरचित दीपिका-भास्कर राय कृत सेतुबंध व्याख्या सहित १०–००

४४ लोहगोलखण्डनं । रङ्गनाथदैवज्ञ विरचित तथा लोहगोलसमर्थनं । गदाधरदैवज्ञ विरचित २–००

४५ वाक्यपदीयम् । रघुनाथ शर्मा कृत अम्बाकर्त्री व्याख्या सहित । ब्रह्मकाण्ड १०–००

४६ व्याकरणदर्शन पीठिका । रामाज्ञा पाण्डेय विरचित ४–००

४७ व्याकरणदर्शनभूमिका । रामाज्ञा पाण्डेय विरचित ५–००

४८ शाण्डिल्यभक्ति सूत्र । नारायणतीर्थ विरचित भक्ति चन्द्रिका व्याख्या· स्वप्नेश्वर भाष्य-नारदभक्तिसूत्र भक्तिमीमांसा सहित १०–००

४९ शुद्धाद्वैतमार्तण्डः । गोस्वामि गिरिधरजी महाराज विरचित । रामकृष्ण भट्ट कृत प्रकाश व्याख्या सहित । प्रमेयरत्नार्णवः । लालू भट्ट (बालकृष्ण भट्ट) विरचित । ब्रह्मवादः । हरिराय विरचित ५–००

५० सम्यक्सम्बुद्धभाषतं प्रतिमालक्षणम् । सव्याख्या १–२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५१ सरस्वतीभवन-निबन्धमाला। (आङ्गलभाषामयानां नानानिबन्धानां संग्रहरूपः) १-१७ भाग	११६-००
५२ सूक्तिमुक्तावली। गोकुलनाथोपाध्याय विरचित	७-५०
५३ सूर्यग्रहणम्। डा० कृष्णचन्द्र द्विवेदी विरचित	१२-००
५४ स्मार्तोल्लासः। शिवप्रसाद विरचित। २-३ भाग	३-६२
५५ हस्तलिखितग्रन्थानां विवरणात्मिका सूची। १-१२ खण्ड	८६-३७

* हिन्दी साहित्य-कुटीर की पुस्तकें—

१ अनासक्ति योग। महात्मा गांधी	०-६२
२ अभिनव शिक्षणशास्त्र। सीताराम चतुर्वेदी	६-२५
३ अमृतानुभव। सन्त ज्ञानेश्वर। अनुवादक द्वारकादास गुप्त-नारायण शास्त्री केलकर	२-००
४ आदर्श राम। ब्रजरत्नदास	१-२५
५ आधुनिक हिन्दी साहित्य। कृष्णशङ्कर शुक्ल	४-५०
६ उपन्यासकला। विनोदशङ्कर व्यास	१-७५
७ उर्दू साहित्य का इतिहास। ब्रजरत्नदास	३-७५
८ कहानीकला। विनोदशङ्कर व्यास	१-७५
९ कामकला। विजयबहादुर सिंह	४-५०
१० खड़ी बोली हिन्दी साहित्य का इतिहास। ब्रजरत्नदास	३-००
११ चुभते चौपदे। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	२-००
१२ चोखे चौपदे। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	२-७५
१३ ठंडे छींटे। वियोगी हरि	०-७५
१४ ठेठ हिन्दी का ठाठ। अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	०-९४
१५ दो पौराणिक नाटक। क० मा० मुंशी	१-७५
१६ पारिजात। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	५-००
१७ पुष्पविज्ञान। हनुमानप्रसाद शर्मा	१-२५
१८ प्रसाद और उनका साहित्य। विनोदशङ्कर व्यास	३-१२
१९ प्रसाद और उनके समकालीन। विनोदशङ्कर व्यास	४-००
२० प्राणायाम मीमांसा। विजयबहादुर सिंह	१-५०
२१ प्रियप्रवास। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	४-००
२२ बालकवितावली। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	१-२५
२३ बोलचाल। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	६-२५
२४ भारतीय और योरोपीय शिक्षा का इतिहास। सीताराम चतुर्वेदी	४-६९
२५ भाषा की शिक्षा। सीताराम चतुर्वेदी	५-००
२६ भाषाभूषण। विश्वनाथप्रसाद मिश्र	१-००
२७ भाषालोचन। सीताराम चतुर्वेदी	७-००
२८ मर्मकथा। विनोदशङ्कर व्यास	२-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२९ महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य और पुष्टिमार्ग। सीताराम चतुर्वेदी ५-००
३० महाराष्ट्र प्रान्त के पंच सन्त रत्न। द्वारकादास गुप्त १-५०
३१ मानस शास्त्र और समाज। सीताराम चतुर्वेदी ३-००
३२ मीरॉ माधुरी। ब्रजरत्नदास ५-६२
३३ रसकलस। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ६-५०
३४ रसतरङ्गिणी। भानुदत्त मिश्र विरचित। सीताराम चतुर्वेदी कृत विस्तृत हिन्दी टीका सहित ८-००
३५ वाङ्मय विमर्श। विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (वा० उ० म० प्रथम खण्ड परीक्षोपयोगी) ८-००
३६ वैदेही वनवास। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ३-५०
३७ शैली और कौशल। सीताराम चतुर्वेदी ६-००
३८ सफलता के मन्त्र। वेणीमाधव शर्मा १-५०
३९ हरिऔध और उनका साहित्य। मुकुन्ददेव शर्मा ७-००
४० हरिऔध जी के संस्मरण। वेणीमाधव शर्मा ०-७५
४१ हरिऔध सतसई। अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' १-००
४२ हरिपाठ। सन्त ज्ञानेश्वर ०-३०
४३ हिन्दी उपन्यास साहित्य। ब्रजरत्नदास ५-००
४४ हिन्दी ज्ञानेश्वरी। रामचन्द्र वर्मा ६-००
४५ हिन्दी दासबोध। रामचन्द्र वर्मा ४-००
४६ हिन्दी नाट्य साहित्य। ब्रजरत्नदास ३-७५
४७ हिन्दी मनोबोध। समर्थ स्वामी रामदास। अनु०—द्वारकादास गुप्त १-५०
४८ हिन्दी शिक्षण विधान। सीताराम चतुर्वेदी २-००
४९ हिन्दी साहित्य का इतिहास। ब्रजरत्नदास २-००
५० हिन्दी साहित्य सर्वस्व। सीताराम चतुर्वेदी ११-००

*डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल तथा उनके द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ

1 Astral Divinities of Nepal by Prataditya Pal & Dipak Chandra Bhattacharya. 36-00

2 India As Known to Panini. A study of the Cultural Material in the Ashtadhyayi. Revised and Enlarged Second Edition. 15-00

3 Indian Art. (A History of Indian Art from the earliest times up to the Third Century A. D.) 45-00

4 Evolution of the Hindu Temple and other Essays. 6-00

5 Catalogue of the Mathura Museum Architectural Pieces. 24-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६ गीतानवनीत। (भगवद्गीता-हिन्दी टीका सहित) ५-००

7 Gupta Temple Architecture. By Prithvi Kumar Agrawala. Foreword by S. K. Saraswati. 50-00

8 Gotras in Panini. 3-00

9 Chakra-Dhvaja (The Wheel-Flag of India). Being a History and Exposition of the Meaning of the Dharma-Chakra and the Sarnath Lion-Capital. 30-00

10 Temples of Tripura. By Adris Banerjee. 10-00

11 Thousand Syllabled Speech. (सहस्राक्षरा वाक्) (Being a study in Cosmic Symbolism in its Vedic Version) I. Vision in Long Darkness : Introduction and Analysis, Text and Translation of the Asya-Vamiya Sukta of Rishi Dirghatamas. (Rigveda I. 164. I-52). 50-00

१२ प्राचीन भारतीय लोकधर्म। ४-००

13 Purna Kalasa or the Vase of Plenty. By P. K. Agrawala. With 35 Plates and many Figures. 10-00

१४ भारतीय कला। (प्रारम्भिक युग से तीसरी शती तक) २४-००

15 Matsya Purana : A Study. An Exposition of the Ancient Purana-Vidya. 30-00

16 Mathura Railing Pillars. By P. K. Agrawala. 15-00

17 Vamana-Purana : A Study. An Exposition of the Ancient Purana-Vidya. 25-00

18 Vedic Lectures. (Proceedings of the Summer School of Vedic Studies) (May-June, 1960.) 10-00

19 Vyala Figures on the Mediaeval Temples of India. By Madhusudan A. Dhaky. With 40 Figures. 6-00

20 Siva Mahadeva : The Great God (An Exposition of the Symbolism of Siva). With 32 Plates. 45-00

21 Sparks from the Vedic Fire. (A New Approach to the Vedic Symbolism). 30-00

22 Hymn of Creation. An Exposition and Commentary on the Nasadiya Sukta (Rigveda). 3-00

23 Srimad Bhagavadgita (The Song celestial) with English translation in poetry. 3-00

24 Skand Kartikey. A Study in Origin and Development by P. K. Agrawala. 10-00

25 Heritage of Indian Art. 25-00

26 Studies in Indian Art. 25-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाराणसेय सं० विश्वविद्यालय की परीक्षोपयोगी पुस्तकें-

प्रथमा

लघुसिद्धान्तकौमुदी ['इन्दुमती' सं० हि० टीका, परिशिष्ट सहित २-००

शब्दरूप धातुरूप के लिए-प्रथमा-शब्द-धातुरूपसंग्रहः ०-५०

भारतकथा-गङ्गाधरशास्त्रिकृता। ['बोधिनी' सं० हि० टीका १-००

व्यवहारविज्ञानम्। ['सुधा' टीका ०-६०

मूलरामायण-['सुधा' सं. हि. टी. ०-४०

भारतीयशीलनिरूपणाध्याय-['सुधा' सं० हि० टीका ०-४०

रघुवंश-प्रथमसर्ग-['सुधा' सं० हिन्दी व्याख्या ०-७५

छन्दों के लिए-छन्दोविंशतिका ०-२५

हितोपदेश-मित्रलाभ-अश्लीलांश रहित ['किरणावली' सं. हि. व्या. १-००

संस्कृतरचनानुवाद शिक्षक-विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि २-००

निबन्ध के लिए-प्रबन्ध पारिजात १-७५

राष्ट्रभारती १-५०

प्राचीन भारत की गौरवगाथा। श्री उमाशंकर तिवारी

राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण १-२५

हिन्दी निबन्धके लिए-निबन्धसौरभ १-२५

भारतीय इतिहास की रूपरेखा डॉ० बलराम श्रीवास्तव २-५०

प्रारम्भिक भूगोल २-५०

संक्षिप्त सामाजिक ज्ञान-जगदीश सहाय विसारिया १-२५

गणितकौमुदी-गणपतिदेव शास्त्री १-५०

ज्योतिष प्रबोध-

बृहदवकहड़ाचक्रम्।

तर्क संग्रह [लक्षण-टिप्पणी सहित 'इन्दुमती' हिन्दी टीका ०-५०

पूर्वमध्यमा प्रथम खण्ड

रघुवंश, सर्ग २-५-['सुधा' सं० हिन्दी व्याख्या २-५०

बुद्धचरित-सर्ग १-३, ५ [हिन्दी टी० सं० रामचन्द्रदास २-५०

संस्कृतव्याकरणम् (रचनानुवाद खण्ड निबन्ध खण्ड सहित) ३-००

निबन्ध के लिए-[प्रबन्धपारिजात १-७५

मध्यकौमुदी-['सुधा' सं. हि. टी. ५-००

भट्टिकाव्य-सर्ग १-४ ['चन्द्रकला' सं० हि० टीका ४-००

तर्कसंग्रह पदकृत्य सहित-लक्षण-टि. सहित 'इन्दुमती' हि.टी. ०-५०

मानक हिन्दी व्याकरण- रामचन्द्र वर्मा २-००

संस्कृतरचनाप्रकाश। रमाकान्त द्विवेदी १-९५

नव्यव्याकरण

सिद्धान्तकौमुदी-स्त्रीप्रत्ययान्त-['बाल मनोरमा' टीका, प्रथम भाग ३-५०

सिद्धान्तकौमुदी-स्त्रीप्रत्ययान्त [हि. टी. सहित, कारकान्त ९-००

साहित्य

किरातार्जुनीय, सर्ग १-२-[मल्लिनाथी-सुधा सं० हि० व्याख्या १-२५

रघुवंश-सर्ग १३-१४ [चन्द्रकला सं. हि० टीका, विमर्शादि सहित १-७५

पूर्वमध्यमा द्वितीय खण्ड

शिवराज विजय, प्र० विराम ३-५०

अनुवाद के लिये-संस्कृतरचना-प्रकाश १-९५

निबन्धप्रकाश-कृष्णकुमार अवस्थी २-००

मध्यकौमुदी-['सुधा' सं. हि. टी. ५-००

भट्टिकाव्य, सर्ग ५-८ [चन्द्रकला सं० हि० टीका ८-००

तर्कसंग्रह-पदकृत्य सहित-[लक्षण-टि. सहित इन्दुमती हि. टी. ०-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृत काव्य कथाएँ–श्री बच्चा पाण्डेय शर्मा

मानक हिन्दी व्याकरण–रामचन्द्र वर्मा २–००

संस्कृत व्याकरण–अनुवाद खण्ड, निबन्ध खण्ड सहित। रामचन्द्र झा ३–००

नव्यव्याकरण

सिद्धान्तकौमुदी–कारकादि-चातुरर्थिकान्त [बालमनोरमा टी० १–२ भाग ७–००

सिद्धान्तकौमुदी–(कारकादि चातुरर्थिकान्त) हिन्दी टी० सहित पूर्वार्द्ध १८–००

साहित्य

चन्द्रालोक–[पौर्णमासी-कथा-भट्टी सं० हि० व्याख्या ३–००

कुमारसम्भव, १–२ ५ सर्ग [पुंसवनी सं० हि० टीका ३–५०

उत्तरमध्यमा प्रथम खण्ड

स्वप्नवासवदत्तम्–['प्रबोधिनी' सं० हिन्दी व्याख्या ३–००

अलङ्कारों के लिए–[अलंकारसार मञ्जरी ०–५०

प्रबन्धपारिजात–रामचन्द्र मिश्र १–७५

मध्यकौमुदी–[सुधा सं० हि० टी० ५–००

भट्टिकाव्य, सर्ग १४–१७ ['चन्द्रकला' सं० हिन्दी व्याख्या ५–५०

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, प्रत्यक्षखण्ड–['मयूख' संस्कृत हिन्दी व्याख्या १–५०

संस्कृत की नाट्य कथाएँ–श्री कान्तानाथ पाण्डेय

हिन्दी प्रयोग–रामचन्द्र वर्मा २–५०

अनुवाद [संस्कृत रचना प्रकाश १–९५

हिन्दी निबन्धादर्श–(पूर्वार्ध) श्री रमाशंकर शास्त्री २–२५

नव्यव्याकरण

सि० कौमुदी, शैषिकादि जुहोत्याद्यन्त–['बालमनोरमा' टीका ३–५०

सिद्धान्तकौमुदी, शैषिकादि जुहोत्याद्यन्त–हिन्दी टीका सहित ९–००

साहित्य

दशकुमारचरित, पूर्वपीठिका–['बालविबोधिनी' सं० हि० टीका १–२५

तर्कसंग्रह, पदकृत्य सहित–['इन्दुमती' हिन्दी व्याख्या ०–५०

तर्कामृत–[प्रकाश सं० हि० टी० ०–७५

हिन्दी काव्यमञ्जूषा–रमाशंकर पाण्डेय ३–५०

धरती और आकाश–परिवर्तित-परिवर्धित संस्करण १–७५

साहित्य और सिद्धान्त ३–००

उत्तरमध्यमा द्वितीय खण्ड

प्रतिमानाटक–['प्रकाश' सं० हि० व्याख्या २–५०

अशुद्धवाक्यशोधन–[व्युत्पत्ति-प्रदर्शनं गूढाशुद्धिप्रदर्शनम् ०–५०

प्रस्तावतरङ्गिणी–चारुदेवशास्त्री ४–००

मध्यसिद्धान्तकौमुदी–[सुधा सं० हि० टीका ५–००

भट्टिकाव्य, सर्ग १८–२२ [चन्द्रकला सं० हि० टीका ५–५०

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली–प्रत्यक्षखण्ड। 'मयूख' सं० हि० टीका १–५०

हिन्दी प्रयोग–रामचन्द्र वर्मा २–५०

अनुवाद–[संस्कृत रचना प्रकाश १–९५

नव्यव्याकरण

सिद्धान्तकौमुदी, दिवादि से कृदन्त पर्यन्त उणादि प्रकरण छोड़कर [बालमनोरमा टीका ६–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साहित्य

काव्यमीमांसा, १-५ अध्याय- मधुसूदनी सं० हि० व्याख्या १-५०
वृत्तरत्नाकर-[नारायणी-मणिमयी सं० हि० व्याख्या ३-००
किरात, सर्ग ३-६ [मल्लिनाथी प्रकाश सं० हि० व्याख्या ४-००
गद्यनिकष २-००
हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ ३-००

शास्त्री प्रथम खण्ड

शिशुपालवध-सर्ग १-२ सुधा सं० हिन्दी व्याख्या २-००
कादम्बरी-कथामुख [चन्द्रकला सं० हि० व्याख्या ३-७५
शाकुन्तलम् [किशोरकेलि सं० हि० व्याख्या ७-००
रामाभ्युदययात्रा-श्री रुद्रप्रसाद अवस्थी २-५०
संस्कृतव्याकरणकौमुदी-ईश्वरचन्द्र विद्यासागर । १-४ भाग ८-००
निबन्ध ग्रन्थ-[प्रबन्ध रत्नाकर डॉ० रमेशचन्द्र शुक्ल १६-५०
नव एकांकी-प्रो० केशवप्रसाद सिंह २-५०
अभिनव निबन्धावली- चौखम्बा प्रकाशन ४-५०

साहित्य

शिशुपालवध-सर्ग ३-५ [सं० हि० व्याख्या ३-००
प्रसन्नराघव [चन्द्रकला सं. हि. टीका ४-५०
साहित्यदर्पण ['लक्ष्मी' टीका १५-००
कादम्बरी [चन्द्रकला सं० हि० टीका पूर्वार्द्ध १३-५०
हिन्दी काव्यधारा-भाग दूसरा । डॉ० शम्भुनाथ सिंह
वाङ्मय विमर्श-विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ८-००
ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य-बी.एम. चिन्तामणि ३-००

शास्त्री द्वितीय खण्ड

तर्कभाषा-केशव मिश्र [तत्त्वालोक सं० हि० व्याख्या १-५०
सांख्यकारिका [सानुवाद गौडपाद भाष्य सहित १-५०
वेदान्तसार ['भावबोधिनी' सं० हि० व्याख्या २-१०
कृष्णस्य शान्ति प्रयासः [चौखम्बा प्रकाशन, सं० हि० व्याख्या १-५०
प्रस्तावतरंगिणी-चारुदेव शास्त्री ४-००
निबन्ध ग्रन्थ [प्रबन्धरत्नाकर । डॉ० रमेशचन्द्र शुक्ल १६-५०
संस्कृतसाहित्येतिहासः- रामचन्द्र मिश्र ४-००
संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास वाचस्पति गैरोला १३-००
अच्छी हिन्दी-रामचन्द्र वर्मा ६-२५
अभिनव निबन्धावली- चौखम्बा प्रकाशन ४-५०

साहित्य

वेणीसंहार ['प्रबोधिनी' सं.हि.टीका ४-००
नैषध [जीवातु-मणिप्रभा सं० हि० व्याख्या । १-९ सर्ग ६-००
साहित्यदर्पण ['लक्ष्मी' व्याख्या १५-००
हिन्दी काव्य की सामाजिक भूमिका डॉ० शम्भुनाथ सिंह ७-५०
भारतीय साहित्य की रूपरेखा- डा० भोलाशंकर व्यास ७-५०

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की नियमावली (निदर्शिका) मूल्य रु० ३-०० तथा पोस्टेज रु० १-५०, कुल रु० ४-५० मनीआर्डर द्वारा प्राप्त होने के तत्काल बाद ही गतवर्ष की प्राचीन नियमावली एवं उसका संशोधनपत्र आपकी सेवा में भेज दी जायगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कामेश्वरसिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालय की १९७०की नियमावली के परीक्षापाठ्य तथा परीक्षोपयोगी पुस्तकें–

प्रथमा परीक्षा

अनिवार्य विषय—

हितोपदेश-मित्रलाभ (अश्लीलांश वर्जित)-['किरणावली' सं० हि० टीका १–००

अमरकोश (स्वर्ग वर्ग)-['मणि-प्रभा' हि० टीका ०–७५

संस्कृतव्याकरणम्-(परिवर्द्धित) ३–००

संस्कृतरचनानुवादशिक्षक २–००

अनुवादचन्द्रिका–लोकमणि जोशी १–२५

राष्ट्रीय साहित्य प्रमोद–भारतीय प्रकाशन, पटना

राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण १–२५

पाँच फूल (हिन्दी) १–००

साहित्यबोध, भाग २ (मैथिली)

गणितकौमुदी भाग २–गणपतिदेव शास्त्री १–५०

नव भारत का इतिहास-फणीन्द्र-नाथ ओझा १–१९

हमारे देश, हमारी दुनिया–सुरेश प्रसाद गुप्त

वर्ग 'क'

व्याकरण—

लघुकौमुदी-['इन्दुमती' सं० हि० टीका २–००

साहित्य—

रघुवंश, द्वितीय सर्ग-['सुधा' सं० हि० टीका ०–७५

पञ्चतन्त्र-अपरीक्षितकारक (अश्लीलांश वर्जित)-['सुबोधनी' सं० हि० टीका ०–७५

छन्दोविंशतिका-पं० रामचन्द्रझा ०–२५

अलङ्कारसारमंजरी-(चौखम्बा प्रकाशन) ०–५०

नवीन पूर्व मध्यमा

अनिवार्य पत्र

संस्कृत गद्य-पद्य-संग्रह (चौखम्बा प्रकाशन) २–५०

भर्तृहरिनीतिशतक (ललिता-वाला सं० हि० टीका) १–२५

संस्कृतव्याकरणकौमुदी–ईश्वरचन्द्र विद्यासार भाग १–२ (चौखम्बा प्रकाशन) ४–००

मध्यकौमुदी (सुधा-इन्दुमती सं० हि० टीका) ५–००

अशुद्धि संशोधन (व्युत्पत्तिप्रदर्शनं गूढाशुद्धि प्रदर्शनम्) ०–५०

अनुवाद-निबन्ध-संस्कृतव्याकरणम्-पं० रामचन्द्र झा ३–००

हिन्दी गद्य-पद्यसंग्रह (बिहार-टेक्स्टबुक)

मानक हिन्दी व्याकरण–रामचन्द्र वर्मा २–००

सारिका

हिन्दी निबन्ध–(हिन्दी निबन्धादर्श आचार्य रमाशंकर पाण्डेय) २–२५

इतिहास–डॉ० ताराचन्द्र

भूगोल–रामनारायण मिश्र ३–००

नागरिकशास्त्र—विहार टेक्स्टबुक्

विद्वद्विभूति–पं० रामचन्द्र झा १–२५

वर्ग 'क'

व्याकरण—

सिद्धान्तकौमुदी-पूर्वार्ध (बाल-मनोरमा टीका) ७–००

सिद्धान्तकौमुदी–पूर्वार्द्ध। हि० टी० सहित १८–००

साहित्य—

दशकुमार-पूर्वपीठिका (बालबोधिनी सं० हि० टीका) १–२५

प्रतिमानाटक (प्रकाश सं० हि० टीका) २–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छन्दोमंजरी (प्रभा-रुचिरा सं० हि० टीका) २-५०
अलंकारसारमंजरी (चौखम्बा प्रकाशन) ०-५०

ज्यौतिष—

लीलावती ('तत्त्वप्रकाशिका' व्याख्या) ४-००
क्षेत्रमिति-अध्याय १-२ १-००
मुहूर्तचिन्तामणि-('मणिप्रभा') व्याख्या सहित) ४-००

दर्शन—

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-अनुमान खण्ड ('मयूख' व्याख्या) ३-००
वेदान्तसार-सदानन्दकृत ('भाव बोधिनी' व्याख्या) २-५०
मीमांसापरिभाषा २-००

पौरोहित्य

वर्षकृत्य-प्रथम भाग, पं० रामचन्द्र झा सम्पादित ५-००
भारतीयव्रतोत्सव-पं० पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी ३-००

नवीन उत्तर मध्यमा

अनिवार्य पत्र

संस्कृतगद्यपद्यसंग्रह-चौखम्बा प्रकाशन २-१०
कुमारसम्भव-पञ्चमसर्ग ('पुंसवनी' सं० हि० टीका) १-००
संस्कृतव्याकरणकौमुदी-भाग ३-४ (चौखम्बा प्रकाशन) ४-००
अशुद्धिसंशोधन (व्युत्पत्तिप्रदर्शनं-गूढाशुद्धिप्रदर्शनम्) ०-५०
अनुवाद (संस्कृत रचना प्रकाश-पं० रमाकान्त द्विवेदी) १-९५
हिन्दी गद्यपद्यसंग्रह (बिहार मैट्रिक परीक्षा निर्धारित)
सत्यहरिश्चन्द्रनाटक (छात्रसंस्करण : चौखम्बा प्रकाशन) ०-६५
हिन्दी व्याकरण (मानक हिन्दी व्याकरण-रामचन्द्र वर्मा) २-००
नेत्रदान
पञ्चवटी-मैथिली शरण गुप्त ०-७५
निबन्ध (हिन्दी निबन्धादर्श-रमाशंकर पाण्डेय) २-२५

वर्ग 'क'

व्याकरण—

सि० कौमुदी-उत्तरार्ध ('बालमनोरमा' टीका) ६-५०

साहित्य

रघुवंश-सर्ग ४-५ (मल्लिनाथी-सुधा सं० हि० व्याख्या १-५०
किरात-सर्ग १-२ (मल्लिनाथी-सुधा सं० हि० व्याख्या) १-२५
दशकुमारचरित-उत्तरपीठिका-अपहारवर्मचरितान्त (बालबोधिनी सं० हि० व्याख्या) ३-००
काव्यदीपिका (मयूख सं० हि० व्याख्या) २-५०

ज्यौतिष—

भास्करीय बीजगणित (सुबोधिनी सं० हि० टीका) ८-००
क्षेत्रमिति अध्याय १-२ १-००
ताजिकनीलकठी (पं० गंगाधर मिश्र कृत टीका)
मुहूर्तचिन्तामणि (सान्वय 'मणि-प्रभा' हिन्दी टीका) ४-००

दर्शन—

न्या० मुक्तावली-अनुमानखण्डादि समाप्तयन्त 'मयूख' सं० हि० टीका ३-००
अर्थसंग्रह (दीपिका हि० टीका) १-२५
सांख्यकारिका-गौडपादभाष्यसहिता (सटिप्पण, चौखम्बा प्रकाशन)१-५०

पौरोहित्य—

वर्षकृत्य द्वितीयभाग-पं० रामचन्द्र झा संपादित ६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पितृकर्मनिर्णय-पं० त्रिलोकनाथ मिश्र विरचित ३-००

नवीन शास्त्री

अनिवार्य पत्र

ऋक्सूक्तसंग्रह-डॉ० हरिदत्त शास्त्री ८-००

रघुवंश १३ वां सर्ग ('चन्द्रकला' सं० हि० व्याख्या, नोट्स) १-७५

उत्तररामचरित (चन्द्रकला सं० हि० व्याख्या, नोट्स) ४-५०

कादम्बरी-शुकनाशोपदेश-(सं० हि० व्याख्या) सं० झा-बन्धु ३-००

संस्कृतसाहित्येतिहासः-सं० रामचन्द्र मिश्र ४-००

संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास-वाचस्पति गैरोला १३-००

यशोधरा ३-००

हल्दीघाटी २-७५

गवन संक्षिप्त २-२५

अजातशत्रु २-५०

साहित्यालोचन ५-५०

हिन्दी गद्यमीमांसा

राजापरीक्षित

समीक्षाशास्त्र-डॉ० दशरथ ओझा ६-००

साहित्य की वर्तमानधारा २-५०

हिन्दी साहित्य (नन्ददुलारे)

वर्ग 'क'

व्याकरण

मनोरमा-पंचसन्ध्यन्ता (प्रभा-विभा आदिपंचटीकोपेता) ३-००

सि० कौमुदीस्वरवैदिकी (सानुवाद वैदिक प्रक्रिया ४-००

स्वरवैदिकप्रश्नोत्तरी १-२५

महाभाष्यं-पञ्चमाह्निकान्तं (सप्तदीप हिन्दीव्याख्योपेतम् (चौखम्बा प्रकाशन)) १०-००

परिभाषेन्दुशेखर ((कृष्णाचार्यकला टीका))

न्यायमुक्तावली-उपमानखण्डान्त (मयूख-प्रकाश सं० हि० टीका) ३-००

परमलघुमञ्जूषा (सं० हि० टीका) २-५०

साहित्य

मेघदूत-सम्पूर्ण (चन्द्रकला सं० हि० व्याख्या) ४-५०

नैषधीयचरित-सर्ग १-३ (जीवातु-मणिप्रभा सं० हि० व्याख्या) १-७५

शिशुपालवध-सर्ग १-२ (सुधा सं० हि० व्याख्या) २-००

सौमित्रिसुन्दरीचरित-सर्ग ३-४ प० भवानीदत्त शर्मा

साहित्यदर्पण 'लक्ष्मी' सं० टीका, १५-००

,, 'शशिकला' हिन्दी टीका १२-५०

कादम्बरी-कथामुख (चन्द्रकला-विद्योतिनी सं० हि० टीका) ३-७५

तर्कामृत (प्रकाश-सं० हि० टीका) ०-७५

अभिज्ञानशाकुन्तल ('किशोरकेलि' सं० हि० टीका) ७-००

उत्तररामचरित (चन्द्रकला सं० हि० टीका) ४-५०

आधुनिकसम्बद्धविषय—

भारतीय भाषाविज्ञान-पं० किशोरीदास वाजपेयी ६-२५

प्राकृत साहित्य का इतिहास-प्रो० जगदीशचन्द्र जैन २०-००

प्राकृतप्रकाश (मनोरमा-चन्द्रिका सं० हि० टीका) ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परीक्षा पाठ्य पुस्तकें

उपवैद्य परीक्षा (पत्र १-६)

हरीतक्यादिनिघण्टु (भावप्रकाश-निघण्टु सं० गंगासहाय पाण्डेय) १२-००
प्राणिज औषधि ०-५०
शङ्कर निघण्टु १०-००
परिभाषा प्रबन्ध-चौखम्बा प्रकाशन २-५०
आरोग्यविधान
रोगीसुश्रूषा २-५०
तीमारदारी १-००
कम्पाउण्डरी शिक्षा, विषविज्ञान, रोगीपरिचर्या तथा चिकित्सा प्रवेश ६-००
रोगीपरिचर्या
शरीर परिचय
शरीर विज्ञान और तात्कालिक चिकित्सा १-२५
वाग्भट-चौखम्बा प्रकाशन-विद्योतिनी हिन्दी टीका १५-००
पंचकर्मविधान १-००
भैषज्यकल्पना विज्ञान । डॉ० अवध विहारी अग्निहोत्री ५-००
शार्ङ्गधरसंहिता ('सुबोधिनी' हिन्दी टीका) ५-००

वैद्यविशारद परीक्षा प्रथमखण्ड (पत्र १-४)

आरोग्य विधान
स्वास्थ्यविज्ञान । डॉ० भास्कर गोविन्द घाणेकर ९-००
आहारशास्त्र
रोगी सुश्रूषा २-५०
रोगीचर्या
नैसर्गिक आरोग्य २-००
रसादि परिज्ञान-जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल : चौखम्बा प्रकाशन २-५०
हरीतक्यादि निघण्टु : (भावप्रकाश निघण्टु)-चौखम्बा प्रकाशन १२-००
भावप्रकाश निघण्टु-चौखम्बा प्रकाशन १२-००
स्वास्थ्य के लिये शाक तरकारियाँ २-००
फलाहार चिकित्सा २-५०
प्राणिज औषधि ०-५०
रसरत्नसमुच्चय-चौखम्बा सं० सीरीज़, वाराणसी (सुरत्नोज्वला हिन्दी टीका) १०-००
परिभाषाप्रबन्ध-चौखम्बा प्रकाशन २-५०
शरीरप्रदीपिका ५-५०
प्रत्यक्षशारीर भाग दो, हिन्दी अनुवाद, गणनाथ सेन : चौखम्बा प्रकाशन २५-००
शरीर परिचय
शरीर क्रिया विज्ञान । प्रियव्रत शर्मा १०-००
कामरोग विज्ञान
धातुरोग और उनका इलाज २-००

वैद्यविशारद परीक्षा द्वितीय खण्ड (पत्र ५-८)

शरीर परिचय
पथ्यापथ्य निरूपण ०-७५
माधवनिदान-मधुकोश-विद्योतिनी संस्कृत हिन्दी टीका १-२ भाग १४-००
मूत्रपरीक्षा-भट्टाचार्य १-५०
नाड़ीपरीक्षा । वैद्यप्रिया हिन्दी टीका ०-३५
भावप्रकाश-चिकित्साखण्ड-चौखम्बा प्रकाशन विद्योतिनी हिन्दी टीका १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपूर्व चिकित्सा विधान ६–००
आयुर्वेदिक एलोपैथिक गाइड–चौखम्बा प्रकाशन १२–००
पथ्यापथ्य निरूपण ०–७५
पञ्चकर्म विधान १–००
आयुर्विज्ञान
रोगि मृत्युविज्ञान १–५०
ऊर्ध्वांग चिकित्सा–कर्णरोग विज्ञान २–५०
,, नासरोग विज्ञान २–७५
,, मुखरोग विज्ञान २–७५
शालाक्यतन्त्र–चौखम्बा प्रकाशन–रमानाथ द्विवेदी ९–००
आँख का अचूक इलाज २–२५
पथ्यापथ्य निरूपण ०–७५
प्रसूतिविज्ञान–रमानाथ द्विवेदी १०–००
प्रसूतितन्त्र–रामदयाल कपूर ५–७५
कौमारभृत्य–रघुवीर प्रसाद द्विवेदी ८–००
बालरोग चिकित्सा ६–००
बच्चों के रोग और उनका इलाज
हमारे बच्चे ३–००
बच्चों का पालन पोषण
स्त्रीविज्ञान–अन्तूभाई। प्रथम भाग १०–००
स्त्रीरोगविज्ञान। डा० रमानाथ द्विवेदी ३–५०
पथ्यापथ्य निरूपण ०–७५
शल्यप्रदीपिका–चौखम्बा प्रकाशन १५–००
सौश्रुती–चौखम्बा प्रकाशन १०–००
शल्यतन्त्र–प्रथम भाग। बालकराम शुक्ल १०–००
अष्टांगहृदय–चौखम्बा प्रकाशन विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित १५–००
वाग्भट–चौखम्बा प्रकाशन विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित १५–००
आयुर्वेद व्यवहार। व्यवहारायुर्वेद-विष विज्ञान-अगदतन्त्र। डा० युगलकिशोर गुप्त-डा० रमानाथ द्विवेदी ५–००
विष और महाविष विज्ञान तथा परिशिष्ट विषविज्ञान १०–००

आयुर्वेद रत्न परीक्षा

प्रथम खण्ड (पत्र १–४)

वाग्भट–चौखम्बा प्रकाशन। विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित १५–००
चरक–चौखम्बा प्रकाशन विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित १-२ भाग३६–००
सुश्रुतसंहिता–चौखम्बा प्रकाशन आयुर्वेदतत्त्वसंदीपिका हिन्दी टीका सहित १–२ भाग २४–००
त्रिदोष परिज्ञान ३–५०
शरीर परिचय
त्रिदोषतत्त्व विमर्श ३–००
मूत्रपरीक्षा
नाड़ी दर्शन २–५०
चक्रदत्त–चौखम्बा प्रकाशन, भावार्थ संदीपिनी हिन्दी टीका १०–००
जीवाणुविज्ञान–डा० घाणेकर : चौखम्बा प्रकाशन १३–००
औपसर्गिक रोग १–२ भाग डा० घाणेकर : चौखम्बा प्रकाशन २२–००
अपूर्व चिकित्सा विधान ६–००
इन्फ्लुएन्जा ०–५६
रक्तविक्षेप-ब्लड प्रेशर ०–७५
तपेदिक
पदार्थ विज्ञान–जगन्नाथप्रसाद शुक्ल १–२५
पदार्थविज्ञान–रामरक्ष पाठक
द्रव्य विज्ञान १–२५
गुणविज्ञान २–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रसादिपरिज्ञान-चौखम्बा प्रकाशन, जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल २-५०
रसशास्त्र ७-००
गोरसादि औषधि ०-१९
प्राणिज औषधि ०-५०
परिभाषाप्रबन्ध-चौखम्बा प्रकाशन २-५०
शार्ङ्गधरसंहिता-(सुबोधिनी हिन्दी टीका) ५-००
आरोग्यविधान
प्रारम्भिक उद्भिजशास्त्र-चौखम्बा प्रकाशन, बलवन्त सिंह ४-५०
प्रारम्भिक रसायन-चौखम्बा प्रकाशन फूलदेव सहाय वर्मा ४-५०
शरीरक्रिया विज्ञान-प्रियव्रत शर्मा १०-००
मानव शरीर रहस्य ८-००
अगद तन्त्र-(चौखम्बा प्रकाशन) रमानाथ द्विवेदी ०-७५
त्रिदोष परिज्ञान ३-५०
महाविष ३-००
उपविष ५-००
परिशिष्ट वनस्पति विष २-००
व्यवहारायुर्वेद और विष विज्ञान-, चौखम्बा प्रकाशन ५-००
सौश्रुती-चौखम्बा प्रकाशन १०-००
शल्यप्रदीपिका चौखम्बा प्रकाशन १५-००
प्राच्यशल्य तन्त्र
इंजेक्शन प्रकाश
सूचीवेधविज्ञान-राजकुमार द्विवेदी २-५०

आयुर्वेद रत्न परीक्षा

द्वितीय खण्ड (पत्र १-४)

चरक-चौखम्बा प्रकाशन ३६-००
वाग्भट-चौखम्बा प्रकाशन १५-००
मुखरोग विज्ञान २-७५
सुश्रुत-चौखम्बा प्रकाशन २४-००
कर्णरोग विज्ञान २-५०
नासारोग विज्ञान २-७५
जुकाम १-७५
आंख का अचूक इलाज २-२५
शिरोरोग विज्ञान
संक्षिप्त शल्य विज्ञान
शल्यतन्त्र
कौमारभृत्य-रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी ८-००
महिला जीवन १६-००
प्रसूति शास्त्र १२-००
प्रमाण विज्ञान २-५०
पुरुष विज्ञान का आयुर्वेदिक पुरुष वर्णन ७-००
मानसिकरोग विज्ञान ५-७५
मानसोपचार
आयुर्वेद का इतिहास ५-००

भावप्रकाशनिघण्टु

(संशोधित परिवर्धित संस्करण)

सम्पादक : डॉ० गंगासहाय पाण्डेय, श्रीकृष्णचन्द्रचुनेकर

प्रस्तुत संस्करण में संस्कृत के मूल श्लोकों का हिन्दी अनुवाद, भेषज द्रव्यों के भिन्न भारतीय भाषाओं में प्रचलित सही नाम, उनके अंग्रेजी व लैटिन के स्वीकृत नाम, वनस्पतियों के उत्पत्ति स्थान, उनका विशिष्ट परिचय, रासायनिक संगठन आदि का सही-सही वर्णन दिया गया है। संदिग्ध एवं विवादास्पद स्थलों में विभिन्न विद्वानों के विचार एवं मतभेद के आधार के उल्लेख भी किये गये हैं। अनेक परिशिष्टों के होने से यह संस्करण अधिक उपयोगी बन गया है १२-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथिला-ग्रन्थमाला

तथा मैथिलसाम्प्रदायिक-ग्रन्थाः

१ वाजसनेयिक तथा छन्दोगक—जुटिकाबन्धन-मातृकापूजापूर्वक आभ्युदयिकश्राद्धपद्धति। मैथिली टीका [मि. ६] समाप्त

२ वाजसनेयिक विवाहपद्धति। (तृतीय संस्करण) मैथिली टीका [मि. १४] १-२५

३ छन्दोगक विवाहपद्धति। (तृतीय संस्करण) स्थूलाक्षर मैथिली टीका [मि. १५] १-७५

४ वाजसनेयिक उपनयनपद्धति। (चतुर्थ संस्करण) स्थूलाक्षर मैथिली टीका [मि. १६] १-७५

५ छन्दोगक उपनयनपद्धति। (तृतीय संस्करण) स्थूलाक्षर मैथिली टीका [मि. १७] १-७५

६ वाजसनेयिक एकोद्दिष्टपद्धति। " [मि. ११] ०-५०

७ छन्दोगक एकोद्दिष्टपद्धति। " [मि. १०] ०-२५

८ वाजसनेयिक पार्वणपद्धति " [मि. १२] ०-४०

९ छन्दोगक पार्वणपद्धति। " [मि. १३] ०-४०

१० वाजसनेयिक सन्ध्यातर्पणपद्धति। " [मि. ४] ०-१५

११ छन्दोगक सन्ध्यातर्पणपद्धति। वैतरणी-सहित मैथिली टीका [मि. ३] ०-१५

१२ वाजसनेयिक संक्षिप्त आह्निकपद्धति। " [मि. १] ०-४०

१३ छन्दोगक संक्षिप्त आह्निकपद्धति। " [मि. २] ०-४०

१४ सत्यनारायणपूजापद्धति। 'इन्दुमती' नामक मैथिली टीका [मि. ९] ०-७५

१५ सत्यनारायणपूजापद्धति। टिप्पणी सहित मूल [मि. ८] समाप्त

१६ आह्निकपञ्चदेवपूजापद्धति। [मि. १९] ०-०५

१७ एकादशीव्रतोद्यापनपद्धति। सपरिष्कृत [मि. २३] ०-३५

१८ कार्तिक-तुलसी-आकाशदीपव्रतोद्यापनपद्धति। [मि. २४] ०-३५

१९ कूपोत्सर्गपद्धति। [मि. २१] ०-१५

२० गृहोत्सर्गपद्धति। [मि. २२] ०-२०

२१ दशगात्रपिण्डदानपद्धति। मैथिली टीका सहित। पं० रामचन्द्र झा सम्पादित यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२ दुर्गापूजा-श्यामापूजा-पद्धति। वैष्णवानां दुर्गापूजा सहित। सटिप्पण तृतीय संस्करण [मि. २५] यन्त्रस्थ

१३ बृहत्सामान्योत्सर्गपद्धति-दशगात्रपिण्डदानपद्धति [वि. १२] ०-४०

१४ संक्षिप्तदीक्षापद्धति-तुलादानसहित। [ह. १७०] ०-२०

१५ अनन्तचतुर्दशीव्रतपूजाकथा। [वि. १८] ०-२०

१६ जीमूतवाहनव्रतपूजाकथा। [वि. १९] ०-२०

१७ प्रतिहारषष्ठी (विवस्वत्षष्ठी) व्रतकथा। [मि. १८] ०-१५

१८ बहुलाचतुर्थीव्रतकथा। [वि. १६] ०-२०

१९ भाद्रशुक्लचतुर्थीचन्द्रपूजा। चतुर्थीचन्द्रव्रतकथा सहित [मि. २८] ०-१५

२० रामनवमीव्रतपूजापद्धतिः। जानकी नवमी व्रतपूजा सहित [वि. २१] ०-४०

२१ श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतपूजाकथा। [वि. १७] ०-३५

२२ सरस्वतीपूजापद्धतिः (मूर्ति पूजा विधान सहित) [वि. २०] समाप्त

२३ सिद्धिविनायकचतुर्थीव्रतपूजाकथा। [मि. २९] ०-२०

२४ हरितालिकाव्रतपूजाकथा। [मि. ३०] ०-१५

२५ अशौचनिर्णयः। म० म० वाचस्पति-रुद्रधरकृत युग्मसंस्करण [वि. १३] ०-५०

२६ कृत्यसारसमुच्चयः। गङ्गाधरमिश्रकृत परिशिष्ट सहित [का. १२९] ५-००

२७ पौरोहित्यकर्मसारः। तृतीय संस्करण १-२ भाग [का. २६] १-६५

२८ रामार्चापद्धतिः (शिवपुराणोक्त) [वि. २४] ०-४०

२९ वास्तुपूजापद्धति-गृहे गृध्रादिपतनशान्तिपद्धति, गृहप्रवेश-पद्धतित्रय संमिलित। [ह. १५३] ०-७५

३० व्यवहारविज्ञान-एहिमें मिथिलाक प्रत्येक व्यवहारक समीक्षा नाना स्मृति-पुराणक उद्धरणक संग कयल गेल अछि ३-००

३१ सूर्यादिद्वादशस्तवी-अन्नपूर्णादि स्तोत्रसहित। [मि. ७] ०-२०

३२ पितृकर्मनिर्णयः-(निबन्धसंग्रह) श्री त्रिलोकनाथ मिश्र। एहि ग्रन्थ में मुमूर्षु अवस्था सँ लके शवसंस्कार, अशौच, आद्यश्राद्ध, वार्षिक श्राद्ध, पार्वण श्राद्ध, नान्दी श्राद्ध, कृत्रिम पुत्रादि निर्णय, गयाश्राद्धादि निर्णय आदिक संग्रह अनेकानेक श्रुति-स्मृतिक पर्यवेक्षण सँ कयलगेल अछि। आब कोनो पितृकर्म सम्बन्धी निर्णय करबाक समय में विद्वानकें पुस्तकान्तरक आवश्यकता नहिं पड़तैन्ह [मि. २६] ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३ **दुर्गासप्तशती**—पं० श्रीकनकलाल ठक्कुर सम्पादित ।
एहि संस्करण क प्रशंसा प्रायः समस्त मिथिलावासी करैत छथि । मध्य में कागत क अभाव सँ बहुत दिन तक प्रथम संस्करण उपलब्ध नहिं भेला सँ मिथिला क ग्राहक रोष प्रकट करैत छलाह । अत एव हम मिथिला ग्रन्थमालाक आवश्यक कार्य रोकि कें पूर्ववत् बड़का मोट-मोट अक्षर तथा कागत में एहि द्वितीय संस्करण के परिष्कृत रूप में प्रकाशित कयल अछि [मि. २७] २-००

४ **वर्षकृत्य—प्रथमभागः**—सम्पादक, पं० रामचन्द्र झा ।
(बृहत् परिवर्धित संशोधित तृतीय संस्करण)
प्रथम संस्करणक अपेक्षा द्वितीय संस्करण जहिना द्विगुणित आकार-प्रकार में प्रकाशित भेल छल तहिना एहि बेर ई तृतीय संस्करणों संशोधित परिवर्धित भय बृहत्काय में प्रकाशित भेल अछि । स्थान-स्थान पर नवीन-नवीन व्रत-पूजा-कथा क सन्निवेश कयल गेल छैक । पद्यबद्ध जीमूतवाहनव्रत-कथा अद्यावधि प्रकाशित नहि छल । एहि संस्करण में एहि बेर सेहो भेटत । एहि संस्करण क परिशिष्टो अत्यधिक उपयोगी बनाओल गेल छैक । सर्वदेवपूजनोपयोगि षोडशोपचारपूजन, विवाहादिशुभकर्मोपयोगि गणेशपूजन, मण्डपस्थापन-पूजन, आभ्युदयिक श्राद्ध-समीक्षा, सर्वकर्मोपयोगि नान्दीश्राद्ध तथा स्त्रीककर्त्रीक एकोद्दिष्टादि अनेकानेक उपयोगी विषय परिवर्धित भेल अछि । [मि. २०] ५-००

५ **वर्षकृत्य-द्वितीयभागः**—सम्पादक, पं० रामचन्द्र झा ।
द्वितीय संस्करणापेक्षया प्रस्तुत तृतीय संस्करण आओर विशालकाय भेल अछि । उद्यापनादि क सङ्ग सङ्ग जातकर्म, अन्नप्राशन, नामकरण, देवीप्रतिष्ठा, सीतारामप्रतिष्ठा, मूलशान्ति, स्वस्तिवाचनप्रयोग, उभय-मुखी गोदान आदि व्यवहारोपयोगी अनेकानेक आवश्यक पद्धति परिष्कृत रूप में बढ़ाओल गेल छैक । एहि संस्करण क संपादन में मिथिलाक अनेक प्रतिष्ठित विद्वान् सहयोग प्रदान कयलैन्ह अछि । [मि. २०] ६-००

६ **श्राद्धपद्धतिः** । स्त्री-कुमार-शूद्र-कर्तृकश्राद्धपद्धति सहित । श्राद्धसमीक्षा, 'इन्दुमती' टिप्पणी विभूषित । सं. पं. रामचन्द्र झा ।

म० म० वाचस्पति मिश्र विरचित प्रस्तुत श्राद्धपद्धतिक एहि तृ० संस्करण में क्रियाभागक कठिन-कठिन शब्द सरल सुबोध शब्द में परिवर्तित कयल गेल छैक । किन्तु पद्धतिक मूल भित्ति यथावत् बनल अछि । टिप्पणी में विशेष स्थान पर मूलाधार स्मृतिवचन क उल्लेख से ही भेटत । एहि संस्करणक 'श्राद्धसमीक्षा' तथा म० म० श्री दत्तोपाध्याय विरचित स्त्री-कुमार-कर्तृक श्राद्धपद्धति अधिक उपयोगी अछि । मिथिलाभाषानूदित छ० श्राद्धपद्धति छपि रहल छैक । वा० श्राद्धपद्धति सटिप्पण मूल [मि. ३१] ३-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४७ **कृतितत्त्वसंग्रहः**—दैवज्ञ श्रीतुफानी झा विरचितः
एहि निबन्ध में कालनिरूपण-प्रकरण, त्याज्यप्रकरण, षोडशसंस्कार-प्रकरण, शान्तिप्रकरण, वधूप्रवेशादिप्रकरण, द्विरागमनप्रकरण, वास्तु-प्रकरण, गृहप्रवेशप्रकरण, यात्राप्रकरण तथा मिश्रप्रकरण में व्यवहारो-पयोगी समस्त विषयक धर्मशास्त्रीय समीक्षा ज्योतिष ग्रन्थ क आधार पर कयल गेल अछि। [का. १८१] ८-००

*४८ **आत्ममर्यादा (एकांकी)** कृष्णकान्त मिश्र ०-५०

*४९ **कला (उपन्यास)** चतुरानन १-००

*५० **गप्पक फोड़न (गल्प-संग्रह)** हरिमोहन झा ०-२५

*५१ **चानो-दाइ (उपन्यास)** सोमदेव १-००

*५२ **निर्मला (उपन्यास)** विद्याधर मिश्र ०-३७

*५३ **प्रथम अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन दरभंगा : परिचय-पात।** १-५०

*५४ ,, ,, **: रचना-संग्रह।** प्रथम भाग ५-००

*५५ ,, ,, **: विभागीय-सभापति सभक भाषण।** २-००

*५६ **मिथिलाक इतिहास।** कृष्णकान्त मिश्र १-७५

*५७ **मिथिलाक संक्षिप्त राजनैतिक इतिहास।** राधाकृष्ण चौधरी १-५०

*५८ **मिथिलाभाषामय इतिहास।** म. म. पं. मुकुन्दझाबख्शी ४-००

*५९ **मैथिल संस्कृति और सभ्यता।** श्री उमेश मिश्र। १-२ भाग २-००

*६० **मैथिली-गीता।** मैथिली पद्यानुवाद। अनुवादक-सुरेश झा। गीतासार तथा गीता समीक्षादि सहित १-२५

*६१ **मैथिली जन-जीवन-काव्य।** पं० सुरेश झा। **'मिथिला'** पर समीक्षात्मक ऐतिहासिक लेख सहित। समीक्षक—पं० रामचन्द्र झा (महाराज जनक मैथिल ब्राह्मण छलाह ?) १-५०

*६२ **मैथिली साहित्यक इतिहास।** कृष्णकान्त मिश्र ५-००

*६३ **राली (उपन्यास)** प्रेमशंकर खरे १-५०

*६४ **विवेचना (आलोचनात्मक निबन्ध)** सं० सुधांशु 'शेखर' चौधरी १-००

*६५ **शृंगार-तिलक।** सुन्दर झा शास्त्री कृत गद्यपद्यानुवाद ०-२५

*६६ **श्रीमत्करमहामुकुलकीर्तिकौमुदी।** खण्डकाव्यम्। ०-७५

*६७ **श्रीमत्खण्डबलाकुलप्रशस्तिः। मैथिलसच्छ्रोत्रियाणां** खण्डकाव्यम् १-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिकित्सा-ग्रन्थाः

[चिकित्सा-संबन्धी सभी स्थान की छपी पुस्तकों के लिए **'चिकित्सा साहित्य'** (प्राच्य-पाश्चात्य) नामक विशाल सूचीपत्र पृथक् छपा मंगवा कर अवलोकन करें ।]

१ **अंग्रेजी-हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी** । (चौखम्बा चिकित्सा विज्ञान-कोश) सं० डॉ० गंगा सहाय पाण्डेय [वि. आ. ५१] २०-००

२ **अगदतंत्र** । डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस. [ह. २३९] ०-७५

३ **अञ्जननिदानम्** । सान्वय विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित [ह. २२७] १-००

*४ **अनुभूतयोग चर्चा** । १-२ भाग । बंसरीलाल साहनी ६-००

५ **अभिनन्दन-ग्रन्थ : सत्यनारायण शास्त्री जी** । [वि. आ. ३०] १५-००

६ **अभिनव बूटी दर्पण** (सचित्र) । श्री रूपलाल वैश्य यन्त्रस्थ

७ **अभिनव विकृति विज्ञान** (सचित्र) । आचार्य श्रीरघुवीर प्रसाद त्रिवेदी ए० एम० एस० [वि. आ. १०] २२-००

८ **अभिनव शरीर क्रिया विज्ञान (सचित्र)** आ० प्रियव्रत शर्मा [वि. आ. २] १०-००

*९ **अशोक** । श्री रमेश वेदी १-००

१० **अष्टाङ्गसंग्रह** । आयुर्वेद बृहस्पति श्रीगोवर्द्धनशर्मा छांगाणी कृत 'अर्थप्रकाशिका' हिन्दी टीका वक्तव्य सहित । सूत्रस्थान ८-०० [का. १५७] शेष स्थान शीघ्र प्रकाशित होंगे

११ **अष्टांगहृदय** (गुटका) भागीरथी वृहद् टिप्पणी सहित [ह. १०६] ४-००

१२ **अष्टाङ्गहृदय** । विद्योतिनी हिन्दी टीका विमर्श सहित । टीकाकार-श्री अत्रिदेव गुप्त विद्यालङ्कार । सम्पादक-वैद्य यदुनन्दन उपाध्याय बी. ए., ए. एम. एस. संशोधित, परिवर्द्धित, सपरिशिष्ट अभिनव द्वितीय संस्करण [का. १५०] १५-००

१३ **आयुर्वेद की कुछ प्राचीन पुस्तकें** (आयुर्वेद वाङ्मय-शोध का एक विवरण) आचार्य प्रियव्रत शर्मा एम० ए०, ए० एम० एस० [वि. आ. ३३] १-००

१४ **आयुर्वेदप्रकाश** । आयुर्वेदाचार्य श्रीगुलराज शर्मा कृत अर्थ-विद्योतिनी संस्कृत-अर्थप्रकाशिनी हिन्दी व्याख्याद्वय सहित । परिष्कृत द्वितीय संस्करण संपूर्ण [वि. आ. ३७] १२-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५ **आयुर्वेद प्रदीप (आयुर्वेदिक-एलोपैथिक गाइड)** श्री राजकुमार द्विवेदी । सम्पादक—आयुर्वेदाचार्य श्री गङ्गासहाय पाण्डेय । तृतीय परिवर्द्धित संस्करण [ह. २१९] १२-००

१६ **आयुर्वेद विज्ञान** । विद्योतिनी हिन्दी टीका परिशिष्टसहित [ह. १६९] २-००

*१७ **आयुर्वेद शिक्षा पर विचार** । डॉ० घाणेकर । भाषा ०-४०

१८ **आयुर्वेदीय परिभाषा** । अभिनव प्रकाशिका हिन्दी टीका विस्तृत परिशिष्ट सहित । टीकाकार-आयुर्वेदाचार्य श्रीगिरिजादयालु शुक्ल ए. एम. एस. [ह. १०७] १-२५

१९ **आयुर्वेदीय यन्त्रशस्त्र परिचय** । सुरेन्द्र मोहन बी० ए० [वि. आ. ३१] १-७५

२० **आसवारिष्ट-विज्ञान** । श्री पक्षधर झा । ग्रन्थगत दो खण्डों में विद्वान् लेखक के अध्यापन तथा प्रत्यक्ष कर्माभ्यास के अनुभवों से संपुटित इतनी विशद, प्रामाणिक तथा उपयोगी सामग्री हिन्दी में आप प्रथम बार ही देखेंगे । छात्र-चिकित्सक तथा पठित व्यक्तिमात्र के लिये यह अमूल्य निधि है । [वि. आ. ३९] ३-००

२१ **इंजेक्शन (सचित्र)** डा० शिवनाथ खन्ना [वि. आ. २३] ११-००

२२ **एलोपैथिक चिकित्सा विज्ञान** । श्री अवधविहारी अग्निहोत्री । सचित्र । प्रथम खण्ड यन्त्रस्थ

२३ **एलोपैथिक पाकेट प्रेस्क्राइबर (एलोपैथिक गाइड)** डा० शिवनाथ खन्ना [वि. आ. ४४] ५-००

२४ **एलोपथिक मिक्श्चर्स** । डा० राजकुमार द्विवेदी । नवीन संस्करण [वि. आ. १७] २-५०

*२५ **औपसर्गिक रोग** । डा० घाणेकर । १-२ भाग २२-००
प्रथम भाग १०-०० द्वितीय भाग [वि. आ. ४३] १२-००

*२६ **औषध गुण धर्म विवेचन** । अजिल्द ३-०० सजिल्द ४-५०

27 Concept of Agni In Ayurveda with Special Reference to Agnibala Pariksha. By Dr. Bhagavan Das Vaidya. In the Press

२८ **काकचण्डीश्वरकल्पतंत्रम्** । हिन्दी टीका सहित [का. ७३] २-००

२९ **कामकुञ्जलता** । मूलमात्र [चौ. ९२] २०-००

३० **कामसूत्रम्** । 'जयमंगला' टीका सहित विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित । व्याख्याकार, देवदत्त शास्त्री [का. २९] १६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३१ **कायचिकित्सा**। कविराज रामरक्ष पाठक। प्रथम भाग आयुर्वेदीय चिकित्सा के मूलभूत सिद्धान्त तथा उनका क्रियात्मक स्वरूप। १२-५०
[वि. आ. ३८] द्वितीय भाग ज्वर चिकित्सा। १२-५०
तृतीय भाग यन्त्रस्थ

३२ **काय-चिकित्सा**। आयुर्वेदाचार्य गङ्गासहाय पाण्डेय
[वि. आ. ४१] २५-००

३३ **काश्यपसंहिता**। श्री सत्यपाल आयुर्वेदालंकार कृत विद्योतनी हिन्दी टीका एवं राजगुरु हेमराजजी कृत संस्कृत-हिन्दी विस्तृत उपोद्घात सहित [का. १५४] १६-००

३४ **कौमारभृत्य (नव्यबालरोग सहित)**। श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस। नवीन संशोधित परिवर्द्धित संस्करण
[ह. १८६] ८-००

३५ **क्वाथमणिमाला**। हिन्दी टीका सहित [ह. १९२] यन्त्रस्थ

३६ **क्रियात्मक औषधि परिचय विज्ञान**। श्रीविश्वनाथ द्विवेदी। सचित्र
[वि. आ. ४८] १२-००

३७ **क्लिनिकल पैथोलॉजी** (वृहत् मल-मूत्र-कफ-रक्तादि परीक्षा)
[Clinical Pathology (including Laboratory Technique, Parasitology & Bacteriology.)]
डॉ० शिवनाथ खन्ना। सचित्र [वि. आ. २९] १२-००

३८ **गदनिग्रहः**। शोढल विरचित। विद्योतिनी हिन्दी व्याख्या सहित
[का. १८२] प्रथम भाग-प्रयोग खण्ड १५-००
द्वितीय भाग-कायचिकित्सा खण्ड २५-००
तृतीय भाग-शालाक्यादि-पञ्चकर्माधिकारान्तो खण्ड २५-००

३९ **गर्भरक्षा तथा शिशु-परिपालन**। डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा
[वि. आ. २६] ४-५०

४० **गूलर गुण विकाशः**। वैद्यभूषण श्री चन्द्रशेखरधर मिश्र
[ह. १८४] १-००

*४१ **गृहविज्ञान**। कालेड़ा ०-५०

४२ **चक्रदत्त**। नवीन वैज्ञानिक भावार्थसन्दीपनी हिन्दीटीका एवं विविध परिशिष्ट सहित। टीकाकार-श्री जगदीश्वरप्रसाद त्रिपाठी ए. एम. एस.
अजिल्द १०-००, [ह. १०७] कपड़े की पक्की जिल्द १२-००

४३ **चरकसंहिता**। मूल। भागीरथी टिप्पणीसहित [ह. ६७] समाप्त

४४ **चरकसंहिता**। श्री चक्रपाणि विरचित 'आयुर्वेददीपिका' व्याख्या सहित। सटिप्पण 'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्या विभूषित।
सूत्रस्थानादि इन्द्रियस्थान पर्यन्त प्रथम भाग शीघ्र प्राप्त होगा
चिकित्सादिग्रन्थ समाप्ति पर्यन्त द्वितीय भाग यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४५ **चरकसंहिता** । सविमर्श 'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्योपेता ।
व्याख्याकार :-पं० काशीनाथ शास्त्री, डॉ० गोरखनाथ चतुर्वेदी ।
सम्पादक :-पं० राजेश्वरदत्त शास्त्री, पं० यदुनन्दन उपाध्याय,
डा० गंगासहाय पाण्डेय, पं० ब्रह्मशंकर मिश्र । संपूर्ण १-२ भाग ३६-००
(सूत्रस्थानादि इन्द्रियस्थानपर्यन्तः) प्रथम भाग १६-००
(चिकित्सादिग्रन्थसमाप्तिपर्यन्तः) डा० बनारसीदास गुप्ता
कृत बृहत् परिशिष्ट युक्त । [वि. आ. ३२] द्वितीय भाग २०-००

46 CHARAKA SAMHITA. With English Translation and Critical Notes, based on Cakrapani's Ayurveda Dipika. By Dr. Ram Karna Sharma and Dr. Bhagwan Das. In the Press

४७ **चरकसंहिता का निर्माण-काल** (काश्यपसंहिता निर्माण काल सहित) वैद्य रघुवीरशरण शर्मा [वि. आ. २१] २-००

*४८ **चिकित्सा तत्त्वप्रदीप** । प्रथम भाग अजिल्द १०-०० सजिल्द १२-००
द्वितीय भाग अजिल्द १०-०० सजिल्द १२-००

*४९ **चिकित्सादर्श** । वैद्य राजेश्वरदत्त शास्त्री । १-३ भाग १८-००

५० **चौखम्बा-चिकित्सा-विज्ञान-कोश** । डा० गंगासहाय पांडेय [वि. आ. ५१] २०-००

*५१ **जीवाणु विज्ञान** । डा० घाणेकर १३-००

*५२ **ज्वर विज्ञान** । अजिल्द ३-०० सजिल्द ४-५०

*५३ **ज्वरविवेचन** (ज्वर निदान चिकित्सा) लीलाधर शास्त्री १०-००

५४ **तापमापन (थर्मामीटर)** । डा० राजकुमार द्विवेदी [ह. २५७] ०-२५

*५५ **तुलसी** । श्री रमेश वेदी २-००

५६ **तुलसीविज्ञान** । विविध रोगों पर तुलसी के ३४३ सफल सुलभ प्रयोगों का संग्रह [ह. २२०] ०-७५

*५७ **तुवरक और चालमोग्रा**। श्री रमेश वेदी ०-७५

५८ **त्रिदोषविज्ञानम्** । कविराज श्री उपेन्द्रनाथदास (चतुर्थ संस्करण) [चौ. पु.] ४-००

५९ **त्रिदोषसंग्रह** । वैद्य धर्मदत्त आयुर्वेदाचार्य [वि. आ. ५३] ३-५०

*६० **त्रिफला** । श्री रमेश वेदी ३-२५

*६१ **देहात की दवाएँ** । श्री रमेश वेदी ०-७५

*६२ **देहाती इलाज** । श्री रमेश वेदी १-००

६३ **दोष-कारणत्व-मीमांसा** । हिन्दी टीका सहित । पं० प्रियव्रत शर्मा एम. ए., ए. एम. एस. [वि. आ. ४] १-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६४ **द्रव्य-गुण-मंजूषा** । आचार्य शिवदत्त शुक्ल एम. ए., ए. एम. एस. । प्रथम भाग [वि. आ. २४] २-००

६५ **द्रव्यगुण-विज्ञान** (१-३ भाग)

आचार्य प्रियव्रत शर्मा एम. ए., ए. एम. एस. [वि. आ. ३] २३-००

प्रथम भाग ७-०० द्वितीय-तृतीय भाग १६-००

६६ **नलपाक—पाकदर्पणम्** । नल विरचित । संस्कृत [का. १] यन्त्रस्थ

६७ **नव परिभाषा** । कविराज श्री उपेन्द्रनाथदास कृत हिन्दी टीका सहित [चौ. पु.] १-७५

६८ **नव्यचिकित्सा विज्ञान** । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा । १-२ भाग [वि. आ. ३६] १६-००

६९ **नव्य रोग निदानम् (माधवनिदान-परिशिष्टम्)** [ह. १६७] ०-७५

७० **नाड़ी परीक्षा** । श्री ब्रह्मशंकरमिश्र कृत वैद्यप्रिया हिन्दी टीका सहित [ह. १४१] ०-३५

७१ **नाड़ीविज्ञान** । आयुर्वेदाचार्य प्रयागदत्त जोशी कृत विबोधिनी विस्तृत हिन्दी टीका सहित [ह. ५६] ०-३५

७२ **निघण्टु आदर्श** । संस्कृत-गुजराती का हिन्दी रूपान्तर । वैद्य बापालाल ग० शाह । प्रथम भाग [वि. आ. ५४] ३५-००

द्वितीय भाग यन्त्रस्थ

*७३ **नित्योपयोगी क्वाथसंग्रह** । १-२५

*७४ **नित्योपयोगी गुटिकासंग्रह** । २-००

*७५ **नित्योपयोगी चूर्णसंग्रह** । १-२५

*७६ **नीम : वकायन** । श्री रमेश वेदी २-००

*७७ **नेत्र रोग विज्ञान** । (सचित्र) श्री विश्वनाथ द्विवेदी १५-००

*७८ **नेत्र सुधार** । सचित्र । डॉ० आर० एस० अग्रवाल ४-००

७९ **पंचभूतविज्ञानम्** । कविराज उपेन्द्रनाथ दास कृत हिन्दी टीका सहित [चौ. पु.] ४-००

८० **पञ्चविध कषायकल्पना विज्ञान** । डा० अवधबिहारी अग्निहोत्री [वि. आ. १८] १-५०

*८१ **पदार्थविज्ञानम्** । आचार्य श्री सत्यनारायण शास्त्री । संस्कृत ३-००

८२ **पदार्थविज्ञानम्** । श्री वागीश्वर शुक्ल बी. ए., ए. एम. एस. [वि. आ. ४५] ८-००

८३ **परिभाषाप्रबन्ध** । आयुर्वेद बृहस्पति पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल [वि. आ. ६] २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८४ **पेटेण्ट प्रेस्क्राइबर** या **पेटेण्ट मेडिसिन्स** । डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए.एम. एस. [वि. आ. ९] ८-००

*८५ **पेठा-कद्दू** । श्री रमेश वेदी ०-७५

*८६ **पेनिसिलिन व स्ट्रेप्टोमाइसीन विज्ञान** तथा **मूत्रपरीक्षा** । १-२५

*८७ **प्रत्यक्षशारीरम् (संस्कृत)** गणनाथसेन कृत । प्रथम भाग यन्त्रस्थ, तृतीय भाग यन्त्रस्थ, द्वितीय भाग ९-७५

८८ **प्रत्यक्षशारीरम्** । गणनाथसेन कृत । हिन्दी । प्रथम भाग १०-०० द्वितीय भाग १५-०० [चौ. पु.] १-२ भाग २५-००

८९ **प्रसूति विज्ञान** । डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस. [वि. आ. १] १२-००

९० **प्रारम्भिक उद्भिद् शास्त्र** । प्रो० बलवंत सिंह एम. एस-सी. [ह. १९५] ४-५०

९१ **प्रारम्भिक भौतिकी** । श्री निहालकरण सेठी [ह. १८७] ५-५०

९२ **प्रारम्भिक रसायन** । प्रो० श्री फूलदेवसहाय वर्मा [ह. १७६] ४-५०

९३ **प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा** । कविराज ब्रह्मानन्द चन्द्रवंशी [ह. २२४] ०-३५

९४ **फलसंरक्षण विज्ञान (Fruit Preservation)** । डा० युगलकिशोर गुप्त आयुर्वेदाचार्य [ह. १८८] १-००

*९५ **बरगद** । श्री रमेश वेदी १-००

९६ **बस्तिशलाकाप्रवेश (एनीमा और कैथेटर)** [वि. आ. ७] ०-४०

९७ **बीसवीं शताब्दी की औषधियाँ** । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा [वि. आ. ३५] ८-००

*९८ **भारतीय जनता का स्वास्थ्य तथा आयुर्वेद** । ०-७५

९९ **भारतीय जीवाणुविज्ञान** । रघुवीरशरण शर्मा [वि. आ. ५५] २-५०

१०० **भारतीय रसपद्धति** । कविराज अत्रिदेव गुप्त [ह. १८९] १-५०

१०१ **भारतीय वनस्पतियों के अनुसन्धान का विवरण** । (१९६६-१९६८) सम्पादक-श्री कृष्णचन्द्र चुनेकर शीघ्र प्राप्त होगा

१०२ **भावप्रकाश** । मूल । पूर्वार्द्ध [ह. ३९] ३-००

१०३ **भावप्रकाश** । नवीन वैज्ञानिक विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित । पूर्वार्द्ध भाग १२-०० [का. १३०] मध्यमोत्तर खण्ड १५-०० संपूर्ण २६-००

१०४ **भावप्रकाश-ज्वराधिकार** । नवीन वैज्ञानिक विद्योतिनी हिन्दी टीका परिशिष्ट सहित [का. १३०] ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०५ **भावप्रकाशनिघण्टु**। (संशोधित परिवर्धित संस्करण) सम्पादक डॉ० गंगासहाय पाण्डेय, श्रीकृष्णचन्द्रचुनेकर।
प्रस्तुत संस्करण में पूर्व प्रकाशित विमर्श का आद्यन्त परिष्कार, अद्यतन वनौषधि अनुसन्धान साहित्य का अन्तर्भाव एवं प्रत्येक वनस्पति का यथाशक्ति असन्दिग्ध परिचय देने की चेष्टा की गयी है। उन वनस्पतियों के शास्त्रोक्त विशिष्ट आमयिक प्रयोगों का भी यथास्थल उल्लेख किया गया है। संस्कृत के मूल श्लोकों का हिन्दी अनुवाद, भेषज द्रव्यों के भिन्न भारतीय भाषाओं में प्रचलित सही नाम, उनके अंग्रेजी व लैटिन के स्वीकृत नाम, वनस्पतियों के उत्पत्ति स्थान, उनका विशिष्ट परिचय, रासायनिक संगठन आदि का सही-सही वर्णन दिया गया है। संदिग्ध एवं विवादास्पद स्थलों में विभिन्न विद्वानों के विचार एवं मतभेद के आधार के उल्लेख भी किये गये हैं। अनेक परिशिष्टों के होने से यह संस्करण अधिक उपयोगी बन गया है। [वि. आ. २८] १२-००

१०६ **भिषक्कर्मसिद्धि**। डा० रमानाथ द्विवेदी [वि. आ. ४२] २०-००

*१०७ **भूलोक में अमृत-गाय का दूध**। ०-७५

१०८ **भेलसंहिता**। सटिप्पण शोधपूर्ण सम्पादित नवीन संस्करण [वि. आ. २५] १०-००

१०९ **भैषज्य कल्पना विज्ञान**। डॉ० अवधविहारी अग्निहोत्री [वि. आ. २०] ५-००

११० **भैषज्यरत्नावली**। विद्योतिनी हिन्दी टीका विमर्श टिप्पणी परिशिष्ट सहित। टीकाकार-कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री ए. एम. एस. [का. १५२] १६-००

*१११ **मदनपाल निघण्टु**। मूल टिप्पणी सहित १-००

११२ **मर्म-विज्ञान-सचित्र**। श्री रामरक्ष पाठक आयुर्वेदाचार्य [ह. १९४] ३-५०

११३ **महौषध निघण्टुः**। आर्यदास कुमार सिंह वैद्य कृत। विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ

११४ **माधवनिदानम्**। सुधालहरी संस्कृत टीका सहित [ह. १५८] यन्त्रस्थ

११५ **माधवनिदानम्**। संपादक-वैद्य यदुनन्दन उपाध्याय, बी० ए०, ए० एम० एस०। मधुकोष संस्कृत तथा विद्योतिनी हिन्दी टीका, वैज्ञानिक विमर्श परिशिष्ट सहित। टीकाकार-आयुर्वेदाचार्य श्रीसुदर्शन शास्त्री ए. एम. एस.। १-२ भाग [का. १५८] १४-००
प्रथम भाग ७-५० द्वितीय भाग ७-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११६ **माधवनिदानम्** । मधुकोष संस्कृत व्याख्या मनोरमा हिन्दी टीका सहित [का. १५९] ६-००

११७ **माधव-निदानम्** । सर्वांगसुन्दरी हिन्दी टीका सहित [चौ. पु.] ४-५०

*११८ **मिर्च** । श्री रमेश वेदी १-००

*११९ **मूत्र के रोग** । डा० घाणेकर ६-००

१२० **यकृत् के रोग और उनकी चिकित्सा** । वैद्य श्रीसभाकान्त झा [ह. २१४] २-००

१२१ **योग-चिकित्सा** । अत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार [ह. २४१] ३-५०

१२२ **योगरत्नाकर** । मूल गुटका संस्करण [ह. १०८] ६-००

१२३ **योगरत्नाकर** । विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित [का. १६०] १८-००

*१२४ **रक्त के रोग** । डा० घाणेकर । नवीन आवृत्ति १०-००

१२५ **रतिमञ्जरी** । गद्य-पद्यात्मक हिन्दी अनुवाद सहित [ह. २५८] ०-४०

१२६ **रसकौमुदी** । ज्ञानचन्द्र शर्मा विरचित । हिन्दी टीका सहित [वि. आ. ४७] १-५०

१२७ **रसचिकित्सा** । कविराज प्रभाकर चट्टोपाध्याय [वि. आ. ८] ६-००

*१२८ **रसतत्त्वविवेचन** । हिन्दी टीका सहित ३-५०

*१२९ **रसतन्त्रसार व सिद्धप्रयोग संग्रह** । प्रथम भाग अजिल्द १०-००
सजिल्द १२-००
द्वितीय भाग अजिल्द ६-०० सजिल्द ८-००

१३० **रसरत्नसमुच्चय** । मूल टिप्पणी सहित । सुलभ संस्करण ३-००
[ह. ५३] उत्तम संस्करण ३-७५

१३१ **रसरत्नसमुच्चय** । नवीन सुरत्नोज्वला-विस्तृत हिन्दीटीका परिशिष्ट सहित । टीकाकार—आचार्य श्री अम्बिकादत्त शास्त्री ए. एम. एस [ह. ९१] १०-००

*१३२ **रसशास्त्र प्रवेशिका** । बद्रीनारायण शर्मा अनुवादित २-००

*१३३ **रसहृदयतंत्र** । संस्कृत-हिन्दी टीका । प्रथम भाग अजिल्द ५-००
सजिल्द ६-५०

१३४ **रसादि परिज्ञान** । आ० बृहस्पति पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल [ह. २४४] २-५०

१३५ **रसाध्याय** । संस्कृत टीका सहित [का. ७९] १-००

१३६ **रसायनखण्ड (रसरत्नाकर का चतुर्थ खण्ड)** [ह. ९५] ०-७५

१३७ **रसायन तन्त्र** । श्री पक्षधर झा यन्त्रस्थ

१३८ **रसार्णवं नाम रसतंत्रम्** । सविवरण भागीरथी टिप्पणी से युक्त [ह. ८८] ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१३९ **रसेन्द्रविज्ञानम्** । रामादर्श सिंह कृत हिन्दी टीका सहित ७-५०

१४० **रसेन्द्रसारसंग्रह** । बालबोधिनी-भागीरथी टिप्पणी सहित [ह. ७८] यन्त्रस्थ

१४१ **रसेन्द्रसारसंग्रह** । (सचित्र) गूढार्थसंदीपिका संस्कृत टीका सहित । टीकाकार-आयुर्वेदाचार्य अम्बिकादत्त शास्त्री ए. एम. एस. [ह. ६४] ५-००

१४२ **रसेन्द्रसारसंग्रह** । (सचित्र) नवीन वैज्ञानिक रसचन्द्रिका हिन्दी टीका विमर्श परिशिष्ट सहित । टीकाकार—श्री गिरिजादयालु शुक्ल ए. एम. एस. [ह. ७४] ७-००

*१४३ **रसेन्द्रसारसंग्रह** । वैद्य घनानन्द कृत संस्कृत हिन्दी टीका सहित ११-००

*१४४ **रसोपनिषद्** । हिन्दी टीका सहित । प्र. भाग अजिल्द ५-०० सजिल्द ६-५०

१४५ **राजकीय ओषधियोग संग्रह** । श्री रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी [ह. १९८५] समाप्त

१४६ **राजमार्तण्डः** । भोजराज विरचित । विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित [वि. आ. ४९] २-५०

१४७ **राष्ट्रिय चिकित्सा सिद्ध योग संग्रह** । आयुर्वेदाचार्य श्री रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस. [ह. १९०] १-५०

१४८ **रोगनामावली कोष** । डा० दलजीतसिंह आयुर्वेदवृहस्पति [ह. २१७] ३-५०

*१४९ **रोग निवारण** । डा० शिवनाथ खन्ना १५-००

१५० **रोग परिचय** (Clinical Medicine) । डा० शिवनाथ खन्ना एम. बी. बी. एस. [वि. आ. २२] १५-००

१५१ **रोगिपरीक्षाविधि** । (सचित्र) आचार्य प्रियव्रत शर्मा एम. ए., ए. एम. एस. [वि. आ. १५] ६-००

१५२ **रोगिरोग-विमर्श** । डा० रमानाथ द्विवेदी ए. एम. एस. [वि. आ. २७] २-००

१५३ **रोगीपरीक्षा** । डा० शिवनाथ खन्ना [वि. आ. १९] ६-००

१५४ **लङ्घनभैषज्य मणिमाला** । आर्यदास कुमार सिंह वैद्य कृत । हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ

*१५५ **लहसुन प्याज** । श्री रमेश वेदी २-५०

१५६ **लोहसर्वस्वम्** । सुरेश्वर विरचित । हिन्दी टीका सहित [वि. आ. ४६] २-००

१५७ **वनौषधिचन्द्रोदय** । विशाल निघण्टु ग्रन्थ । पृथक्-पृथक् प्रत्येक भाग का मूल्य ५-०० तथा सम्पूर्ण ग्रन्थ १-१० भाग का [का. १६१] ४०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१५८ **वनौषधिदर्शिका** । वनस्पतिविशेषज्ञ प्रोफेसर बलवन्त सिंह ४-००

१५९ **वाग्भट्ट विवेचन** । (शास्त्रीय विवेचन) श्री प्रियव्रत शर्मा कृत ।
प्रथम खण्ड [वि. आ. ५२] २०-००

१६० **विषविज्ञान और अगदतंत्र** । डा० युगलकिशोर गुप्त
एवं डा० रमानाथ द्विवेदी [ह. १७४] २-००

१६१ **वैद्यजीवन** । अभिनव सुधा हिन्दी टीका टिप्पणी सहित ।
टीकाकार—श्री कालिकाचरणशास्त्री ए. एम. एस. [ह. १३९] १-२५

१६२ **वैद्यक परिभाषा प्रदीप** । प्रदीपिका हिन्दी टीका सहित ।
टीकाकार—श्री प्रयागदत्त जोषी आयुर्वेदाचार्य । द्वितीय संस्करण
[ह. ७५] यन्त्रस्थ

१६३ **वैद्यकीय सुभाषित साहित्य** । डॉ० भास्कर गोविन्द घाणेकर ।
हिन्दी टीका सहित [का. १८४] २५-००

१६४ **वैद्यकीय सुभाषितावली** । डा० प्राणजीवन माणेकचन्द
मेहता । मूल संस्कृत, अंग्रेजी अनुवाद सहित [वि. आ. ५] २-००

*१६५ **वैद्य सहचर** । श्री विश्वनाथ द्विवेदी ३-००

*१६६ **वैद्योद्बोधन** । गिरजादत्त पाठक वैद्य ०-७५

१६७ **व्यवहारायुर्वेद-विषविज्ञान-अगदतंत्र** । डा० युगल
किशोर गुप्त एवं डा० रमानाथ द्विवेदी [ह. १७३] ५-००

*१६८ **शल्यतन्त्र में रोगी परीक्षा** । डा० पी० जे० देशपांडे ७-००

१६९ **शल्यप्रदीपिका** । (सचित्र) डॉ० मुकुन्दस्वरूप वर्मा । परिवर्द्धित
संस्करण [वि. आ. ५०] १५-००

*१७० **शहतूत** । श्री रमेश वेदी ०-४०

*१७१ **शहद** । श्री रमेश वेदी ३-००

*१७२ **शारीरंतत्त्वदर्शनम्** । हिर्लेकर शर्मा । संस्कृत टीका हिन्दी अनुवाद
सहित ६-००

१७३ **शार्ङ्गधरसंहिता** । सुबोधिनी हिन्दी टीका, वैज्ञानिक विमर्श, लक्ष्मी
नामक टिप्पणी तथा पथ्यापथ्यादि विविध परिशिष्ट सहित
[ह. १५१] ५-००

१७४ **शालाक्यतंत्र (निमितंत्र)** । डा० रमानाथ द्विवेदी
एम. ए., ए. एम. एस. । द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण
[ह. २१८] ९-००

१७५ **शिलाजीत विज्ञान** । डा० जाह्नवी प्रसाद जोशी [वि. आ. १६] ०-७५

*१७६ **संक्षिप्त औषध-परिचय** । कालेड़ा ०-६२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१७७ **सन्निपातज्वरचिकित्सा** । कविराज चक्रपाणि शर्मा ६-००

178 SURGICAL ETHICS IN AYURVEDA : By Dr. G. D. Singhal and Pt. Damodar Sharma Gaur. [Chow. Sans. Studies Vol. XL] 5-00

१७९ **सामान्य रोगों की रोकथाम** । डा० प्रियकुमार चौबे [वि. आ. ३४] ३-५०

*१८० **सिद्ध परीक्षा पद्धति** । प्रथम भाग ८-००

१८१ **सिद्धभैषज संग्रह** । आयुर्वेदाचार्य श्री युगलकिशोर गुप्त । मूल्य सुलभ संस्करण ७-०० उत्तम संस्करण ८-०० राज संस्करण [ह. २३१] ९-००

१८२ **सिद्धान्तनिदानम्** । गणनाथसेन कृत । संस्कृत । १-२ भाग [चौ. पु.] १४-००

१८३ **सुश्रुत संहिता** । सुदामा मिश्र शास्त्री कृत सुधा संस्कृत टीका सहित [ह. १२२] यन्त्रस्थ

१८४ **सुश्रुतसंहिता** । 'आयुर्वेद तत्त्वसंदीपिका' हिन्दी व्याख्या वैज्ञानिक विमर्श सहित । व्याख्याकार-डा० कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री एम. ए., ए. एम. एस. । १-२ भाग । संपूर्ण [का. १५६] २४-००

१ सूत्र-निदानस्थान ७-०० **२ शारीरस्थान** ४-००

३ चिकित्सा-कल्पस्थान ६-०० **४ उत्तरतन्त्र** १२-५०

185 SUSRUTA SAMHITA : With a full and Comprehensive Introduction, English Translation and Different Readings etc., with Plates by Kaviraja Kunjalal Bhishagratna, M. R. A. S. 3 Vols. [Chow. Sans. Studies Vol. XXX] 60-00

१८६ **सुश्रुतसंहिता-शारीरस्थान**—नवीन वैज्ञानिक 'प्रभा'-'दर्पण' विस्तृत हिन्दी टीका सहित [ह. १६४] ४-००

१८७ **सूचीवेध-विज्ञान (Injection Therapy)** । डा० राजकुमार द्विवेदी-नवीन परिवर्द्धित संस्करण [ह. १८२] २-५०

१८८ **सौश्रुती** । आयुर्वेद बृहस्पति डा० रमानाथ द्विवेदी [ह. १९६] १०-००

१८९ **स्टेथिस्कोप तथा नाड़ी परीक्षा**—डा० जाह्नवीप्रसाद जोशी [वि. आ. ११] ०-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१९० **स्त्रीरोग विज्ञान** । (सचित्र) डा० रमानाथ द्विवेदी [वि.आ. १३] ३-५०

*१९१ **स्वस्थवृत्त समुच्चय** । श्री राजेश्वरदत्तशास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित ७-००

१९२ **स्वास्थ्यविज्ञान** । (सचित्र) डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर परिवर्द्धित संस्करण [वि. आ. १२] ९-००

१९३ **स्वास्थ्यशिक्षापाठावलि** । डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर [वि. आ. ४०] ३-५०

१९४ **स्वास्थ्य संहिता** । हिन्दी टीका सहित । रचयिता-आयुर्वेदाचार्य कविराज नानकचन्द्र वैद्य शास्त्री [ह. २१५] २-५०

*१९५ **हमारी आँखें** । सचित्र । डॉ० एम० एस० अग्रवाल ५-००

१९६ **हैजा (विसूचिका) चिकित्सा** । डा० जाह्नवी प्रसाद [वि. आ. १४] ०-७५

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. XXX)

English Translation of

SUSRUTA SAMHITA

By

Kaviraj Kunja Lal Bhisagratna

Sushruta Samhita which is the most respresentative work on Ayurveda, not only deals with the essentials of Indian therapeutics but also embraces the whole range of Science of Ayurveda.

The purpose of this English Translation is to make this important work accessible to the English knowing world. The Translation of Kaviraj Kunja Lalji is authentic and, at the same time, throws sufficient light on many intricate and obscure facts of the original. Complete in 3 Vols. Rs. 60-00

THE

CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

Post Box 8, VARANASI-1 (India) Phone : 3145

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu